TEXT FLY
WITHIN THE
BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY

OU_180688

UNIVERSAL LIBRARY

# रूपजाल

छविनाथ पाण्डेय

कुसुम प्रकाशन
कुसुमपुरी
पटना-३

**OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY**

Call No. H 83/P18R Accession No. G.H. 1158

Author पाण्डेय, छविनाथ

Title रूप जाल / 1953

This book should be returned on or before the date last marked below.

# रूप जाल

अनुवादक

छविनाथ पाण्डेय

प्रकाशक

कुसुम प्रकाशन

पटना—३

प्रथम संस्करण ] १९५३ [ मूल्य ३ ॥)

मुद्रक
सर्वोदय प्रेस
आर्यकुमार रोड
पटना-४

# अपनी ओर से

प्रस्तुत पुस्तक अँग्रेजी उपन्यास "मेडोना आफ स्लीपिंग कार" का रूपान्तर है। कथानक के रूप में जो बातें कही जाती हैं, वह जल्द समझ में आ जाती हैं और लोगों के मन को जल्द प्रभावित करती हैं। इसलिये बड़े बडे सिद्धान्तों और मतों के प्रचार के लिये भी प्रायः लोग कथानक का सहारा लेते हैं। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है:—"सत्य के लिये इतना अधिक आग्रह मेरे मन में सत्य हरिश्चन्द्र नाटक पढ़ कर हुआ और पितृ भक्ति की महिमा का आधार श्रवणकुमार नाटक है।"

इस उपन्यास मे दो सभ्यताओं दो संस्कृतियों और दो राजनीतिक विचार धाराओं की जबर्दस्त टकराहट है। एक तरफ हैं साम्यवादी रूस के प्रनिनिधि बोल्शेविक और दूसरी ओर हैं ब्रिटेन के कुलीनवर्ग के प्रतिनिधि लेडी डायना और प्रजातंत्र अमरीका के कुलीन वर्ग के प्रतिनिधि प्रिंस सेलिमन! इनकी बातें इनका व्यवहार, इनकी बात-चीत, इनका वार्तालाप आप को इन तीनों देशों की राजनीति और मानसिक दशा तथा सामाजिक वातावरण और रहन-सहन समझने में मदद पहुंचावेगी।

इस उपन्यास से आपको साम्यवादियों की मनोवृत्ति का भी पता चल जायगा कि उसके प्रतिनिधि बोल्शेविक रूस में वास्तव में किस तरह का शासन है और उस शासन का असली रूप क्या है। रूस

साम्यवादी शासन प्रणाली का प्रतिनिधित्व करता है। सभी देशों के साम्यवादी रूस से ही प्रेरणा ग्रहण करते हैं। इसलिये रूस मे प्रचलित तरीकों से हम यह सहज मे समझ सकते हैं कि साम्यवाद हमें क्या देगा। उस शासन प्रणाली को अपनाने से जनसाधारण को क्या सुख और सुविधा प्राप्त होगी।

इन्हीं सब बातों से प्रेरित होकर मैंने इस पुस्तक को हिन्दी के पाठकों के सन्मुख रखने का प्रयास किया है। अनुवाद तथा पुस्तक की उपयोगिता की जांच स्वयं पाठक करेंगे। मैंने तो सिर्फ अपना काम कर दिया है।

प्रबोधिनी एकादशी
पटना
वि० २०१०

—छविनाथ पाण्डेय

# १

लेडी डायना विनहम सोफा पर लेटीं टाइम्स अखबार के पन्ने उलट रही थीं। उन्होंने अपने सुकोमल पैरों को महीन रेशमी चादर से ढँक रखा था जो मखमली गद्दे से अठखेलियाँ कर रहे थे। बगल के टेबुल पर अति सुन्दर छोटे छोटे काफी के प्याले रखे थे जो लेडी डायना की नजाकत और सुरुचि का परिचय दे रहे थे। कभी-कभी उनके चंचल पैर उस टेबुल से इस तरह टकरा जाते थे कि प्यालों की जान खतरे में हो जाती थी। उन्होंने अखबार को इस तरह पकड़ रखा था कि उसने उनके शरीर के ऊपरी भाग को एकदम ढँक लिया था पास सी उनका सेक्रेटरी प्रिंस सेलिमन बैठा काफी बनाने की तैयारी कर रहा था।

लेडी डायना अचानक बोल उठीं:—जिरार्ड! मुझे प्रोफेसर ट्रारिज से मिलना आवश्यक है।

मैं लेडी डायना की छोटी से छोटी सेवा के लिए सदा तत्पर रहता था। उन्हें कभी निराश होने का मौका नहीं देता था। इसलिये मैंने काफी के उस नन्हें प्याले को ज्यों का त्यों छोड़ दिया जिसमें मैंने इनवर्नेस के ड्यूक के कोट आफ आर्म्स (वंश की निशानी) वाले नन्हे चम्मच से चीनी मिला ही रहा था। मैंने कहा:—यह कौन बड़ी बात है! मैं अभी रिज होटल में उन्हें फोन करता हूँ।

"कर ही डालो, जिरार्ड।"

मैंने टेलीफोन का चोगा मुंह में लगाया और कहा:—मैं लेडी डायना

बिनहम का सेक्रेटरी हूं। लेडी डायना अत्यन्त आवश्यक काम से आपसे मिलना चाहती हैं।

किसी घुरघुरी आवाज ने उत्तर दिया:—आज तीसरे पहर चार बजे वे आ सकती हैं।

"धन्यवाद डाक्टर।"

मैंने लेडी डायना से प्रोफेसर का संवाद कह दिया। बिजली की कौंध के समान उन्होंने अपना सुरम्य और सुन्दर मुखड़ा अखबार के उस परदे से बाहर किया। लेडी डायना के सौन्दर्य के वर्णन की आवश्यकता मैं नहीं समझता। संसार का कौन सा पत्र है जिसमें लेडी डायना बिनहम का चित्र किसी न किसी रूप में न निकलता हो, कभी गोल्फ खेलते हुए, कभी बछड़े को सहलाते हुए, कभी राल्सरायस मोटर चलाते हुए और कभी स्वच्छ धवल स्वेटर में माण्टे कार्लो की ढाल पर चढ़ते हुए। इन पत्रों में से किसी की एक प्रति खरीद कर ही कोई उनके रूप और सौन्दर्य का अनुमान कर सकता है।

पेरिस में एक किंवदन्ती प्रचलित है कि अंग्रेज महिलाए जब सुन्दर होती हैं तो उनके सौन्दर्य का कोई मोकावला नहीं कर सकता। लेडी डायना के बारे में यह किंवदन्ती पूर्ण रूप से सच थी। लेडी डायना के रूप सौन्दर्य को देखकर जान रस्किन को डाह पैदा हो गई होती। वे पूर्ण सौन्दर्य की प्रतिमा थीं। उनके सुडौल कपोल, रक्ताभ अधर और कजरारी आँखें अपनी समता नहीं रखती थीं?

उन्होंने कहा:—जिरार्ड? तुम्हें भी मेरे साथ चलना होगा। तुम्हारा वहाँ रहना आवश्यक है। इस अद्वितीय आकृति-विद्या-विशारद से मुलाकात और बातचीत करना नितान्त आवश्यक है। मैं टाइम्स में उसकी रचना की आलोचना पढ़ रही थी। उसका एक शब्द मेरी समझ में नहीं आया। इसे जरा मुझे समझा दो! ओह! तुम मुझपर कितने मिहरवान हो।

डाक्टर सीज फ्रायड ट्रारिज फ्रायड के शिष्यों में से थे। यूरोप के उस क्षेत्र में उनकी अतिशय ख्याति थी जहाँ लोग मनोबल से दूसरों के दिल की बात पढ़ते हैं और जहाँ लोग मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से किसी के मन की तह तक पहुँचते हैं। उसके विचारों को समझाने की धृष्टता करना मेरे लिये उपहासास्पद था।

मैंने कहा:—लेडी डायना! प्रोफेसर सीज फ्रायड अपने विचारों को मेरी अपेक्षा खुद कहीं अच्छी तरह समझा सकते हैं। उनसे स्पष्ट बातें कीजियेगा। वे आपके मनोभाव और अन्तर्चेतना को भली-भाँति समझ लेंगे।"

"अन्तर्चेतना तक कोई किस तरह पहुँचता है?"

"क्या कहा आपने, लेडी डायना?"

"किस स्वाभाविक पथ से कोई किसी की चेतना तक पहुँच सकता है?"

"सदाचार रूपी सूक्ष्म छिद्र द्वारा। तब एक दृश्य सूची से प्रेरणा पाकर उसके व्यक्तित्व का गुब्बारा वायुका वमन करने लगता है।

लेडी डायना खिलखिलाकर हँस पड़ीं। उनकी उस खिलखिलाट में भी एक अनुपम सौन्दर्य था जो अपना सानी नहीं रखता था।

मुझे उस स्वर्ग तक पहुंचने का कभी सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था जिसके निर्मल धवल मन्दाकिनी में लोग लेडी डायना के साथ विलास की उर्मियों का आनन्द लिया करते थे। मैं उनका प्राइवेट सेक्रेटरी मात्र हूँ। मैं उनका विश्वास पात्र हूं और मैंने अपने पदकी मर्यादा से आगे बढ़ने की कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की। मैं इस बात को अस्वीकार नहीं करता कि कभी कभी मैंने अश्लील कवितायें पढ़ कर उन्हें जरूर सुनाई हैं, लेकिन मैंने प्रयोग-वाद के अभ्यास का कभी भी साहस नहीं किया।

हमलोग ठीक चार बजे रिज होटल में पहुंच गये। पांच मिनट की प्रतीक्षा

के बाद एक बूढ़ा आदमी हमलोगों के पास आया। वह काली पोशाक में थ। उसने फौजी ढंग से हमलोगों का अभिवादन किया।

उसने जर्मनतर्ज में कहना शुरू किया—मेरा नाम डाक्टर फंकेलविज है। मैं उस असाधारण नर-पुंगव का मुख्य सहकारी हूँ। चन्द क्षणों के बाद वे आपकी सेवा करने योग्य हो जायँगे।

लेडी डायना—अनेक धन्यवाद ! कोई हर्ज की बात नहीं है। यहां तो उन्हें हरदम व्यस्त ही रहना पड़ता होगा।

"मत पूछिये ! कुछ ही देर हुई कि दो राजे यहां से गये हैं। आज शाम को लायड जार्ज आनेवाले हैं। कल सबेरे भारत के बड़े लाट, मेरी टेम्पेस्ट और चार्ली चेप्लेन आयेंगे।

इन नामों की गिनती गिनाते समय डाक्टर फंकेलविज का चेहरा गर्व से चमक उठा था। उसी समय घंटी बज उठी और वे भीतर चले गये। तब मैंने लेडी डायना की ओर मुड़कर कहाः—

"इससे मुझे बर्नम की सरकस की याद आ जाती है।"

"जिरार्ड ! तुम बड़े ही उद्धत हो। विश्व-विख्यात व्यक्तियों का भी सम्मान करना तुम नहीं जानते।

"जब मैं देखता हूँ कि उसकी आधारशिला बड़े बड़े नामों और हवाई सिद्धान्त पर टिकी है, तब मैं उसका सम्मान नहीं करता।"

क्षणभर बाद ही वह बूढ़ा डाक्टर वापस आया और हमलोगों को लेकर भीतर चला। हमलोग एक बैठक में पहुंचे जो सजावट से जगमगा रहा था। कमरे में एक तरफ टेबुल रखा था जिस पर अखबारों और पुस्तकों का अटान था। उसके पीछे डाक्टर सीज फ्रायड ट्रारिज शान्त और स्थिर मुद्रामें खड़े थे। उनकी आकृति गंभीर थी।

मैंने प्रोफेसर सीज फ्रायड ट्रारिज का चित्र भी कहीं नहीं देखा था। मैंने कल्पना कर रखा था कि यह देखने में मध्ययुग का प्रेत-विद्या-विशारद सा होगा। वह काले रेशम का लंबा चोंगा पहने होगा जिसमें अनेकों तमगे लटकते होंगे। लेकिन यहां मेरी कल्पना को बुरी तरह मात खानी पड़ी। मुझे यह देखकर बड़ी निराशा हुई कि प्रेत जगाने की कोई सामग्री उसके इर्दगिर्द नहीं थी।

तोभी डाक्टर कम रोबीला नहीं था। उसका चेहरा भेड़िये के समान खूंखार था यद्यपि उसमें झुर्रियाँ पड़ गई थीं। उसके सिर के बाल बिखरे हुए थे। भौंहों के बीच से उसका गुरेर कर देखना कभी भूला नहीं जा सकता था। उसकी मूंछ और दाढ़ी सफाचट थी। वह दुबला पतला और लम्बा था उसके होंठ पतले और आगे की ओर निकले थे। वह अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन भाषा फर्राटे से बोल लेता था।

साधारण शिष्टाचार के बाद वह हमलोगों को अपने दफ्तर में ले गये। वह होटल का एक साधारण कमरा था। हां, उसमें तरह तरह के बिजली के यंत्र स्थान स्थान पर खड़े किये गये थे।

अब जांच का काम आरंभ होनेवाला था। प्रोफेसर ट्रारिज ने मेरी ओर आँख से इशारा किया। मैं उसका अभिप्राय समझ गया और कमरे से बाहर जाने लगा। इसी समय लेडी डायना ने हाथ पकड़कर मुझे बैठा लिया। बोलीः—कोई हर्ज नहीं है। प्रिंस यहाँ रह सकेंगे। मेरी कोई भी बात उनसे छिपी नहीं है।

सर्वज्ञ मनोवैज्ञानिक ने लेडी डायना को आराम कुर्सी पर बैठने के लिये हाथ से इशारा किया और उनके बयान की प्रतीक्षा करने लगा।

लेडी डायनाः—डाक्टर! मैं इतनी विलक्षण नहीं हूँ कि आपके विख्यात

सिद्धान्तों को समझ सकूं लेकिन .के उन सिद्धान्तों से जिनका संबंध मन इन्द्रिय और विनाश से है—बहुत प्रभावित हुई हूँ। शाब्दिक अर्थ में मैं बीमार नहीं हूं। मैं एकदम स्वस्थ हूं। मैं आपकी सहायता से एक विकट समस्या का समाधान करना चाहती हूँ। उसका संबंध एक स्वप्न से है—एक अजीव-ओ-गरीब स्वप्न जो लगातार मुझे परीशान किये रहता है और मैं घबरा जाती हूँ।

"अच्छी बात है लेडी विनहम। लेकिन आपके कुछ कहने से पहले मैं यह जान लेना चाहता हूँ कि मेरे पास आपका जो संक्षिप्त विवरण है, वह सही है या नहीं।

इतना कहकर प्रोफेसर ट्रारिज ने अपने टेबुल के दराज से टाइप किया हुआ कागज का एक पन्ना निकाला। उसे देखकर लेडी डायना को बड़ा अचरज हुआ। इसपर डाक्टर ने कहा:—

जब तक मेरा सेक्रेटरी मेरे मरीज का संक्षिप्त जीवन वृत्तान्त तैयार नहीं कर लेता तब तक मैं अपने मरीज को नहीं देखता। अब आपका जीवन वृत्त मैं पढ़ता हूं। जहाँ भूल हो उसे सुधार दीजियेगा।

......लेडी डायना मेरी डोरोथिया विनहम। जन्म ग्लनस्लाय कैसिल, स्काटलैण्ड २४ अप्रैल १८९७ ई०, इनवरनेस के ड्यूक की एकमात्र पुत्री। खेल की शिक्षा सलिस्वरी कालेज। सन् १९१६ ई० में राल्फ एडवर्ड टिमोथी, लार्ड विनहम जी० सी० वी०, के० सी० एम० जी०, के० सी० वी० ओ० रूस के भूतपूर्व राजदूत से विवाहित। विवाह केवल सुविधा के लिये। लेडी विनहम थोड़े काल तक ही पति-भक्त बनी रह सकीं।

इतना पढ़कर डाक्टर रुक गया और शिष्टता के साथ नर्मी से बोला:—शायद यहाँ कुछ भूल मालूम होती है!

लेडी डायना ने एक शब्द का भी खण्डन नहीं किया। प्रत्युत बोलीं:—"सब

कुछ सही है।" इतना कहकर उन्होंने अपने रत्नजटित डिब्बे से एक अति सुगन्धित सिगरेट निकाला।

डाक्टर ने कहा—तब मैं इस विवरण का आगे का अंश भी पढ़ डालूं।

······लेडी विनहम के भक्त, प्रेमी और प्रशंसक क्रमसे निम्नलिखित हैं:—सर टामस लारी; मसिगनैक के ड्यूक; जार्ज उवली; सोमरसेट विफले एम० पी; और लियो टिटो।

लेडी डायना ने सिगरेट को झाड़ते हुए लापरवाही से कहा:—डाक्टर! लेकिन ये सब के सब समकालीन थे। प्रोफेसर ट्रारिज ने पुनः नर्मी से कहा:—वह केवल विराम का दोष है।"

इसके बाद उसने पढ़ा:—इनके अलावा और अन्य अनेक जिनका शिनाख्त नहीं हो सका है।

लेडी डायना:—सब कुछ सही है। मैं इससे पूर्णतया सहमत हूँ। आपका विवरण समाप्त हो चुका या और कुछ बाकी है?

डाक्टर—जी नहीं। दो एक बातें शारीरिक संबंधी भी हैं। उन्हें भी पढ़ देता हूं।

"······लेडी डायना ने समय समय पर मार्फिया तथा अफीम का भी प्रयोग किया है पर वे किसी नशा का गुलाम नहीं हैं। वे सदा नये नये आनन्दों की खोज में रहती हैं। धर्म की रहस्यमय बातों की ओर उनकी प्रवृत्ति नहीं है। उनकी आकांक्षाएं निःसीम हैं।"

इसके बाद प्रोफेसर ने कागज को मोड़ दिया। तब लेडी डायना बोलीं:—

"आपकी सूचना सही है। मेरे जीवन, मेरे व्यक्तित्व तथा मेरे चरित्र का सच्चा खाका अपके पास है। न तो मैं खफ्त हूँ और न मुझ में बनक है। जो कुछ मैं करती हूं, खुले आम करती हूं। मुझे झूठी शालीनता या

आडम्बर में विश्वास नहीं है, हालां कि मेरे देशवासी इन बातों के परम उपासक हैं।

प्रोफेसर अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। उसके दोनों हाथ पीछे की ओर मुड़े थे। वह कमरे में आतिशदान के सामने चक्कर काटने लगा। इसके बाद उसने लेडी डायना से सवाल पूछना शुरू किया। उसके प्रत्येक प्रश्न स्पष्ट थे, उनमें शब्दाडम्बर नहीं था। प्रत्येक प्रश्न में विवरण की विशद मांग थी। कहीं किसी द्विविधा या शंका की कोई गुंजायश नहीं थी।

"लेडी बिनहम ! पहले पहल आपको प्रेम की अनुभूति कब हुई ?"

"उन्नीस साल की उम्र में मेरी शादी हुई थी।"

"बचपन में आप में कोई असाधारण प्रवृत्ति थी ?"

"तेरह साल की उम्र में मेरी विचित्र हालत थी। मैं पढ़ा करती थी—

"नहीं, नहीं, मेरा मतलब आपके असली बचपन से है। क्या आप को उस समय इन बातों की कोई अनुभूति थी ?"

"जी नहीं।"

"ठीक है। विवाह से पहले आप का प्रेम संबंध कइयों से हो चुका था ?"

"अवश्य, लेकिन उन संबंधों में कोई तत्व नहीं था।"

"क्या आप अपने को अतिशय भावुक समझती हैं ?"

क्यों ? नहीं तो। मेरी हालत साधारण स्त्रियों के समान ही है।"

"मान लीजिये कि किसी ने आप को निर्दयता के साथ कलेजे से लगा लिया। क्या इससे आपको कोई विशेष आनन्दानुभूति नहीं होती।"

"मैं गदगद हो जाती हूं। लेकिन उस अनुभूति का वर्णन शब्दों में मैं नहीं कर सकती।"

प्रोफेसर ट्रारिज ने अपनी चमकीली आंखों से लेडी विनहम का गौर से

निरीक्षण किया। लेडी डायना जिस इतमीनान के साथ प्रोफेसर के प्रश्नों का उत्तर दे रही थीं उससे मुझे आनन्द भी आरहा था और सदमा भी हो रहा था। आरामकुर्सी पर आराम से लेटकर उन्होंने अपने दोनों पैरों को फैला दिया था। वे प्रोफेसर से इस तरह बातें कर रही थीं मानो चाय .पार्टी में वे हों। पर मनोवैज्ञानिक प्रोफेसर अपने काम में उसी तरह व्यस्त था। उसने पूछाः—

"शीशे में अपना चेहरा देखने में आप को आनन्द आता है ?"

"क्या आप यह जानना चाहते हैं कि अपने ही सौन्दर्य को देखकर मुझे उल्लास होता है या नहीं ?"

"आपने मेरा अभिप्राय टीक ठीक समझा ! बात यह है कि मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में हमलोग इस बात को बहुत अधिक महत्व देते हैं।"

"तब मैं साफ साफ कह देना चाहती हूं कि मैं अपने को अत्यधिक आकर्षक महिला समझती हूं। लेकिन रात को मैंने जो स्वप्न देखा था—"

प्रोफेसर ने अपने मरीज को हाथ के इशारे से रोकाः—

"जरा ठहरिये ! मैं आपके शारीरिक यन्त्र का स्पष्ट अध्ययन कर लेना चाहता हूं। स्वप्न की बात सुनने से पहले मैं आपकी प्रतिकृति तथा उसपर होनेवाली प्रतिक्रियाओं का विशेष रूप से अध्ययन कर लेना आवश्यक समझता हूं।"

"आपने क्या कहा ?"

"यही तो मुख्य बात है। आपने प्रकाश किरणों के विश्लेषण की चर्चा सुनी होगी। उनकी सहायता से ही ताराओं और नक्षत्रों की रचना की वास्तविकता मालूम हो सकी है। इस तरह की किरणों से प्राप्त शरीर की काली लकीरें हमलोगों को यह साबित करने में सहायता प्रदान करती हैं कि जलडेवरन में हाइड्रोजन या वेगामें पोटासियम है। किसी व्यक्ति की विशेषता जानने के

लिये मैं भी उसी रीति से काम लेता हूं। उससे उसके चरित्र के अध्ययन में मुझे काफी सफलता मिलती है। और प्रेम संसर्ग की चंचल प्रवृत्ति के समय उसका अध्ययन सफलता पूर्वक होता है।"

"मैं आपकी बात समझ गई।"

"इसलिये आप मेरे इस रेडियोग्राफ यंत्र क सामने खड़ी हो जाय। इस यंत्र का निर्माण मैंने स्वयं किया है। इसकी किरणें आपके अन्तर्गत भागों का हमें स्थूल विश्लेषण प्रदान करेंगी।

"ठीक है! यंत्र तो मैं देख रही हूं। उसके सामने मैं खड़ी भी हो जाऊंगी। लेकिन संसर्ग से जिस अनुभूति का आप प्रत्यक्ष दर्शन करेंगे, वह संसर्ग कौन प्रदान करेगा?

"अपने मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के समय प्रोफेसर ट्रारिज किसी तरह की चुहुलबाजी नहीं बर्दाश्त कर सकते थे। इसलिये उन्होंने व्यंग से कहा:—

"मेरे दफ्तर में इस तरह का सामान रहता है। आवश्यकता क समय यहाँ सब कुछ मिल मकता है। लेकिन सौभाग्य से प्रिंग सेलिमन यहाँ उपस्थित हैं। इसलिये मुझे पूरी आशा है कि वे रंगमंच के नायक का अभिनय कर सकेंगे।"

इतना कहकर वह अपने यन्त्र के पीछे काले परदे के अन्दर चले गये।

लेडी डायना व्यंग से मुस्कुरा उठीं। उन्होंने मुझसे कहा:—

"मैं देखती हूँ कि मुझे अपनी कामुकता को प्रोज्वलित करना होगा। क्या तुम सफल निर्देशक का काम कर सकोगे जिरार्ड ?"

मैं स्पष्ट कह देना चाहता हूं कि मेरे लिये यह सबसे कठिन संकटापन्न स्थिति थी। मेरे पद की मर्यादा मुझे सचेत कर रही थी कि मुझे फूंक फूंक कर कदम रखना चाहिए। मैं पाँच महीने से इनके यहां काम कर रहा था। मुझ पर इनका अटूट विश्वास था। लेकिन मैंने एक भी ऐसा अवसर नहीं आने दिया,

जब मेरी हरकतें किंवदन्ती का रूप धारण करें और समाज में मेरी चर्चा होने लगे। मेरी हालत अवश्य खराब हो गई थी लेकिन मेरा ईमान दुरुस्त था और कृपण के धन की तरह मैं उसकी रक्षा में सचेत और सचेष्ट था। मैं अवैतनिक रूप से उनके यहाँ काम करता था। मैं यह कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता था कि लेडी डायना के मन में यह विचार कभी भी आवे कि रुपयों के लिये मैं इनका प्रेमी बनने आया हूँ। हमलोगों के संबंध निर्विकार थे और हमलोग किंवदन्तियो, फब्तियों और व्यंगों का निर्भीकता से सामना कर सकते थे।

मैंने प्रत्युत्तर में कहा:—"लेडी डायना! क्या आप चाहती हैं कि इस परीक्षा के लिये मैं अपने अखण्ड नियम को तोड़ दूं? क्या आप चाहती हैं कि मैं इस यंत्रके सामने आपको चूमूं? क्या आप अपने किसी पूर्व अनुभव की कल्पना से वह स्थिति नहीं पैदा कर सकतीं कि इस मनोवैज्ञानिक को आपके मनोभावों के विश्लेषण की सामग्री मिल जाय?"

मुझे झिड़कते हुए लेडी डायना ने कहा:—"जिरार्ड! तुम में सबसे बड़ा दोष यही है कि तुम किसी भी अवसर पर गंभीर नहीं हो सकते।"

उन्होंने मुझे कहने सुनने का अवसर भी नहीं दिया, प्रत्युत मुझे उस यंत्र के सामने खींच ले गईं और अपनी बाहुलता में मुझे कसकर जकड़ लिया। इस आकस्मिक आलिंगन से मैं इस तरह उन्मत्त हो उठा कि मैंने उन्हें चूम लिया। संभव है कि उसी जोश में प्रेम की कुछ बातें भी मेरे मुंह से निकल पड़तीं लेकिन इसी समय किसी की कर्कश आवाज मेरे कानों में पड़ी:—

"बस"

मैंने देखा कि निर्मम जर्मन सेनापति की भांति प्रोफेसर ट्रारिज काले परदे से बाहर निकल कर सामने खड़ा है। लेडी डायना मेरे बाहुपाश से अलग हो गईं और मैं भी प्रकृतस्थ हो गया।

प्रोफेसर ने कहा—"धन्यवाद ! डाक्टर फंकेलविज आपके विश्लेषण का चित्र आपको दे देंगे। आपकी प्रतिक्रियाएँ तथा आपकी अन्तर्चेतना की प्रवृत्तियों का मुझे पूरा ज्ञान हो गया। अन्य बातों के साथ मैं आपके बारे में यह कह सकता हूँ कि बचपन से ही आप में प्रभूत संपत्ति, अधिकार तथा स्वामित्व की आकांक्षा रही है। आप सम्राट् से कम अपने लिये पति नहीं चाहती थीं। आपकी आकांक्षायें मानवेतर हैं। आप आकाश-कुसुम की चाह रखती हैं। कोलम्बस की तरह आप भी मानवीय आकांक्षाओं के समुद्र को पार कर किसी ऐसे अमरीका का पता लगाना चाहती हैं जहां अति मानव बसते हों, जिनके पास प्रभूत संपत्ति के साथ साथ निःसीम कामुकता हो। आप पुनः उसी आराम कुर्सी पर बैठ जाइये और अपने स्वप्नकी बात कहिए जिसके चलते आपको यहां तक आना पड़ा।"

लेडी डायना चुपचाप आराम कुर्सी पर बैठ गईं। उस मनोवैज्ञानिक की बात टालना सहज नहीं था।

लेडी डायना:—"सब से पहले तो मैं आपको यह बतला देना चाहती हूँ कि मेरे स्वप्नों में कोई विशेषता नहीं रहती। साधारण स्त्रियोंकी भांति मैं अकसर स्वप्न देखा करती हूं। कभी वे नितान्त काल्पनिक होते हैं और कभी कभी अनुभूतिका भी पुट उनमें रहता है। लेकिन कल जो स्वप्न मैंने देखा था वह मेरे दिमाग में इस समय भी नाच रहा है क्योंकि उसके चित्र में एक तरह का तारतम्य है। इससे मेरा मन बार-बार कहता है कि यह साधारण स्वप्न नहीं है, बल्कि मेरे लिये एक तरह की चेतावनी है। मैंने देखा कि न जाने किस तरह मैं एक लाल देश में पहुँच गई हूँ। मै जिधर दृष्टि डालती हूँ उधर लाल ही लाल दिखाई देता है। वहाँ की भूमि, घास, पेड़ पौधे सभी लाल हैं। मेरे हाथ पाँव रस्सा या जंजीर से इस तरह जकड़ कर बाँध दिये गये हैं कि मैं हिलडोल नहीं सकती। उस

जंजीर के एक छोर को एक ठिगना आदमी पकड़े हुए है। उसे बौना भी नहीं कहा जा सकता है क्योंकि वह एक फुट से ज्यादा लम्बा नहीं था। उसका सरदार मेरी मुट्ठी के आकार का था। उसकी पोशाक भयानक थी और वह टेढ़ी मेढ़ी टोप पहने था। उसकी कमरपेटी से पांच या ६ खोपड़ियाँ लटक रही थीं।

"मैं व्यथा से कराहती हुई लाल धूल में गिरती पड़ती चली जा रही थी। जब कभी मैं रुकने का प्रयास करती तो मेरे पैर के तलवे में कोई सूई चुभो देता और मैं कराहती चल पड़ती। अचानक गुड़ियों के महल के आकार का बिल्लौर का एक महल मेरे सामने खड़ा दीख पड़ा। महल पूरी तरह पारदर्शी था। उसमें छोटे-छोटे बुर्ज और कबूतरखानों की तरह दरवाजे थे। उनके भीतर से लोगों के बातचीत करने का शब्द सुनाई पड़ता था लेकिन मैं किसी को देख नहीं पाती थी। वे पिजड़े में बन्द मुर्गों की तरह कुड़कुड़ा रहे थे। उसी ठिगने आदमी ने मुझे महल में घुसने का आदेश दिया। लेकिन उस कबूतर खाने में घुसना मेरे लिये संभव नहीं था। पहले मैंने अपनी हथेली भीतर डाली, तब अपनी कलाई और अन्त में कन्धे तक अपना हाथ डाल सकी। इससे अधिक अन्दर जाने की मैंने बहुत कोशिश की पर सब व्यर्थ था। मैं निराशा से बिलख बिलख कर रोने लगी। वह ठिगना आदमी लगातार सूई चुभोता रहा।

"मैंने अपना बायाँ हाथ ही अन्दर डाला था। अचानक उन्हें सैकड़ों नन्हें-नन्हें हाथों ने पकड़ लिया और मेरी अंगुलियो को करीब करीब उखाड़ लिया। इसके बाद जो कुछ हुआ उसे तो मैं जिन्दगी भर भी नहीं भूल सकूंगी। अन्त में मैंने महसूस किया कि मेरी कनिष्ठा अंगुली में विवाह की सादी अंगूठी पहनाई जा रही है। उसी समय किसी के गर्मगर्म होंठ मेरे हाथों को चूमने लगे। उस अदृश्य चुम्बन की याद कर मैं सिहर उठती हूँ। कितना भूखा था वह चुम्बन का

और कितनी तत्परता उसने प्रगट की थी। उस चुम्बन से मैं उन्मत्त हो उठी पर साथ ही घृणा का भी उदय मुझमें हो आया।

"मालूम होता है कि उसी समय मैं चीख उठी क्योंकि मैं चौंक कर उठ बैठी और देखा कि मेरी नौकरानी बिस्तर के पास खड़ी है। मैंने उससे पूछा कि तू यहां क्या कर रही है? मैं सोचती हूँ कि मेरी चीख इतनी तेज थी कि वह मेरे शयन-कक्ष में दौड़ी चली आई। उसे वापस जाने के लिये कह कर मैं पुनः सो गई। इसके बाद मैंने स्वप्न नहीं देखा।

"यह स्वप्न मुझे परीशान कर रहा है। मै शक्की स्वभाव की हू। इसके बारे में आपका क्या ख्याल है?"

प्रोफेसर ट्रारिज बड़े गौर से लेडी डायना की बातें सुन रहे थे। अन्त में उसने कहाः—

"स्वप्न के मनोविज्ञान का अध्ययन पहले पहल अरस्तू ने शुरू किया। उसके बाद अनेकों ने उनकी नकल की। लेकिन कोई उसका निर्दिष्ट कारण नहीं बता सका। कुछ कहते हैं कि एकाकी जीवन की यह प्रतिक्रिया है और कुछ इसे अन्तर्चेतना की प्रतिक्रिया बतलाते हैं। लेकिन मै यह जानने की चेष्टा करता हूं कि स्वप्न का कारण उत्तेजना है या अतृप्त आकांक्षा।

"अब मै आपके स्वप्न का विचार करता हूँ। आपके स्वप्न में मै दृश्य इन्द्रियों का प्रतिकूल प्रभाव पाता हूँ क्योंकि आपको सभी हरी चीजें लाल दीख पड़ीं। यह आकस्मिक कारण से भी हो सकता है। मान लीजिये कि आपकी पलकें आपकी तकिये की झालर से रगड़ खा गई हों।"

"डाक्टर! मेरे सिर के नीचे कभी तकिया नहीं रहती। जब कभी मेरी नींद खुलती है तो मैं उन्हें जमीन पर गिरी पाती हूँ।"

"आपका स्वप्न असाधारण आकार या विकृत रूप उपस्थित करता है।

इसका कारण यह हो सकता है कि रात को आप बहुत तंग गाउन पहन कर सोती हैं ।'

"डाक्टर ! गाउन पहन कर सोने की आदत मुझे नहीं है । जाड़ों में मैं पाजामा पहनती हूं और गर्मियों में कुछ नहीं ।"

लेकिन इस उत्तर से उस मनोवैज्ञानिक की गंभीरता में कोई अन्तर नहीं आया । वह अपना विश्लेषण कहता ही गया:-"उस अदृश्य चुम्बन का कारण किसी अतीत आनन्दानुभूति के स्मरण से उद्वेलित हो सकता है ।"

प्रोफ़ेसर ट्रारिज ने सारा संभावित विश्लेषण दे डाला लेकिन लेडी डायना को इससे संतोष नहीं हुआ । अन्त में उन्होंने अधीर होकर पूछा:—

"डाक्टर ! मैं यह जानना चाहती हूं कि इस स्वप्न का क्या मतलब हो सकता है । आपने इसका जो वैज्ञानिक विश्लेषण किया है उसके लिये मैं कृतज्ञ हूं । लेकिन मैं यह जानना चाहती हूं कि मेरे भविष्य पर इसका क्या असर पड़ सकता है ।"

प्रोफेसर ट्रारिज मौन थे । वह उठ खड़े हुए । अपने दोनों हाथों को अपने पैण्ट की जेब में डालकर उन्होंने व्यंग से कहा:—

"लेडी डायना ! आप गलत जगह आई हैं । यदि आप अपने स्वप्न का प्रभाव जानना चाहती हैं तो उन ढोंगियो के पास जाइये जो लंबी लंबी डींग हाँक कर लोगों को अपने जाल में फँसाया करते हैं ।"

इसके बाद उन्होंने बटन दबाकर घंटी बजाई और कहा:—

"डाक्टर फंकेलविज आपका मार्ग-प्रदर्शन करेंगे और आपका विश्लेषण दे देंगे ।"

लेडी डायना के साथ मैं बैठक में चला गया । लेडी डायना ने मुँह बना कर कहा—"यह कैसा चकमेबाज है ।"

मैंने कहाः—"वह बहुत बड़ा विद्वान है। आपने उसे कोई ज्योतिषी समझ लिया था क्या ?"

लेडी डायनाः—मूर्ख ! नादान ! खैर, उसकी फीस तो दे दो।"

"अच्छी बात है।

इसी समय डाक्टर फंकेलविज प्रगट हुए। उन्होंने लेडी डायना की ओर एक लिफाफा पढ़ा दिया। मैंने उनसे पूछाः—"क्या इस बातचीत के लिये फीस भी देनी पड़ेगी ?"

उसने कहा—जी हाँ।

"क्या फीस है ?"

"पैंसठ पाउण्ड।"

फीस देकर हमलोग चल पड़े। रास्ते में मैंने लिफाफा खोला और उस विश्लेषण को उत्सुकता से देखने लगा। मेरे कंधे पर झुककर लेडी डायना ने उस लकीरदार परछाईं को लक्ष्य कर कहाः—जिरार्ड ! वही तुम्हारा चुम्बन है।"

स्पष्ट छाया की काली रेखाओं की तरफ इशारा करते हुए मैंने कहाः—

"यह आपकी उन्माद की रेखा है। आपकी लोलुप अन्तर्वृत्ति गहरे प्रेम का उल्लास प्रगट करती है। वह प्रोफेसर ट्रारिज विचित्र जीव है ! किसी की छाया मात्र देख कर उसके हृदय के प्रेम को पढ़ने की कोशिश करना कितनी बड़ी धृष्टता है !

लेडी डायना के चुम्बन के आनन्द की अनुभूति मेरे मस्तिष्क में चक्कर काट रही थी। उसे हटाने के लिये मैंने यह मजाक छेड़ा था। लेकिन मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि उनका ध्यान मेरी तरफ होगा।

लेडी डायना ने पूछाः—"तुम उदास क्यों हो ?"

"स्वादिष्ट भोजन मुंह से लगाने के साथ ही यदि कोई झपट कर उसे छीन ले तो उस समय जो हालत होगी, उसे समझना कठिन नहीं है।"

"तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि मेरे विश्लेषण का चित्र ६ सौ फुट लंबा होता।"

"इतना भी थोड़ा है।"

"उसमें और जोड़ देने में तुम्हें बाधा कहां से आती है?"

"मेरा आत्मगौरव।"

लेडी डायना ने कनखियों से मेरी ओर देख कर कहा:—"जिराई। तुम भले ही संभ्रान्त हो, लकिन तुम प्रथम श्रेणी के शरारती हो।"

---

## २

मेरा पैदायशी नाम जिराई डेक्स्टायर था। अमेरीका की एक सुन्दरी से मेरा प्रेम हो जाने के कारण मैं प्रिंस सेलिमन की उपाधि से विभूषित हो गया। संप्रति मैं ब्रिटेन की एक कुलीन वर्ग की महिला का निजी सेक्रेटरी हूं। यह पद मैंने किसी आर्थिक लाभ के लिये नहीं स्वीकार किया, बल्कि इसलिये की मेरा जीवन निरुद्देश्य था।

मेरा विवाह ग्रिसेल्डा टर्नर से हुआ था। पहले पति से उन्हें एक पुत्री थी। मैं उसके साथ हिलने-मिलने लगा यद्यपि मेरा प्रयास उस ओर निष्फल रहा तो भी मेरी इतनी सी हरकत को मेरी पत्नी ने मेरी बहुत बड़ी बेवफाई माना और किसी भी तरह मुझे माफ करने लिये तैयार नहीं हुई। इन घटनाओं ने मेरे मस्तिष्क और साहस पर इतना भीषण प्रहार किया कि एक तरह से

निराश और निर्जीव हो कर मैंने न्यूयार्क छोड़ दिया। मेरे पास केवल एक दस्तक था जिसके बलपर मैं प्रिंस सेलिमन बना रह सकता था और मुझे पाँच हजार डालर सालाना मिलता रह सकता था। यही मेरी कुल आय थी।

पांच हजार डालर से अनेक तरह के छोटे मोटे रोजगार खड़ा किये जा सकते थे लेकिन मैं अपने जीवन से कुछ इस तरह निराश हो गया था कि मेरा मन किसी काम में नहीं लगता था और न किसी ओर मेरी प्रवृत्ति ही थी। ग्रिसेल्डा की याद मुझे बुरी तरह सता रही थी। उससे अलग होने में मैं सुख और दुख दोनों का अनुभव कर रहा था। सुख इसलिये कि ऐसी जालिम माहिला से मेरा पिण्ड छूटा और दुख इसलिये कि ऐसी स्नेह की प्रतिमा विरले ही मिल सकती थी।

अक्टूबर के मध्य में मैं लन्दन पहुंचा। यह मौसिम पतझड़ का था। पेड़ों से पत्ते झड़ गये थे। जो बचे भी थे वे सूर्य की रोशनी से भुन कर पीले पड़ गये थे। सूर्य की गरमी भी अपनी आखिरी साँस ले रही थी। मैं क्लान्त और भ्रान्त केंसिंगटन पार्क में अकेला घूमा करता था और अपनी नीरस आँखों से पीली घासों को देखा करता था। कभी-कभी मैं हाइड पार्क में भी घंटे दो घंटे के लिये चला जाया करता था और कभी-कभी क्यू पार्क के सुरम्य फूलों के सौन्दर्य के निरीक्षण में अपनी आन्तरिक वेदना को भूलने का यत्न करता था।

लन्दन का वातावरण विचित्र है। इससे तबीयत में एक विचित्र तूफान उठ जाता है। लोगों में पीने की प्रवृत्ति उत्तेजित कर देता है और आदमी को दर्शन की याद दिला देता है। लेकिन मेरी प्रवृत्ति न तो दर्शन की ओर थी और न शराब की ओर। दोनों में से एक में भी मुझे किसी तरह का आकर्षण नहीं रह गया था। कटे पतंग की तरह मैं बिना किसी आश्रय अथवा उदेश्य के दो महीने तक इधर-उधर भटकता रहा। इस जीवन से मैं ऊब उठा और मैं

किसी काम की तलाश में व्यग्र हो उठा। मैं इधर-उधर दौड़ धूप करने लगा। मैं फेरी के काम की बात भी सोचने लगा था। इस उद्देश्य से मैं उस महल्ले का चक्कर भी लगाने लगा जहाँ इस तरह के लोग कारबार करते हैं।

अपने पुराने परिचितों से मैं जान बूझकर बचता रहा। मैं किसी विरागी संन्यासी की तरह एकान्त बास कर रहा था। केंसिंगटन में मैंने किराये का एक फ्लैट ले लिया था जो मेरे अकेले के लिये पर्याप्त था।

एक दिन की बात है कि जो नौकर मुझे रोज खाना दे जाता था, उस दिन प्लेटों को टाइम्स अखबार पर रखकर ले आया। मैं अखबार पढ़ने का आदी नही था और न कभी अखबार खरीदता ही था। उस दिन मेरे मनमें न जाने क्या आया कि मैं उसे उलट कर देखने लगा। उस पृष्ठ पर अनेक तरह के रोचक समाचार थे। उन्हें पढ़ते पढ़ते मैं एक आकस्मिक विज्ञापन तक पहुँचा गया विज्ञापन इस प्रकार था—

"ब्रिटेन की कुलीन वर्ग की एक महिला के लिये एक प्राइवेट सेक्रेटरी की आवश्यकता है। व्यक्ति देखने में सुडौल और सुन्दर, ऊँचे कुल का, ऊँची रहन-सहन का तथा ऊँची शिक्षा प्राप्त हो। अन्तर्राष्ट्रीय रहन-सहन के तरीकों से पूर्ण परिचित हो। अंग्रेजी फ्रेंच तथा जर्मन भाषा धड़ल्ले से बोल सकता हो। विदेशी भी आवेदन पत्र भेज सकते हैं। बक्स नं० ७२० टाइम्स कार्यालय, लन्दन के पते पर आवेदन पत्र, विवरण, प्रमाण पत्र तथा फोटो के साथ भेजें।"

भोजन करते-करते मेरे मन में एक विचार उठा और मैं आप ही आप मुस्कुरा पड़ा। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि इस विज्ञापन में नियति का हाथ है। मेरे जीवन में परिवर्तन लाने के हेतु ही यह विज्ञापन मेरे हाथ में पड़ा है। उसके बाद मेरे ध्यान से वह बात उतर गई। दूसरे दिन पुनः टाइम्स की प्रति मेरे टेबुल पर पड़ी मिली। उसे देखते ही मुझे विज्ञापन की याद आ

गई। मैं क्षणभर सोचता विचारता रहा। मनमें अनेक तरह के भाव उठते रहे। कुछ स्थिर नहीं कर पा रहा था। अन्त में मैं अपनी जगह से उठा। अपना छपा चिट्ठी का कागज निकाला और उस पते पर सारी सामग्री के साथ आवेदन पत्र भेज दिया।

तीन दिन के बाद एक आदमी मुझे खोजता आया और मेरे हाथ पर एक नीले रंग का बड़ा लिफाफा उसने रख दिया। सुडौल अक्षरों में किसी महिला के हाथ से लिखा उसके अन्दर खत था। खत में नीचे लिखी मुख्तसर पंक्तियाँ थीं।

११४ बर्कले स्क्वायर, डबल्यू

प्रिय प्रिंस सेलिमन,

यदि आप आज तीसरे पहर तीन बजे मुझ से मिलने का कष्ट उठावें तो मैं अतिशय कृतज्ञ होऊंगी। आपकी प्रतीक्षा में—

डायना विनहम

पुनश्चः—अपने असली कागजात साथ लेते आवें। कर्मचारी की नियुक्ति में मैं इन बातों पर बहुत अधिक ध्यान देती हूं।

समाज में यह नाम इतना प्रसिद्ध था कि मैं उससे अनभिज्ञ नहीं रह सकता था। मुझे इस बात से बड़ा ही संतोष हुआ कि वाक्स नं० ७२० ऐसी सुन्दर महिला का प्रतिनिधि था। अब मुझे परिणाम की चिन्ता नहीं रही।

ठीक तीन बजे मैं ११४ वर्कले स्क्वायर के बरामदे में दाखिल हो गया। मुझे देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। बैठक में मैंने कदम रखा ही था कि लेडी डायना आ धमकीं। उनके शरीर पर महीन स्वच्छ धवल रेशम का वस्त्र शोभायमान था। ऊपर से उन्होंने सुनहले रंग का लबादा डाल रखा था। उनका सुनहला जूड़ा अपनी अनुपम छटा बिखेर रहा था।

लबादे में वे दबी जा रही थीं। उनकी बाहें खुली थीं। उनके पैर में मखम्ली रंग का सुकोमल चमड़े का जूता था। उनका रंग निर्विकार और निखरा हुआ था। उन्होंने अपना कोमल नाजुक हाथ बड़ी अदा के साथ मेरी ओर बढ़ा दिया। उनकी अंगूठी के हीरे की चमक से मेरी आँखें चौंधिया गईं। मैं सोच ही रहा था कि बात-चीत का सिलसिला किस तरह छेड़ूं कि लेडी डायना बोल उठीं :—

"तब मालूम होता है कि ग्रिसेल्डा के साथ संबंध टूट ही गया।"

उनकी बात से मैं चौंक उठा। इस पर वे हँस पड़ीं। मानों मुझे झकझोरते हुए उन्होंने कहा: —

"जनाब, आप यह न समझें कि न्यूयार्क में आपकी रंग-रेलियों का लन्दन में किसी को पता नहीं है। समुद्र के किनारे अपनी सौतेली बेटी के साथ आप जो प्रेम अभिनय कर रहे थे उसकी चर्चा यहाँ घर-घर थी। सब लोगों का यही ख्याल था कि ग्रिसेल्डा तुरत तलाक दे देगी। यह दुनियाँ जिसे लोग बहुत बड़ी समझते हैं, वास्तव में बड़ी छोटी है। लेकिन मैं तुमसे यह कह देना चाहती हूं कि मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि मेरा दो लाइन का यह विज्ञापन ग्रिसेल्डा के समान सुन्दरी के पति को यहां तक खींच लाया।

इतना कहकर उन्होंने सिगरेट का अनमोल डब्बा बढ़ा दिया और बोलीं:—

"तब उधर से अब कोई आशा नहीं रही।"

"लेडी डायना! इसका उत्तर हाँ और ना' दोनों हो सकता है। मैं बेताज का बादशाह हूं। मेरी साम्राज्ञी ने राज्य से निकाल दिया है और मैं इधर उधर मारा-मारा फिर रहा हूं।

"तलाक की पूरी तैयारी हो चुकी है?"

"मेरे कहने का मतलब यह नहीं है। बात यह है कि आज भी मैं ग्रिसेल्डा

को उसी तरह प्यार करता हूँ। लेकिन मेरे पत्र बैरन बिना खोले ही वापस कर दिये जाते हैं। इसलिये अपनी निर्दयी पत्नी का मारा यह पति हवा के झकोरों में झूलता अपना दिन काट रहा है। आपके विज्ञापन ने मुझे अपनी ओर खींचा। मैंने उसका जवाब दिया इसलिये नहीं कि मुझे रुपयों की जरूरत थी, बल्कि इसलिये कि मैं बेकारी से ऊब गया था और कुछ काम चाहता था। यदि आप मुझे अपनी सेवा में रखना चाहती हैं तो मै खुशी से अपनी सेवायें आपको अर्पित करना चाहता हूं। कहिए मुझे क्या करना होगा।"

"आपकी बातों में बड़ा रस है। यह फरासीसियों का स्वभाव ही है। वे बात करना खूब जानते हैं। मेरे सेक्रेटरी को सब कुछ करना होगा और कुछ भी नहीं। मैंने इस ख्याल से विज्ञापन नहीं दिया था कि मुझे प्रेमी की जरूरत है। यह बात मैं स्पष्ट कह देना चाहती हूं। आकाश में उड़नेवाली चिड़िया को आश्रय की कमी नहीं रहती। इसके लिये मैं टाइम्स में विज्ञापन न देती। यह तो आपको मालूम ही होगा कि मैं विधवा हूं। मेरे पति लार्ड विनहम खाने के लिये जीते थे और खाते ही खाते मरे। यह भवन, तीन मोटर, एक छोटा जहाज, जो मरम्मत के अभाव में दिनोंदिन रद्दी होता जा रहा है, प्रेमियों के चित्रों का एक सुन्दर संग्रह, बाइबिल जिसका पाठ अनी बेलियन करती थीं, एक स्वस्थ लड़का जो ब्राइटन गोल्फ क्लब में नौकर है और पचास पाउण्ड सालाना की वृत्ति जिसे मुझे हर तीसरे महीना डिनार्ड होटल में एक नौकरानी को भेजने पड़ते हैं, वे छोड़ गये हैं। यह सब बहुत बड़े झमेले का काम है। इसके साथ ही यदि मैं यह कहूं कि मेरे बैंकवाले मुझे ठगते रहते हैं, साल में मुझे भोज के ७३० निमन्त्रण मिला करते हैं और सब में शामिल होना मेरे लिये तभी संभव है जब मैं हर रात को ८ बजे अपने को काटकर दो बना दिया करूं। यदि मैं गिनती कराती जाऊ, तो मैं यह भी कह सकती हूं कि साधारण मिलने जुलनेवालों के अतिरिक्त

कम से कम साल में ६ प्रेमी मेरे हो ही जाते हैं। मैं प्रत्येक दातव्य संस्था को कुछ न कुछ दान देती हूं। महिला पुलिस का मैं कप्तान हूं। उत्तरी क्रायडन के चुनाव में मैं उमीदवार थी। साथ ही मैं यह बता देना चाहती हूं कि मेरी याददास्त बड़ी खराब है। मैं जोड़ना तक नहीं जानती, तब आप भलीभाँति समझ सकते हैं कि मुझे सेक्रेटरी क्यों चाहिये। जहां तक आपका संबंध है मुझे आप बहुत ज्यादा पसन्द हैं। मैं आपको नाम तथा ख्याति दोनों से जानती हूं। आप उन फ्रांसीसियों में नहीं हैं जो औरतों के पीछे इस तरह दौड़ते हैं जिस तरह कुत्ता कुत्तिया के पीछे दौड़ता है। मैं आपको एक बात से सचेत कर देनी चाहती हूं कि गैरवाजिब घनिष्ठता सदा नफरत पैदा करती है। मेरे लिये आप सेक्रेटरी की अपेक्षा साथी का काम अधिक संपन्न करेंगे। दूसरे शब्दो में मैं यह कह सकती हूं कि मेरे सोने के कमरे में आनेतक की आपको स्वाधीनता रहेगी। इसे आप अच्छी तरह समझ लीजिये। आपको मेरे स्वार्थों की देख भाल करनी होगी। आपको मुझे हितकर सलाह देनी होगी। यदि मैं कहीं गलती करने लगू तो आप मुझे रोकेंगे क्योंकि लोग कहते हैं कि मेरी श्रेणी की महिलायें बेवकूफी का बहुत काम करती हैं। साथ ही यदि कोई उचक्का मेरे रूप जाल से आकृष्ट होकर मेरे सन्निकट आना चाहे तो आप उसे मुझसे दूर रखने की भी कोशिश करेंगे।

क्षण भर रुककर उन्होंने अपने चेहरे पर हाथ फेरा, अपने बालो को सम्हाला और फिर बोलीं:—

"आवश्यकता पड़ने पर आपको मेरे साथ यात्रा भी करनी पड़ेगी। आपको यह मालूम ही होगा कि यात्रा से मुझे प्रगाढ़ प्रेम है। मैं सदा घूमती फिरती रहती हूं। यूरोप का ऐसा कौन देश है जहां मैं सैर के लिये नहीं गई हूं। कौन चुंगी घर होगा। जिसे दो चार बार मेरे असबाब को उलटने का मौका न मिला हो।

लोग जो कुछ कहें लेकिन मेरी तो यह धारणा है कि बुद्धि के बिकास के लिये यात्रा आवश्यक है। मुझे आशा है कि इन यात्राओं में आप हर तरह से मेरे सहायक और मददगार होंगे।

मैं कुछ कहना ही चाहता था कि वे फिर बोल उठीं:—

"आपकी योग्यता के अनुसार पुरस्कार देने की सामर्थ्य मुझ में नहीं है। भला प्रिंस को वेतन देने की हैसियत मुझे कहा! आपके मनोरंजन और सिगरेट वगैरह के खर्च के लिये मैं पांच सौ पाउण्ड मासिक दूंगी। क्या आपको यह स्वीकार है?

उस सुन्दरी के मुँह से इस तरह की बातें सुनकर मैं विचलित हो उठा। मैंने आजिजी से कहा:—"मुझे आपकी सभी शर्तें स्वीकार हैं, केवल वेतन नहीं। मैं रुपयेके लिये नौकरी करने नहीं आया हूं। मेरे खर्च लायक रुपये मेरे पास हैं। मैं आपका अवैतनिक सेक्रेटरी होकर रहना चाहता हूं। मेरे पास फालतू समय है और मैं वेकारी से तंग आ गया हूं।"

मेरे उत्तर से उन्हें विस्मय हुआ होगा क्योंकि मैंने देखा कि उन्होंने अपनी गर्दन झुका ली। बोलीं:—"मैं आपके एहसान का बोझ अपने सिर पर लादना नहीं चाहती। किसीसे बेगार या निःशुल्क सेवा लेना मैं नितान्त अनुचित समझती हूँ।"

"लेडी डायना! आपकी कृपा और आपकी सहानुभूति का मूल्य मेरे लिये कम नहीं होगा।"

"अच्छी बात है। अब केवल एक बात बाकी रह गई। नियम के पालन मात्र के ख्याल से मैं आपके कागजों को देख लेना चाहती हूं। बात यह है कि प्रिंस भी चोर और डाकू हो सकते हैं। जिससे मैं किसी तरह का संबंध स्थापित

करना चाहती हूँ उसके बारे में हर तरह से अपनी तसल्ली कर लेना चाहती हूं।

मैंने उनकी उत्सुकता मिटा दी। उन्होंने मरे कागज पत्रों को उलट पलट कर देखा और मुझे लौटा दिया। अन्त में उन्होंने कहा:—अच्छा होगा कि आप मेरा मकान भी घूम-फिर कर देख लें।

मैं उनके साथ हो लिया। उनके कमरे की सजावट उनकी परिमार्जित सुरुचि का परिचय देता था। जिस कमरे में जिस तरह की और जितनी मात्रा में जैसी सजावट होनी चाहिए थी उसी तरह की सजावटों से शयनकक्ष से लेकर बैठक तक प्रत्येक कमरा सजा हुआ था।

लेडी डायना का स्नान घर देखकर मैं दंग रह गया। वैसा स्नान घर बड़ी बड़ी सम्राज्ञी को भी मयस्सर नहीं होगा। और उनका शृगांर घर और भी संपन्न था। विविध प्रकार के सेण्ट और कास्मेटिक कतार से सजाये गये थे। चमड़े को मुलायम रखने के जो भी साधन संभव थे सब मौजूद थे।

दूसरे ही दिन मैं अपने नये पद पर जा डटा। मैंने अपना डेरा नहीं छोड़ा। लकिन वहां सिर्फ सोने भर के लिये जाता था, और बाकी सब समय इस रमणी की सेवा में मैंने अर्पित कर दिया। हर रोज उन्हें अपने दोस्तों से मेरा परिचय कराने का कोई न कोई अवसर मिल जाता था। उनलोगो को यह जानकर विस्मय होता था कि प्रिंस सेलिमन वर्कले स्कायर की इस विधवा का प्राइवेट सेक्रेटरी है। कुछ लोग तो यहां तक कानाफूसी करने लगे कि मैं उनके स्वार्थों की रक्षा की नीयत से नहीं, बल्कि उनकी सौजन्यता से लाभ उठाने ही यहां आया हूं। लेकिन मैंने इनलोगों की कानाफूसी की जरा भी परवा नहीं की। मेरे मन में चाहे जो भो भावना रही हो लेकिन मैं चौबीस घंटे में केवल दो बार उनके हाथों का चुम्बन मात्र कर लेता था।

प्रोफेसर ट्रारिज से मिलने के दूसरे दिन की बात है। मैं प्रायः ग्यारह बजे उनके यहां पहुँचा। उस समय तक वे अपने दैनिक कामों से निवृत्त होकर मेरे साथ काम करने के लिये तैयर हो जाती थीं। लेकिन उस दिन मेरे पहुँचते ही उनकी दासी जुलियट ने मुझसे कहाः—

"मेरी समझ में नहीं आता कि रात को मेरी मालकिन को क्या हो गया था। वे रात ग्यारह बजे यहां से एक दम साधारण लिवास में गईं और सवेरे पांच बजे वापस आई हैं। मैं उनके सामने गई तो उन्होंने कहाः—आज तुम्हें छुट्टी है। आराम कर सकती हो।"

इसी समय भीतर से मेरी पुकार हुईः—"जिरार्ड! अन्दर आवो। मैं तुमसे बातें करना चाहती हूं।"

मैं उनके शयन-कक्ष में जा पहुँचा। वे चारपाई पर लेटी थीं। उन्होंने मुझे अपने पास बैठने का इशारा किया। बोलीं:—

"जिरार्ड! मुझसे खफा न होना। रात को मुझसे बहुत गन्दा काम हो गया है। इसमें तुम्हारा ही दोष है। यदि तुम अपना दोष नहीं मानते तो इसका कारण इस मूर्ख प्रोफेसर के सवालों का है। बहुत बड़ा मूर्ख ही इस तरह का प्रश्न कर सकता था।

मैंने घूर कर उनकी ओर देखा।

"मैं तुम्हें बचन देती हूँ कि इस तरह की हरकत मुझ से फिर कभी नहीं होगी!"

उनकी स्निग्ध आँखें मेरे चेहरे पर जम गईं। उन आँखों में अविश्वास के लिये कोई स्थान नहीं था। उन्होंने बड़ी नर्मी से मुझसे पूछाः—

"जिरार्ड! क्या तुम सचमुच समझते हो कि मैं बड़ी खराब औरत हूं।"

अच्छे और बुरे की पहचान बहुत कठिन है। बहुत से लोग हैं जो ऊपर सुन्दर आवरणों से ढँके रहते हैं लेकिन उनके भीतर हलाहल भरा रहता है। 'विष

रस भरा कनक घट जैसे।' कुछ ऐसे भी होते हैं जो देखने में बुरे प्रतीत होते हैं लेकिन उनका हृदय आइने के समान निर्मल होता है। मैंने लेडी डायना को इसी श्रेणी में रखा और कहाः—

"आप बुरी औरत नहीं है। आप उदार हैं।"

"उदार! दानी!!" जिरार्ड। अतिशयोक्ति से काम मत लो। याद रखो कि स्वर्ग के एक कोने से लार्ड विनहम हमलोगों की ओर झांक रहे हैं जहां वे अपने भोजन प्रेमका मावजा चुका रहे हैं। शायद तुम्हारी यह उक्ति उन्हें उचित न प्रतीत हो।

"आपको यह समझना चाहिये कि मैं अलंकारिक भाषा में बोल रहा था।"

"ऐसी बात है। तब तो मुझे समझना चाहिए था कि तुम प्रकारान्तर से मुझे झिड़की दे रहे हो। यह उचित ही है। जोभी हो, मैं तुम्हें सच सच बातें बतला देना चाहती हूँ। संभव है किसी दिन मुझे अपने अस्तित्व के लिये असंभव काम भी करना पड़े और अपने यहां अवांछनीय लोगों का स्वागत करना पड़े"

"लेडी डायना! आपकी बातें मुझे चक्कर में डाल रही हैं। आपके मन में इस तरह की कल्पना क्यों उठ रही है। अनिच्छा पूर्वक कोई आचारण क्यों करेंगी?"

"यहीं तुम गलती पर हो जिरार्ड! क्योंकि तुम मेरे जीवन का विस्तृत वृत्तान्त नहीं जानते। तुम केवल पांच महीने से मेरे यहां हो। यह बहुत संभव है कि जल्द ही मेरी बर्बादी का परवाना कट जाय।"

"आपकी बर्बादी? क्यों और किस तरह?"

"युद्ध के बाद आय-कर इतना बढ गया कि लार्ड विनहम को केण्ट की अपनी सारी संपत्ति बेंच देनी पड़ी। उससे उन्हें करीब १५ लाख पाउण्ड मिले। उनकी मृत्यु के बाद मैंने उनका अधिक भाग खर्च कर डाला। मेरे

पास कुछ सरकारी बाण्ड, ५. फी सैकड़े ब्याज के कर्ज के बाण्ड तथा टैगनियका के कुछ हिस्से थे। ये भी मेरे व्यसनों में स्वाहा हो गये ? मेरे पास जो भी थोड़ी पूंजी बची है वह किसी न किसी रोजगार में फंसी है। वे ही मेरे सिरदर्द हो रहे हैं। तुमने सुमात्रा रबर और बंगाल के तेल के कारखाने के बारे में सुना होगा। कल रबर कम्पनी के बारे में जो समाचार छपे थे वे काफी चिन्ताजनक थे। और बंगाल में विद्रोह उठ खड़ा हुआ है। इससे तेल का काम भी रुका ही समझो।

"पर आपने पहले ये बातें मुझ से क्यों नहीं कहीं। मैंने कोशिश की होती कि—

"मैं खुद इन बातों से बेखबर थी। मेरे दलाल ने इन बातों की सूचना तक पहले मुझे कभी नहीं दी। मैं एक दिन उससे भी निपटूंगी। मुझे सन्देह है कि कम्पनी के बारे में जो लोग इस तरह के भयानक संवाद फैला रहे हैं उनसे उसने सांठ-गांठ कर रखी है। लेकिन असल बात यह है कि दो चार महीने में ही मेरी हालत खराब हो जायगी और मुझे मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा।

"मैंने आपका मतलब नहीं समझा।"

"मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं टेम्स नदी में कूद कर आत्महत्या करूंगी। मेरे कहने का मतलब यही है कि मेरी परिस्थिति ऐसी हो जा सकती है कि मुझे अनिच्छा से भी किसी धनी का पल्ला पकड़ना पड़े।"

इसी समय दरवाजे को किसी ने खटखटाया और दूसरे क्षण जुलियट ने लेडी डायना के हाथ में एक कार्ड ला कर रख दिया। लेडी डायना ने उसे जोर से पढ़ा :—

"करोलाइन लिमिटेड, १२६, न्यूबाण्ड स्ट्रीट ! यह तो मेरी पोशाक बनाने-

वाला है। शायद कोई नया तर्ज लेकर आया हो। जिरार्ड! जाकर देखो कि क्या बात है।"

मैं बैठक में पहुंचा। करोलाइन लिमिटेड के संचालक गंभीर मुद्रा में वहाँ बैठे थे। वे मुझे जानते थे। मुझे देखते ही उन्होंने झुककर अभिवादन किया और बिना किसी भूमिका के कहने लगेः—

"प्रिंस! आज मुझे लाचार होकर यहां आना पड़ा। यदि लेडी विनहम की कृपा हो जाय तो मैं अनुगृहीत होऊँगा।"

"शायद आप किसी नये तर्ज के प्रचार के लिये उनके नाम का इस्तेमाल करना चाहते हैं?"

"जी नहीं, मेरा मतलब वैसा कुछ नहीं है।"

इतना कहकर उन्होंने अपनी जेब से एक कागज निकाला और मेरी ओर बढ़ाते हुए कहाः—"हमलोग आपके अतिशय कृतज्ञ होंगे यदि आप इन बिलों का चुकता करा दें। विगत जाड़ों में उन्होने ग्यारह पोशाक बनवाये थे। उन्हें याद ही होगा। इनके अलावा और भी कई पोशाकें बनी थीं। सबों का मिल जुमिला हिसाब आठ हजार दो सौ पन्द्रह पाउण्ड होते हैं।"

मैंने उनकी ओर विस्मय से देखकर कहाः—"मेरी समझ में नहीं आता कि करोलाइन लिमिटेड के समान फर्म को तकादा करने की नौबत क्योंकर आ गई। लेडी डायना की पोशाक बनाने का सौभाग्य जिस फर्म को प्राप्त है वह तो इतना समझता है कि रुपयों की अदायगी इतमीनान से ही होगी। उसकी रकम कभी मारी तो नहीं ही जायगी।"

"प्रिंस! आपका कहना सर्वथा सही है। लेकिन कभी-कभी परिस्थितियां ऐसी आ जाती हैं कि आदमी को विवश होना पड़ता है। यदि वे बिल चुक जाते

तो हमलोग आपके कृतज्ञ होते। यदि पूरी रकम न भी मिल सके तो हिसाब मध्ये कुछ रकम मिल जाती।"

मैं उसका अभिप्राय तो समझ गया। पर मैंने कहा:—'यदि ऐसी बात है तब आपको यही बात साफ-साफ कहना चाहिये था। मुझे क्या मालूम कि आपका फर्म इस तरह के अर्थ-संकट में पड़ गया है।"

मेरी बातें सुनकर उसकी भौंहें तन गईं। यह बात वह बर्दाश्त नहीं कर सकता था कि उसके फर्म के बारे में किसी को गलतफहमी हो। इसलिये अपनी सफाई देते हुए उसने कहा:—

"प्रिंस! आप मुझे क्षमा करें। करोलाइन लिमिटेड की आर्थिक हालत किसी भी तहर संकटापन्न नहीं है। बात कुछ उलटी है। लेडी विनहम की आर्थिक हालत ने हमलोगों को चिन्ता में डाल दिया है। क्या आप फाइनेंसज़ समाचार पढ़ते हैं?

मुझे इतमीनान दिलाने के लिये उसने विगत सप्ताह का पत्र निकाला। उसमें स्टाक इक्सचेंज की सबसे हालकी सारिणी दी हुई थी। उसमें ये पंक्तियाँ लिखी थीं:—

## खतरे की संभावना

'हमलोगों को विश्वस्त सूत्र से मालूम हुआ है कि सुमात्रा रबर कम्पनी आजसे ही अपना कारोबार उठा रही है। लोग कहते हैं कि इसके पीछे बड़ी जबर्दस्त चाल है। लोगों का ख्याल है कि सरकार की ओर से जांच कमीशन बैठाया जायगा।'

"प्रिंस! यह बात सभी लोग जानते हैं कि लेडी विनहम का ज्यादातर रुपया रबर कम्पनी के हिस्सों में लगा है। इसलिये आपको समझना चाहिए कि हमलोग अपने रुपये के लिये क्यों इतने चिंतित हो उठे हैं। मुझे पूरी आशा है कि आप हमलोगों की मदद करेंगे।"

करोलाइन लिमिटेड के संचालक से मैंने पिण्ड छुड़ाया ही था कि डेयरिंग एण्ड पिलो के प्रतिनिधि आ धमके। ये मकानों की सजावट का काम करते थे। बर्कले स्कायर भवन में दो साल के अन्दर इन्होंने सजावट का जो काम किया था उसका चिट्ठा उन्होंने पेश किया। इनकी रकम नौ हजार पांच सौ पचपन पाउण्ड और कुछ शिलिंग थी।

मैंने देखा कि लेडी डायना जो बातें मुझसे चन्द मिनट पहले कह रही थीं वह प्रत्यक्ष होती दीखती हैं। किंकर्तव्य विमूढ़ मैं लेडी डायना के पास गया और सारी बातें उनसे कह दीं। मैंने उन्हें अखबार का वह समाचार भी सुना दिया।

इस समाचार से उन्हें इतना जबर्दस्त धक्का लगा कि उनका चेहरा पीला पड़ गया। उन्होंने अखबार को कस कर मुट्ठी में बांध लिया। बोलीं:—

"मेरे महाजनों का चिंतित और परीशान होना स्वभाविक है। रोटी के जो भी टुकड़े बचे हैं उन्हें हासिल करने के लिये चूहों का दौड़ लगाना उचित ही है।"

"लेकिन आप क्या करने जा रही हैं?"

"मैं लोम्बार्ड स्ट्रीट में अपने दलाल से मिलूंगी। मैं अपने वकील से मिल कर यह जानने का यत्न करूंगी कि मैं इस डाकू दलाल के खिलाफ किसी तरह की कानूनी कारवाई कर सकती हूं या नहीं। आज ही तीसरे पहर मैं सोमरसेट विल्फे से मिल कर कहूंगी कि वे इस रबर कम्पनी के मामले में कामन्स सभा के स्पीकर का ध्यान आकृष्ट करें। मैं तो इस चक्कर में रहूंगी। उधर वाइट टापू के यक्ष्मा निवारक समिति के अध्यक्ष साउथमिंस्टर की डचेज के पास इस आशय का खत लिख दो कि गैरिक थेटर में ता० ३ मई को यक्ष्मा सहायक कोष के लिये जो अभिनय होनेवाला है उसमें भाग लेना मैं स्वीकार

करती हूं। मेरे मन में एक नया विचार पैदा हुआ है। उसक बारे में मैं तुम्हारी राय जानना चाहूंगी। तुम जल्दीबाजी में कुछ कह मत देना। मुझे समझने की कोशिश करना। मेरी नाव में छेद हो गया है। उसमें पानी भर रहा है। वह धीरे-धीरे डूब रही है। यदि मेरी हालत इसी तरह बिगड़ती गई तो अगले गरमी तक मेरी नाव डूब जायगी। लेकिन मैं नहीं चाहती कि इसकी लशमात्र भी झलक किसीको मिले या इसकी चर्चा कहीं हो। इस संसार में सबसे बड़ी चीज यह देखना है कि अन्तिम समय भी मनुष्य किस तरह मुस्कुराता रह सकता है। मैं लन्दन के सारे निवासियों को अंगूठा दिखाकर उसी तर हँसते-हसते मरना चाहती हूं। इस विशाल नगर के शरीफ कहे जानेवाले कुत्तों, गीदड़ो और भेड़ियों को मैं पागल बना देना चाहती हूँ।

---

## ३

लेडी डायना ने मुझसे कहाः—"गैरिक के दातव्य अभिनय में भाग लेने के बारे में आप मुझे कोई नई सूझ नहीं दे सकते। ऐसी हालत में क्या मैं अपना विचार साफ-साफ आपके सामने रखूं। क्या मैं एक दम नग्न-नृत्य करूं तो अनुचित होगा ?"

उनका प्रस्ताव सुनकर मैं अवाक् रह गया। तोभी मेरे मुँह से निकल पड़ाः—"अनुचित तो कुछ नहीं होगा लेकिन आप मजाक कर रही हैं। यह तो आपके घनिष्ट मित्र भी स्वीकार करते हैं कि आपकी पतली कमर, आपकी नाजुक कलाई, आपका सुडौल शरीर अपना सानी नहीं रखते।"

लेडी डायनाः—"मेरी भी यही धारणा है कि मैं बदसूरत नहीं हूं। तब मैंने निश्चय कर लिया कि आज मैं नग्न-नृत्य कर सबको चकित कर दूंगी लेकिन

तुम अपने को सम्हाल कर रखना। लोग जो व्यंग करेंगे, ताने मारेंगे उससे विचलित मत होना।

गैरिक थेटर में उस दिन की जमात देखने लायक थी। बूढ़े, जवान, मोटे, दुबले सभी आजुटे थे क्योंकि यद्मा सहायक कोप के लिये यह अभिनय हो रहा था। समाज के कुलीन वर्ग के पुरुप और स्त्रियाँ सभी आ जुटे थे। विज्ञापन के प्रथम पंक्ति ने सबों को खींचकर इकट्ठा कर दिया था। विज्ञापन में लिखा थाः—

लेडी डायना विनहम का नग्न-नृत्य

लेडी डायना के दुश्मन कानाफूसी कर रहे थे कि इस नग्न-नृत्य के बाद उसे राजघराने से निमंत्रण नहीं मिलेगा और उसके दोस्त इस बात से प्रसन्न हो रहे थे कि लेडी डायना के इस साहस से यद्मा सहायक कोप को कई हजार की अधिक आमदनी हो जायगी और वे लोग उसके अतिशय कृतज्ञ होंगे।

कुछ लोग कहने लगेः—यह भी कैसी धृष्टता है कि बर्बादी के किनारे पर पहुंचकर भी इस तरह का नग्न-नृत्य का हौसला!"

इसमें किसी को भी सन्देह नहीं था कि दातव्य के इस काम में लेडी डायना के इस तरह योगदान से तहलका मच जायगा। यह स्वाभाविक ही था क्योंकि लन्दन के कुलीन समाज के सभी लोग जानते थे कि लेडी डायना के दिमाग से अपनी कुलीन वर्गीय भावना का लेशमात्र भी लोप नहीं हुआ था।

मैं लार्ड होमचेस्टर से यह कही रहा था कि लेडी डायना दिखलाई नहीं दे रही हैं लेकिन अभिनय के बाद अपने प्रशंसकों से मिलकर उन्हे बड़ी खुशी होगी कि जुलियट मेरे पास आकर बोलीः—"आपकी बुलाहट पोशाक-घर में है। लेडी डायना किसी बात के बारे में आपकी सलाह चाहती हैं।"

मैं डाकता, कूदता, कितनी चीजों को रौंदता लेडी डायना के पास पहुँच गया। शालीनता के वहिष्कार के बारे में मैंने बहुत साहित्य पढ़ा था। मेरा अमुभव भी इस संबंध में कम नहीं था। लेकिन मैं यह निः संकोच कह सकता हूँ कि लेडी डायना को मैं कभी भी समझ नहीं सका। इसलिये कपड़ों से लदे टेबुल के सामने उन्हें नग्न देखकर मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही। सामने के शीशे में वे अपना प्रतिविम्ब स्पष्ट देख रही थीं। लेकिन इसका उनके चेहरे पर कोई असर मैंने नहीं पाया। मुझे देखकर उन्होंने कहा:—मैं तुम से यह पूछना चाहती हूँ कि अपने केशमें मैं यह रूमाल बाधू या सफेद गुलाब का यह गजरा।"

मैंने कहा:—"आपके इस नग्न-नृत्य के अनुकूल वे फूल नहीं हैं। यदि मैं आपकी जगह होता तो अपने सुनहले बालों में मैं इसी रूमाल को बांधता।"

"तुम ठीक कह रहे हो···जुलियट रूमाल को मेरे बालों में ठीक कर दे।"

वे उठ खड़ी हुईं। अपने गुप्तांग के आस-पास के स्थान को उन्होंने बड़ी ही पतली माला से ढंक रखा था। पैरों में जूते थे और केहुनी तक झालर लटक रही थी। इसके अलावा उन्होंने किसी अन्य साधनों से अपने शरीर को उन पन्द्रह सौ दर्शकों से ढंकने का कोई प्रयत्न नहीं किया था। जो पर्दे के बाहर अधीर और उत्सुक बैठे थे।

मैंने कहा:—"आप लार्ड चेम्बरलेन को तो जानती हैं। इस तरह की हरकतों पर उनकी कड़ी नजर रहती है। क्या आपको इस बात का भय नहीं है कि वे क्रोध से आगबबूला हो जायंगे।"

"डर किस बात का! मैं कोई नयी बात तो करने नहीं जा रही हूँ। साथ ही दातव्य अभिनयों में इस तरह की हरकतें क्षम्य हैं। मै दुनिया को यह दिखला देना चाहती हूं कि लेडी वूपिंग स्वान मेरे बारे में झूठी अफवाहें फैला रही थीं।

"उन्होंने क्या कहा था ?"

"वे लोगों से कहती फिरती थीं कि मेरी जाँघें बड़ी स्थूल हैं।"

"तब तो आपको और भी तैयार रहना चाहिये। आप जल्दी कीजिये क्योंकि यह गाना समाप्त ही होनेवाला है और इसके बाद ही आपका नृत्य आरम्भ होगा।"

"तुम्हारी आँखों पर पट्टी बंधी है। तुम देखते नहीं कि मैं तैयार हूं। तुम आगे जाकर बैठो और मेरे नृत्य के समय लोग जो कुछ कहें उसकी खबर मुझे फौरन आकर देना।" इसके बाद उन्होंने त्योरी चढ़ा कर कहा:—"और लोग समझते हैं कि मैं खत्म हो गई। वे लोग यही कल्पना करते होंगे कि लेडी डायना किसी की प्रेयसी बन गई या सड़क के किसी चौराहे पर इत्र बेचती होगी। मैं भी उन्हें ऐसा चूना लगाऊँगी कि ये लोग जिन्दगी भर याद करेंगे।"

थेटर के एक कोने में बैठा मैं इस महिला के साहस की मन ही मन प्रशंसा करने लगा जिसे कल शाम को ही सर्वनाश का परवाना मिला था। इस व्यवसायिक उथल पुथल में उसकी सारी संपत्ति का तीन चौथाई हिस्सा समाप्त हो रहा था। तोभी वह साहस के साथ दुर्दिन का सामना करने के लिये तैयार है। ब्रिटिश कुलीन वर्ग को उपेक्षा से ठुकराने में उसने लेशमात्र भी आगापीछा नहीं किया जो कुलीन वर्ग अपनी कुरूपता को सदा पर्दे की आड़ में छिपाकर रखता है।

जनता अधीर होकर कुड़बुड़ा रही थी। इसी समय घंटी बजी। रोशनी का रंग लाल से नीला हो गया। परदा धीरे धीरे उठा। देहात का दृश्य सामने आया। पेड़ों की आड़ से लेडी डायना धीरे-धीरे प्रगट होने लगी। उनके घुटने झुके थे, उनका सिर छाती पर लटका था और दोनों हाथ सामने की ओर जुटे थे।

आगे की कुर्सियों पर बैठी कुछ महिलायें उत्तेजित होकर उठ खड़ी हुई

पुरुष समाज स्तब्ध हो गया। जहाँ तहाँ कानाफूसी होने लगी और भिन्न-भिन्न तरह की हलचलों से लोगों ने अपने-अपने विस्मय प्रगट किये। जगह-जगह से आक्षेप भी होने लगे।

"अरे वह तो सचमुच नंगी है।"

"कितनी वाहियात बात है।"

"जरा चुप भी तो रहो।"

"मजदूर दल के शासनारूढ़ होते ही चारों ओर अराजकता फैल गई। कितनी नफरत की बात।"

मेरे पीछे एक बूढ़े सज्जन बैठे थे। अपनी जवानी में हजरत अपनी हरकतों से शैतान को भी मात करते थे। बोले—"प्रिंस अलबर्ट के जमाने में इसे समाज से निकाल दिया गया होता और आक्सफोर्ड सर्कस के बीच मैदान में इसे कोड़े लगाये गये होते।"

उन्हें फटकारते हुए कालेज के एक छात्र ने कहाः—

"महाशय! आप सौन्दर्य की इस देवी का अपमान कर रहे हैं।"

"संगीत की मधुर ध्वनि क्षण क्षण मस्ती का तराना भरती जा रही थी तोभी व्यंग, कटाक्ष और आलोचना की सरिता की गति धीरे-धीरे तेज होती जा रही थी। ऊपर की गैलरी (दीर्घा) में बैठी एक रमणी अपनी जगह से उठ कर खड़ी हो गयी और घृणा से मुंह बनाकर बोलीः—"यह दृश्य देखकर कोई भी व्यक्ति कह सकता है कि हमलोग पूरे जंगली हैं।"

इस बात पर बहस छिड़ गई। पास ही बैठे एक सज्जन ने उसकी ओर झुक कर कहाः—

"यदि तुम औरत नहीं होती तो मैं इसी क्षण तुम्हारा कान ऐंठ देता।"

एक दूसरे व्यक्ति ने उस महिला का पक्ष लेते हुए कहाः—

"इस महिला का कहना सही है। क्षण भर के लिए बाहर तो आइये।"

"जरूर।"

दोनों जवाँमर्द एक दूसरे का दाँत तोड़ने या एक दूसरे को अपने रास्ते से हटाने के लिये वहाँ से बाहर चले गये। उधर लेडी डायना के नृत्य पर तालियाँ बज रही थीं। लेकिन लेडी डायना पर इसका कोई असर नहीं पड़ रहा था। वे उसी तरह उदासीन भाव से अपनी जगह पर खड़ी रही न हिलीं न डुलीं। संगीत की तान एकाएक बन्द हो गई। पुलिस के सिपाही जहाँ तहाँ से कुकुरमुत्ता की तरह प्रगट हो गये। आलोचना की भी धूम मच गई। कुछ लोग कला की महत्ता की दोहाई दे रहे थे और कुछ लोग सभ्यता के नाम पर दुलत्तियाँ झाड़ रहे थे। इस अभिनय का आयोजन साउथ मिस्टर की डचेज ने किया था। उनकी तो बुरी हालत थी क्योंकि कमेटी की दो सदस्या उनसे बुरी तरह उलझ रही थीं। एक लेडी डायना की प्रशंसा कर रही थी और दूसरी इस बेशर्मी पर बुरी तरह झल्ला उठी थी।

पुलिस के आ जाने से लोग शान्त हो गये। संगीत की लहरी फिर हिलोरें लेने लगी और उसके उतार चढ़ाव पर लेडी डायना थिरकने लगीं। दर्शक मंत्र-मुग्ध होकर उनका नृत्य देखने लगे। सब का मुंह बन्द हो गया। शायद किसी को इस बात का ख्याल तक नहीं रहा कि उनके सामने १९२५ ई० की एक कुलीन समाज की महिला नाच रही है जो पूर्ण बेशर्मी अख्तियार कर अपने अंग प्रत्यंग की लोच लोगों को दिखा रही है। संगीत की आवाज धीरे-धीरे क्षीण होने लगी। लेडी डायना एक बार पुनः घुटने के बल बैठ गईं। उन्होंने दोनों हाथ फैला दिये। अपने चमकते चेहरे को उगते सूर्यकी ओर इस तरह फेरा मानों वे नये प्रभात का स्वागत कर रही हों, जिसकी ताजगी उल्लुओं को गैलरी से भगा देगी।

तालियों की गड़गड़ाहट से थेटर का हाल इस तरह गूंज उठा कि कटाक्ष करनेवालों की टुटपुजिया आवाज उसीमें खो गई। मैं पोशाक घर की ओर दौड़ पड़ा। दरवाजे पर अखबारों के संवादाताओं की ठेलाठेली में मैं पिल पड़ा।

लेडी डायना के पोशाक-घर के दरवाजे पर संग्राम छिड़ा हुआ था। खैरियत यही थी कि वह वाग्युद्ध था। घंटेभरकी कसरत के बाद मैं उनके पास पहुंच सका। वे फूलों से लदी बैठी थीं।

मुझे देखते ही वे खिलखिला कर हस पड़ीं। अपनी सफलता पर वे फूली नहीं समा रही थीं। उन्होंने मुझसे कहा—"जिरार्ड! जीत मेरी रही। कैसी बेहूदगी थी। लेकिन यदि तुमने टेलिस्कोप से मुझे देखा होता तो तुम्हें तुरत मालूम हो जाता कि मैंने हंस की झिल्ली पहन रखी थी। साउथमिंस्टर की डचेज तो अपनी कृतज्ञता प्रगट करते नहीं अघाती थीं। वे कर रही थीं कि मेरे कारण यक्ष्मा सहायक कोष को आशातीत लाभ हुआ है लेकिन उनको आशंका है कि मैं समाज से अलग कर दी जाऊँगी पर मुझे इसकी रत्तीभर भी परवा नहीं। कमसे कम दो तीन दिन तक तो मेरी इस बेशर्मी की चर्चा बड़ी सरगर्मी से होती रहेगी।"

"आपको इसी की खुशी है कि लोग किसी न किसी तरह आपकी चर्चा करते रहें?"

"साधारण अवस्था में नहीं, लेकिन इस असाधारण परिस्थिति में मैं यह अवश्य चाहती हूं। संसार के सभी अखबारों में अपना नाम प्रकाशित होने के लिये कुछ न कुछ आसाधारण करना ही होगा।"

"क्यों?"

"इससे मेरी आनेवाली बर्बादी का समाचार मन्द पड़ जायगा। मुझे अभी

विश्वास नहीं है कि मैं खत्म हो गई। अभी तो एक कार्ड मेरे हाथ में है। मैं उसे भूल ही गई थी।"

"क्या आप पान के इक्के की बात कह रही हैं!"

"मैं थकान से चूर हूं। इसलिये आज रात मैं वह बात तुम्हें समझा नहीं सकूंगी। कल मैं अपना वह गुप्त भेद तुम पर प्रगट कर दूंगी।"

"उसके प्रगट होने पर मुझे क्या करना होगा?"

"तुम्हें? तुम्हें तुरत अपना विस्तर बांधकर बर्लिन के लिये रवाना हो जाना होगा।"

लेडी डायना का स्वप्न दूसरे ही दिन साकार हो कर सामने खड़ा हो गया। गैरिक थेटर के इस अभिनय की चर्चा लन्दन के सभी समाचार पत्रों में जोरो से हुई। टाइम्स से डेलीन्यूज तक, अनुदार मत वालों से लेकर उदार मत वाले अखबारों तक ने कल के नृत्य पर अखबारों के पन्ने के पन्ने रंग डाले थे। ब्रिटिश कुलीन वर्ग का अखबार मैंचेस्टर गार्जियन मौन रह गया। उसे न तो निन्दा करने का साहस हुआ और न प्रशंसा। उसने उस समाचार का शीर्षक इस प्रकार दिया थाः—

## एक कुलीन लेडी का साहसपूर्ण प्रदर्शन

डेली हेरल्ड ने, इस संबंध में मौन रहते हुए भी लेडी डायना के इस साहस की तारीफ ही की थी।

दूसरे दिन उनके निवास स्थान पर पहुंच कर मैंने देखा कि लेडी डायना अखबारों के समुद्र में तनमयता के साथ गोते लगा रही हैं। वे रह रह कर अपने चंचल केशपाश को पीछे की ओर हटातीं अपने नृत्य से संबंध रखने वाले समाचारों को पढ़ रही थीं।

मैंने कहाः——यदि इतने से आप को संतोष नहीं हो सकता तो आप और क्या चाहती हैं ?"

उन्होंने डेली मिरर के चौथे कालम की ओर इशारा कियाः—

"जिरार्ड ! जरा इस कमीने की धृष्टता तो देखो कि वह लोगों को यह कहकर उसका रहा है कि मैं भी नग्नता का स्कूल खोलने जा रही हूँ। कैसा बेहूदा ख्याल है। क्या तुमने डेली मेल पढ़ा है ? तुम जानते हो कि उस पत्र में क्या लिखा है ? उसका संवाददाता एच० जी० वेल्स के पास गया और उनसे मुलाकात कर यह जानना चाहा कि क्या आधुनिक समाज आदिकाल की नग्नता की ओर जा रहा है ? इस पत्रने तो कमाल कर दिया। और डेली ग्रफिक क्या लिखता है ? ज़रा चित्रों को तो देखो। मेरी तुलना काम देवकी पत्नी रति से करता है और हमलोगों के कद की तुलना करता है। वह कहता है कि मेरे नितंब कुछ पतले और मैं उनसे डेढ़ इंच लम्बी हूं। अब तो सारा संसार जान जायगा कि मैं रति का प्रतिरूप हूं, केवल मेरी देखभाल करनेवाला कोई कामदेव चाहिए।"

एक अखबार पलंग के नीचे चला गया था। लेडी डायना ने रेंग कर उसे उठाया और कहाः—"जिरार्ड ! यहां मेरा पुरस्कार है। इसे पढ़ कर तुम हंसते हंसते लोटपोट हो जावोगे। इस पत्र का संवाददाता लिखता हैः— कामन्स सभा में शीघ्र ही एक प्रस्ताव आनेवाला है कि यूनाइटेड किंगडम्स ( ग्रेट ब्रिटेन ) के रंगमंच पर पोशाक की नाप मुकर्रर कर दी जाय कि वह नाभि के ईर्दगिर्द पचीस वर्ग इंच हो। यह नाप जोख कर ठीक की जायगी।"

मैंने हँसते हुए पर गंभीर होकर कहाः—"लेडी डायना ! यह तो साफ बेहूदापन है"

"जिराई ! जब तुम इस तरह की उदार बातें कहते हो तो मेरे मन में तुम्हारे लिये बड़ा आदर उत्पन्न हो जाता है !"

इसके बाद वे गंभीर हो गईं। अपनी जगह से उठ खड़ी हुईं और मेरा हाथ पकड़ कर अपने सोने के कमरे में ले गईं। भीतर से दरवाजा बन्द कर उन्होंने मुझे अपने पास बैठा लिया और कहा:—

"मजाक की बातें छोड़कर हमलोगों को गंभीर होकर काम की बातें करना चाहिए। कल मैंने तमसे कहा था कि मेरी तरकश में एक तीर बचा है जिसे सफलता पूर्वक मैं अपने धनुप पर चढ़ा सकती हूँ और अभी भी अपनी बर्बादी को रोक सकती हूँ अर्थात् उससे मुझे इतनी आमदनी हो सकती है कि मुझे केवल दस हजार पाउण्ड सालाना से ही संतोप नहीं करना पड़ेगा। यह छिपा साधन इतनी दूर है कि मैं इसे भूल ही गई थी। उसका मूल्य क्या होगा, यह तो पीछे की बात है लेकिन यह जुआ खेलने लायक है। क्या तुम रूसी भापा में बातचीत कर सकते हो ?"

"टूटी-फूटी भापा बोल सकता हूँ।"

वे उठ खड़ी हुईं। महोगनी के एक सुन्दर दराज को उन्होंने खोला। उसके अन्दर से कागजों का एक पुलिन्दा निकाला जो खाकी रुमाल में बंधा था। उन्होंने कागजों को मेरे सामने फैला दिया और बोलीं:—

"मेरे पति स्वर्गीय लार्ड विनहम जो इस वक्त स्वर्ग का सुख लूट रहे हैं—एक समय सेण्ट पीटर्सबर्ग के दरबार में ब्रिटिश राजदूत के पद को सुशोभित कर रहे थे। उनके किसी व्यवहार से—जिसका विस्तृत विवरण मुझे आजतक नहीं मालूम हो सका—रूस के सम्राट् निकोलस उनसे इतने खुश हुए कि उन्होंने जार्जिया टिफलिस से उत्तर-पूर्व तेलाब के ढाल पर पन्द्रह हजार एकड़ तेल की भूमि उपहार स्वरूप उन्हें दी। लार्ड विनहम कुछ पूंजीपतियो से बात-

चीत भी कर चुके थे कि वे लोग इस भूमिका उपयोग करेंगे। इसी समय रूस में क्रान्ति हो गई और सम्राट निकोलस द्वितीय तथा उनके शासन का अन्त हो गया। उनकी वह पन्द्रह हजार एकड़ जमीन राष्ट्र की संपत्ति करार दे दी गई और उनका मालिकाना हक हवा हो गया। दस्तावेज कागज का टुकड़ा समझा गया। उसका परिणाम यह हुआ कि उनके एकमात्र उत्तराधिकारी मुझे लाखों का घाटा हो गया। लेकिन मेरे देश के साथ बोलशेविकों का जो नया संबंध कायम हो रहा है वह मुझे प्रेरित कर रहा है कि अपनी उस संपत्ति को प्राप्त करने की एक बार पुनः कोशिश करूँ।"

"आपके कहने का मतलब यह है कि आप उस पर अपना हक पुनः कायम करना चाहती हैं अथवा उससे तेल निकालने की आज्ञा चाहती हैं।"

"मेरा मतलब तुमने ठीक समझा। तेल की उस जमीन से मुझे जो आमदनी होगी उससे मेरी यह क्षति पूरी हो जायगी जो संप्रति मुझ पर घहरा पड़ी है। मैं तो सीधे लन्दन स्थित सोवियत रूस के व्यवसायिक मण्डल के अध्यक्ष से मिलना चाहती थी। लेकिन सर इरिक वेल्शमूरने मुझे वहां जाने से रोका। सर वेल्शमूर लार्ड विनहम के घनिष्ठतम मित्रों में है। मेरे बहुत शुभचिन्तक हैं। मैं उनसे अक्सर सलाह लिया करती हूँ। उनकी बातों से प्रगट हुआ कि मास्कों में इस व्यक्ति की बहुत अधिक कदर नहीं है। उससे मिलने से मुझे किसी तरह के लाभ की संभावना नहीं है। उनका कहना है कि बर्लिन में उद्योग करने से मेरा काम बन जायगा। अब तुम्हीं हो जो इस संकट से मेरा उद्धार कर सकते हो और मेरी आर्थिक दशा सुधार सकते हो। तुम्हें जल्द से जल्द बर्लिन के लिये प्रस्थान करना होगा। वहां जाकर तुम्हें मि० वरिचकिन से मिलना होगा। जर्मनी में वही बोलशेवियों का नेता है। उसे तुम्हें मेरे पक्ष में लाना होगा। यदि तुम यह कर सके तो मैं कम से कम तेल के बीस कुओं की मालकिन बन जाऊंगी।"

"लेडी डायना ! मैं आपका सच्चा मित्र और सहायक हूं आप को सुखी और संपन्न बनाने के लिये मैं असंभव काम भी कर सकता हूं। चाहे आपके कुँए में तेल निकले या न निकले।

"इन कागजों को तुम अपने साथ ले जावोगे। आवश्यकता पड़े तो तुम प्रलोभन या घूस देकर भी काम निकाल सकते हो। इस संबंध में तुम्हे पूरा अधिकार मैं देती हू। यदि उसकी बातचीत से यह प्रगट हो कि वह लाभ में हिस्सा चाहता है तो तुम उसे हिस्सेदार बना सकते हो और उचित हिस्सा उसे देकर राजी कर सकते हो। मेरे कहने का मतलब यह है कि जिस तरह भी हो उसे राजी करने की कोशिश करना। भारत से जो समाचर आरहे हैं वे बड़े ही निराशाजनक हैं। रूस वालों के उभाड़ने से बंगाल में विद्रोह खड़ा हो गया है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि वहां तेल की भयंकर कमी हो गई है और हिस्सों का भाव तेजी के साथ गिर रहा है। मेरा सारा भविष्य तुम्हारे हाथ मे है। तुम्हारी कोशिशो से यदि मेरा उद्धार नहीं होसका तो तुम निश्चय जानो कि तीन महीने के भीतर मुझे किसी करोड़पति की प्रेयसी बनना पड़ेगा। तुम्हे मुझसे अत्यधिक अनुराग है। तुम यह कभी नहीं चाहोगे कि तुम्हारी डायना किसी भारी भड़कम नशेबाज करोड़पति की मोटी तोंद पर लोटे।"

मेरी आन्तरिक भावों को वह कितना अधिक ताड़ गई थीं ! किस कला से उन्होंने मुझे उत्तेजित किया। उनकी बातों ने मेरे कोमलतर भावो को छू लिया। मैं उन्हे अपनी सगी बहन की तरह प्यार करता था लेकिन मेरा दुर्भाग्य यह था कि मेरी इस बहन को भगवान ने बुद्धि का लेश भी नहीं दिया था। उन्हें भले और बुरे की पहचान नहीं थी। साथ ही उन्हें अपने पर काबू नहीं था। मेरे हृदय में उनके लिये अगाध प्रेम था और यह प्रेम स्वान्तः सुखाय

था। मैं उन्हें इसलिये प्रेम करता था कि उनमें वह संकुचित हृदयता नहीं थी जो उस वर्ग के लोगों में बहुत ज्यादा पायी जाती हैं।

ता० १२ मई को शाम के सात बजे मैं जर्मनी की राजधानी बर्लिन के एक होटल में जा पहुँचा। इस होटल की शान निराली थी। गाड़ी से उतर कर मैंने टैक्सी की और अडलन होटल में दाखिल हो गया।

शादी के बाद ग्रिसेल्डा के साथ मैं यहां आया था। इसके बाद यहाँ आने का अवसर मुझे नहीं मिला था। उस समय से आज के समय में थोड़ा परिवर्तन हो गया था। वही रंग ढंग, वही रफ्तार, वही रवैया सब कुछ तो वही देखने में आया। केवल शासन-यंत्र बदल गया था। पुलिस की पोशाक बदल गई थी। वही पुरानी ट्राम गाड़ी उसी तरह शहर का चक्कर लगा रही थी।

शामको मैं एक इटालियन होटल में भोजन करने गया। संयोग की बात कि वहां सेमेविस्की से भेंट हो गई। यह रूसका रहनेवाला पियानो बजाने में सिद्धहस्त था। बहुत दिन पहले मिलान में मेरी इसके साथ जान पहचान हुई थी। मैंने उसे अपने साथ ही बैठाया और इधर उधर की बातों के बाद अपने मतलब की बात पर आया। मैंने उससे पूछा:—

"बर्लिनस्थित सोवियत के नेता मि० वरिर्चकिन को तो तुम जानते ही होगे? उनके बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं?"

उसने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा और मेरी ओर गौर से देख कर कहा— आपका मतलब बेरिचकिन से है। यहाँ औरतें उसे लियोनिड के नाम से पुकारती है। जिस तरह लोग किसी व्यवसाय में घुस कर ऊपर उठ जाते हैं उसी तरह यह भी बोलशेविकों में घुसकर इस ओहदे पर पहुँच गया है।"

"तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि उसे बोलशेविकों के सिद्धान्त में आस्था नहीं है?"

सेमेविस्की ने अपना हाथ इस तरह हिलाया मानों मेरी बात का वह समर्थन कर रहा हो। इसके बाद उसने सिगरेट का टुकड़ा राख की तश्तरी में डाल दिया और कहाः—

"मेरे दोस्त ! इस दुनियाँ में दो बातें हैं जिनके बारे में कोई भी निश्चित नाम कायम नहीं किया जा सकता। पहली बात तो स्त्री के बारे में है। यह कहना बहुत कठिन है कि किसी स्त्री का प्यार सच्चा है। वह धोखा नहीं दे रही है और दूसरी बात इन बोल्शेविकों के बारे में है। यह कहना बहुत कठिन है कि कौन सच्चा है और कौन झूठा। मान लो कि तुम बहुत बड़े लेखक हो। इस देश के होनहार युवक लेखक तुम्हारे सामने सिर झुकावेंगे और तुम्हारी प्रशंसा के पुल बांध देंगे। क्या तुम उनकी ईमानदारी पर विश्वास कर सकते हो ? रूस की वर्तमान हालत यह है कि अवसरवादी आज लेनिन के शव के सामने कीचड़ में लौटने के लिये तैयार हैं।"

"क्या तुम्हारा वरिचकिन से परिचय है ? क्या तुम उनके जीवन की खानगी बातें कुछ बतला सकते हो ?

"लियोनिड लेडीमिरोविच वरिचकिन सेण्ट पीटसवर्ग में उस समय छात्र था जब मैं वहाँ संगीत का अध्यापक था। वह फिनलेण्ड के किसी मिनिस्टर (मंत्री) का पुत्र था। उस समय के अन्य होनहार युवकों की भाँति उसने भी १६०५ की रूसी क्रान्ति में रुचि दिखलाई। यद्यपि वह बहुत ही सतर्क और सावधान था। उस समय उसकी उम्र १६ साल की थी। उसके बाद बारह साल तक मुझे उसकी कोई खबर नहीं मिली कि वह कहां था और क्या करता था। १६१७ में एक दिन मैं क्रान्तिकारियो का पत्र प्रवदा पढ़ रहा था। उस में लेनिन और लौनाचरस्की के लेखों के बीच में उसका भी एक छोटा लेख देखा। मैंने अपने मन में कहाः— 'मैं देखता हूँ कि मेरे दोस्त वरिचकिन नरम चारा के फेर में हैं। मालूम होता है

कि उसका भ्रम जाता रहा और उसकी आकाँक्षा पूरी नहीं हो सकी। बोलशविकों के बीच में उसका नाम देखकर मुझे अत्यधिक विस्मय हुआ और मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि इसके लिये उसे आवश्य ही मावजा के रूपमें धन और प्रतिष्ठा दोनों मिलते होंगे। अच्छे बोलशविक की पहचान यही है कि उसकी सारी आकांक्षाओं पर कभी पानी फिर गया हो। वह हर तरह से हताश, निराश और पैरों तले रौंदा गया हो। रुमानी कालेज के ध्वंस के बाद ही मैं उसके पास दौड़ा गया। उसने विजयोल्लास के साथ मुझसे कहाः—"तुम्हारे लिये इतना सबूत काफी है। हमलोग अधिकारारूढ़ हैं। हमलोग क्रान्ति को पूर्ण सफल बनाना चाहते हैं। जो लोग हमलोगों का साथ नहीं देना चाहते उन्हें हमलोग बतला देना चाहते हैं कि बोलशविकों के जेलों की काल कोठरियाँ कैसी होती हैं। मैं तुम्हें एक नेक सलाह देना चाहता हूं। मैं नहीं चाहता कि व्यर्थ में तुम्हारी हत्या की जाय। तुम्हारे लिये यही उचित होगा कि तुम अपना बोरिया-बिस्तर और साज-सामान लेकर आज ही रात को यहाँ से कूँच कर जावो। उन्हें तुम्हारी गन्ध मिलने से पहले ही हेलसिंगफर का रास्ता पकड़ो।" मैंने एक क्षण की भी देर नहीं की और स्टाकहोम जा पहुँचा। अपना देश इस तरह छोड़ देने में मुझे लेशमात्र भी दुख नहीं हुआ। उस दिन के बाद से उससे मेरी मुलाकात तो नहीं हुई लेकिन उसके बारे में मुझे बहुत सुनने को मिला। तुम्हें इस बात का भ्रम नहीं होना चाहिये कि समाजवाद के सिद्धान्तों ने उसे अचानक प्रभावित किया। कलका वह समाजवादी पूंजीवाद के अंगूर के गुच्छों की ओर लालायित दृष्टि से देख रहा है। भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया कि वह उसके मधुर फल को चख सके। जिस प्रिंसेज की तरफ उसका झुकाव था उसने भी उसका ख्याल नहीं किया। इसलिये उसे पूंजीवाद से घृणा हो गई और अपनी प्रेयसी मैडम मौराविफ की मदद से वह बोलशविकों के दल में आ मिला।"

"क्या तुम उस मैडम मौराविफ की चर्चा कर रहे हो जिसने १६१८ में क्रूरता और जुल्म का नग्न प्रदर्शन किया था, जिसने पीटर और पाल के किले में रूस के उन अभागे २६ विद्वानों को अपने सामने सूली पर चढ़वा दिया था?"

"हां। आठ साल से वही मैडम मौराविफ वरिचकिन की प्रयेसी है। वही उसे उत्साहित करती रहती है। वही उसका पथ-प्रदर्शन करती है। वही उसे आतंकित करती रहती है। मित्र! वह इरिना मौराविफ आसाधारण महिला है। वह उन लोगों में है जो मनुष्य के सुख की कल्पना तोपों के गोलों में करते हैं और जो उसका विरोध करते हैं उन्हें वह चुपचाप सोलो के बर्फीले मैदान में भिजवा देती है। तुम्हारे रोमांचक उपन्यासकार रूसी महिलाओं के आकर्षक सौन्दर्य का जो चित्रण करते हैं उनमें सचाई की मात्रा बहुत कम रहती है। वे इरिना मोराविफ में सब कुछ पा सकते हैं। उसे शैतान ने पाला है। उसने एक स्तन से तो मार्क्सवाद का पयपान किया और दूसरे स्तन से जहर का। आज वह लाल रूस की भाग्य विधाता है।

---

४

हमलोग आमने सामने बैठे हैं। हमलोगों के बीच में केवल एक टेबुल का व्यवधान है। दीवाल पर कार्लमार्क्स का चित्र तथा रूसी भाषा में कुछ घोषणा टंगी है। टेबुल पर कागजों का अम्बार इधर उधर बेतरतीबवार बिखरा हुआ है। सामने की खिड़की से वह महल साफ दिखाई दे रहा था जिसमें किसी दिन प्रिंस गोआचंक फ्रांज का निवास था। इस महल के चारों ओर

घने पेड़ थे जो इसे इस तरह शीतलता प्रदान कर रहे थे जिस तरह गोश्त को चारों ओर से बर्फ शीतलता प्रदान करती है ।

मि० लियोनिड लादिमिराविच वरिचकिन खास तरह का सिगरेट पी रहे थे। उनकी टाई में अति सुन्दर मोती चमक रही थी। मैंने अपने मन में समझा था कि सोवियत रूस का यह नेता साधारण लबादा पहने हुए होगा लेकिन उसे नीचे से ऊपर तक सुन्दर पोशाक से सुसज्जित देखकर मैं तो दंग रह गया। उस तरह की पोशाक तो बड़े बड़े रईसों को भी मयस्सर नहीं होती होगी। मैं अपने साथ जो परिचय पत्र लेकर आया था उसने बड़ा काम किया। हमलोगों की प्रथम मुलाकात प्रेमपूर्वक हुई। दिखावापन का कहीं नाम निशान नहीं था। मुझे पहले से ही सूचना मिल गई थी कि विदेशों के खिताबवाले लोगों का बोलशेविक नेता आदर से स्वागत करते हैं। मैं यह निःसंकोच कह सकता हूँ कि मि० बरिचकिन मेरे प्रति आवश्यकता से अधिक उदार निकले। उनके चिकने काले बाल पीछे की तरफ लटक रहे थे। उनकी घनी काली दाढ़ी खूब संवारी हुई थी। उनका गोरा चिट्टा रंग और उनका लंबा चेहरा उनके तातार होने का सबूत दे रहा था। बातचीत से वे राजनीति कुशल प्रतीत हुए।

उन्होंने मेरे कागजों की खूब जांच की। छानबीन कर उन्हें देखा। उन्होंने सरकारी कागजात निकाले और उससे तारीख का मिलान किया। अन्तमें उन्होंने कहाः—

"इसमें किसी तरह का सन्देह नहीं है कि आपके कागजपत्र सही हैं। लार्ड विनहमके दस्तावेज की रजिस्टरी उस समय हुई थी जब हमारे देश का शासन विदेशियों के हाथ में था। लेकिन आपको तो मालूम ही है कि हमलोगों ने रूस की सारी संपत्ति का राष्ट्रीकरण कर डाला है। १९१७ के २६ अक्टूबर की डिग्री के अनुसार संपत्ति पर व्यक्तिगत अधिकार का सर्वदा के लिये

अन्तकर दिया गया है। अब जमीन केवल उन मजदूरों को दी जाती है जो उन पर काम करना चाहते हैं। लेकिन १६२० में मास्को के बोलशेविक दल ने निश्चय किया कि विदेशी पूंजी का सर्वथा वहिष्कार व्यवहारिक नहीं होगा। इसलिये यह निर्णय किया गया कि खास हालतों में साधारण नियम के विपरीत भी काम किया जा सकता है। आपकी बातों से यह प्रगट होता है कि लेडी विनहम अपनी उस भूमि से तेल निकालने के लिये कतिपय ब्रिटिश पूंजीपतियों के सहयोग से काम करना चाहती हैं। मैं इस प्रस्ताव पर विचार करूँगा। वह पचास साठ हजार डालर के मूल्य की चीज है, इसलिये इस पर अच्छी तरह विचार करके ही कोई निर्णय किया जा सकेगा।"

"मि० वरिचकिन! यदि आप मास्को के अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट कर उनकी दिलचस्पी इस काम में ला सकें तो लेडी विनहम अतिशय कृतज्ञ होगी।"

इसी तरह की बातें हमलोगों में देर तक होती रहीं। आध घंटे की बात-चीत में मैंने देखा कि सोवियत रुस का यह प्रतिनिधि कोई आधा दर्जन सिगरेट पी गया। इतनी देर में हमलोगों में एक तरह की घनिष्टता हो गई और बात-चीत भी उसी ढंग से होने लगी। मैंने यह भी देखा कि वरिचकिन का जितना ज्यादा झुकाव लेडी डायना के व्यक्तित्व की ओर है उसकी अपेक्षा इस रोजगार में हिस्सा पाने की ओर नहीं के बराबर है। लेकिन उस ओर उनका उत्साह बढ़ाने का लेशमात्र भी प्रयास मेरी ओर से नहीं हुआ था।"

उन्होंने कहाः—"स्वर्गीय लार्ड विनहम की विधवा पत्नी के बारे में मुझे बहुत कुछ जानकारी है। पूंजीवादी तथा साम्यवादी आर्थिक योजनाओं के अध्ययन के बीच भी मुझे इतना समय मिल जाता है कि मैं अंग्रेजी सचित्र पत्रों को देख सकूं। उन पत्रों से प्रगट होता है कि लन्दन की वे सबसे अधिक सुन्दर रमणी हैं।"

"लोगों का ख्याल तो यही है कि वे बहुत अधिक सुन्दर हैं।"

"उनका अपना खास व्यक्तित्व भी है।"

"मैं उन्हें असाधारण महिला समझता हूँ।

"तब मैं आपसे स्पष्ट कह देना चाहता हूं कि मुझे सुन्दर महिलाओं से मिलने में किसी भी तरह का एतराज नहीं है। मैं उनके बारे में विस्तृत समाचार जानना चाहता हूं। लेकिन आज मैं काम में बहुत अधिक व्यस्त हूँ। इसलिए यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो आज रात को मेरी दावत स्वीकार करें।

"मैं आपके निमन्त्रण का सहर्ष स्वागत करता हूं।"

"बड़ी कृपा। मैं आठ बजे अडलन होटल से आपको ले लूंगा।"

मैं उठकर खड़ा ही हुआ था कि उसके दफ्तर का दरवाजा तेजी से खुला और एक दुबली-पतली औरत साधारण लिबास में इतमीनान के साथ वहाँ दाखिल हुई, मानो वहाँ आने-जाने की उसे पूरी आजादी हो। उस समय तक मुझे उस महिला का कोई परिचय नहीं मिला था। लेकिन उसका इतमीनान और उसकी तीव्र दृष्टि ने मुझे विस्मय में डाल दिया। उसने मेरी ओर एक बार दृष्टि-निक्षेप-मात्र करने की कृपा की। अपने तरीके से उसे सुन्दर भी हम कह सकते हैं; लेकिन उसके पतले होंठ कोमल भावनाओं के सूचक नहीं थे। उन्हें देखकर यह कोई नहीं कह सकता था कि वह जितनी सुन्दर है, उसका हृदय भी उतना ही उदार है। उसकी पीली नीली आँखों में भी ममता का कोई लक्षण नहीं था। उसके हाथ में लम्बा-चौड़ा सरकारी तार था। उसने नकशा के साथ उस तार को वरिचकिन के टेबुल पर पटक दिया और बड़ी ही संयत भाषा में दृढ़ता के साथ अपने दोनों कन्धों को हिलाते हुए बोली:—

"स्टेफनोविच की इस अन्तिम बेवकूफी को पढ़िए। हनोवर के जो कारीगर कज़ाक टर्बाइनकी देख-रेख करनेवाले हैं, उन्हें उसने विसा ( पासपोर्ट ) देना

अस्वीकार कर दिया है। इससे बढ़कर मूर्खता की बात और क्या हो सकती है ?"

लेकिन उस वक्त वरिचकिन की दिलचस्पी मेरे काम की ओर जितना ज्यादा थी, उतना कजाक के उस टर्वाइन की ओर न थी। उन्होंने उस महिला से मेरा परिचय कराते हुए कहाः—

"आप प्रिंस सेलिमन हैं। आप लन्दन से आये हैं।"

इतना कहकर उन्होंने उस महिला की ओर देखा और कहाः—

"और आप हैं मेडम इरिना अलेक्जण्ड्रोना मोराविफ।"

मैंने आदर के साथ मेडम इरिना मोराविफ का अभिवादन किया और अपने आश्चर्य और विस्मय को भरसक दबाने का प्रयत्न करता हुआ उन्हें गौर से देखा। सेमेवस्की ने उनका जो परिचय दिया था उससे मैंने यही कल्पना की थी, वह कोई असाधारण मिजाज की औरत होगी, जो मुझे देखते ही गर्दनिया देकर वाहर कर देगी। मैंने एक वार पुनः महसूस किया कि कल्पना और वास्तविकता में कितना अधिक अन्तर होता है। लोग कल्पना के आधार पर जो चित्र खींचते हैं, वह वास्तविकता के सामने आते ही काफूर की तरह उड़ जाता है। इसे देखकर कौन कल्पना कर सकता था कि इस दुबली-पतली महिला ने १९१८ के रक्त-रंजित प्रदर्शन में उस तरह का खूँखार अभिनय किया होगा और उसके कोमल मुखारविन्द से मौत की सजा निकली होगी ?

मिस्टर बरिचकिन ने कहाः—

"प्रिंस सेलिमन लार्ड विनहम के उत्तराधिकारी का प्रतिनिधि बनकर यहाँ आये हैं। जार के शासन-काल में लार्ड विनहम को जार्जिया में तेल निकालने के लिए कुछ जमीन जागीरस्वरूप मिली थी। उसी पर वे अपना दावा पेश कर रहे हैं और हमारी सरकार से तेल निकालने की रिआयत प्राप्त करना

चाहते हैं। आज रात को उन्होंने मुझे दावत दी है। वहीं हमलोग इस संबंध में बातचीत करेंगे ।

वरिचकिन ने मेरे काम के बारे में जो कुछ कहा, उसने मुझे चिन्ता में डाल दिया। उन्होंने 'लार्ड विनहम के उत्तराधिकारी' शब्द का प्रयोग किया था, लेडी डायना की चर्चा तक नहीं की थी। दावत उन्होंने मुझे दी थी। मैं उनका मेहमान था; लेकिन दावत को भी उन्होंने मेरे ही सिर पर थोप दिया, मानों वे मेरे मेहमान थे। मेरी समझ में नहीं आया कि इसका क्या कारण है

मैडम मौराविक ने मेरी ओर क्षण भर गौर से देखकर पूछा—प्रिंस ! आप उनके उत्तराधिकारी के प्रतिनिधि हैं ?

"जी हाँ ।"

"क्या कई उत्तराधिकारी हैं ?"

मैंने देखा कि वरिचकिन मुझे घूरकर देख रहा है। मुझे यह समझने में देर नहीं लगी कि उसके इस तरह घूरने का तात्पर्य क्या था। वह नहीं चाहता था कि मैं सच बात कहकर उसका राज खोल दूं। इसलिए मैंने उत्तर में कहा:—

"दो नाबालिक हैं। उनकी देख-रेख ट्रस्टी करते हैं।"

मैंने तिरछी नजर वरिचकिन पर डाली। मैंने देखा कि मेरे इस उत्तर से उसे बड़ा संतोष हुआ। लेकिन मैडम मौराविफ इतने से ही संतुष्ट होनेवाली महिला नहीं थीं। उनकी जिरह जारी रही। उन्होंने कहा:—

"कल ही लन्दन के किसी पत्र में मैंने लेडी विनहम के बारे में बहुत बड़ा लेख पढ़ा था। उस लेख से प्रगट होता है कि लन्दन के किसी थियेटर में उसने बेशर्मी का नृत्य किया था। उसके उस आचरण से जनता में बहुत अधिक क्षोभ है। क्या उस महिला का लार्ड विनहम से कोई संबंध है ?"

"वह उनकी विधवा है। लेकिन उसके पिता से उसे प्रचुर संपत्ति मिली है। स्वर्गीय लार्ड विनहम की संपत्ति पर उसका कोई दावा नहीं है।"

इस अदम्य महिला के साथ दो-चार और सवाल जवाब हुए। इसके बाद मैं वहां से रवाना हो गया। बरामदे में मिस्टर वरिचकिन ने मेरा हाथ जोर से दबाते हुए कहा—"मैं आपकी जितनी प्रशंसा करूँ, थोड़ी होगी। आपने स्थिति को खूब सम्हाला। मैं आठ बजे आपके पास पहुँच जाऊँगा। आप इतमीनान रखिए। मैं आपसे बाहर नहीं हूं।"

मैं सोवियत दफ्तर से घबराया हुआ-सा निकला। भोजन के समय तक मैडम मोगाविफ का चित्र मेरी आँखों के सामने नाचता रहा। उस क्षीणकाय महिला ने पत्थर के समान कलेजा रखनेवालों को भी दहला दिया था। क्रूरता की तो वह साक्षात् प्रतिमा थी।

होटल के मेरे कमरे में टेबुल के सहारे सुनहले फ्रेम में मढ़ी लेडी विनहम की तस्वीर रखी थी। वरिचकिन ने प्रवेश करते ही उस तस्वीर को उठा लिया और पूछा—क्या यह लेडी विनहम का चित्र है?"

"आपका अनुमान सही है! क्या इस चित्र में उनका सौन्दर्य फूटा नहीं पड़ रहा है?"

"गजब का सौन्दर्य मिला है इस महिला को!"

"वे उस चित्र को गौर से देखने लगे। उनकी काली आँखें चमक उठीं। उनके चेहरे से विस्मय टपक रहा था। उन्होंने कहाः—

"ओह! कितना सौन्दर्य इसमें कूट-कूटकर भरा है। समस्त नारी जाति की सुन्दरता बटोरकर सौन्दर्य की इस प्रतिमा में उँड़ेल दिया गया है।"

इसके बाद उन्होंने बड़ी सफाई से कहाः—

"मित्र ! तुम बड़े कूट राजनीतिज्ञ हो। इस सौदा के साथ लेडी विनहम का संबंध अस्वीकार कर तुमने बहुत बड़ा काम किया है। तुम्हारी यह चाल बड़ी कामयाब रही।"

"मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि इसी तरह का कोई उत्तर आपके अनुकूल होगा। मेरा अनुमान है कि मैं यह समझने में गलती नहीं कर रहा हूं कि आपके राजनीतिक जीवन के निर्माण में मेडम मौराविफ का बहुत बड़ा हाथ है।"

मेरी बात सुनकर वे खिलखिलाकर हँस पड़े। बोले—"तुम्हारा अनुमान सोलहो आना सच है। आज जो कुछ भी हूं, उसी की बदौलत हूं। विगत आठ वर्षों से वह तन्मयता से मेरी सेवा में तत्पर है। मेरी सारी व्यवस्था उसके ही हाथों में है। आठ वर्षों से वह यही करती आ रही है।"

मैंने कहा—"लेकिन सुन्दरियां प्रायः बोझ हुआ करती हैं।"

वरिचकिन—"लेकिन मेरा तो अस्तित्व ही उसपर निर्भर है। इसलिये मुझे इसका प्रतिकार करना पड़ेगा। अन्यथा मेरे अस्तित्व को ही वह मिटा देगी। लेकिन मैं क्या कह गया। इन बातों की चर्चा उचित नहीं थी।"

मैंने कहा—"आप इसकी लेशमात्र भी चिन्ता न करें। मैं इसकी कहीं अन्यत्र चर्चा नहीं करूँगा। मैं आपकी बातों को इस तरह पचा डालूंगा जिस तरह अन्न को पचाया जाता है।"

"हमलोगों की मैत्री अकस्मात् होने के कारण परम स्वाभाविक है। क्यों? आप भी सिगरेट लें। मैं क्या करूं? मुझमें बहुत बड़ी कमजोरी है कि मैं इतना ज्यादा सिगरेट पीता हूं। मेरे कम्बल तक जल जाते हैं।"

"मैं तैयार हूं। भोजन के लिये कहां चलियेगा।"

"वलहाला में। वहाँ के सभी लोग मुझे जानते हैं। मेरे खाने-पीने का वहां हर तरह का इन्तजाम रहता है। अच्छी से अच्छी शराब वहां मुझे

मिल जाती है। होटलवाले इसका प्रबन्ध मेरे लिए कर देते हैं। पिछली बार रूस की स्थिति के कारण वे लोग मुझे वैसी शराब नहीं देना चाहते थे। इसपर मैंने कहा—'अगर तुमलोग शम्पेन (उत्तम शराब) पैदा करनेवाले देश पर कब्जा कर लोगे, तो क्या तुम फ्रांसीसियों को बियर (मामूली शराब) पीने से रोक सकोगे? वे सब पुराने जमाने के कूढ मग्ज हैं। खाली उनकी शान-शौकत देख लो। यही एक चीज (शंम्पेन) उन्होंने तैयार की जिसकी प्रशंसा की जा सकती है।"

आध घंटा के बाद हमलोग वलहाला होटल में पहुंच गये और एक एकान्त कमरे में दाखिल हुए। भोजन का एक कौर मुंह में डालते हुए वरिचकिन ने कहा—"हम बोलशेविक लोग दो चीज बड़ी आसानी से किसी को दे सकते हैं—एक तो सिद्धान्त और दूसरा यह चटपटा मसालेदार भोज्य पदार्थ।"

वरिचकिन का व्यवहार इतना आत्मीय था कि उससे स्पष्ट बातें करने में मुझे जरा भी झिझक नहीं हुई। मैंने उससे कहा:—

"मेरे लिए यह एकदम नई बात है कि बोलशेविकों के एक प्रतिष्ठित प्रतिनिधि के साथ मैं एक ही टेबल पर भोजन करने बैठा हूँ। साम्यवादी प्रजातन्त्र के सबंध में प्रतिष्ठित शब्द के मेरे व्यवहार से आप नाराज नहीं होंगे।"

"इसमें नाराज होने की क्या बात है? क्या जिस देश में सब कुछ बराबर है, उस देश में प्रतिष्ठित समाज नहीं होगा? इस तरह की बात तो कोई मूर्ख ही सोच सकता है जिसकी बुद्धि बहुत भोड़ी होगी। मैं तो यह बात जोर देकर कह सकता हूँ कि दल में मेरी जो प्रतिष्ठा है, वह कम लोगों को ही प्राप्त होगी। उनकी गिनती तुम अंगुलियों पर कर सकते हो। सबसे पहला नाम तो लेनिन का आता है। उसके बाद कमनेम का। तीसरा नाम लोनाचर्स्की का है और चौथा तो मेरा ही है। ट्राटस्की की गणना कुशाग्र बुद्धिवालों की श्रेणी में थी। लेकिन

अखबारनवीस के सिवा उसकी कोई गिनती नहीं थी। जिनोवीच, कालेनिन, जिरजिंस्की तथा उस श्रेणी के अन्य लोग निरक्षर भट्टाचार्य हैं। काम भी इसी तरह ठीक-ठीक चलता । जब तक सब लोग अपना-अपना काम पूरा करते रहेंगे तब तक इस साम्यवादी राज्य की पूरी तरह रक्षा होती रहेगी।"

"आपने जो कुछ कहा है, उससे मैं यह अनुमान करता हूं कि आप पेशेवर लोकप्रिय नेता हैं।"

"पेशेवर शब्द का प्रयोग आपने ठीक ठीक किया है। जिस तरह लोग कला में अपने को दक्ष बनाते हैं, उसी तरह हमलोग भी लोकप्रियता की विशेष शिक्षा लेते हैं। यूरोप में आपको ऐसे बहुत-से साम्यवादी मिलेंगे, जो साम्यवाद की शिक्षा लेते रहते हैं। सार्वजनिक सभाओं में वे बहुत उछल-कूद मचाते हैं और नये सिद्धान्तों का ढोल पीटते रहते हैं।"

"यह सब लड़कों का खेल है। भिन्न-भिन्न तरह के लाखों आदमियों पर प्रयोग कर हमलोगों ने बहुत अधिक अनुभव हासिल किया है। विज्ञान के प्रयोगों की अपेक्षा यह प्रयोग बहुत रोचक है। जस्ते पर सलफ्यूरिक एसिड की प्रतिक्रिया से हाइड्रोजन बनाने में तुम्हें सिर्फ एक अति साधारण रासायनिक प्रयोग करना पड़ता है। लेकिन स्वर्णयुग प्राप्त करने के लिये रिवाल्वर से भयभीत कर यदि मनुष्य से तुम कुछ करा सकते हो तो तुम्हारा प्रयोग कहीं मूल्यवान है।" तुम गर्व के साथ उसकी चर्चा कर सकते हो।"

"लेकिन देखने से तो आप इस तरह क्रूर नहीं प्रतीत होते कि आप इस तरह का कर्म कर सकेंगे?"

"क्या कहा आपने? क्रूर कर्म? मेरा विश्वास मानिए, मैं एक चींटी को भी तकलीफ नहीं पहुँचा सकता। मेरे पास एक बहुत बड़ा कुत्ता था। मास्को पर चढ़ाई के समय उसकी पिछली टांगें मोटर से कुचल गयीं।

वह चलने-फिरने के लायक नहीं रह गया। मैंने न तो उसे गोली ही मारी और न जहर देकर उसे मार डाला। इसके प्रतिकूल मैंने उसके लिये एक छोटी गाड़ी बनवा दी जिसमें बैठकर उसे शहर में घुमाया जाता था। एक दिन मेरी हसी उड़ाते हुए क्रासिन ने कहा—"तुम्हारा कुत्ता रूस का पूर्ण प्रतिरूप है। हमलोगों ने उसके नीचे जो पहियेदार गाड़ी रख दी है उसके सहारे वह मजे में चलता चला जा रहा है।"

"यह उपमा तो बड़ी उत्तम थी। लेकिन मैं यह जानना चाहता हूँ कि उत्तम बोलशेविक बनने के लिए किसी को क्या करना पड़ता है?"

"ओह! यह तो सबसे आसान काम है। तुम्हारे अपने जो कुछ भी विचार रहे हों उन्हें त्याग दो और यह जानने का प्रयत्न करते रहो कि हवा का रुख कल कैसा रहेगा। हमलोगों के पूज्य नेता इलिच लेनिन ने अपने जीवन-काल में ही अपने विचारों को अनेक बार बदला। वे उसी तरह क्रान्तिकारी बन गये जिस तरह दूसरा कोई जानवरों का डाक्टर बन सकता था। रूस में जानवरों का डाक्टर होना भी अच्छा पेशा समझा जाता था। मार्क्स, और इंगिल्स के सिद्धान्तों तथा जार्ज सोरेल के 'हिंसा पर कुछ विचार' का सुन्दर अध्ययन किया था। इतना तो तुम स्वीकार ही करोगे कि उसका प्रयोग उन्होंने किस उत्तमता से किया।"

"लेकिन उस प्रयोग में कितने लाख प्राणों की आहुति देनी पड़ी?"

"दोस्त! यह क्यों भूल जाते हो कि इस दुनिया में सुख बिखेरने के लिये फूलों का हार नहीं बांटा जाता या फूलों की वर्षा नहीं की जाती। यह बात तुम्हें सदा स्मरण रखनी चाहिये कि सर्वहारा वर्ग के लिये नेतृत्व चाहिये। उसे इतने से ही संतोष हो जाता है कि कुछ नेता उसके कल्याण की बात सोच रहे हैं और उसके कल्याण के लिये कुछ कर रहे हैं। वह कुछ क्या है, यह उसे

जानने की जरूरत नहीं हैं। अधिनायक शासन का यह तकाजा है कि कभी-कभी दो-चार तश्तरियाँ टूटती रहें। आपको याद होना चाहिए कि अन्तिम बार जब लेनिन की हत्या की चेष्टा की गई तो हमलोगों ने पाँच सौ अफसरों और साधारण लोगों को गोली से उड़ा दिया। आखिर शासन की ताकत को जनता पर प्रगट करने का दूसरा रास्ता ही क्या है?"

"क्या आपको इस बात की चिन्ता नहीं है कि अपने शासन-काल में आप जो क्रूरता का नग्न नृत्य कर रहे हैं, उसके फलस्वरूप आप भावी पीढ़ी की नजरों में गिर जायगे। क्या आपलोगों को इस बात की चिन्ता नहीं है कि इतिहास कड़े शब्दों में आपकी निन्दा करेगा?"

"मेरे अच्छे दोस्त! तुम बड़े धूर्त प्रतीत होते हो। तुम यह क्यों भूल जाते हो कि युद्ध के बाद से उपभोग की चीजें महँगी हो गयी हैं, लेकिन आदमी की जान सस्ती है। यदि दो करोड़ आदमी पूँजीपतियों के आपसी तकरार के शिकार हो सकते हैं तब किसी अच्छे और बड़े सिद्धान्त की रक्षा के लिये यदि कुछ हजार रूसियों की आहुति दे दी जाय तो कौन बड़ा अपराध हुआ? जब सभ्य कहे जानेवाले लोगोंके बीच अपनी स्वतंत्र इच्छा से घृणा, हिंसा, ईर्ष्या, डाह तथा नीच भावनायें फैल गई हैं तब हमलोगों की निन्दा करने का किसे हक प्राप्त है कि हमलोगो ने क्रान्ति में विवेक से काम नहीं लिया? मेरा विश्वास मानिये। दुनिया हमेशा सफल जालिम की पूजा करती है और असफल राजनीतिज्ञ को कोसती और गालियाँ देती है। उदाहरण के लिये करेंस्की को ही ले लो। तुम्हारे पश्चिमी देशों के लोग उससे बड़ी आशाएँ रखते थे। लेकिन वह चूक गया। इससे तुमलोग सब उसे गालियाँ देने लगे कि वह बहुत ही भावुक था। सफल होने के लिये उसे लेनिन तथा उसके सभी साथियों अर्थात् हमलोगों को शूली पर लटका देना चाहिये था। बिना किसी तरह के मुकदमा चलाये, यदि उसने करीब

पचास आदमियों को चुनकर शूली पर चढ़ा दिया होता, तो वह रूस की लाल क्रान्ति को उसी तरह रौंद देता जिस तरह कोई अंडे को रौंद सकता है। ऐसी हालत में जेलेसनियाकफ को साहस न हुआ होता कि वह करेंस्की के खिलाफ विद्रोह कर उसे उखाड़ देता और तब तुम लोग करेंस्की को संसार का सबसे बड़ा राजनीतिज्ञ मानते। क्रान्ति कायर या नर्म दिल वाले नहीं संपन्न कर सकते। वैधानिक तरीकों से राजनीतिक क्रान्ति एक तरह का खिलौना है जिसका प्रयोग वे समाजवादी कर सकते हैं जिन्हें मन्दाग्नि की शिकायत है और जो गरिष्ठ भोजन पचा नहीं सकते।"

"मैं देखता हूं कि आपका तर्क सार्थक सिद्ध हो रहा है और मैं आपके विचारों से सहमत होता जा रहा हूं।"

इस वक्त वरिन्चकिन के गले के नीचे दो बोतल उतर चुकी थी। उसकी आँखें मदिरा के रंग से लाल हो चुकी थीं और वह मस्ती में झूम रहा था। मुझे ताना देते हुए उसने मुँह बनाकर कहा:—

"यूरोप का आपका समाज! हमलोगों को अपराधी कहेगा और गालियाँ देगा। कितने बड़े आशावादी हो तुम लोग! यूरोप के लोग हमलोगों को मार भगाने की कोशिश करना चाहते हैं! यह उनका दुःस्वप्न और धृष्टता नहीं तो और क्या है? यहां राजे-महाराजे भी हमलोगों से हाथ मिलाने में अपना गौरव समझते हैं। जिनोवा का सम्मेलन तो आपको याद ही होगा। उस सम्मेलन में क्या हुआ था? सुन्दर सिल्क की पोशाक से सुसज्जित पोप के प्रतिनिधि भी हमलोगों के खुर-खुरे वस्त्रवाले प्रतिनिधियों के साथ हाथ मिलाने में गौरव का अनुभव कर रहे थे। क्या फ्रांस ने अपना राजदूत हमलोगों के पास नहीं भेजा? क्या आपकी राजकुमारी ने हमलोगों को अपनेसाथ भोजन करने का निमंत्रण नहीं दिया? इतना ही नहीं, उन्होंने उस अवसर पर

अपना कीमती जवाहरात गले से निकालकर अलग रख दिया, ताकि हमलोगों को किसी तरह का एतराज न हो।"

इतना कहकर उन्होंने एक ग्लास और चढ़ा ली। क्षण भर चुप रहने के बाद वे फिर बोले—"इसी अपनी लेडी डायना को ही ले लीजिये। हमसे खुद मिलकर अपना मामला तै करना चाहती हैं।"

मैं तो कुछ समय से इस अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था। मौका पाते ही मैं बोल उठाः—

"मुझे पूरा विश्वास है कि आपके व्यक्तित्व का लेडी डायना पर जबर्दस्त प्रभाव पड़ेगा और वे आप पर निश्चय ही रीझ जायंगी।"

"देखो! बातें मत बनाओ। उन ष्टि में मेरा क्या मूल्य है? उनके सामने मैं एक तुच्छ और नगण्य जीव हू। उनका जन्म कुलीन वंश में हुआ है। मैं तो जारशाही के एक नगण्य व्यक्ति की संतान हूँ। स्काटलैण्ड के इतिहास में उनके पूर्वजों का बहुत बड़ा स्थान है। मेरे पूर्वज सौ साल पहले जंगलों में रहते थे और कंद-मूल खाकर गुजर करते थे।"

"कौन कह सकता है? तुम्हें देखकर वे कहीं उसी तरह उन्मत्त न हो उठें जिस तरह हमारे यहाँ की महिलाओं को देखकर स्लाव लोग उन्मत्त हो उठते हैं।"

वरिचकिन मेरे इस कथन को मजाक समझता था। अपना सिर पीछे की ओर झुकाकर, अपनी दाढ़ी पर धीरे-धीरे हाथ फेरकर वह इस तरह बोला, मानों कोई नया मंत्री पहले-पहले बोलने के लिये खड़ा हुआ हो। उसने कहाः—

"जी हाँ, हमलोग भेड़िये की तरह दांतवाले मास्कोवाइट। (मास्को के रहनेवाले) हैं, लोलुप दृष्टिवाले एशियावासी हैं। हमलोग उनलोगों में हैं जिनके बारे में हमलोगों के महान् कवि ब्लाक ने लिखा हैः—हमलोग सीदियन हैं, जो

तूफान की तरह पश्चिमी यूरोप की सभ्यता को मटियामेट करने के लिए चले हैं। आपकी राजधानी के तीन सफेद हंसों का संहार करने। वे हंस हैं—आपकी स्वतंत्रता, आपकी समानता और आपका मातृभाव ! वह स्वनामधन्य त्रिदेव, जो पूर्ण इतमीनान के साथ आसीन है और पद-दलितो तथा शोषितो के समूह को तटस्थ भाव से देखा करता है। क्यों मित्र ! क्या तुम सचमुच समझते हो कि लेडी विनहम मुझमें आकर्षण लायक कुछ पा सकेंगी ?"

"मित्र वरिचकिन ! इस संसार में आजतक ऐसा कोई पैदा नहीं हुआ जो किसी रमणी की भावुकता की प्रतिक्रिया के बारे में कोई भविष्यवाणी कर सके। क्योंकि नारी धन नर, धन, समय, स्थान और परिस्थिति बराबर हैं क के। यह चक्रवृद्धि दिन में लाखों बार बनाये जाते हैं और लाखों तरह से उनको हल किया जाता है।"

इसके बाद औरतों की ही चर्चा छिड़ गई और हमलोग कुछ देर तक उसी विषय पर बातचीत करते रहे। भोजन की उत्तमोत्तम तश्तरियां एक के बाद एक आती रहती थीं। यह बोलशेविक नेता मुझे राजा-महाराजों की तरह खिला रहा था। हमलोगों की घनिष्ठता उत्तरोत्तर बढ़ती जाती थी। मैंने इस बात का ख्याल छोड़ दिया कि वह मुझे किस तरह संबोधन करता है। मैं मन ही मन इस बात से प्रसन्न हो रहा था कि मेरा उद्देश्य सफलता की ओर बढ़ रहा है। पनीर खाने के बाद मैंने देखा कि काम की बातें करने का समय आ गया है। इस समय तक मुझे इतना इतमीनान हो गया था कि मैं जो भी प्रस्ताव रखूँगा, वह उसे चौंकानेवाला नहीं होगा। इसलिए मैंने कहा—

"मित्र वरिचकिन ! अब मेरी बातों को ध्यान से सुनो। हमलोगों की बातें कोई पांचवां कान या कोई दुश्मन नहीं सुन रहा है और जहां तक मेरा संबंध है, आपको हर तरह से मेरा विश्वास करना होगा और मुझपर भरोसा

रखना होगा। मैं तुम्हारे सामने अपना स्पष्ट प्रस्ताव रख देना चाहता हूँ। स्पष्ट शब्द से आपने मेरा तात्पर्य समझ लिया होगा। ये बातें केवल मेरे-आपके बीच में हो रही हैं। मैंने आपको लेडी डायना की चिन्ता और परेशानी का कारण बतला दिया था। आपकी बातों से मैं यह निष्कर्ष निकाल सका हूँ कि यदि आप अपने प्रभाव का उपयोग मास्को के अधिकारियों पर करें, तो यह सौदा तै हो सकता है। इसलिये मैं लेडी डायना की हिदायतें स्पष्ट रूप से आपके सामने रख देना चाहता हूं। उन्हें इस बात का पक्का विश्वास है कि आपकी सहायता बिना उनका काम नहीं संपन्न हो सकता। इसलिए उन्होंने मुझे यह हिदायत दे रखी है कि मैं इस सहायता का पूरा-पूरा मावजा आपको दूं। उन्होंनें कहा है कि जिस दिन इसकी रजिस्टरी हो जायगी और कम्पनी कायम हो जायगी, उस दिन इस कम्पनी का आपको हिस्सेदार—"

वरिचकिन ने हाथ हिलाकर मुझे बीच में ही रोक दिया। उन्होंने बड़े प्रेम के साथ अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा, अपनी आंखों को दबाया, बायें हाथ में शम्पेन की बोतल ले ली और दाहिने हाथ से मुंह में कुछ डालते हुए उन्होंने कहा:—

"लेडी डायना सुन्दर हैं। उनसे आप कह दीजियेगा कि बड़ा से बड़ा आर्थिक लाभ मुझे उनके कागज पर हस्ताक्षर करने के लिये प्रेरित नहीं कर सकता। केवल एक चीज है जिसके वशीभूत होकर मैं उनको यह रिआयत दिलवा सकता हूँ। वह है उनका मेरे आलिंगन-पाश में बँध जाना। यदि इसके लिये वे तैयार हों, तो यह काम पूरा हो सकता है। उसका प्रस्ताव सुनकर मैं भौंचक-सा उसका मुंह देखने लगा। मेरी यह दशा देखकर उसने कहा:—

"मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी बात को तुम सहूलियत से उनसे कह

सकोगे। किसी न किसी तरह यह बात तुम उन्हें समझा देना कि यदि मैं किसी भी प्रकार अपने प्रभाव का प्रयोग करूँ तो उसका एकमात्र मूल्य एक रात का प्रणय-प्रसंग होगा। मैं तुमसे यह स्पष्ट शब्दों में कह देना चाहता हूं कि मेरे दिल का यह बहुत बड़ा अरमान है कि मैं किसी महीयसी महिला के अधर-पल्लव का रसपान करूँ जिस तक मेरे समान साधारण स्थिति के लोग पहुँच भी नहीं सकते। इनसे बढ़कर महीयसी मुझे कौन मिलेगा जिनके पूर्व-पुरुषों का नाम इतिहास के पन्ने में अमर है। हरेक आदमी में कोई न कोई कमजोरी रहती है। तुमने मेरे हृदय में आशा का अंकुर उदय कर दिया है और मुझे विश्वास हो गया है कि मेरे अरमान पूरे हो जायगे। इसके लिये मैं तुम्हें अभी से पेशगी धन्यवाद देता हूं।"

मैंने वर्गिचकिन से वादा कर दिया कि उनका सन्देश और उनकी शर्त्तें मैं लेडी डायना के पास पहुँचा दूंगा। इससे उन्हें अतिशय प्रसन्नता हुई। उनका पीना उसी तरह जारी था; इसलिये उनका उल्लास बढ़ता जाता था। अपनी छुरी दांतो के बीच रखते हुए उन्होंने कहाः—

"एक बात मैं और कह देना चाहता हू। मैं बहुत बड़ा खूंखार बोलशेविक समझा जाता हूँ। तुम ने मेरा मतलब समझ लिया होगा। मेरे नाम से ही फरासीसी लोकतंत्रवादी कांपने लगते हैं। लेकिन शायद मैं लेडी विनटम का कुलीन रक्त गर्म भी नहीं कर सकूँगा।"

इतना कहते-कहते वे सहसा गंभीर हो गये और धीरे से बोलेः—

"मैं समझता हूँ कि मुझे यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इरिना के बारे में सदा पूरी सावधानी से काम लेना। यदि किसी भी तरह उसे इन बातों का पता चल गया तो दो दिन में ही मेरा सर्वनाश हो जायगा। उसे कोई भी रोक नहीं सकेगा। तुम्हारा भी सर्वनाश हो जायगा।"

वरिचकिन के साथ खा-पीकर तथा उसके मनोरंजन में साथ देकर बहुत रात गये मैं अपने होटल में पहुंचा। मैंने उसी वक्त लेडी डायना के पास नीचे लिखे आशय का केबुलग्राम भेज दियाः—

"मैं उस सज्जन से मिला। वह आपकी मदद करने के लिये तैयार हैं; लेकिन उसके लिये वे कम्पनी में हिस्सा या नगद कुछ नहीं चाहते। इसका मावजा वे खुद आपसे चुकाना चाहते हैं। सारी बातों पर गौर से विचारकर अपना उत्तर भेजिये—जिरार्ड

दूसरे दिन मैं सोकर उठा तो काफी दिन निकल आया था। सूर्य की किरणें अपनी सुनहली चादर चारों ओर फैलाकर क्रीड़ा में निमग्न थीं। समय इतना सुहावना था कि मेरी इच्छा टहलन की हो गई। मैं बरामदे से नीचे उतरा ही था कि होटल का चपरासी मेरे सामने आकर खड़ा हो गया और बोलाः—

हुजूर ! यह आदमी आपसे बातें करना चाहता है।"

उसने एक अजीबवोगरीब आदमी की ओर इशारा किया, जो कुछ दूर पर खड़ा मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मेरे बुलाने पर वह पास आया और रूसी तर्ज में जर्मन भाषा में कहा—"मैं आपके लिये एक जरूरी खत लेकर आया हूं।"

इतना कहकर उसने एक लम्बा लिफाफा मेरी ओर बढ़ा दिया। लिफाफा बन्द था और उसपर सील थी।

मैंने उससे पूछाः—

"क्या सोवियत के प्रतिनिधि ने तुम्हें यहां भेजा है?"

उसने मेरे प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया; बल्कि वहाँ से चुपचाप चलता बना। इसका मतलब मेरी समझ में नहीं आया। खैर, मैंने लिफाफा

खोला। किसी महिला ने बड़ी सावधानी और मजबूत हाथों से यह खत लिखा था। खत का आशय इस प्रकार थाः—

महोदय,

"आपने कल मुझे धोखा देने की कोशिश की जब आपने मुझसे यह कहा कि तेलाव के तेल की भूमि का जायज उत्तराधिकारी लेडी डायना विनहम नहीं है। इस तरह की झूठ तो बच्चे बोला करते हैं। आपके समान सम्मानित पुरुष को यह शोभा नहीं देता। आपको यह समझ लेना चाहिए था कि असल बात मुझसे छिपी नहीं रह सकती थी। चौबीस घंटे के भीतर ही मैंने वास्तविकता का पता लगा लिया। इसलिये यह नाचीज और तुच्छ महिला आपको नेक सलाह देती है और आशा है कि आप इसकी इस तुच्छ सलाह पर कान देंगे। मैं आपको सावधान और सचेत किये देती हूं कि जार्जिया में उस सुन्दरी महिला की जो भूमि है उसके बारे में आप किसी तरह के प्रयास से हाथ मोड़ लें। यदि आप मेरे कहे अनुसार काम नहीं करते तो आप अपने को बहुत बड़े खतरे में डाल रहे हैं।"

—इरिना मौराविफ

धमकी के इस पत्र को मैं दो बार पढ़ गया। जिस कोमलांगी का इसपर हस्ताक्षर था उसका चेहरा मेरी आंखों के सामने नाच गया और उसके क्रूर काण्ड मेरे दिमाग में चक्कर काटने लगे। मै कुछ दूर तक आगे बढ़ा सही लेकिन उसकी खूंखार तस्वीर सदा मेरे सामने नाचती रही। मेरे अंग प्रत्यंग सिहर उठे। वह उसी तरह मेरे सामने खड़ी प्रतीत हुई जिस तरह उस दिन बरिचकिन के कमरे में खड़ी थी। वही लिबास, वही आकृति, वही कड़ी निगाह सब कुछ वही था। तूफान वर्षा करनेवाली, मृत्यु का दृश्य उपस्थित करनेवाली इस जालिम महिला की चेतावनी और धमकी को यों टाल देना हंसी खेल नहीं था।

—०—

## ५

बगल वाले कमरे की फर्श पर ट्रंक की रगड़ की आवाज से मेरी नींद खुल गई। मैंने अपनी घड़ी की ओर नजर डाली तो देखा कि नव बजे हैं। मैं बड़ा ही सुन्दर सपना देख रहा था। मैंने देखा कि कोई दुष्ट बच्चों को खेलने के गुब्बारों में टकुआ चुभोता जा रहा है। मेरी आहट पाकर होटल का बेयरा चाय और जलपान लेकर आया। मैंने उससे पूछाः—

"बगल के कमरे में कौन आया है?"

उसने मुस्कुराकर उत्तर दियाः—

"मैं नहीं जानता। मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि कोई अत्यन्त सुन्दर महिला हैं। आपको तो इसका स्वागत करना चाहिए। मसल मशहूर है कि "बगल की बदसूरत की अपेक्षा बगलवाले कमरे की खूबसूरत कहीं अधिक वाञ्छनीय है।'

इतना कहकर उसने अपने पाँव पीछे की ओर मोड़े और गायब हो गया। मैं अपनी रोटी में मक्खन लगाने जा रहा था कि वह लौटकर आया और लम्बा सलाम देकर बोलाः—"उन महिला ने बीच का दरवाजा खोल देने के लिये कहा है।"

इस धृष्टता पर मैं क्षुब्ध होकर मन ही मन कुड़बुड़ा रहा था कि दरवाजे के दूसरी तरफ से खिलखिलाकर हँसने की आवाज आई। दूसरे ही क्षण मेरे कानों में शब्द सुनाई पड़ेः—

"जिरार्ड! घबराओ नहीं, मैं हूं।"

लेडी डायना ने कमरे में प्रवेश किया। यात्रा के कपड़े तक उन्होंने नहीं उतारा था। मैंने अपनी रात की पोशाक नहीं बदली थी। इसके लिये उनसे क्षमा

माँगी। लेकिन उन्होंने मेरा मुंह अपने दोनों हाथों से बन्द कर दिया और मुझे कसकर गले लगा लिया जिस तरह कोई सुन्दर मुखी बड़ी बहन अपने दुष्ट भाई को छाती से लगा लेती हो। उन्होंने कहाः—

"जिरार्ड तुम तो मुझे यहाँ देखकर चकित हो गये होगे। तुमने कल्पना भी नहीं की होगी कि मैं इतनी जल्दी यहां पहुँच जाऊँगी। लेकिन तुम्हें तो मेरे स्वभाव का थोड़ा बहुत परिचय मिल गया है। मैं जो निश्चय कर लेती हूँ उसे पूरा करके ही दम लेती हूँ। कल ग्यारह बजे दिन को मुझे तुम्हारा केबुल मिला। एक बजे मैं रवाना हो गई और डोवर तथा लिसिंगेन होती हुई यहाँ आ पहुँची। मुझे जोरों की भूख लगी है। इसलिये तुम्हारे जलपान में साझीदार हो जाती हूं।

लेडी डायना को वहां देखकर मुझे इतनी ज्यादा खुशी हुई कि मेरी जलपान की इच्छा ही जाती रही। मैं तो उनकी यात्रा की पोशाक देखने में ही तन्मय था। उस पोशाक में कैसी सुन्दर लगती थीं वह। हाथ मुंह पोंछ कर उन्होंने सवालों की लड़ी लगा दीः—

"तब तुम उस बोलशेविक से मिले? क्या तुमने स्पष्ट शब्दों में मेरा प्रस्ताव रख दिया? मैं तुम्हारे तार का मतलब नहीं समझ सकी? वह प्राकृतिक अनुदान चाहता है? इससे उसका क्या मतलब है? तेल चाहता है या चुम्बन। वह तेल के कुओं में से एकाध चाहता है या मेरी मुहब्बत। सुना है कि मास्को में साबुन की बड़ी दिक्कत है। इसलिये वह जरूर गन्दा होगा? क्या उसका कोई चित्र तुम्हारे पास है? सारी बातें मुझे विस्तार के साथ बतला दो। मैं सारी बातें जानने के लिये व्यग्र और परीशान हूँ।"

यहां पहुँचने से लेकर वरिचकिन से मिलने तक का सारा दास्तान

ब्यौरेवार मैंने उन्हें सुना दिया। मेरी बातें सुनकर उन्होंने अपना सिर हिला दिया और बोलीं:—

"अब मैं सब कुछ समझ गई। मतलब यह है कि यदि वह चाहे तो मेरे लिये वह सब कुछ कर सकता है। मेरे सामने प्रश्न यह है कि काकेसस प्रदेश में पन्द्रह हजार एकड़ तेल की भूमि का मूल्य मेरे एक रात के प्रणय के बराबर हो सकता है या नहीं। तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"यह तो निर्भर करता है उस मूल्य पर जो तुम एक रातके प्रणय के लिये निर्धारित करो। दुनियाँ में अनेकों ऐसी औरतें हैं जिन्हें मैं अपनी चारपाई पर कदम भी नहीं रखने दे सकता और कुछ ऐसी भी हैं जिनके लिये आकाश के तारे तोड़ कर लाना भी मैं सस्ता सौदा समझता हूं। महिला के प्रणय का कोई मूल्य नहीं स्थिर किया जा सकता। दुनिया में कितनी औरतें हैं जिनका हृदय प्रेम की बारीकियों को समझ भी नहीं सकता। उनमें प्रेम का अंकुर उगाने के लिये उन्हें सींचना पड़ेगा। लेकिन जहांतक तुम्हारा संबंध है, मैं निःसंकोच कह सकता हूँ कि संसार की समस्त भूमि भी तुम्हारे एक चुम्बन का मूल्य नहीं चुका सकती।"

"जिरार्ड। मैं नहीं चाहती कि तुम मेरी व्यर्थ की प्रशंसा करो। मैं तुम्हारी स्पष्ट राय जानना चाहती हूं।"

"ऐसी हालत में मेरी नेक सलाह यही होगी कि तुम्हें इस व्यक्ति अर्थात् वरिचकिन से सदा सतर्क और सावधान रहना चाहिये।"

"इसका मतलब?"

"इसका मतलब इरिना मौराविफ नामकी महिला है। तुम उसे नहीं जानती हो। किसी बड़े साम्राज्य के बड़े ऊँचे और प्रतिष्ठित पदपर यदि कोई महिला बैठी हो तो इसका सामना करने की अपेक्षा मैं किसी सूनसान गली में

गुण्डों और आवारों का सामना करना कहीं आसान समझूंगा।"

लेडी डायना घूरकर मेरी ओर देखने लगीं। अपने सुनहले बालों को पीछे की ओर सम्हालते हुए उन्होंने मुझसे कहा:—"यदि मैं यह कहूं कि अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिये मैं उस महिला का पूर्ण परिचय प्राप्त करना चाहती हूं, तो शायद तुम्हें विश्वास न हो।"

"अविश्वास का तो कोई कारण नहीं है क्योंकि मैं तुम्हारी प्रकृति को जानता हूं। तुम्हें रोमांचकता में मजा आता है।

"मैं तुमसे स्पष्ट कह देना चाहती हूं कि मुझे तुम्हारी इरना मोराविफ की लेशमात्र भी परवा नहीं है।"

"क्षमा करना। वह मेरी इरिना मौराविफ नहीं है। असल बात यह है कि वरिचकिन उसका प्रेमी है।"

"तब तो और उत्तम है।"

"तब तुम उसका स्थान ग्रहण करना चाहती हो। भगवान तुम्हारी रक्षा करें।"

"ठहरो! एक बात और! तुमने साम्यवाद के नैसर्गिक सिद्धान्त की ओर ध्यान नहीं दिया है। उस सिद्धान्त की पूर्ण हिमायत मेडम मौराविफ करती होंगी। उस सिद्धान्त के अनुसार कोई वस्तु किसी खास व्यक्ति की नहीं है। सभी वस्तुओं पर सबका अधिकार है। वैयक्तिक मालिकाना हक तो रूसमें रहा ही नहीं। यदि यह बात सच है तब हमलोग मि० वरिचकिन में हिस्सा क्यो नहीं बटा सकते।"

"लेकिन औरतें अपने प्रेमियों को राष्ट्रकी संपत्ति कभी नहीं होने देंगी।"

लेडी डायना मेरी चारपाई के किनारे पर बैठी थीं। सामने टेबुल पर आइना था। अपना चेहरा देखने के लिये वे आइने की तरफ झुक गईं। उन्होंने

अपना चमड़े का हैट उतार कर कुर्सी पर फेंक दिया, गर्व के साथ अपना सिर हिलाया। अचानक उनकी दृष्टि किसी विचित्र चीज पर पड़ी। वे मुझ से पूछ बैठीं:—"तुम्हारे बिस्तर के नीचे वह क्या चीज है? चारपाई के बायें पाये के पास?"

मुझे उस चीज की खबर तक नहीं थी। उसे मैंने पहले पहल देखा और झुंझला उठा। वह छोटासा काला बक्स था जो छोटी चौकी पर मढ़ा हुआ था और मेरे कम्बल के नीचे छिपा कर रखा हुआ था।

मैंने कहा:—"ओह! ऐसी बात है! कोई हमलोगों की बातचीत में बहुत ज्यादा दिलचस्पी ले रहा है।"

मैं लेडी डायना को धीरे से बोलने के लिये इशारा किया। वे सरक कर मेरे पास चली आईं और उस चीज को विस्मय के साथ देखने लगीं।

मैंने कहा:—यह माइक्रोफोन यंत्र है।"

मैं अपनी जगह से उठा, वक्स से रूमाल निकाला और उससे माइक्रोफोन को ढक दिया। तब मैंने लेडी डायना से कहा:—"अब धीरे से बातचीत करने की जरूरत नहीं है। मैंने उसका इन्तजाम कर दिया है। अब हमलोगों की बातचीत कोई नहीं सुन सकता।"

मैंने कम्बल की जाँच की तो उसमें नस के समान पतले तार मुझे मिले। ये तार साँप की तरह बलखाते बायें तरफ वाले कमरे की तरफ गये थे।

मैंने कहा:—"इससे तो स्पष्ट है कि हमलोगों का कोई पड़ोसी हमलोगों की बातचीत का आनन्द ले रहा है। कैसी मजेदार बात है यह?"

"तुम तार को काट क्यों नहीं देते?"

"इसकी जरूरत नहीं है। मैं यह नहीं प्रगट होने देना चाहता कि हमलोगों को इसकी जानकारी हो गई है।"

"तुम्हारे कमरे में इस यंत्र को किसने रखवाया होगा।"

"निश्चय ही जिसे हमलोगों की बातचीत सुनने की उत्सुकता होगी। उसने होटल के नौकर को घूस देकर इसे यहाँ रखवाया होगा।"

इससे लेडी डायना न डरीं और न घबरायीं और न चिन्तित हुई। उन्होंने अपने दोनों कोमल हाथ मेरी गर्दन में डाल दिये और आनन्दित होकर बोलीं:-

"यह भी बहुत बड़ा तमाशा है। सभी औरतों की तरह मैं भी तिलस्म पसन्द करती हूं और सहज ही विजय प्राप्त करने में मुझे आनन्द नहीं आता। मैडम मौगाविफ के उस खत और इस यंत्र ने मसाले का काम किया है उन्हें मेरे लिये बहुत ही रोचक बना दिया है। तुम मि० वरिर्चकिन को मेरी तरफ से कल शाम के लिये ही भोजन का निमंत्रण दे दो। भोजन मेरे अपने स्थान पर होगा। अब मैं स्नान वगैरह के लिये जाती हूं। इसके बाद मैं अपना साज श्रृंगार कर घूमने निकलूँगी। तुम्हें भी मेरे साथ चलना होगा। गंभीरता पूर्वक विचार करने से पहले मैं चौवीस घंटे तक मनोरंजन कर लेना चाहती हूं।"

वरिचकिन के दफ्तर में पहुँचकर मैंने उससे कहा:—"दोस्त! इस समय मैं तुम्हें कुछ ऐसा संवाद देने आया हूं जिसे सुनकर तुम्हें प्रसन्नता होनी चाहिए।"

वरिचकिन ने एक कीमती सिगरेट मेरी ओर बढ़ाते हुए अपनी आँखों को इस तरह मटकाया मानों वह मेरी बात पहले से ही जानता हो। बोला:—

"मुझे मालूम है। तुम यही न कहोगे कि लेडी डायना यहाँ पहुँच गई हैं। तुम्हारे ही अडलन होटल के कमरा नं० ४४ में उन्होंने डेरा दिया है। यह कमरा तुम्हारे कमरे से जुड़ा हुआ है। वे हलकी भूरे रंग की पोशाक और चमड़ा जड़ा हुआ हैट पहने थीं।"

"क्या आपने उन्हें देखा है?"

"मैंने नहीं, मेरे आदमियों ने। तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि यूरोप में

इतना ज्यादा छानवीन और जानकारी प्राप्त करने का साधन दूसरे किसी राष्ट्र के पास नहीं है।"

"बधाई है ?"

"लेकिन मुझसे इतना व्यौरेवार समाचार जानकर भी तुम्हें विस्मय नहीं हुआ ?"

"विस्मय तो नहीं हो सकता था लेकिन एक नेक सलाह मैं तुम्हें दे देना चाहता हूं। अगर तुम किसी दोस्त के या परिचित के कमरे में माइक्रोफोन गुप्त रीति से रखवाना चाहते हो तो ऐसा गुप्त प्रबन्ध होना चाहिए कि उसका भेद किसी भी तरह किसीपर प्रगट न हो सके।"

मेरी बात सुनकर वह इस तरह चौंक पड़ा कि मैं दंग रह गया। मेरी बातों पर उसे सहसा विश्वास नहीं हुआ। वह टेबुल पर मेरी ओर झुक पड़ा और बोल उठाः—"माइक्रोफोन ?"

मैंने अपनी बात को दुहरा दिया। वह गंभीर हो गया और अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ देर तक कुछ सोचता रहा। अन्त में बोलाः—

"यह तो विचित्र बात है।"

"इससे तो यह प्रगट होता है कि उस माइक्रोफोन से तुम्हारे आदमियों का कोई संबंध नहीं था।"

"नहीं, और यहाँ एक ही व्यक्ति है जो तुम लोगों की बातें सुनने के लिए उत्सुक हो सकता है और वह है इरिना। अच्छा किया कि तुमने यह बात मुझसे कह दी। मैडम मौराविफ को तुम पर निश्चय ही सन्देह हो गया है। अब से मुझे बहुत सतर्क और सावधान रहना होगा। इस चेतावनी के लिये मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूं। लेकिन तुम्हारी लेडी डायना विनहम पर इसका क्या असर पड़ा ?"

"उन्होंने मुझे आपके पास निमंत्रण देने के लिये भेजा है। कल रात को आपको उनके साथ खाना है।

"मुझे बड़ी प्रसन्नता है। मुझे कहाँ आना होगा?"

"उनके होटल में। उसी कमरा नं० ४४ में। उनका ख्याल है कि वही सबसे उत्तम स्थान होगा और आपके लिये सुविधा जनक भी होगा।

वरिचकिन क्षण भर सोचता रहा। बोला:—"मैं सावधानी से काम लूंगा। एक बात और। मैंने मास्को तार भेज दिया है और मुझे आशा है कि यह सौदा पट जायगा।"

"बहुत बड़ी खुशखबरी सुनाई आपने।"

इसके बाद उन्होंने तीखी हँसी हँसकर कहा:—

"अब इस समस्या का निदान सोलहो आना लडी डायना के हाथ में है।"

× × ×

रातको लेडी डायना के साथ मैंने संसोसी होटल में भोजन किया। हमलोगों के बायें तरफ काले टेबुल पर अनेक तरह की चीजें सजाकर रखी हुई थीं और हमलोगों की दाहिनी तरफ दो अंग्रेज बैठे सलाद का आनन्द ले रहे थे। हमलोगों के पीछे दो यहूदी थे जो अपनी जेब से चुपचाप कोई वस्तु निकालते थे और मुंह में डालकर चूसते थे।

लेडी डायना ने बात का सिलसिला छेड़ते हुए मुझसे पूछा:—

"एक बहुत ही सुसंस्कृत और सभ्य आदमी है। उसे किसी भद्दी औरत से प्रेम करना पड़ता है। और एक भद्र महिला है उसे किसी असभ्य पुरुष को प्यार देना पड़ता है दोनो में तुम किसे अच्छा और किसे बुरा कहोगे?"

"मैंने इस प्रश्नका तात्पर्य नहीं समझा? यह प्रश्न आपके मन में उठा ही क्यों?"

"क्योंकि मैं वरिचकिन और उसकी शर्तों के बारे में सोच रही हूँ।"

"लेकिन मेरी धारणा ऐसी नहीं है कि वह किसी भी प्रकार तुम्हें भद्दा प्रतीत होगा। सोवियत का यह प्रतिनिधि न तो दानव है और न देवता। वह उन्हीं व्यक्तियों में है जिनकी आत्मा क्रूरताओं से ढँकी है, गुप्त पापों से लदी है और कमजोरियों का शिकार है। बोलशेविकों के संसर्ग से उसमें यदि कुछ दोष और कमजोरियाँ आगई हैं तो साथ ही साथ उसमें कुछ खूबियों का भी अवशेष है।"

"क्या वह मेरे समान महिला को खुश कर सकेगा?"

"मुझे तो विश्वास है। वरिचकिन जर्मनी में, सोवियत रूसका प्रतिनिधि है। सोवियत के विधायक रूस से कुलीन वर्ग को मिटा देना चाहते हैं। लेकिन रूससे बाहर कुलीन वर्ग के लिये उनके हृदय में वही श्रद्धा है जो किसी भी समाज में है। कामके समय वह फौलाद से भी कड़ा है लेकिन मनोरंजन के समय वह मक्खन से भी मुलायम है।"

"और वह मुझ से केवल एक रात का प्यार चाहता है? यही उसकी सारी चाह है।"

"कहा तो उसने यही है।"

लेडी डायना ने अपना सिर हिलाते हुए कहा:—"या तो यह बहुत अधिक है या बहुत कम। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसे मामलों में उसे संतुलन का अन्दाज नहीं है।"

भोजन के बाद समय काटने के लिये हमलोग एक थेएटर में गये। वहां से बाहर निकल कर लेडी डायना ने मुझसे कहा:—यहाँ तबीयत नहीं लगी। कहीं चटपटी जगह चलो।

मुझे ऐसी जगह मालूम थी। लेडी डायना को लेकर मैं वहीं चला गया। दो घंटा उनका समय आनन्द से कट गया। इसके बाद हमलोग वहां से वापस आ गये।

---

६

लेडी डायना और वरिचकिन का प्रथम मिलन मुझे दो अखाड़िया पहलवानों की याद दिलाता था जो आमने सामने खड़े होकर अपनी अपनी घात में एक दूसरे को गौर से देखते हैं। पहली चढ़ाई रूसी की तरफ से हुई। उसकी चढ़ाई बड़े ही कोमल और मधुर शब्दों में हुई लेकिन उसका अंग्रेज प्रतिद्वन्दी इससे जरा भी नर्म नहीं पड़ा। वह उसी तरह अपनी जगह पर अटल रहा।

इस संग्राम का आरंभ लेडी डायना के होटलवाले अपने निजी कमरे में शुरू हुआ। मैंने लेडी डायना के सामने यह सुझाव रखा था कि कोई बहाना बनाकर मैं वहां से सरक जाऊ और उन्हें वरिचकिन से निपटने के लिए अकेला छोड़ दूँ। लेकिन वे राजी नहीं हो सकीं। उन्होंने कहा:—"तुमको वहां मौजूद रहना होगा। अगर तुम भी चले गये तो इस संग्राम के परिणाम का गवाह कौन होगा।"

आठ बजे रात को हमलोग भोजन करने बैठे। हम तीनों में से प्रत्येक अपने अपने रंग में मस्त था। वरिचकिन की पोशाक लन्दन के किसी भी कुलीन परिवार की पोशाक का मोकाबला कर रही थी। उसकी जाकेट के ऊपरी भाग में सुनहले चेन से युक्त घड़ी सुशोभित थी जिसमें रत्नजटित हसुआ और हथौड़ा लटक रहा था। यही चिह्न बतला रहा था कि वरिचकिन सर्वहारा और मजूरवर्ग का

प्रतिनिधि है अन्यथा उसका पहनावा किसी भी पूंजीपति से कम भड़कीला नहीं था। अपने मेहमान के स्वागत सत्कार के लिये लेडी डायना ने भी काफी भड़कीला और आकर्षक पोशाक पहन रखा था। अपने केशपाश को आकर्षक ढंग से संवार कर उन्होंने उसमें रत्नजटित पिन लगा रखा था जिसके हीरे ज्योति से जगमगा रहे थे।

भोजन की पहली आवृत्ति के वाद टेबुल के नीचे की तरफ झांककर मैंने विस्मय प्रगट करते हुए कहाः—"गनीमत है कि कोई हमलोगों की बातें सुनने का प्रयास नहीं कर रहा है।"

लेडी डायनाः—"क्या तुमने इतमीनान कर लिया है कि यहां भी तो कम्बलों के भीतर तार छिपाकर नहीं रखे गये हैं?"

वरिचकिन ने संकेत से ही इतमीनान दिलाया। कहाः—

"मैंने पूरी सावधानी से काम लिया। हमलोगों को भोजन परोसनेवाला मेरा निजी गुप्तचर है। हां, मुझे कल मालूम हुआ है कि एक खानसामा मैडम मौराविफ की गुप्त सेवा में है।"

लेडी डायनाः—"यह तो वड़ी मजेदार बात है कि आपलोगों का अपना-अपना निजी गुप्तचर है।"

"यह नितान्त आवश्यक है। आपको यह जानकर विस्मय नहीं होना चाहिये कि मैडम मौराविफ की दृष्टि में आप उन मेहमानों में नहीं हैं जिनका स्वागत किया जा सकता है। इसलिये मास्कोकी नीति के अनुसार आप पर उसी तरह जासूस तैनात हैं।"

"यदि मेरी जानकारी गलत नहीं है तो मैं यह कह सकती हूं कि मास्कोका जासूसी संगठन सभी देशों से दृढ़ है। मास्कोको जासूसी प्रणाली की राजधानी कह सकते हैं।"

"आपका कहना सर्वथा सही है। बिना जासूस प्रणाली के यहाँ की पुलिस विभाग पति-विहीन नव विवाहिता वधू के समान अथवा जल्लाद-विहीन सोवियत संघ के समान होता।"

मैं बीच में ही बोल उठा—"मैंने आपका अभिप्राय नहीं समझा। जरा इसे स्पष्ट कीजिये।"

वरिचकिन—"यह तो आईने की तरह स्पष्ट है। हमलोग क्षण भरके लिये भी किसी को इस धोखे में नहीं रखना चाहते कि सोवियत शासन रूसकी जनता के बहुमत का प्रतिनिधित्व करता है। आपके देशके तथा फ्रांस के साम्यवादी जब रूसकी जनता के मत पर कुछ लिखते हैं या टीका टिप्पणी करते हैं तो उनका अभिप्राय उन चन्द लोगों से रहता है जिनके हाथों में शासन के संचालन का सूत्र है। रूसमें १९१८ के बाद न तो प्रेमकी स्वतंत्रता है और न किसी अन्य तरह की स्वतंत्रता और यह उचित भी है क्योंकि जिस तरह स्त्रियों को आजादी दे देना उचित नहीं है उसी तरह समग्र जनता को आजादी दे देना भी खतरे से खाली नहीं है।"

लेडी डायना बड़े गौरसे इन बातों को सुन रही थीं। अन्तमें उन्होंने पूछा—

"आखिर! इस तरह के बंधन लोग कबतक बर्दाश्त करते रहेंगे?"

वरिचकिन ने बहुत उमदा सिगरेट उनकी तरफ बढ़ाया। सलाई रगड़ कर अपने हाथसे उनके सिगरेट को जलाया और बड़ी मुलायमियत से बोला—

"मैं तो यह कहूंगा कि सब कुछ आदत पर निर्भर है। आदत जन्मजात गुण नहीं है। आदत डालनी पड़ती है और बाद को यही अभ्यास बन जाती है। हमलोगों का खुफिया पुलिस विभाग, (टक्का) जिसे हम निगरानी रखनेवाला राजनीतिक दल कह सकते हैं, डाक्टर का काम करता है। जिस तरह डाक्टर

लोगों की जांच पड़ताल बराबर करता रहता है उसी तरह हमलोगों का टेका भी रूसी जनता की नाड़ी की गतिविधि का बराबर पता लेता रहता है। इसके लिये उसने औरतों और मर्दों का दल तैयार कर रखा है जिसे आप डाक्टरों का नर्स कह सकती हैं। ये लोग अपने कान रूपी स्टेथस्कोप (आला) का प्रयोग हर मकान में करते हैं और लोगों की बातचीत सुनते हैं। इस रोग की गंभीरता के अनुसार वे लोग दवा का प्रयोग किया करते हैं।"

"तब तो हमें यही मानना पड़ेगा कि रूसकी जनता का जीवन इन लोगों की मुट्ठी में है और वे लोग उनके साथ मनमाना खेलवाड़ कर सकते हैं। जो इस तरह का जघन्य काम स्वीकार करता है वह ऐसा ईमानदार और विवेकशील भी नहीं हो सकता कि सदा सचाई और ईमानदारी का आश्रय लें।"

"क्षमा-प्राप्त अपराधी, फांसी के तख्ते से उतारे हुए खूनी और जार के समय के सिपाही इस दलमें हैं क्योंकि इस दलके संगठन के अनुसार काम करने से ही उन्हें मुक्ति मिल सकती है। उनकी तत्परता, मुस्तैदी और सचेष्टता का फल है कि हमलोग प्रतिविद्रोह के प्रयास को समय पर ही दबा देते हैं। सोवियत शासन प्रणाली की नींव को दृढ़ तथा मजबूत बनाने के लिये यह नितान्त आवश्यक है।"

"इसमें काम करनेवालों को अपने वैर का बदला लेने का अच्छा मौका मिल जाता होगा। ये लोग झूठी रिपोर्ट तैयार करते होंगे और निर्दोषों को फँसाते होंगे।"

"इस में क्या शक! प्रतिविद्रोह के अभियोग में जो गिरफ्तार किया जाता है, उसके खिलाफ सबूत पेश करने का झंझट नहीं उठाया जाता है। उसे तो हमलोग सीधे फांसी की सजा दे देते हैं। निर्दोष होते हुए भी उसे लबियंका की काल कोठरी में सड़कर अपनी इहलीला समाप्त करनी पड़ती है।

हमलोग इस बात की लेशमात्र भी परवा नहीं करते कि दस निरपराध मारे गये। हमलोग इस बात के लिये सचेष्ट रहते हैं कि दस निरपराधों के साथ कहीं एक अपराधी भी हाथ से निकल न जाय।"

इस पर लेडी डायना की गर्दन जरा हिली। उन्होंने वरिचकिन की तरफ इस तरह देखा मानों अपनी हरकतों के लिये उसे शर्म हो। लेकिन वरिचकिन ने उनकी भाव भंगिमा को उसी तरह ग्रहण किया जिस तरह कोई अभिभावक भयभीत बालक की ओर करुण दृष्टि से देखता है और उसकी पीठ पर हाथ फेरकर उसे आश्वासन देने का प्रयास करता है। उसी भाव से वरिचकिन ने बड़ी नर्मी से कहा:—

"लेडी विनहम! आपको यह मालूम होना चाहिए कि हमलोगों ने जितने लोगों को अब तक अपना शिकार बनाया है उनकी संख्या इतनी पर्याप्त है कि भविष्य में अब इसकी आवश्यकता हमलोगों को नहीं पड़ेगी। अतीत को भूल जाना ही बुद्धिमानी है। मृतक को कहाँ कोई सदा याद रखता है। वे शीघ्र ही विस्मृति के गर्भ में समा जाते हैं। मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ। क्या यूरोप के शासक आज भी जार और उनके परिवार के कत्ले-आम की चर्चा करते हैं? क्या उनकी निर्मम हत्या का यूरोप के उनके रिश्तेदारों को लेशमात्र भी गम है। क्या स्पेन के राजा या ब्रिटेन के युवराज ने इस शोक में एक दिन के लिये भी अपने मनोरंजन या मन बहलाव में कमी की है? इसलिये इतना भावुक होने की आवश्यकता नहीं है कि मेरी बातों से आप चौंक उठीं। इन गर्हित व्यक्तियों की जिन्दगी का मूल्य ही क्या है। किसी न किसी तरह तो उन्हें मरना ही था। यदि इस तरह न मरते तो किसी रोग का शिकार होकर मरते। डैण्टन, मेंस्ट, रास्पीयर की याद कीजिये। फ्रांस के इतिहास में इनका कितना ऊँचा स्थान है और इनकी हरकतों को याद कीजिये। शायद आपको इस बात का कम

गर्व नहीं होगा कि आप उस देश की रहनेवाली हैं जहां क्रैम्बेल के समान वीर विजेता और अंग्रेज जातिका उद्धारक पैदा हुआ था। लेकिन आपके उस क्राम्बेल की विजय किस बातमें है। इतिहास को आप भुला न सकेंगी। क्राम्बेल की तीखी तलवार का बार सबसे पहले राजा प्रथम चार्ल्स क ऊपर हुआ था और उसकी गर्दन धड़से अलग होकर जमीन पर लोट रही थी। तब क्या शूली और तलवार से हमलोगों की मशीन गनें ज्यादा खूंखार हैं ? आपका इलजाम यह हो सकता है कि हमलोगों ने बहुत अधिक लोगों की जानें ली हैं। लेकिन जरा आपको रूस की जन संख्या पर भी ध्यान देना चाहिए। आप अपने देशकी जन संख्या के साथ रूसकी जन संख्या और आपके देशमें मारे गये व्यक्तियों की संख्या क साथ रूसमें मारे गये व्यक्तियों की संख्या को मिला कर देखियेगा तो दोनों का अनुपात बराबर होगा। हमलोगों की यह मौलिक सूझ भी नहीं है। हमलोग तो अमेरीका वालों की नकलमात्र कर रहे हैं।"

उसके इस अन्तिम वाक्य से मैं चौंक पड़ा। पूछाः—"इससे आपका क्या अभिप्राय है ?"

वरिचकिन ने अपना ग्लास खाली करते हुए कहाः—

"हमलोग मि० फोर्ड की तरह सिलसिले से लोगों की जानें तो लेते हैं लेकिन मोटरों से नहीं।"

लेडी डायना ने अपने अधखुले होठों से धुंए की एक टेढ़ीमेढ़ी लकीर बनाई। उसके बाद वरिचकिन से कहा—"आप मुझे भयभीत कर रहे हैं ?"

वरिचकिन ने बड़ी सौजन्यता के साथ उनकी बात का विरोध करते हुए कहाः—

"लेडी डायना! आपने अवश्य ही मजाक किया होगा। दिल से यह बात आपने नहीं कहा है। मैं महज मामूली आदमी हूं। भला आपको मैं कैसे

डरा सकता हूँ। लेकिन मैं यह बात जोर देकर कह सकता हूं कि आपमें ब्रिटिश कुलीनवर्ग, अन्तर्राष्ट्रीय पूंजीपतियों का खून है जिनके बाहरी सौम्य आवरण के पीछे विष का दांत छिपा रहता है। क्या आपका यह विश्वास है कि संगीतज्ञों की भांति हत्यारे भी जन्मजात होते हैं। मैं आपसे यह जानना चाहता हूं कि जालिम का जुल्म किस बात की ओर इशारा करता है? वह अपनी रक्षा चाहता है। यह उसकी स्वाभाविक आन्तरिक प्रेरणा है और उसी के निमित्त वह जुल्म करता है। एक सीधा सादा, साधारण निर्दोष व्यक्ति है। भाग्यवश उसे हजारों और लाखों व्यक्तियों के ऊपर शासन करने की जिम्मेदारी आ जाती है। ये लाखों आदमी उसके साथ सहयोग न कर उससे विद्रोह करने की ठानते हैं। परिणाम क्या होगा? उसे मजबूर होकर जुल्म करना पड़ेगा। उसे जालिम बनना पड़ेगा। वह इसलिये उन लोगों की हत्या नहीं करता कि वह उनके लिये शासन सुरक्षित करना चाहता है, बल्कि वह इसलिये हत्या करता है ताकि कोई उसका हत्यारा न तैयार हो जाय। संसार में अनेक ऐसे लोग हैं जिन्हें तैमूरलंग की तरह अपनी प्रवृत्तियों तक का ज्ञान नहीं, ठीक उसी तरह जिस तरह अनेक नारियां हैं जिनकी कामुकता का कहीं ओर छोर नहीं है। इसलिये उसे जगाने की आवश्यकता है।"

भोजन का तीसरा दौर परोसा जा रहा था। इसलिये मैं चुप रहा। लेकिन परोसने का काम समाप्त होते ही मैंने कहा:—

"आप यह क्यों भूल जाते हैं कि आपके नेता एक तरफ चिल्लाते फिरते हैं कि वे जनता के कल्याण के लिये सब कुछ कर रहे हैं और दूसरी तरफ जानबूझ कर उन पर जुल्म ढहाते हैं। प्रत्येक दृढ़ विश्वास ने मानव समाज पर इसी तरह जुल्म ढाहा है। टार्कमाग और जिमनेज की तरह लेनिन ने भी तृतीय इण्टर नेशनल के आदर्श को लोगों के सिर पर लादने के लिये लोगों को मृत्यु के घाट उतारा

हैं। जो लोग मार्क्स के सिद्धान्ता को सुखका मूल साधन नहीं मानते उन्हें आप अपने सिद्धान्त का शत्रु समझते हैं। जो लोग ईश्वर में विश्वास करते हैं, व्यक्तिगत स्वतंत्रता की उपासना करते हैं, न्याय की कदर करते हैं, सहनशीलता के पुजारी हैं, वे आप लोगों की दृष्टिमें नास्तिक हैं और आपलोग उन पर इलजाम लगाते हैं कि उनके देवता नकली हैं। आप लोगों के शासन की सबसे दयनीय स्थिति तो यह है कि जिन समाजवादियों ने जार के शासन-काल में असीम यंत्रणाओं का मोकाबला किया, वे ही आज अपने उन्हीं पुराने साथियों द्वारा उन्हीं जेलों में सड़ रहे हैं और जारसे भी कठोर व्यवहार उनके साथ किया जा रहा है। जार निकोलस द्वितीय के निरंकुश शासन-काल में सुधारकों और समाजवादियों के सिद्धान्त में जो भेद था वह साम्यवादियों के निरंकुश शासन में कहीं ज्यादा बढ गया है। वास्तविकता तो यह है कि जार के शासन-काल में जो अत्याचार और जुल्म होता था उसका केवलमात्र नाम बदल गया है। अब चील्ह का स्थान लाल हँसिया और हथौड़ा ने ले लिया है ओखराना का स्थान टेक्काने ?"

"मेरे मित्र ! कोई भी ईमानदार बोलशेविक आपके वक्तव्य को अस्वीकार नहीं करेगा। लेकिन मेरी सफाई यह है कि यदि मनुष्य की पशुवृत्ति जागरित हो गई है तो यह दोष विश्वयुद्ध का है। उसने ही मृत्यु के लिये भूख पैदा कर दी है। संप्रति युद्ध देवता का दूत स्वतंत्रता पूर्वक इस मही पर विचरण कर रहा है। इस धरती को कालज्वर भीषण रूप से चबाता चला जा रहा है। आकाश और उसमें चमकनेवाले नक्षत्रों में प्लेग के कीड़े तैर रहे हैं। जीवन का मूल्य कुछ भी नहीं रह गया है और मनुष्य की कोमल वृत्तियाँ और भावनाओं का लोप हो गया है। खेतों में चूहे आपस में लड़ रहे हैं और छोटे-छोटे कीड़े मकोड़े भी एक दूसरे का संहार कर रहे हैं। आपके साम्राज्यवादियों

ने अपना फौलादी पंजा सीमाप्रान्तों की ओर बढ़ाया है। वर्ग-युद्ध पहले की अपेक्षा आज कहीं भयंकर रूप धारण कर चुका है। सारी बातें वेगवती नदी की तरह आगे बढ़ रही हैं। आज फ्रांस, जर्मनी और बलगरिया के लोग एक दूसरे से नहीं लड़ रहे हैं; बल्कि आपस में ही कट मर रहे हैं, यद्यपि उनके पास कोई विस्फोटक हथियार नहीं है। राष्ट्रों के भीतर सर्वहारा वर्ग के साथ मध्यम श्रेणी का संघर्ष चल रहा है। यह युद्ध ऐसी जगह है जहाँ से निकलने का कोई रास्ता नहीं है। समाज-रूपी शरीर के अन्तस्तल में लाल और सफेद सेनायें लाल और सफेद कणों की तरह एक दूसरे का संहार करने पर तुली हैं। आज पहले की तरह एक ही मोर्चा नहीं है। जो समुद्र से लेकर स्विटजलैंण्ड तक फैला हो। आज तो जितने गाँव है उतने ही मोर्चे हैं, जितनी सड़कें हैं उतनी ही खाइयाँ हैं और जितने मकान हैं उतने ही गड्ढे हैं। लेकिन आपको अपनी बुद्धि का इतना ज्यादा गर्व है कि आप हर बात को समझना नहीं चाहते कि आप किस तरह ज्वालामुखी के मुँह पर खड़े हैं। साल के आरंभ से आजतक आपको सेना में भर्ती होने का पैगाम मिलता रहता है। विरोधी शक्तियाँ आपस में मिलकर एक दूसरे का मुंह निहारती हैं, एक दूसरे की गुप्त बातों का पता लेती हैं और विरोध करती हैं तथा आक्रमण की प्रतीक्षा में सजग रहती हैं।"

लेडी डायना ने अपना सिर हिलाकर इसका विरोध किया।

वरिचकिन कहता गया:—

"लेडी विनहम! ईमानदारी का ताकाजा है कि हमलोग साफ-साफ बातें करें। क्या आप समझती हैं कि बर्कले स्क्वायर के अपने महल में आप सुरक्षित हैं? क्या आप दुश्मनों के खतरों से भयभीत और सजग नहीं रहतीं? कौन दुश्मन? आपके नौकर चाकर जो आपकी समृद्धि से डाह करते हैं, आपका दीवान जो अनेक उपायों से आपको लूटता रहता है। कितनों का नाम गिनावें। जिस

किसीसे आपका किसी प्रकार का व्यापार या व्यवहार है सभी तो आपको लूटने की घात में लगे रहते हैं, सभी आपके दुश्मन हैं और उन सबों से आपको सावधान, सतर्क और चौकन्ना रहना पड़ता है। कहीं से एक भिखमंगा आपके महल के नीचे आ जाता है। वह एक निगाह से ऊपर से नीचे तक देखता है। उसे लालसा होती है कि किसी तरह वह आपके महल में पहुँच सकता। वह वहाँ तक पहुंच भी जाता है जहां तक रोकटोक नहीं है और घंटी दबाता है। आप उसे थोड़े रुपये देकर या झूठे वादों की आशा दिलाकर वापस करती हैं। वह वापस चला जाता है लेकिन आपकी इस उदारता का उसपर कोई असर नहीं पड़ता है। निश्चय मानिये कि एक दिन वह फिर धावा बोल देगा और आपको उस महल से निकाल कर ही दम लेगा। यही हालत सबकी है। आप सभी लोग अपने को सुरक्षित समझते होंगे लेकिन आपकी सुरक्षा संशयों से भरी है। क्या आपके मन में किसी भी समय यह बात उठी है कि थेटरों की आगेवाली जगहों के लिये साधारण लोग धावा क्यों नहीं कर देते। इतना तो वे और आप लोग भी अच्छी तरह समझते हैं कि पुलिसमें वह ताकत नहीं हैं कि उन्हें रोक सके या हटा सके। रेलगाड़ियों में गरीब लोग भेंड़ बकरियों की तरह तीसरे दर्जे में क्यों समा जाते हैं। क्या सोनेवाली गाड़ियों में घुस जाने से उन्हें कोई रोक सकता है?? क्या आप समझती हैं कि वे अनुशासन के ख्याल से ऐसा नहीं करते? क्या वे सदाचार और शिष्टाचार के विचारों से दबे पड़े हैं? क्या वे कानून की पाबन्दी करते हैं जिन्हें तोड़ने का कोई साहस नहीं करता। मैं कहता हूं कि यह सब कुछ नहीं है। एक दिन आप देखेंगी कि ये सब बाधायें टूट गई हैं और जिन्हें आप आज भेड़ बकरी समझ बैठी हैं वे ही आपके सामने भेड़िया बन कर गुर्राते दीख पड़ेंगें।"

वरिचकिन की वाक्शक्ति का लेडी डायना पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

वे उसकी बातें सुनती रहीं और मन ही मन उसकी प्रशंसा करती रहीं। पर साथ ही उनके मन में एक तरह की दहशत ( विभीषका ) भी पैदा हो रही थी।

अन्त में उन्होंने बड़े संकोच के साथ कहाः—

"आपकी बातों से यही प्रगट होता है कि आप मेरी मदद करने के लिये तैयार नहीं हैं और मेरे कामों को आगे बढ़ाना नहीं चाहते !"

उनकी बात सुनते ही विरिचकिन की आंखें चमक उठीं। उसने पहले की अपेक्षा बड़ी नर्मी से कहाः—

"लेडी डायना ! मैं नहीं चाहता कि आपके मनमें इस तरह की किसी भी भावना का उदय हो। आपको यह भूल नहीं जाना चाहिए कि सभी नियम के विकल्प होते हैं। इसके अलावा मेरे मित्र प्रिंस सेलीमन आपको बतलायेंगे कि हम बोलशेविकों का पहनावा कितना भी साधारण क्यों न हो, हमलोग जब किसी सुन्दर रमणी के यहाँ जाते हैं तो उसे झाड़झूड़ कर ठीक कर लेते हैं।"

आसूदगी का साँस लेते हुए लेडी डायना ने कहाः—"आपकी इस बात से मुझे बड़ी तसल्ली हुई।"

मैंने उनकी ओर कनखियों से देखा। मैं यह जानना चाहता था कि उनके व्यक्तित्व पर इसका कैसा प्रभाव पर रहा है। अब समय आ गया था कि मैं उन दोनों को अकेला छोड़कर खिसक जाऊं। होटल का बेयरा मिठाई परोस रहा था। यह भोजन समाप्ति का सूचक था। वहां से चले जाने के पहले मैं काम की बातें भी कर लेना चाहता था। इससे मैंने लेडी डायना से कहाः—

"आपने मि० वरिचकिन के बारे में जो कुछ कहा है वह सर्वथा अनुचित है। वे आपके काम की तरफ से कभी भी उदासीन नहीं रहे।। इसके विपरीत उन्होंने पूरी तत्परता से काम किया है। आपको यह जानकर खुशी होगी कि उनके प्रयत्नों के फल-स्वरूप मास्को आपके पक्ष में हो गया है।"

वरिचकिन के चेहरे पर मुस्कुराहट की हल्की रेखा दौड़ गई । उसने कहाः—

"अगर लेडी डायना शर्तों को पूरा करने के लिये तैयार हो तो तेलाब के कुओं से वे इतमीनान से तेल निकाल सकती हैं और नफा कमा सकती हैं ।"

लेडी डायना ने इस बात को इस तरह सुना मानो इसमें कोई गूढ़ रहस्य छिपा हुआ नहीं था । उनकी उस समय की आकृति उनकी सादगी और सिधाई को सच्चा प्रतिबिंबित करती थी । कोई भी चित्रकार उसे चित्रित कर अपने को धन्य मानता । उन्होंने तिरछी नजरों से वरिचकिन की ओर देखा और हँसकर कहाः—

"सब कुछ तो आपको ही करना है ।"

वरिचकिन विचित्र असमंजस में पड़ गया । उसकी समझ में नहीं आया कि लेडी डायना मजाक कर रही हैं या हृदय से सब कुछ कह रही हैं । मैं भी संशय में पड़ गया । जो कुछ भी हो, मैंने यह महसूस किया कि मुझे यहां से हट जाना चाहिए । मेरी उपस्थिति वाञ्छनीय नहीं है । मैंने लेडी डायना से छुट्टी ली और वहां से चलता बना ।

XX XX XX

चाँदनी रात के दिव्य प्रकाश में प्रकृति के सौन्दर्य का अनुपम आनन्द लेता हुआ मैं आगे बढ़ा और बाजार की ओर निकल गया । इधर उधर दूकानों का चक्कर लगाता, मतलब और बेमतलब की एक दो चीजें खरीदता, उनकी सजावट का अवलोकन करता मैं वापस लौटा । देखा कि लेडी डायना के कमरे के सामने वरिचकिन का गुप्तचर उसी तरह खड़ा है और भीतर से गर्मागर्म बहस की आवाज आ रही है । मैंने अपने मन में कहाः—"वरिचकिन ने अपनी रक्षा का पूरा इन्तजाम कर रखा है ।' और मैं सोने चला गया ।"

'रात को एक बजे मेरी नींद टूटी । मुझे अचरज हो रहा था कि बीचवाले दरवाजे से अब तक लेडी डायना ने मेरे कमरे में आकर मुझे जगाया क्यों

नहीं। मैंने उधर कान लगाया तो मालूम हुआ कि बातचीत का सिलसिला अभी तक टूटा नहीं है। वह उसी प्रकार जारी है। मैं फिर सो गया।

रात को तीन बजे किसी ने बीच के दरवाजे पर धक्का दिया। मेरी नींद टूट गई। लेडी डायना ने कमरे में प्रवेश किया और रोशनी जला दी। क्षण भर के लिये मेरी आँखें चौंधिया गई। लेडी डायना के चेहरे पर मुस्कुराहट की हल्की रेखा दौड़ रही थी। मेरे बिस्तर से जरा दूर रहने का व्यंगपूर्ण अभिनय करती हुई उन्होंने कहा:—

"प्रिंस! मुझे यह सूचना देते हुए हर्ष और गर्व दोनों हो रहा है कि सोवियत रूस के जर्मनस्थित प्रतिनिधि श्री वरिचकिन ने लेडी डायना विनहम से विवाह का प्रस्ताव किया है।"

मैं विस्मय के साथ उनका मुंह देखने लगा। इस बात पर मुझे एकाएक विश्वास नहीं हुआ। लेडी डायना के वाक्यों के तात्पर्य को समझने की कोशिश करता हुआ मैंने कहा:—"आइये, बैठिये! हमलोगो के बीच शिष्टाचार की आवश्यकता नहीं है। इस विवाह से आपका क्या मतलब है? मैं तो यही समझता हूँ कि कुछ समय के लिए आपने अपने को गिरवी रख दिया है।"

लेकिन लेडी डायना ने गंभीर होकर उत्तर दिया:—"तुम्हारा ख्याल गलत है जिरार्ड! मेरे यहाँ दिखाने के दांत एक और खाने के दांत दूसरे नहीं होते। तुम वरिचकिन को मेरा भावी पति ही समझो।"

उनकी इस अन्तिम बात ने मुझे इस तरह चौंका दिया कि मैं बिस्तर से उछल कर अलग जा खड़ा हुआ। मेरे मुंह से सहसा निकल पड़ा:—"आप क्या कह रही हैं?"

लेडी डायना ने मेरा हाथ पकड़ कर कहा:—इस तरह बाहर न निकल पड़ो, नहीं तो सर्दी लग जायगी। मेरी शादी की बात सुनकर तुम इस तरह

ब्याकुल क्यों हो गये ? अच्छी तरह ओढ़-बिढ़ कर बिस्तर पर लेट रहो और मेरी बातें गौर से सुनो। उछल-कूद की जरूरत नहीं है। नहीं तो तुम अपना बिस्तर ही मरोड़-मराड़ दोगे। क्या मैंने अभी जो बात कही है वह इस कदर असाधारण है ? वह बात तुम्हें याद है कि नहीं कि जब तुमने मुझ से कहा था कि वह रूसी मेरे साथ एक रात गुजारना चाहता है तो मैंने तुम्हें क्या उत्तर दिया था ? यही कि यह माँग या तो बहुत ज्यादा है या बहुत कम।"

"लेकिन वरिचकिन से शादी की बात की कल्पना ही पागलपन है।"

"क्यों ? क्या तुम मुझे उन महिलाओं में समझते हो जो तेलवाली उतनी सी जमीन के लिये अपने को बेंच देगी। तब तो तुम मेरा अपमान कर रहे हो, जिरार्ड ! लेकिन तुम मेरा अपमान कर नहीं सकते क्योंकि तुम्हें मुझसे अगाध प्रेम है। तुम्हारे इतमीनान के लिये मैं सारी बातें कह देना चाहती हूँ जो तुम्हारे जाने के बाद वरिचकिन और मेरे बीच हुई।"

इतना कहकर उन्होंने मेरा दाहिना हाथ अपने दोनों हाथों में ले लिया और कहने लगीं:—

"इतना तो तुम सहज में समझ सकते हो कि अपना प्रस्ताव रखने में वरिचकिन को लेशमात्र भी झिझक या संकोच नहीं हुआ। लेकिन मैं इतना कह सकती हूं कि उसे उस तरह का आग्रह नहीं था जिसे जिद् कहा जा सके। इसके बाद ही मेरा घात प्रतिघात शुरू हुआ। मैं लगी उन्हें आशा और निराशा के झूले में झुलाने। कभी ऐसी बात कह देती जिससे वे समझते कि उनका प्रस्ताव मुझे स्वीकार नहीं है। इससे उनका चेहरा मुर्झाया देखकर मैं कुछ ऐसा कह देती जिससे आशा की किरणें उनमें फूट पड़तीं। इस तरह प्रायः घंटे भर तक यह खेल चलता रहा। शराब का दौर तो चल ही रहा था। इससे हमलोगों की बातचीत में और भी गर्मी आती गई। उसके बारे में मे इतना ही

निश्चय पूर्वक कह सकती हूं कि वह कितना भी खू खार क्रान्तिकारी क्यों न रहा हो लेकिन मेरे समान महिला के सामने तो वह गोद का बच्चा ही प्रतीत हुआ। एक बजे रात तक की बातचीत के बाद मैंने देखा कि वह निराश हो चला है। उसे कुछ कहने के लिये शेप नहीं रह गया। मैंने जो कुछ उससे कहा उसका तात्पर्य यह था:—"आपने मेरे सामने जो प्रस्ताव रखा है वह मेरी मर्यादा के विरुद्ध है। मैं उस पर विचार तक नहीं करना चाहती। इसलिये मुझे तेलाव की जमीन की तरफ से सदा के लिये मुंह मोड़ लेना चाहिए यदि·········" उसने मेरे इस अन्तिम शब्द को पकड़ा और बीच में ही बोल उठा:—'इस 'यदि' का क्या अर्थ होता है?

"इस 'यदि' का अर्थ यह है कि यदि आप मुझसे शादी करना स्वीकार नहीं करते।"

"जिरार्ड! काश तुम उस वक्त रहते। इस वाक्य को सुनकर उसकी जो हालत हुई, वह सचमुच देखने लायक थी। किसी महिला के इस तरह के प्रस्ताव पर किसी पुरुष के चेहरे के भाव में इस तरह का परिवर्तन मैंने कभी नहीं देखा था। उसके चेहरे का रंग क्षण क्षण बदलता रहा। अविश्वास, संतोष, चिन्ता, अभिमान, वासना, सभी भाव एक एक कर आते और गायब होते रहे। जब उसे इस बात का पक्का विश्वास हो गया कि मैं उसके साथ मजाक नहीं कर रही हू, तब उसने क्या किया? यदि तुम सोचकर इसका सही सही उत्तर दे सको तो मैं हजार पाउण्ड इनाम दे सकती हूं।"

"मैं कुछ नहीं सोच सकता"

"वह जमीन पर घुटने के बल बैठ गया—ठीक घुटने के बल। दोनों हाथों को मिलाकर क्रास बनाया। क्षण भर इस तरह बुदबुदाता रहा मानों प्रार्थना कर रहा हो। इसके बाद मेरा हाथ पकड़कर देर तक उसे चूमता रहा। तुम मेरी

जीवन-कथा जानते हो ! जीवन के सभी स्तरों की अनुभूति मुझे है। लेकिन इस दाढ़ीवाले बोलशेविक को देखकर मुझे जो भावना हुई वह कभी नहीं हो सकेगी। जरा उस समय की हालत की कल्पना तो क्षण भर के लिये करो कि बोलशेविकों का वह उद्दण्ड नेता मेरे पैरों पर झुका है ! क्या इससे पढ़ कर गौरव भी मुझे प्राप्त हो सकता था ? क्या नारी के लिये यह बहुत बड़ी विजय नहीं है ?"

लेडी डायना अपनी जगह पर सही थी तोभी मुझे वरिचकिन के आचरण पर उतना विस्मय नहीं हो रहा था जितना विस्मय लेडी डायना के निर्णय पर हो रहा था। मैं किसी भी प्रकार अपने को संयत नहीं कर सका। मैंने कहा:—

"लेकिन मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं कि आप किस बातसे इस तरह प्रभावित हो गईं कि आपने इतना बड़ा निर्णय कर डाला। क्या आपने उस पर पूरी तरह से विचार किया था ?"

"जरूर।"

"खैर मेरी बात सुनिये ! सिलसिले से हमलोगों को विचार कर लेना चाहिये। सबसे पहली बात यह है कि वरिचकिन आपको आकर्षक प्रतीत हुआ था ? आपको पसन्द आया ?

"हाँ, बहुत अधिक आकर्षक।"

"जहाँ तक शारीरिक गठन और चेहरे की बनावट से संबंध है वह सुन्दरता से बहुत दूर है।"

"इसकी मुझे जरा भी चिन्ता नहीं। मैं तो उसके विचित्र दिमाग की कायल हूँ। देखो जिरार्ड ! मेरे पति दाढ़ी मूंछ बना कर सफाचट रहते थे। मेरे उन दोस्तों की भी यही हालत थी जो मेरे यहां आया जाया करते थे। इसलिये उसकी यह काली दाढ़ी मेरे लिये एक नवीन चीज होगी।"

लेडी डायना की इस बात से मुझे हंसी आ गई। अपनी गर्दन हिलाते हुए मैंने कहाः—"क्या आप चाहती है कि मैं इस बात पर विश्वास कर लू कि आप उससे इसलिये विवाह करना चाहती हैं कि आप उसकी दाढ़ी पर मुग्ध हैं ?"

"जिरार्ड ! मैं तुम से कोई बात छिपाना नही चाहती। मेरे दिल और दिमाग में जो कुछ है, सब मैं तुम्हारे सामने उगल देना चाहती हू। मेरी इस बात पर तुम विश्वास कर लो कि मैं बर्न्चिकिन को बहुत अधिक पसन्द करती हूं। उसकी बातचीत के तोर तरीके से मैं बहुत प्रभावित हुई। उसके बोलने का तरीका, उसकी चंचल आँखें जिनमे उस समय भी सौजन्यता और शालीनता टपकती रहती हैं, जब वह मौत के बारे में भी हंस-हंस कर बातें करता रहता है। इन चीजों ने मुझे उसकी ओर. आकृष्ट ही नहीं किया बल्कि मुझे अपने वशमें कर लिया। इसे तुम क्षणिक आवेश मत समझना। यह तो मैंने अपनी निजी बात बतलाई। अब इस प्रश्नके दूसरे पहलू पर आओ। मान लीजिये कि मैं उसकी इच्छा पूरी कर देती। लेकिन वह अपना वादा पूरा करेगा या नहीं, इसका मेरे पास क्या सबूत था। जो चीज मनुष्य को आसानी से मिल जाती है उसके बारे में किये गये सभी वादों को वह जल्द भूल जाता है। शादी का प्रस्ताव उसके सामने रखकर मैं हर तरह से उसे बांध लेती हू। एक तो वह यह देखता है कि उसकी वासना की तृप्ति हो जाती है, साथ ही दूसरी तरफ हम दोनों ही तेल की जमीन के मालिक बनते हैं। मेरे साथ साथ वह भी उससे लाभ उठाता है। और मुझे एक तीसरा लाभ भी है। मै लन्दन के कुलीन समाज के मुंह पर गहरी चपत लगाना चाहती हू। जरा इस बातकी कल्पना तो करो कि लार्ड विनहम की विधवा पत्नी एक बोल्शेविक से विवाह कर रही है। उस दंभी कुलीन वर्ग की संकीर्णता को कैसी गहरी ठेस लगेगी। तुम्हें तो मालूम ही है कि

लन्दन के कुलीन वर्ग के शिष्टाचारों और तौर तरीकों से मुझे नफरत है। इससे यदि दूसरा कोई लाभ न भी होता तो भी मैं इतने के लिये ही इस विवाह के लिये तैयार हो जाती कि लन्दन के समाचार पत्रों में यह संवाद मोटे मोटे अक्षरों में छपेगा। लन्दन के कुलीन समाज पर इसका कैसा असर पड़ेगा और इसकी चर्चा की कैसी प्रतिक्रिया होगी, इसकी कल्पना मैं यहीं बैठी बैठी कर रही हू। उनका नाक भौंह सिकोड़ना, उनका बात बात में मुंह बनाना, मेरे लिये सदा घृणा का सामान रहा है। मैं तो चाहती थी कि आज ही और इसी वक्त उनके सामने वरिचकिन को लेकर उपस्थित होती और अपने पति के रूप में उसका परिचय कराकर उनका मान मर्दन कर देती।"

"इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि अपनी आवश्यकता को आप भलीभाँति समझती हैं। और आपके मत का खंडन करना भी सहज नहीं है। उस नृत्य के बाद भी यदि आप समझती हैं कि लोगों को आपकी अलोचना से पेट नहीं भरा है तो यह विवाह उसे पूरा कर देगा क्योंकि यह एक अनहोनी घटना होगी। लेकिन मैं एक दो बातें आपके सामने रखना चाहता हूं। आप उनपर विचार करें।"

"अच्छी बात है। मैं जानती हूं कि तुम क्या कहोगे। इस अवस्था में लोग बहुधा उपदेश के चाबुक से चंचल घोड़े को सीधे रास्ते पर लाने का यत्न करते हैं। तुम भी अपनी तीर छोड़ लो।"

"पहली बात तो यह है कि क्या यह विवाह कानूनन जायज होगा? लोग तो यही कहते सुने गये हैं कि रूस में उन्मुक्त प्रेम की ही प्रधानता है। स्त्रियाँ राष्ट्र की संपत्ति हैं। इसलिये किसी भी एक पुरुष का अक्षुण्ण अधिकार किसी औरत पर नहीं हो सकता ताकि दूसरे उसकी संगति से वंचित न रहे।"

"मैंने इस प्रश्न को भी छेड़ा। मैंने वरिचकिन से पूछा। उसने कहा कि

बोलशेविकवाद के शैशव काल में कुछ उग्रवादियों ने इस तरह के सिद्धान्तों को चलाया, लेकिन विवाह की प्रथा रूस में प्रचलित है। हां, हमारे यहाँ विवाह आडम्बरशून्य है। न तो वहाँ कोई प्रतिबन्ध है और न सार्टिफिकेट प्राप्त करने की कुप्रथा है। प्रेमी और प्रेमिका दोनो अपना पासपोर्ट लेकर पुलिस दफ्तर में जाते हैं। वहां कुछ नियत फीस देनी पड़ती है और विवाह सम्पन्न हो जाता है। इसके अलावा में आग्रह करूं तो वह लन्दन चलकर हमलोगों की रीति के अनुसार विधिवत् शादी करने के लिये तैयार है।"

"मेरी दूसरी आशंका यह है कि तुमसे शादी कर लेने के बाद अपने देश में वरिचकिन की क्या स्थिति रहेगी। क्या उनपर यह आरोप नहीं हो सकता कि वह पूंजीवादियों या प्रतिक्रियावादियों का दलाल है।"

"इस प्रश्न पर दो पहलू से विचार करना होगा। अपने दलवालों के सामने वह यह भी कह सकता है कि उसने उस कुलीन वर्ग—जो सदा रूस के बोलशेविकों को गाली देता रहा—में विवाह कर मैंने अपने दल की मर्यादा बढ़ाई है और साथ ही अपने विरोधियों के दल में अपना एक स्थायी गुप्तचर बैठा दिया है जो उनकी गतिविधि का सदा पता हमलोगों को देता रहेगा। 'तुमतो जानते ही हो कि सोवियत नेता इस बात को कबूल करते हैं कि विदेशों में स्थित उनके राजदूत समाज की ऊँची श्रेणी के जीवन के सभी उपभोगों का आनन्द लूटते हैं और उनके विरोधों के स्तर को समझने के लिए केवल-मात्र भूँकते रहते हैं। यदि सोवियत नेता उसे अपने दल से निकाल दें तो वह प्रेम की वेदी पर अपने सिद्धान्त को निछावर कर देने के लिए तैयार है और वह अविलम्ब रूस छोड़कर कर चल देने के लिए तैयार है।"

"ऐसी हालत में तेलाब की जमीन का भविष्य क्या होगा? उसका किस्सा तो सदा के लिए खत्म हो जायगा।"

"हमलोगों ने उस पहलू पर भी विचार किया है। हमलोगों ने यह तय कर लिया है कि जब तक इस जमीन की समस्या हल नहीं हो जाती है और जबतक अंग्लो-अमेरिकन असोसिएशन उस पर काम चालू नहीं कर देता है तब तक शादी की चर्चा कभी नहीं की जायगी और कम्पनी का काम चालू हो जाने के बाद वरिचकिन से केवल मात्र बदला लेने के ख्याल से सोवियत नेता इंगलैंड और अमेरिका से झगड़ा मोल लेना नहीं चाहेंगे।"

"तब इसका मतलब यह हुआ कि तुम्हें अपनी पत्नी बनाने के लिए उसे तब तक की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी?"

"इसका मतलब यह हुआ कि इन कामों को जल्द से जल्द संपन्न कर देने के लिए वह आकाश और पाताल को एक कर देगा।"

"क्या आपका यह पक्का विश्वास है कि वह आप पर अनुरक्त है और आपको दिल से प्यार करता है?"

"इससे बढ़कर और क्या सबूत वह उपस्थित कर सकता है?"

मेरी सभी आशंकाओं का संतोष-जनक उत्तर मुझे लेडी डायना से मिल गया था। मेरे पास अब केवल एक ही अस्त्र शेष रह गया था और मैंने उसे भी छोड़ देना चाहा :—

"मैडम मौराविफ के बारे में क्या सोचा है?"

लेडी डायना के सामने वह बहुत बड़ा संकट था। उन्होंने कहा: —

"इस बात को भी उसने छिपा कर नहीं रखा। उसने सारी बातें मुझसे कह दीं। उसने मुझे सचेत भी किया और कहा कि हमलोगों को बड़े ही खूंखार दुश्मन का सामना करना पड़ रहा है। उसने मुझ से यह भी पूछा कि इरना का सामना करने का साहस मुझ में है या नहीं। मैंने कहा:—'मेरी तरफ से तुम

निश्चिन्त रहो, लेकिन तुम अपने बारे में क्या सोचते हो।' उसने कहा:—इरना साधारण महिला नहीं है। वह बड़ी खूंखार है, उसकी क्रूरता की कहानी सुनकर तुम काँप उठोगी, बदला लेन के लिए वह किसी भी हद तक जा सकती है। उसकी कोई भी सीमा नहीं है। इसलिये मैं तुम्हें पहले ही सचेत कर देना चाहता हूं जिससे भविष्य में तुम मुझे दोष न दो कि मैंने तुम्हें किसी तरह के धोखे में रखा।' मैंने उस खतरे को अंगीकार किया। इसके बाद उसने कहा कि इस निर्णय पर चुम्बन की एक मुहर लग जानी चाहिए।"

इसके बाद हमलोग एक दूसरे से विदा हो गये और अब हमलोगों को भी संप्रति विदा होना चाहिए। क्योंकि मैं अतिशय श्रान्त हूं और तुम भी थक गये होंगे।' इतनी रात को जुलियट को जगाना ठीक नहीं होगा इसलिये कपड़ा उतारने में तुम ही मेरी मदद करो।"

क्षण भर के बाद लेडी डायना ने मुझ से पूछा:—"जिरार्ड! मुझे विश्वास है कि मेरे इस निर्णय से तुम खिन्न नहीं होगे। इस विवाह से तुम्हें डाह तो नहीं हो रहा है?"

"जरूर। क्योंकि जिस दिन वरिचकिन को पत्नी का संयोग प्राप्त होगा, उसी दिन मुझे अपने दोस्त का वियोग होगा।"

लेडी डायना ने अपनी दोनो आँखें बन्द कर लीं। उनकी बांहें ढीली पड़ गईं। उनका शरीर कांप उठा। इसके बाद उन्होंने अधखुली आंखो से मुझे गौर से देखा और वे अचानक उठ खड़ी हुईं तथा अपना पोशाक सम्हाल कर अपने कमरे की ओर तेजी से चलीं। मैं उनके पीछे जाने ही वाला था कि वे मुड़ीं और बोलीं:—जिरार्ड! तुम्हें मेरी शादी के समय गवाह होना पड़ेगा।"

७

मेरे बर्लिन पहुँचने के आठवें दिन की बात है। मैं अडलन होटल के अपने कमरे में जलपान कर रहा था। वरिचकिन ने हमलोगों को यह आश्वासन दिया था कि अगले अड़तालिस घंटे के भीतर तेलाब के तेल की जमीन के पट्टे पर हस्ताक्षर हो जायगा। हमलोग वापस जाने के लिये अधीर हो रहे थे। बर्लिन नगर की मनहूसियत लेडी डायना को बुरी तरह खल रही थी। मेरा भी समय मुश्किल से कटता था। वरिचकिन की बातों से यही प्रगट होता था कि सारा काम जल्द से जल्द समाप्त कर देने के लिये वह जी जान से कोशिश कर रहा है? उसकी तात्परता में किसी तरह की कमी नहीं दीख पड़ती थी।

दस बजे के करीब एक चपरासी मेरे नाम का एक खत लेकर आया। खतकी लिखावट देखते ही मैं उसे पहचान गया और मेरा कलेजा धड़कने लगा। खत में लिखा थाः—

"महोदय, आज तीसरे पहर नं० ४४ बेली अलायंस प्लाज के दो तल्ले के बायीं तरफवाले कमरे में मैं आपकी प्रतीक्षा करूंगी। मैं आपसे एकान्त में बातचीत करना चाहती हूं। आपके अपने कल्याण के ख्याल से मैं इतना और लिख देना चाहती हूं कि इसकी चर्चा आप किसी से नहीं करेंगे।"

—इरिना मौराविफ

इस खतके पढ़ते ही मेरे सिर पर एक तरह की चिन्ता सवार हो गई। मैं अनुमान करने लगा कि मुझे इस तरह एकान्त में बुलाने का क्या अभिप्राय हो सकता है। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ? क्या मैं कोई बहाना बनाकर जाने से इनकार कर दूँ? क्या आजका मिलना स्थगित कर दूँ और कोई दूसरा दिन नियत करूँ? मैं मैडम मौराविफ की अवज्ञा करूँ?

मैडम मौराविफ ने लिखा है कि इसकी चर्चा किसीसे न कीजियेगा। क्या इस चेतावनी की अवज्ञा कर मैं वरिचकिन को यह खत दिखला दूं ? बहुत सोच विचार के बाद मैं इसी परिणाम पर पहुंचा कि उसकी हिदायतों का पालन करते हुए मुझे उससे मिलना चाहिए और उसपर यह स्पष्ट रूपसे प्रगट कर देना चाहिए कि मै उसकी धमकियों से डरनेवाला नहीं हू।

नं० ८४ बेली अलायंस प्लाज बहुत ही साधारण मकान था। इस तरह के लाखों मकान यहां जहां तहां खड़े थे। उस मकान के एक तल्ले पर बायीं ओर की तख्ती पर लिखा था—"डाक्टर ओटो कूफर जनारट।"

और दाहिनी ओर!

"फ्रालिन इरना डिकरडाफ गेमागुएटरिच"

निश्चय ही मैडम मौराविफ के पड़ोसी शान्तिप्रिय व्यक्ति प्रतीत होते थे और मिस डिकरडाफ तो संगीत की शिक्षा देती थीं। उनके संगीत से मुलाकाती तो आतंकित नहीं ही हो सकते थे।

मैं दूसरे तल्ले पर चला गया और बायीं ओर की घंटी बजायी। एक भद्दे सूरतवाले आदमी ने दरवाजा खोला और मुझे घूर कर देखा। उसकी सूरत ऐसी डरावनी थी कि उस पर सहसा विश्वास नहीं किया जा सकता था। मैंने उससे कहा:—

"मैडम मौराविफ ने मुझे मिलने के लिये बुलाया है।"

उसने कहा:—

"काम्रेड मौराविफ ने आपको मिलने के लिये बुलाया है?"

"हां, काम्रेड!"

उसने नीचे से ऊपर तक मुझे गौर से देखकर कहा:—"आप मेरे काम्रेड नहीं हो सकते।"

मैंने अपना शब्द वापस लिया और उससे क्षमा मांग ली। लेकिन उसने इसकी परवा नहीं थी। वह चुपचाप अन्दर चला गया। मुझे उस जगह के निरीक्षण का मौका मिला। वह कमरा बहुत विशाल था। इसमें एक टेबुल और कई कुर्सियाँ रखी थीं। टेबुल पर रूसी और जर्मनी अखबार लदे थे। किसी दूसरे कमरे से टाइपराइटर की खटखट की लगातार आवाज आ रही थी।

दूसरे ही क्षण वही आदमी वापस आया और मुझे अन्दर ले चला। मैं उसके पीछे हो लिया। वह मुझे मैडम मौराविफ के दफ्तर में ले गया। उसका निजी दफ्तर सीधासादा था। कमरे के बीचो-बीच साधारण सा टेबुल था जो कागजों से लदा था। मुलाकातियो के लिये एक पुरानी कुर्सी थी। बगल में किताबों के रखने का रैक था जिस पर मोटी-मोटी किताबें सजाकर रखी थीं।

मैडम मौराविफ आगके सामने खड़ी थी। उसके शरीर पर वही पुराना कपड़ा था। लेकिन सिर खाली था। उसके नाटे केश उसके ललाट पर बिखरे थे और उसकी काली चमकीली आँखें मेरे चेहरे पर स्थिर थीं। उनसे न तो दोस्ती और न दुश्मनी के ही भाव टपक रहे थे। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं कोई असाधारण या अप्राप्य जन्तु हूँ जिसका अध्ययन कोई जन्तु-विद्या विशेषज्ञ कर रहा है।

मैंने उन्हें प्रणाम किया। उत्तर में उन्होंने अपना सिर हिला दिया। मैंने योंही बातचीत का सिलसिला छेड़ देना उचित समझा। मैंने अंग्रेजी में कहाः—

"आपका खत पाकर मैं चल पड़ा और समय पर आपकी सेवा में हाजिर हो गया। मैंने अनुमान किया कि रूस को खोने के लिये समय नहीं होगा।"

मेरी बात चुभती सी प्रतीत हुई क्योंकि मैंने जरा हँसते हुए यह बात कही थी। मुझे यह बात मालूम नहीं थी कि मास्को के इस श्रेणी के लोगों से लोग मजाक नहीं किया करते। मैडम मौराविफ के दोनों हाथ जेब में थे। वे दो कदम

आगे बढ़ आयीं। उनकी आँखें मेरे चेहरे पर इस तरह गड़ गईं मानों वे मेरा और अधिक अध्ययन कर लेना चाहती हैं। मेरी समझ में आया कि वे मेरा कान उमेठ कर यह देखना चाहती हैं कि इसका मुझ पर क्या असर होता है। उनका इस तरह मौन रह कर घूरते रहना मुझे बहुत अखरा। मैंने दूसरी गोली छोड़ी:— •

"मैडम ! मैं आपको यह बतला देना चाहता हूँ कि साधारण लोगों की तरह मैं भी नाक से ही सांस लेता हूं और रोज सुबह दाढ़ी बनाता हूं। आप और क्या जानना चाहती हैं ?"

उसने अपनी जेब से सिगरेट का डिब्बा निकाला और उसे मेरी ओर बढ़ा दिया। फिर जलाने का सामान दिया और उसी टूटी कुर्सी की ओर इशारा किया। लेकिन वह खड़ी ही रहीं। इसलिये मैंने कहा:—

"यह कैसे संभव है कि आप खड़ी रहें और मैं बैठ जाऊं। आपके बैठने के बाद ही बैठना मैं उचित समझता हूं। मेरे यहाँ का यही शिष्टाचार है।"

"क्या ?"

"बात यह है कि यदि आप खड़ी रहती हैं तो मैं यह समझूंगा कि आप जल्द से जल्द मुझ से छुटकारा चाहती हैं और यह सौजन्यतापूर्ण नहीं होगा। यदि आप बैठ जायं और मैं खड़ा रहूं तो इससे यह प्रगट होगा कि मैं अपराधी हूं और आप मेरा विचार कर रही हैं।"

मैडम मौराविफ ने अपनी गर्दन हिला दी और चुपचाप बैठ गईं। उसके बैठने के बाद मैं भी बैठ गया। अपने सिगरेट की राख को झाड़ते हुए उसने कहा:—

"मैं अभी तक यही सोच रही थी कि आप ईमानदार व्यक्ति हैं या नहीं।"

"यह तो ईमानदार शब्द की आपकी परिभाषा पर निर्भर करता है। क्या

आप आज भी उसकी वही परिभाषा सामने रखना चाहती हैं को अठारवीं सदी में था? या आप बीसवीं सदी के अनुसार इस शब्द की परिभाषा के बारे में सोचती हैं? मैं इतना कह सकता हूँ कि आज तक मैंने किसी की कोई चीज नहीं चुराई है और अपना वचन सदा निवाहता आया हूँ।"

"प्रिंस ! मैंने बड़े गौर से आपके बारे में सोचा विचारा है।"

"आपके निर्णय के महत्व को जानते हुए मैं इसे अपना बहुत बड़ा गौरव समझता हू।"

"और मैंने यह भी देखा कि आप बहुत ही असाधारण काम में लगे हुए हैं जो किसी भी ईमानदार व्यक्ति के योग्य नहीं है।"

"आपका मतलब मैंने नहीं समझा?"

"यही कि आप एक सुन्दरी रमणी का मंत्री बने हुए हैं।"

"यह ईमानदारी की परिभाषा के विरुद्ध काम है क्या?"

"साधारणतः अवश्य? क्योंकि इस पद में स्पष्टवादिता का अभाव है। खैर इन बातों से कोई मतलब नहीं। मैं असली प्रसंग पर आती हू। लेडी डायना ने आपको वेतन पर रखा है या आप उनके साथ एक ही पलंग पर सोते हैं?"

"दोनों में से एक बात भी नहीं है। न तो मुझे वेतन ही मिलता है और न मैं उनका प्रेमी ही हू।"

उनके चेहरे से साफ प्रगट हुआ कि मेरी बातों से उन्हें बहुत अचरज हुआ। उन्होने अपना सिगरेट बुझा दिया और पूछाः—

"तब आप अपनी प्रतिष्ठा या मर्यादा बढ़ाने के लिये इस पद पर काम कर रहे हैं?"

"आप इसे यों कह सकती हैं कि अपनी स्वतः प्रवृत्ति के कारण मैं उनका दोस्त हूँ। लकिन क्या मैं आपसे एक सीधा सादा सवाल पूछ सकता हूँ! क्या

आपने मुझे केवल इसलिए यहाँ बुलाया है कि आप मेरे साथ मेरे काम के औचित्य और अनौचित्य पर विचार करें।"

"नहीं। मैंने आपको यह जानने के लिए बुलाया है कि जिस दुश्मन से मुझे लड़ना है, उसकी वास्तविक स्थिति क्या है।"

"मैंने विस्मय और आश्चर्य प्रगट करते हुए पूछाः—

"मैं? और आपका दुश्मन?"

"आप मुझसे मजाक न करें। आप जानते हैं कि हमलोगों के बीच में बहुत बड़ा व्यवधान है।"

"आपका मतलब राजनीतिक व्यवधान से है।"

"जी नहीं! भावों का! यदि यह प्रश्न महज अंग्लो-अमेरिकन कम्पनी को पट्टा देने मात्र का होता तो हमलोग तुरत तैयार हो जाते। इसमें किसी तरह की दिक्कत नहीं पैदा होती, लेकिन यहां दाल में कालापन दिखाई देता है। वन्चिकिन ने अपनी असाधारण तत्परता से यह प्रगट कर दिया है कि इस सौदा में किसी रमणी का गुप्त प्रलोभन है। इस तरह के दर्जनों आवेदनपत्र पड़े रहते हैं। उनकी खोज खबर लेनेवाला कोई नहीं है। लेकिन लेडी विनहम के पट्टे पर हस्ताक्षर तक हो गया।"

"हस्ताक्षर हो गया?"

"आज के ही गजट में उसकी सूचना प्रकाशित होगी।"

"इस संवाद के लिये लेडी विनहम की ओर से मैं आप को अनेक धन्यवाद देता हूँ।"

मैडम मौराविफ अधीर हो रही थी? उसने हाथ के इशारे से मुझे रोका। बोली:—

"जहां तक आप का संबंध था आप इस काम से छुट्टी पा गये। लेकिन अब

मुझे यह जानना है कि लेडी विनहम इसके लिये वरिचकिन को क्या उपहार देनेवाली हैं।। मैंने केवल यही जानने के लिये आपको कष्ट दिया है।"

"मुझे कुछ भी मालूम नहीं है।"

"तब मैं ही आप को बतला देना चाहती हूं। मेरी बात गौर से सुनिये। यदि अभी तक आपको मालूम न हो तो आपको बतला देना चाहती हूं कि आठ वर्षों से वरिचकिन मेरा प्रेमी है। आज रूस में उसकी जो कुछ भी कदर है उसका सारा श्रेय मुझे है। यदि मैंने यत्न न किया होता तो आज भी वह मेंचविक ही रहता और या तो जेलों में सड़ता रहता या मर गया होता। प्रेम के वशीभूत होकर ही मैंने उसके लिये यह सब किया। मेरी पहली मुलाकात उसके साथ युद्ध के बाद ही हुई थी। वह गैलिसिया के मोर्चे पर से छुट्टी लेकर आया था। वह घायल था। उसके पास एक पैसा भी नहीं था। उस समय मैं पेट्रोग्रेड में पढ़ रही थी और छात्रावास में रहती थी। मैंने उसे अपने पास रखा और हर तरह की सहूलियत उसे दी। हमलोगों की जिन्दगी मुश्किल से कट रही थी लेकिन हम दोनों में अगाध प्रेम था। इसी समय आनेवाली क्रांति का शंखनाद बाल्टिक से लेकर काले समुद्र तक गूंज उठा। अधीर होकर हमलोगोंने उस मूर्ति के फटने की आवाज सुनी जो ढहने और मिटने वाली थी। राजधानी के बारे में जो बुरी खबरें हमलोगों को सुनने को मिलीं उससे हम लोगों की आशा जाग उठी कि देश को अच्छे दिन देखने को मिलेंगे। मंत्रियों का बेशर्म विश्वासघात, जुआचोरों की साहसिकता, विश्वासघातियों की भरमार, बुद्धिहीन जार की कायरता, जारीना की चरित्र-हीनता, आदि बातों पर विचार कर हमलोग मन ही मन प्रसन्न होते थे क्योंकि इन्हीं की सड़ी लाश पर तो क्रांति का हराभरा पौधा सुन्दर फूल देने वाला था। प्रिंस ! वरिचकिन से मेरा अगाध प्रेम है और क्रांति की सफलता के बाद से मैं इसे लगातार प्रमाणित करती आ

रही हूं। हमलोगों ने विचार के बंधन में एक दूसरे को नहीं बांधा है। इसके दो कारण हैं। मैं वैवाहिक बंधन से नफरत करती हूं और उसे उपहासास्पद समझती हूं। विवाह की जो प्रथा तुमलोगों के समाज में प्रचलित है, वह बिडम्बना के अतिरिक्त और क्या है? मैंने इस बात की कभी आवश्यकता नहीं समझी कि मैं ईश्वर को साक्षी देकर शपथ ग्रहण करूं कि मैं सदा वरीचकिन के प्रति वफादर रहूंगी। उसके प्रति मेरी वफादारी अक्षुण्ण है। और मैं आपसे यह भी कह देना चाहती हूं कि ईश्वर नाम की वस्तु पर मुझे विश्वास नहीं है।"

इतना कहकर मैडम मौराविफ क्षण भर के लिये चुप हो गईं और अपना सिगरेट सुलगाने लगीं। इस रूसी महिला के बारे में मुझे दिलचस्पी हो गई। इतनी कम उम्र में इसका ईश्वर पर से विश्वास किस तरह उठ गया, इसी उधेड़बुन में मैं पड़ा रहा कि उसने फिर कहना शुरू किया:—

"मैंने अपना गुप्त भेद तुम्हारे सामने अकारण प्रगट नहीं किया है। इन बातों को इतने बिस्तार के साथ तुम्हारे समक्ष रखने का मेरा मुख्य अभिप्राय यह है कि मैं तुम्हें यह समझा देना चाहती हूं कि यदि लेडी विनहम ने वरिचकिन की माँग पूरी की तो तुम इसके लिये कहा तक जिम्मेदार माने जावोगे ......मैं आपसे विनय पूर्वक प्रार्थना करती हू कि आप क्षण भर चुप रहे। उत्तर देने का व्यर्थ प्रयास न करें। मैं अपने प्रेमी की कमजोरियों को जानती हू। कुलीनवर्ग की स्त्रियों के प्रति उनका झुकाव बहुत ज्यादा है। यह उनकी सबसे बड़ी दुर्बलता है। मास्को में ऐसे अनेक अफसर रहते हैं जिन्हें धन प्रिय हैं और उसके प्रलोभन में वे फंस जाते हैं। वरिचकिन को धन नहीं झुका सकता। लेकिन सुन्दर वेषभूषा से सुसज्जित कुलीन वर्ग की रमणी उसे अपने इशारों पर नचा सकती है। हमलोग यहां डेढ़ साल से हैं। यहाँ आने के

बाद एक जर्मन महिला के फेर में वह पड़ गया था। उसकी आकर्षक पोशाक का जादू उस पर चल गया था। लेकिन मुझे उसका पता चल गया और मैंने उस महिला को पकड़ मँगवाया और वरिचकिन के सामने ही उसे कोड़ों से पीटा। वरिचकिन चुपचाप सब कुछ देखता रहा लेकिन मुँह से एक शब्द भी नहीं निकाल सका। उसकी इस कमजोरी को जानते हुए मुझे इस बात की पूरी आशंका है कि लेडी विनहम के प्रति भी उसका इसी तरह का झुकाव है।"

मैं कुछ कहने जा रहा था कि उसने हाथ से इशारा कर मुझे बोलने से रोक दिया। उसने कहाः—

"क्या आपको मेरे शब्द रुचे नहीं। लेकिन आप तो उस अभिमानिनी महिला के अवैतनिक कर्मचारी हैं? मैं गलत तो नहीं कह रही हूं। खैर, जो भी हो मैं आपसे यह स्पष्ट कह देना चाहती हूं कि जिस तरह मैंने उस जर्मन महिला से वरिचकिन को अलग किया उसी तरह मैं लेडी विनहम से भी वरिचकिन को अलग करूंगी। जो हो गया सो हो गया। अब इससे आगे कुछ नहीं हो सकता। और मैं यह भी कह देना चाहती हूँ कि यदि आपलोग इससे एक कदम भी आगे बढ़े और कोई घटना हो गई तो मैं आप तीनों को उसके लिए जिम्मेदार समझूंगी और उसका उचित बदला लिये बिना नहीं रहूंगी।"

"आपको तीन न कहकर चार कहना चाहिए क्योंकि जिसे चेतावनी दी जाती है, वह दो आदमी के बराबर माना जाता है।"

मैडम मौराविफ ने अपना पैर जोर से जमीन पर पटका और बोलीः—"मुझे बेवकूफी का यह मजाक पसन्द नहीं है। मेरी चेतावनी का मजाक उड़ा कर आप बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं।"

"लेकिन मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ कि आप यह बात मान क्यों लेती

है कि आपका प्रेमी लेडी विनहम की ओर इस कदर आकृष्ट हो जायंगे। मैं समझता हूँ कि उनके जीवन में यह पहला ही अवसर नहीं है कि उन्हें कुलीन वर्ग की किसी आकर्षक महिला से मिलने का सुयोग प्राप्त हुआ होगा।"

"वरिचकिन के बारे में मुझसे ज्यादा आप नहीं जानते। यदि वह इस तरह के प्रलोभनों को जीतने की भी योग्यता रखता होता तोभी मैं इन अंग्रेज महिलाओं से सतर्क रहती क्योंकि उनमें इतना ज्यादा आकर्षण होता है कि किसी को प्रेमी बना लेना उनके बायें हाथ का खेल है। मैं इन्हें खूब जानती हूँ। अपनी कामुकता के लिये ये प्रसिद्ध हैं और अपनी वासना की तृप्ति के लिये ये किसीको भी अपना शिकार बना सकती हैं। दर्शकों को चकित करने के लिये वे अपनी मर्यादा से नीचे गिर सकती हैं। उनके शिष्टाचार का कोई मापदण्ड नहीं है। मध्यम वर्ग वालों के सदाचार की वे खिल्ली उड़ाती हैं। लेकिन साथ ही नंगा नाचने में भी उन्हें संकोच नहीं होता।"

"आपने झुंझलाहट में जो बातें कही हैं वे सचाई से बहुत दूर हैं। लेकिन इतने पर भी कोई कारण नहीं है कि आप—"

"किस बात के लिये कारण नहीं है? यह मान लेनेके लिये कि लेडी विनहम मेरे प्रेमी को मुझसे अलग कर लेंगी। अपने को बेवकूफ नहीं साबित करो। औरतें ही औरतों को सबसे ज्यादा समझती हैं। इस संबंध में हमलोगों की बराबरी बड़े-बड़े मनोवैज्ञानिक भी नहीं कर सकते। लेडी विनहम कुलीन वर्ग की पहली महिला नहीं हैं जिन्होंने किसी बोलशेविक पर छापा मारने का विचार किया है इस तरह की महिला के लिये वरिचकिन के समान पुरुष सर्वथा उपयुक्त होगा। उससे उसे उतना ही आनन्द प्राप्त होगा जितना आनन्द उसे कोकीन या अफीम आदि नशीली वस्तुओं के प्रयोग से मिलाता होगा बल्कि लाल रूस के किसी साथी के गले में बांह डालकर समाज में विचरण

करने में जो आनन्द उसे प्राप्त होगा उसका मोकाबला इन नशीली वस्तुओं के नशे से नहीं किया जा सकता।"

"क्या वरिचकिन ने इस तरह का कोई व्यवहार किया है जो आप इस तरह की आशंका प्रगट कर रही हैं।"

"प्रिंस ! उन बातों से तुम्हें मतलब नहीं। मैं केवल इतना ही कहना पर्याप्त समझती हूँ कि मैं जिस बात की चर्चा कर रही हूँ उसे अच्छी तरह समझती हूं। मैं केवल आपको सचेत कर देना चाहती थी। मेरी इस मुलाकात से लाभ उठाइये और जो गलत कदम उठ गया है उसे सही रास्ते पर अविलम्ब फेरिये।"

इतना कहकर मैडम मौराविफ चुप हो गई। उसकी चमकीली आंखों से साफ प्रगट होता था कि उसने एक बात भी बनावटी नहीं कही है। उसकी आंखों में दृढ़ता थी। उसका उपदेश समाप्त समझकर मैं अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। लेकिन इस बातचीत से संबंध रखनेवाली एक समस्या और थी जो मुझे परीशान कर रही थी। क्या वरिचकिन की रक्षा करनेवाली इस परी को दोनों के विकट प्रस्ताव का समाचार मिल गया है कि उसने इस लहजे में मुझ से बातें की है? अथवा उसे वास्तविकता का अभी तक कोई जानकारी नहीं है, केवल संभावित खतरे से रक्षा पाने के उद्देश्य से ही यह सब कारवाई कर रही है। मैंने इस प्रसंग को स्पष्ट कर लेने की नियत से कहा:—

"आपका मैं अतिशय कृतज्ञ हूँ कि आपने सारी बातें स्पष्ट रूप से मेरे सामने रख दी है। यदि आपकी बातें सच हैं तो सन्देह की यहां कोई गुंजायश नहीं रह जाती। लेकिन यहाँ से प्रस्थान करने से पहले मैं आपसे यह कह देना चाहता हूं कि मुझे यह जानकर अतिशय विस्मय हुआ कि जिस विषय से आपका इतना ज्यादा संबंध है और जो विषय आपके जीवन के लिये इतना ज्यादा महत्वपूर्ण है उसके बारे में आपको इतनी कम जानकारी है। मैं आपसे

कह देना चाहता हूं कि अडलन होटल के दुतल्ले पर उस संबंध में कोई भी कार्रवाई हो सकती है।"

मेरे शब्दों ने उसे व्यथित कर दिया। उसने तेजी से पूछा:—

"आपका क्या मतलब है—इतना कम वास्तविक जानकारी से?"

"जब कोई व्यक्ति किसी के कमरे में माइक्रोफोन गुप्तरूप से रखवा देता है तब तो उसे सारी गुप्त बातों का पता होना चाहिए।"

क्षण भर के लिये वह घबरा गई लेकिन उसने तुरत अपने को सजग किया और बात बनाकर बोली:—

"आपकी बातें मेरी समझ में नहीं आयीं।"

"तब क्या मैं यह मान लूं कि मेरे बिस्तर में जो माइक्रोफोन छिपा पाया गया था वह अचानक कुकुरमुत्ता की तरह जमीन से उत्पन्न हो गया था। जो भी हो सौभाग्य की बात यही थी कि मैंने समय पर ही उसे देख लिया क्योंकि अब मैं देख रहा हूं कि बर्लिन में दीवाल को भी कान होते हैं।"

"क्यों नहीं, युद्ध-काल में सबकुछ संगत है।"

"क्या युद्ध की घोषणा हो गई? मैं तो समझता था कि अभी हमलोग तैयारी की ही बात सोच रहे हैं।"

"जरा होश से बातें कीजिये। कहीं आपका व्यंग आपके लिये बहुत महंगा न पड़ जाय।"

उसकी आँखों की चमक उसकी चेतावनी को स्पष्ट व्यक्त कर रही थीं। मैं दरवाजे के पास पहुँच गया। मुड़कर मैंने पूछा—"मैडम! क्या मैं आपका हाथ चूम सकता हूँ।"

"नहीं। इससे अलग रहना होगा।"

"इस रूखे उत्तर के बाद तो मेरे लिये वहां ठहरना उचित नहीं था। मैं उस

कमरे से बाहर निकला। बगल वाले कमरे में वही भद्दा आदमी खड़ा था। वह मेरी ओर इस तरह घूर कर शंकित दृष्टि से देख रहा था जिस तरह कुत्ता राहगीरों को देखता है। मैं रास्ते में यही सोचता था कि वरिचकिन की प्रेयसी को उसके इरादों की पूरी जानकारी है या नहीं। लेकिन इतना तो मुझे स्पष्ट हो गया कि मैडम मौराविफ के इरादे दृढ़ हैं। वहाँ किसी तरह का संशय नहीं रह गया था।

उसी शाम को लेडी डायना, वरिचकिन तथा मैं वहीं के एक नगण्य होटल में भोजनकरने गया। वहां दूसरा कोई नहीं था। होटल चारों ओर से पेड़ों से घिरा था। इससे जल्द किसीको वहां का पता नहीं चल सकता था। साथ ही वरिचकिन नें बड़ी सावधानी से काम लिया था। उसने मोटरवाले को समझा दिया था कि इस तरह घुमा फिरा कर मोटर वह होटल ले चले कि जल्द किसीको उसके वहां आने की खबर न लग सके। हमारे दोनों साथी बड़े ही प्रसन्न थे क्योंकि मास्को से पट्टे की स्वीकृति का समाचार पहुँच चुका था।

भोजन के बीच में ही मैंने उदासीन भाव से कहा:—"दोस्तो। आज तीसरे पहर मुझे एक व्यक्ति से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आप दोनों उसे जानते हैं। मैं समझता हू कि उसकी बातें आपलोग जान लेना चाहेंगे।"

मेरी बात सुनते ही वरिचकिन के कान खड़े हो गये। किसी अज्ञात आशंका ने उसे घेर लिया! उसने आतुरता के साथ मुझ से पूछा—"क्या इरिना से कहीं रास्ते में भेंट हो गई थी?"

" जी नहीं, वेली अलायंस प्लाज में उनके नीजी दफ्तर में मैं गया था।"

"किस लिये?"

"उनका निमंत्रण पाकर, मैं यह भी कह देना चाहता हूं कि मैं उन बातों को

दोहराना नहीं चाहता। दोहराने से मजाक का रस निकल जाता है। दोहराने पर कभी कभी अच्छे अच्छे मजाक भी नीरस प्रतीत होते हैं।"

लेकिन मैंने देखा कि वरिचकिन की अपेक्षा लेडी डायना की उत्सुकता बहुत ज्यादा बढ़ गई है। उन्होंने पूछा:—

"तुम्हें उसने क्यों बुलाया था?"

"वह मुझे कड़ी चेतावनी देना चाहती थी। और उस चेतावनी को आप तक पहुँचा देने का भार भी मुझ पर दिया गया है। मैं केवल इतना ही कह देना चाहता हूं कि शादी के बाद आपलोग मैडम मौराविफ से जितना दूर रह सकें उतना ही आपलोगों के लिये श्रेयस्कर है। और जहाँ तक मेरा संबंध है अगर आपलोगों को किसी तरह का एतराज नहीं होगा तो मैं उसी दिन मैडीका या सेण्डाविच टापुओं के लिये रवाना हो जाऊँगा।

वरिचकिन ने मेरी कलाई पकड़ ली। कहा:—

"मजाक छोड़ो। सचसच कहो कि क्या बातें हुई थीं।"

"वरिचकिन महोदय! मैंने जो कुछ कहा है। वह सच ही कहा है। लेडी डायना के सामने कहने में मुझे किसी तरह का संकोच नहीं है क्योंकि वे आप के और इरिना के संबंध को भी जानती हैं और साथ ही खतरों से खेलना भी उन्हें पसन्द है। अगर आप मैडम मौराविफ को छोड़ देते हैं तो वह हम तीनों से उसका बदला लेने के लिये कटिबद्ध हैं।"

उस दिन लेडी डायना बड़ी सादी पोशाक में थीं। उन्हें देखकर ऐसा लगाता था जैसे किसी विश्वविद्यालय से निकली बालिका हो। मास्को से जो तार आया था उसने उनका उत्साह बढ़ा दिया था। मैं उनकी इस प्रसन्नता पर किसी तरह की बदली की छाया नहीं पड़ने देना चाहता था, तो भी मैं सारी परिस्थिति से उन्हें अनभिज्ञ भी नहीं रहने देना चाहता था। वरिचकिन के

बारे में भी वे ही बातें लागू थीं क्योंकि मैडम मौराविफ की धमकी साधारण नहीं थी।

तोभी उस परिस्थिति में वरिचकिन का असाधारण व्यवहार सर्वथा प्रशंसनीय था। उन्होंने यह देखा कि मेरी बातों का असर लेडी डायना पर पड़ा है और उनका चेहरा उदास हो गया है। उन्होंने लेडी डायना का हाथ अपने हाथ में ले लिया और कहाः—

"लेडी डायना! आपके मित्रने आप को जो भयानक संवाद सुनाया है उसका ख्याल कर मैं निसंकोच आपसे कह सकता हूं कि यदि आप चाहें तो इस संबंध को तोड़ सकती हैं। यदि आप इस मार्ग पर आगे पैर नहीं बढ़ाना चाहती हैं तो मैं आपको अपने वचन से मुक्त करने के लिये तैयार हूं। यह मेरे लिये बहुत बुरा होगा तोभी इरिना के समान महिला के कोप का शिकार मैं आपको नहीं बनने देना चाहता।"

वरिचकिन के इस उद्गार का लेडी डायना पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। वरिचकिन का हाथ अपने हाथ में लेकर उन्होंने कहाः—

"आपने जो निःस्वार्थ पूर्ण उदार उद्गार प्रगट किया है उसके लिये मैं आपका अतिशय कृतज्ञ हूं। लेकिन मैं इतनी कायर नहीं हूं कि अपने प्रति-द्वन्दी की धमकी से डरकर मैदान छोड़कर भाग जाऊँ। मैं आपको यह दिखला देना चाहती हूं कि अंग्रेज महिलाएँ धमकी की परवा नहीं करती, डरसे घबराती नहीं। यदि किसी तरह का खतरा उपस्थित होगा तो आप मुझे सदा अपने साथ पायेंगे।"

इससे वरिचकिन को बहुत अधिक संतोष हुआ। उन्होंने लेडी डायना का हाथ चूम लिया और मुझे लक्ष्य कर कहाः—

"इस भावुकता के लिये आप मुझे क्षमा करेंगे। लेकिन लेडी डायना के

उद्‌गारों का मुझ पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि मैं अपने को किसी तरह रोक नहीं सका और मुझसे यह बेअदबी हो गई। प्रेम का पथ ही निराला है!"

इस समय प्रेमी और प्रेमिकाओं की अनेक कथायें याद आ गईं कि प्रेम की वेदी पर उन्होंने क्या क्या नहीं चढ़ाया था। पर उन भावों को अलग कर मैंने वरिचकिन से कहाः—

"हम तीनों व्यक्ति एक ही पथ के पथिक हैं। हम तीनों का प्रयास है कि चाहे जिस उपाय से भी हो यह षड्‌यंत्र सफल हो। इसलिये मैं आप से एक बात पूछना चाहता हूं। क्या आपने मैडम मौराविफ को सूचित कर दिया है कि उनके साथ आपका संबध अब चन्द दिनों के लिये ही है।

"आपने फिर वही मजाक शुरू किया। मैंने हर तरह की सावधानी और सतर्कता से काम लिया है कि यह संवाद वहां तक जल्द नहीं पहुंचे। जिस दिन लेडी डायना के साथ मैं इस सोवियत भूमि की सीमा को पार कर जाऊँगा उसी दिन मैं इरिना के पास इस आशय का संवाद भेजूंगा और जेनेवा या जूरिच के किसी बैंक में उसके लिये हर्जाना के स्वरूप रूपया जमा कर दूँगा।"

"लेकिन मेरी धारणा है कि वह अभी भी आपको चाहती है और धन से उसकी वेदना को शान्ति नहीं हो सकती।"

"तब मैं लाचार हूँ। प्रेम प्रसंग कभी कभी ऐसा रुख पकड़ लेता है कि आदमी हर तरह से लाचार हो जाता है—खास कर ऐसी हालत में जब कृतज्ञता के भाव उसमें भरे हों। इरिना का प्रयास तो मुर्दे को झकझोरने के समान होगा। कृतज्ञता के भाव से दबा हुआ मनुष्य उस भार को आसानी से नहीं ढोता है। मैं इस बात को स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं हूं कि मैं आज जो कुछ हूं उसी की बदौलत हूं। इस दुनिया में प्रेमियों का एक दूसरे से नफरत करने के लिये हजारों कारण हो सकते हैं। अगर प्रेमी या प्रेमिका प्रेम चाहने के

लिये कृतज्ञता के बोझ से एक दूसरे को दबाना चाहते हैं तो उसका जहर धीरे धीरे अपना असर फैलायेगा ही। और जो व्यक्ति उस जहर का प्रभाव अपनी धमनियों में महसूस करता हुआ भी प्रेम का डैना फैलाना चाहता है उसे तो मैकबेथ की तरह चिल्लाना ही पड़ेगा:—"ओ! जीवन के क्षणिक प्रकाश! प्रेम वह पुस्तक नहीं है जिसमें पुरुष अपने अस्तित्व को किसी नारी के चरणों पर निछावर कर दे। जो आदमी इस तरह सोचता है वह हेय है।"

वोलशेविकों के प्रेम-संबंधी इस सिद्धान्त को मैं पागलपन ही कह सकता हूं। मैंने हंसते हुए कहा:—"वारचकिन! आप के उद्गार तो अनोखे प्रतीत होते हैं। उनकी तुलना जल्दी कहीं नहीं हो सकती।

"इसका कारण यह है कि इस विषय में हम लोग सभी प्रतिक्रियावादी हैं। खानों और खेतों को राष्ट्र की संपत्ति बना लेना आसान है। लेकिन प्रेम! इसकी रखवारी सुधारकों की दमदम गोलियां करती हैं। इसपर किसी भी नश्तर का असर नहीं होता। जिस समय दुनिया में एक बार पुनः शान्ति का राज्य होगा—यद्यपि मुझे ऐसी आशा नहीं है कि सभ्य कहलानेवाले मानव की यह निरीह अवस्था देखने के लिये हमलोग जिन्दा रहेंगे—उस समय युद्ध का मोर्चा बदल जायगा। प्रेमियों के हृदय में वह अपना मोर्चा खड़ा करेगा।"

इस भविष्यवाणी का विरोध करते हुए लेडी डायना ने कहा:—

"नहीं! नहीं! प्रेमी कभी युद्ध नहीं चाहते। यह कहिए कि वे थोड़ी बहुत करामात दिखाते हैं।"

"आपका मतलब है कि उनका हमला घातक नहीं होता।"

वारिचकिन ने अपने पुराने तरीके से अपनी दाढ़ी पर हाथ फेर कर कहा—

"लेडी डायना! आप प्रिंस की बातों पर कान नहीं दीजिये। फ्रांसीसियों का वह खास गुण है कि वे कभी गंभीर हो कर बातें नहीं कर सकते। वे

सिद्धान्तों की खिल्ली उड़ाते हैं, कठिनाइयों का मजाक करते हैं। इसी तरह उनकी जिन्दगी सदियों से बीत रही है। यह अनोखी जाति है और अनोखा है यह राष्ट्र। खुश करने के साथ ही साथ ये झुंझलाहट भी पैदा कर देते हैं। इनकी हालत उन बूढ़ी औरतों के समान है जिन्होंने पढ़ा भी बहुत है दुर्भाग्यवश याद भी बहुत ज्यादा रखा है।

लेडी डायना—भारत के बारे में आपने सच ही कहा है। अच्छा मेरे देश इङ्गलैंड के बारे में यहाँ के लोगों की कैसी धारणा है?"

"तेल में सुरक्षित अंचार की फाँक की तरह।"

"मैं नहीं समझती कि मेरे देश के साथ आप न्याय कर रहे हैं।"

"तब क्या आप चाहती हैं कि मैं झूठी खुशामद भरी बातें कहूं। यह तो आप नहीं ही चाहती होंगी! तब आप भी जानती हैं और मैं भी जानता हूं कि वैयक्तिक रूप से अंग्रेज लोग प्रतिष्ठित और बहुधा उदार भी होते हैं लेकिन समूह और राष्ट्र का रूप धारण करते ही वे असह्य हो जाते हैं। यदि ग्रेट ब्रिटेन सब चीजों को छोड़कर केवल सूअर की कलेजी और छोकड़ियों का ही व्यापार करता तो संसार के सभी बाजारों में उसके मास के लिये क्षेत्र बना रहता और उसकी आमदनी में कमी न पड़ती। संसार का सद्भाव भी उसके साथ रहता। लेकिन उसके शरीर में बहुत बड़ा रोग घुस गया है और वह रोग है अपने लिये घमण्ड का। यह रोग निश्चय ही एक दिन उसका गला घोंट देगा।"

क्षण भर चुप रहने के बाद उसने फिर कहा:—

"पागलपन से भरी मेरी बातों के लिये आप मुझे क्षमा करेंगी। यह सब तो अटकलबाजी है। ये सभी बातें वास्तविकता से दूर हैं। ग्रेट ब्रिटेन के लिये मेरे हृदय में बहुत अधिक सम्मान है क्योंकि तुम्हारे समान सुन्दरी उसका प्रतीक है।"

लेडी डायना खिलखिला कर हँस पड़ीं। उनके चंचल पैर टेबुल के नीचे

पैंतरा भरने लगे। अचानक उनका पैर मेरे पैरसे टकरा गया। मैंने उसे वरिचकिन की ओर सरका दिया और धीरे से कहा:—

"अगर उन्हें जरा बायीं तरफ रखें तो अच्छा हो।"

भोजन समाप्त हो गया था। वेरा काफी का प्याला लेकर आ ही रहा था कि लेडी डायना का ड्राइवर बरामदे में दिखाई पड़ा। मैंने लेडी डायना से कहा:—

"आपका ड्राइवर आपको खोज रहा है ?

"क्या तुम कयास कर सकते हो कि उसके आने का क्या कारण हो सकता है ?"

लेडी डायना ने उसे इशारे से बुलाया। वह आकर उनकी कुर्सी के पास खड़ा हो गया। बोला:—

अभी एक आदमी मेरे पास आया था। उसने मुझसे पूछा कि क्या मि० वरिचकिन यहाँ हैं। उत्तर में मैंने कहा कि मैं नहीं जानता।"

इस संवाद से लेडी डायना की परीशानी बढ़ गई। चिन्तातुर होकर उन्होंने वरिचकिन की ओर देखा। उसने ड्राइवर से पूछा—

"क्या यह आदमी लम्बा था ? उसके सिरके बाल छोटे थे और वह भूरी टोपी पहने था ?"

"जी हां।"

"उससे कह दो कि मैं यहीं हू और मैं उससे अभी मिलना चाहता हूं।"

ड्राइवर ने झुककर सलाम किया और चलता बना। लेडी डायना और मैं कुछ न समझ सकने के कारण एक दूसरे का चेहरा देखने लगे। वरिचकिन ने संक्षेप में कहा:—

"डरने की कोई बात नहीं है। यह रास मेरा खास नौकर है। यह यूक्रेन का

रहनेवाला है। १९१९ की क्रान्ति में मैंने इसके प्राण बचाये थे। यह मेरा परम भक्त और अनुरक्त है। मैं जहाँ कहीं भी जाता हूं उसकी सूचना इसे दे देता हूँ ताकि आवश्यकता पड़ने पर वह मुझे ढूंढ ले। इस समय यहाँ तक उसके आने का मतलब है कि कोई आवश्यक काम आ पड़ा है जिसकी सूचना मुझे तुरत मिलनी चाहिए।"

इसी समय वह यूक्रेनियन नौकर आया। उसने वरिचकिन के कान में रूसी भाषामें कुछ कहा और उसके हाथ में एक लिफाफा रख दिया। वरिच-किन ने उसे खोल कर पढ़ा। वह खत पढ़ कर उसे अतिशय आश्चर्य हुआ। उसने उसे जाने का इशारा किया। नौकर के चले जाने पर वरिचकिन ने कहा:—

"आज आठ बजे रातको मैडम मौराविफ मेरे निवासस्थान पर आई थी। उन्होंने रासस मेरे बारे में पूछा। उसने साफ इन्कार कर दिया कि वह कुछ नहीं जानता कि मैं कहाँ गया हू। उन्होंने वह खत लिख कर उसके हवाले किया और कहा कि मेरे वापस आने पर यह खत वह मुझे दे दे। मैं इस खत का आशय आप लोगों को सुना देता हू।

प्रियतम !

कल मास्को में औद्योगिक कांग्रेस का अधिवेशन आरंभ होने जा रहा है। बोकोरिन ने तार से सूचित किया है कि मेरी उपस्थिति अनिवार्य है। रातको साढ़े आठ बजेवाली गाड़ी से मैं प्रस्थान कर रही हूं। मुझे अत्यन्त खेद है कि मैं तुमसे नहीं मिल सकी। मैं दो सप्ताह में वापस आ जाऊंगी। मुझे मत भूल जाना, प्रियतम !

—तुम्हारी ही
इरिना

वरिचकिन ने उस खतको टेबुल पर रख दिया। खत रूसी भाषा में लिखा

था लेकिन मैडम मौराविफ की लिखावट पहचानने में मुझे देर नहीं लगी। लेडी डायना ने प्रश्नभरी दृष्टि वरिचकिन पर डाली। वरिचकिन ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप अपनी चम्मच से काफी के प्याले में आठ का अंक बनाने लगा। उसका मौनावलंबन लेडी डायना को खलने लगा। यह समझ कर मैंने कहा:—

"मुझे तो इस खतमें कोई असाधारण बात नहीं दीखती। आप इस तरह गंभीर क्यों हो गये?"

वरिचकिन ने चम्मच का चलाना बन्द कर दिया और कहा:—

"यदि मास्को में औद्योगिक कांग्रेस का कोई अधिवेशन होनेवाला होता तो इसमें कोई असाधारण बात मुझे नहीं दीख पड़ती। लेकिन औद्योगिक कांग्रेस की बात की चर्चा मुझे इसी खत से मालूम हुई है। यदि इस तरह की कोई कांग्रेस होती तो मैं यहाँ बैठा नहीं रहता। मैं अब तक हवामें उड़ता रहता।"

वरिचकिन की बातों ने मुझे चिन्ता में डाल दिया। मैंने कहा:—

"तब आपके कहने का मतलब यह है कि मास्को जाने के लिये उन्होंने यह झूठा बहाना बनाया है?"

"निश्चय ही।"

"लेडी डायना ने विस्मय के साथ उस खतकी पंक्तियों की ओर देखा जिन्हें वे पढ़ नहीं सकती थीं। उन्होंने कहा—

"उन्होंने आपको 'प्रियतम' लिखा है। इससे यह ध्वनि नहीं निकलती कि उन्हें आप पर किसी तरह का सन्देह है या आपसे उन्हें कोई सदमा पहुचा है।"

वरिचकिन ने खतको मोड़कर अपनी जेब में रख लिया।

"उसका ठीक उसी दिन मास्को के लिये रवाना हो जाना जिस दिन तेलाव की आपकी जमीन के पट्टे पर हस्ताक्षर हो जाने का समाचार मिला है महज

संयोग की बात नहीं है। इरिना ने इस यात्रा की कल तक मुझ से चर्चा भी नहीं की थी। कल ही मैं उसके पास गया था। उसके व्यवहार से इस बात का लेशमात्र भी संकेत मुझे नहीं मिला था कि रूस जाने का उसका कोई भी इरादा है।"

"तब आपका ख्याल है कि वहां जाकर वह कुछ न कुछ उपद्रव अवश्य खड़ा करेगी।

"जहाँ तक तेलाब की जमीन का संबंध है वह कुछ नहीं कर सकती। मास्कोस्थित लन्दन के प्रतिनिधि को सरकारी तौर पर सूचित कर दिया गया है और आपकी कम्पनी के अध्यक्ष ने विदेशी दफ्तर में उसकी रजिस्टरी भी करा ली है। इसलिये मुझे इस बात का पक्का विश्वास है कि यदि इस उद्देश्य से इरिना मास्को गई है तो उसे किसी तरह की सफलता नहीं मिल सकती। वह उसे रद्द नहीं करा सकेगी।"

"तब आप समझते हैं कि उनके लिये एकमात्र रास्ता हमलोगों से बदला लेना रह गया है?"

"हाँ।"

"ऐसी हालत में उन्हें आपके इरादों की पूरी जानकारी होनी चाहिए और वह परदे की आड़ से ही अपने शिकारों पर हमला कर सकेंगी।"

लेडी डायना की यह बात सुनकर वरिचकिन को हंसी आ गई। अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए उसने कहा:—"इरिना पहली औरत नहीं होगी जिसने किसी को ठगने के लिये चेहरे पर नकाब पहना हो?"

लेडी डायना गंभीर चिंता में पड़ गईं। उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। वरिचकिन भी मौन था। मैं भी चुपचाप अपने मन में मैडम के खत के मजमून को दोहराने लगा। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि झील में एक नाव जा

रही है। उसकी हरी रोशनी की छाया पानी पर पड़ रही है। पाल के पास एक युवती एक युवक की गोद में लिपटी पड़ी है। वे इस बात से निश्चिन्त है कि रात की काली छाया में उन्हें कोई देख नहीं सकता। केवल पतवार की आवाज उस रात की निस्तब्धता को भंग कर रही है और किसीकी प्रेतात्मा कर रही है:—

"अरे! और आगे मत बढ़! वहीं रुक जा।"

XX XX XX XX

दूसरे दिन सुबह मैं अपने होटल के कमरे के पूर्वी भाग की तरफ जा रहा था कि लेडी डायना ने मुझे अपने कमरे से पुकारा:—

"जिरार्ड! क्या तुम मुझ से अभी मिल सकते हो?"

"क्यों नहीं! केवल मैंने दाढ़ी नहीं बनाई है।"

"कोई हर्ज की बात नहीं! वे मेरे कमरे में तुम आई और एक तार मेरे सामने रख दिया। तार में लिखा था:—

"निकोलाई पहुंच गया। मुझे पूरा अधिकार मिल गया है। स्थानीय अधिकारियों से व्यवस्थापक मण्डल विस्तृत बातचीत करने जा रहा है। यदि आप चाहती हैं कि इस अवसर पर आपका कोई प्रतिनिध यहाँ मौजूद रहे और तेलाव की भूमि का निरीक्षण करे तो आप तुरत किसी वकील या सेक्रेटरी को रवाना कर दें। आज्ञाकारी —एडविन ब्लैंकेट

होटल वाकजल, निकोलाई

लेडी डायना ने कहा:—

"इस तार से यह प्रगट होता है कि सर इरिक ब्लशमूर ने तेलाव की मेरी इस भूमि से तेल निकालने के लिये जिस कम्पनी को खड़ा किया है उसने एडविन ब्लैंकेट को इञ्जनियरके पद पर नियुक्त कर भेजा है। वे वहां पहुंच भी गये हैं। क्या

तुम निकोलाई जाने के लिये तैयार हो सकते हो? मि० ब्लैकेट का यह सुझाव उचित है कि मेरे स्वार्थों की देखभाल के लिये वहां कोई मेरा अपना आदमी होना चाहिए। निश्चय ही उनका यह सुझाव सर एरिक ब्लशमूर की सलाह से हुआ है। सर एरिक मेरे परम शुभचिन्तक मित्र हैं। यदि मैं लन्दन से अपने किसी वकील को भेजना चाहूं तो इसमें कई दिन लग जायँगे। यहा तुम्हीं एक ऐसे आदमी हो जिस पर मेरा अटूट विश्वास है। इसलिये मैं चाहती हूँ कि—"

"बीच में ही बाधा देकर मैंने लेडी डायना से कहाः—

"मैं सबसे पहली गाड़ी से कुतुस्तूनिया के लिये रवाना हो जाऊँगा। वहाँ मैं एक्सप्रेस ट्रेन पकड़ूंगा और वियना के लिये प्रस्थान करूंगा। बास्फरस पहुंचकर मैं पहली स्टीमर से काकेशस के लिये चल पड़ूंगा।"

लेडी डायना ने मुझे अनेक धन्यवाद दिये। उन्होंने कहाः—

"जिरार्ड! तुम आदमी नहीं देवता हो। यदि तुम्हारे गालों पर हजामत के साबून के फेन नहीं पसरे होते तो मैं उन्हे चूम लेती। समय कम है इसलिये तुम अपने नहाने धोने के काम से छुट्टी पा लो। तब तक मैं तुम्हारा सामान ठीक किये देती हूँ।"

लेडी डायना मेरा सामान बाँधने लगी और मैं आइने के सामने चला गया। हजामत समाप्त कर मैं वापस आया तो मैंने देखा कि उन्होंने मेरे सूटकेश में बारह नेकटाई, एक जोड़ा मोजा, मेरा नाचनेवाला जूता, मेरा हैट, रूमाल, गार्टर और अस्प्रीन की एक शीशी रख दी है। यह सब सामान देखकर मुझे हसी आ गई। मैंने कहाः—"आप जाकर अपने को तैयार करें। आपको सामान सहेजना नहीं आता।" मेरी बातें सुनकर वे मेरा मुंह देखने लगीं और मुझे कोसती हुई अपने कमरे में चली गईं।

———

८

बर्लिन—वायना एक्सप्रेस के डब्बे में अपना सामान रखवाकर मैं लेडी डायना के पास आगया जो मुझे पहुंचाने के लिये अनहाल्ड स्टेशन तक गई थीं। अन्तिम हिदायत देते हुए उन्होंने कहा था:—

"तुमने मेरी बातें पूरी तरह समझ ली होंगी। मि० एडविन ब्लेकेट से मिलकर तुम मेरी जमीन के तेल के कुंओं की तात्कालिक मूल्य का अन्दाज कर लेना। उसके साथ तेलाव की भूमिका निरीक्षण कर अपनी राय मुझे तार द्वारा सूचित करना। विस्तृत विवरण तो तुम वापस आकर ही दे सकोगे।"

"क्या आप यहीं बर्लिन में ही रहेंगी?"

"नहीं, मैं मंगलवार को लन्दन वापस चली जाऊँगी। बरिचकिन ने अभी टेलीफोन से मुझे सूचित किया है कि वह किसी खास मिशन का आयोजन करेगा और उसके साथ वह लन्दन पहुंचेगा। वहीं वह मेरे साथ हो जायगा।"

"शादी के बारे में क्या तै पाया?"

"उस संबध में निश्चित रूप से कुछ तै करने से पहले मैं तुम्हारे समाचार की प्रतीक्षा करूँगी। बरिचकिन तो उसे संपन्न करने के लिये आतुर है वह जल्द से जल्द उसे पूरा कर डालना चाहता है। लेकिन शादी से पहले मैं सोवियत अधिकारियों के साथ ब्लैकेट की बातचीत का परिणाम जान लेना चाहती हूं। उनका मत क्षण क्षण में बदलता रहता है। कुछ कहा नहीं जा सकता कि कब वे लोग क्या कर डालेंगे। उस तरफ से तुम्हारे इतमीनान दिलाने के बाद ही मैं शादी के बंधन में बंधने के लिये तैयार हो सकूंगी। अपनी हिफाजत सावधानी से करना। सर्दी से अपने को खास तौर से बचाना और किसी रमणी के सौन्दर्य की चकाचौंध में पड़ कर मेरे काम को भूल मत जाना। तुमने अपना पासपोर्ट वगैरह तो ठीक तरह से रख लिया है?"

"जी हां। सारी आवश्यक कारवाई उस संबंध में मैंने कर ली है। वरिचकिन ने उस पर अपना हस्ताक्षर भी कर दिया है और उस अधिकारी से भी हस्ताक्षर करा दिया है जिसकी आज्ञा से ही मुझे जार्जिया के स्वर्ग में प्रवेश करने का आदेश प्राप्त होगा, जिसकी रक्षा मारने के यक्ष, किन्नर और गन्धर्व कर रहे हैं। मैं हर तरह से तैयार होकर जा रहा हूं। अगर खराब भोजन के कारण पेट खराब न हुआ तो सब कुछ ठीक ही रहेगा। लेकिन उसकी पूर्ति मैं आपकी शादी की दावत में कर लूंगा क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे बिना आप वरिचकिन के साथ अपना गठबन्धन नहीं करेंगी। ठीक है न?"

"मैं पक्का वादा करती हू कि तुम्हारे बिना यह काम संपन्न नहीं होगा।"

इसी वक्त गाड़ी ने सीटी दी। लेडी डायना से विदा होकर मैं अपने डब्बे में सवार हो गया। गाड़ी धीरे धीरे प्लेटफार्म और उसके बाद स्टेशन से बाहर होने लगी। ज्यों ज्यों वह आगे बढ़ने लगी त्यों-त्यों उसकी रफ्तार भी तेज होने लगी। गाड़ी में मेरी दाहिनी तरफ एक यात्री थे। उसके गाल सेब की तरह गुलाबी थे। चेहरा दाग से भरा था। वे इतनी तन्मयता से पढ़ रहे थे मानों किसी विश्वविद्यालय के वे अध्यापक या छात्र हों। दरवाजे के पासवाली सीट पर एक अंग्रेज सज्जन विविध सूचनाओं की पुस्तक में इतना तल्लीन दीख पड़ते थे मानों उनके लिये सारा संसार शून्य है। मेरे सामने की सीट खाली थी। केवल उस पर थोड़ा सामान रखा था जिसे देखने से किसी महिला का सामान प्रतीत होता था। मैं सोचने लगा कि यह महिला अंग्रेज है या जर्मन। मैंने सीट पर पड़े अखबार पर गौर किया। वह सचित्र म्यूनिच समाचार पत्र था। इससे मुझे इतना आभास तो हो गया कि वह महिला जर्मन है। जर्मन वालों की ही अधिक प्रवृत्ति उस पत्र की ओर रहती है। मुझे इस बात से विस्मय हो रहा था कि अब तक उस महिला ने अपना डेरा वहां क्यों नहीं डाला है।

इसी तरह आधा घंटा बीत गये। इस बीच उस दोनों यात्रियों ने करवटें भी बदलीं, पढ़ने के विषय भी बदले।

मैंने सोचा कि जरा चहलकदमी ही कर लूं। मैं अपनी जगह से उठने ही वाला था कि इसी वक्त वह महिला दरवाजे पर प्रगट हुई। उन दोनों यात्रियों के पैर दरवाजे तक फैले थे। वह महिला क्षण भर सोचती रही कि वह क्या करे। उसमें से एक आदमी न—जो देखने में जर्मन प्रतीत होता था—अपना पैर हटा लिया लेकिन वह अंग्रेज ज्यों का त्यों अजगर की तरह पड़ा रहा। वह उसी तरह पुस्तक में आँखें गड़ाये रहा। उधर ताकने का भी उसने कष्ट नहीं उठाया। लाचार वह महिला उसका पैर लाँघकर भीतर आई और मेरे सामनेवाली अपनी सीट पर बैठ गई।

वह अपने नीले रंग के थैले में सामानों को सहेज रही थी कि मैंने उसे गौर से देखा। उसका चेहरा सुन्दर था, उसकी गोल गोल नीली आँखों में चमक थी। उसके होठों पर मन्द मुसकान की क्षीण देखा हर वक्त दौड़ती रहती थी। उसके चेहरे का गठन कह रहा था कि वह बर्लिन की ही रहनेवाली है। अपनी जगह पर इतमीनान से बैठ कर वह अखबार के पन्ने उलटने लगी।

उसे छेड़ने का मैं बहाना खोज रहा था। इसलिये मैंने उससे पूछाः—यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं सिगरेट पीऊँ।"

"जी हाँ, आप शौकसे पी सकते हैं।"

गाड़ी की रफ्तार घटने लगी। जोसेने स्टेशन पास आ रहा था। जर्मन यात्री अपना सिगार खत्म करने के लिये बरामदे में चला गया। अंग्रेज यात्री भोजन की फिराक में होटल की तरफ लपका। मैं अपने पड़ोसी को देखने में तल्लीन था। यात्रा लंबी थी और इस तरह मुंह बन्द करके इतनी लंबी यात्रा नहीं कट सकती थी—खासकर फ्रांस के लोग इस मामले में बहुत बदनाम हैं कि

वे चुप नहीं रह सकते। मैं इसी फिक्र में था कि इस महिला से मैं बात-चीत का सिलसिला किस तरह आरंभ करूं कि उसने अपने थैले से सिगरेट का डिब्बा निकाला। डिब्बे से एक सिगरेट बाहर कर मुंह में लगाया और सलाई की खोज में थैले को उलटने पलटने लगी।

बातचीत का सिलसिला छेड़ने के लिये मैंने यही उपयुक्त अवसर देखा। उसकी ओर मुंह फेर कर मैंने कहा:—

"यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं—"

उत्तर में उसने केवल मुस्कुरा दिया। मैंने उसकी सिगरेट जला दी और अपने सामने बैठकर बातें करने लगा। अंग्रेज यात्री होटल में चला गया था। जर्मन यात्री अपना सिगार खत्म करने पर तुला था। इसलिये उस वक्त तक वह बरामदे ही में था। इससे उस महिला से खुलकर बातें करने का मुझे पूरा अवसर मिल गया। मैंने उससे पूछा:—

"क्या आप बियना जा रही हैं?"

"जी हां,"

"क्या मध्य यूरोप की रंगीनियाँ आपको पसन्द नहीं?"

"मुझे प्रेग बहुत भाता है। उसमें एक आकर्षण है जो मुझे कहीं अन्यत्र नहीं मिलता।"

"क्या आप जेच भाषा जानती हैं?"

"जी नहीं। मैं बर्लिन की रहनेवाली हूँ। क्या मेरे उच्चारण से आपको यह नहीं मालूम हो सका?"

उसका सुन्दर ललाट और उसके सुनहले बाल मेरे आकर्षण के खास कारण थे। दोपहर का मैंने भोजन के लिये उसे निमंत्रित किया। उसने मेरा निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

बातचीत के प्रसंग में मुझे मालूम हुआ कि वह सेना की किसी अफसर की विधवा पत्नी है जो १९१५ में युद्ध में मारा गया। वियना में उसकी बूढ़ी चाची रहती है जिसके यहाँ वह जा रही थी। उसी तरह की और भी बहुत-सी बातें वह अपने संबंध में कह गई। उसने यह भी बतलाया कि स्कूल में वह युवराज वान शाम्बर्ग डेमाल्ड की सबसे छोटी पुत्री के साथ पढ़ती थी। पर किसी कारण से वह स्कूल से निकाल दी गई थी।

दोपहर के भोजन के बाद तो हमलोगों में इतनी घनिष्ठता हो गई कि मेरी यात्रा आनन्द पूर्वक कटने लगी। रात को भी मैंने भोजन के लिये उसे निमंत्रण दिया। मैंने कहाः—"हमलोग रात को ९ बजे वियना पहुँच जायगे। मुझे एक होटल का पता है जो छोटा होने पर बहुत सुन्दर और साफ सुथरा है। भीड़भाड़ भी वहां ज्यादा नहीं रहती।"

उत्तर में उसने कहाः—मेरे लिये वहां ठहरना असंभव होगा।"

"मुझे आशा नहीं थी कि आप मुझे इस तरह निराश करेंगी। जीवन का क्षणिक आनन्द इस तरह खोने की चीज नहीं है।"

मेरे अनुनय विनय का परिणाम अच्छा निकला। वह राजी हो गई। गाड़ी से हमलोग उतरे तो वह मेरे बगल में थी। उसका सामान मेरे सामान के साथ था। होटल में पहुँचकर हमलोगों ने अगल बगल में दो कमरा ठीक कर लिया। मैंने कमरा नं० २६ में दखल जमाया और वह कमरा नं० २७ में चली गई।

वहां से कुस्तुनिया के लिये ३६ घंटे बाद गाड़ी जानेवाली थी। हमलोगों को आनन्द मनाने के लिये काफी समय मिल गया।

उस होटल में हर तरह का प्रबन्ध था। जो प्रेमी और प्रेमिका एकान्त में भोजन करना चाहते थे उनके लिये भी वहां सुन्दर इन्तजाम था।

हमलोग इसी तरह के एक कमरे में पहुंचे। मैंने कहा:—"यह जगह अच्छी है। हमलोग यहीं बैठें?" वह राजी हो गई। मैंने उसकी तरफ मुड़कर पूछा:—"आपका नाम क्या है?"

"क्लारा।"

"हमलोगों की इस मुलाकात से आपको अफसोस तो नहीं हो रहा है?"

"जी नहीं। मैंने तो सोचा था कि चाची लूइसा के साथ ही भोजन करूंगी। उनके साथ तो कल भी खा सकती हूं। यह आनन्द तो कल नहीं मिल सकता था।"

"क्या आपको किसी खास तरह का संगीत पसन्द है?"

"जी हां! होटलवालों से कहिए कि वे फ्लैंडेरमास गावें। उससे मुझे बचपन की याद आ जाती है।

संगीत का राग बदला। हमलोग भोजन करने लगे। क्लारा जितना संगीत की ओर तत्पर थी, उतना भोजन की ओर नहीं। मैंने देखा कि संगीत के प्रभाव से उसका चेहरा उदास हो गया है। मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और धीरे से कहा: "संगीत का विचित्र प्रभाव तुम पर पड़ रहा है। क्या ही अच्छा होता कि हमलोग अतीत के सुनहले बाग की सैर करते जहां के पेड़ के पत्ते कभी मुरझाते नहीं।"

संगीत की मधुर ध्वनि रुक गई। उसके हाथ मेरे हाथों में काँप रहे थे। उसकी आंखों से मोतियों के समान दाने टपक पड़े। वह स्थिर दृष्टि से मेरी ओर देखने लगी। अचानक वह मेरी ओर झुक गई और उसके होंठ मेरे होठों से सट गये। उसने मिठास भरे शब्दों में कहा:—

"मैं इसके लिये अतिशय कृतज्ञ हूं। आपने मुझे जो सुख पहुंचाया है उसके लिये मैं आजन्म ऋणी रहूंगी और हर तरह से आपकी मदद करूंगी।"

उस समय मैं उसके इस कथन का अभिप्राय नहीं समझ सका। बाद को मुझे मालूम हुआ कि उसके यह कहने का क्या मतलब था। उस वक्त तो मैंने केवल इतना ही समझा कि संगीत ने उसे मस्त और भावुक बना दिया है और मेरा काम बन गया है। उस वक्त तो मैंने मन ही मन होटल के बजाने वालों को धन्यवाद दिया जिनके प्रभाव से इस महिला का हृदय पिघल गया और वह मेरे समान एकाकी यात्री की गोद में खेलने के लिये तैयार हो गई।

भोजन कर हमलोग टहलने चले गये। चन्द्रमा अपना शुभ्र प्रकाश चारों ओर बिखेर रहा था। चन्द्रमा की शुभ्र ज्योत्स्ना में हम लोग प्रायः ग्यारह बजे रात तक पेड़ों की झुरमुट में प्रेम लीला में रत रहे। ग्यारह बजे के बाद हमलोग वापस आये। वह हर तरह से प्रसन्न और आनन्द विभोर थी।

कमरे के दरवाजे पर उस एकान्त बरामदे में मैंने उसके हाथ को चूम लिया और अपने कमरे की ओर बढ़ने का उपक्रम करने लगा। उसने मेरी ओर करुण नेत्रों से देखा और कहा:—"मेरे कमरे में चलिये और एकाध सिगरेट पीकर तब जाइयेगा।"

मैं उसके साथ हो लिया। कमरे में पहुंच कर मैंने शराब मंगाई। क्लारा आनन्द में विभोर थी। बोतल में जो कपड़ा लपेटा था उससे मेरी आँखें बांध दी और कहा:—"जब तक मैं न कहूँ तब तक आँखें मत खोलना।"

अन्त में जब मैंने आंख खोली तो देखा कि टेबुल पर का केवल छोटा लैम्प ही जल रहा था। क्लारा ने अपनी पोशाक बदल दी थी जिसे देख कर मुझे विस्मय हुआ। मेरे विस्मय पर वह खिलखिलाकर हँसने लगी।

दूसरे दिन अपना विजा ठीक कराने के लिये मैं तुर्क राजदूत के पास गया। मैंने गुलाब की एक माला क्लारा के लिये खरीदी। साथ ही तेल की खानों से संबंध रखने वाली कुछ पुस्तकें भी खरीदीं ताकि निकोलाई में मि० ब्लैंकेट से

मिलने से पहले इस विषय की थोड़ी जानकारी प्राप्त कर लूं।

दोपहर का भोजन मैंने अकेले ही किया। क्लारा अपनी चाची से मिलने चली गई थी। जाते वक्त कहती गई थी कि वह यथाशीघ्र काफे फ्रांज में आकर मुझ से मिलेगी।

शाम को पांच बजे ठीक वक्त पर वह आगई। मुझसे पुनः मिलकर वह अतिशय खुश थी और मेरे साथ तुरत चाय पर बैठ गई। हम लोगों ने थोड़ा जलपान किया। वहां से हमलोग घूमने चले गये।

रात को दस बजे वह अचानक गंभीर हो गई। उसकी बाणी में वेदना थी। उसने मुझ से पूछाः—

"क्या आप सचमुच कल कुस्तुन्तूनिया के लिये प्रस्थान कर रहे हैं?"

"मुझे जाना ही होगा।"

"तब यह हम लोगों की आखिरी मुलाकात है।"

"हां, यदि तुम मेरे साथ चलने के लिये तैयार न हो तो। मैं यह प्रस्ताव कैसे कर सकता हूं। लेकिन मुझे अतिशय प्रसन्नता होती यदि तुम—"

"यदि मैं राजी हो जाऊं?"

वह इतनी आग्रहशील प्रतीत हुई कि मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैंने उसके हाथको चूम लिया। मैंने कहाः—

"कल ग्यारह बजे हम लोग साथ ही रवाना हो जायगे। इस तरह हमलोगों का अनिवार्य वियोग कुछ समय के लिये टल जायगा।"

"और तब हमलोग एक दूसरे को विदा देंगे और तुम हमेशा के लिये आँखों से ओझल हो जाओगे।"

"इस अनस्थिर विश्व की यही हालत है क्लारा! भाग्य बहुत ही क्रूर दैत्य है। कल तक हम लोग एक दूसरे से परिचित तक नहीं थे और छानबे घंटे के

बाद ही हमलोगों की उस घनिष्टता का अन्त हो जायगा। ईश्वर की शक्ति विशाल है तोभी इस प्रेम के साम्राज्य में उसका शासन नहीं चलता।"

कितना बड़ा सदमा हमलोगों को इससे होगा ?"

"यह समस्या मानव को सदा परीशान करती रही है। तुम्हें यह बात स्वीकार करनी होगी कि समय की समस्या जितना प्रेमियों को सताती है उतना दार्शनिकों को नहीं। रोमियो सफलतापूर्वक बरामदे में चढ़ गया पर उतरने के लिये वाध्य होना पड़ा। विदाई की गीत गाने के लिए हम सभी को मजबूर होना पड़ता है।

"यदि कोई दिन ऐसा भी आ जाय कि विदाई का यह संगीत न गाना पड़े तो वह दिन कैसा सुखमय होगा।"

"नहीं क्लारा ! वियोग की अनिश्चितता ही प्रेम को जगाती है और प्रेमी की ओर अधिक आकृष्ट करती है। यदि यह वियोग न रहे तो प्रेम में किसी तरह का आनन्द नहीं रह जायगा क्योंकि तब उसका कोई आकर्षण नहीं रह जायगा।"

"मैं तो यही चाहती हूं कि उसका कभी अन्त न हो।"

"सदा कायम रहे ! यह तो असंभव है। यह धरती जो सदा कायम रहनेवाली और सहनशील है अपनी गर्मी निरन्तर खो रही है। वह बूढ़ी औरत के समान हो गई है और दस लाख साल के बाद उसे इस सूर्य के आलिंगन की गर्मी नहीं प्राप्त हो सकेगी।"

"ओह ! तुम बड़े निराशावादी हो।"

"हरगिज नहीं। हम लोग सर्वसाधारण विषय पर विचार विनिमयमात्र कर रहे हैं, प्लेटो के समय के पहले से ही यह मनुष्य को उलझन मे डाले हुए हैं। क्या तुम जानती हो कि हमलोग क्या हैं ? हमलोग अबोध शिशु के समान हैं जो किनारे

के बालू पर बैठे हैं। समुद्र के सांस में पानी की धीमी आवाज सुनते हैं और समझते हैं कि यह समग्र समुद्र है और यही उसका गर्जन है।"

हमलोग होटल में लौट आये। गुलाब का हार अपनी जगह पर पड़ा था। क्लारा उसकी सुगन्ध से मस्त हो गई और आनन्द में अपनी आँखें बन्द कर ली। इसके बाद वह अचानक रो पड़ी। पहले तो मैंने समझा कि वह हँस रही है। लेकिन उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहते देख कर मुझे विस्मय हुआ। मैंने उसे गले से लगा लिया। लेकिन इस अचानक परिवर्तन का कारण बताने से उसने इन्कार कर दिया। भावावेश में उसके मुंह से ये शब्द निकल पड़े :—

"प्रियतम ! तुम कितने अच्छे हो। मैं उसके तुम्हें हृदय से चाहती हूं। मै यह साबित कर दूंगी कि मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ।"

मुझसे जो कुछ भी हो सका उसे शान्त करने के लिये कहा। लेकिन मर्ज बढता ही गया ज्यों ज्यों दवा की। उसका रोना धोना उग्र से उग्रतर होता गया। वह अपने बिस्तर पर गिर गयी और सिसक-सिसक कर रोने लगी। उसने रोते-रोते कहा:—

"मैं बुरी औरत नहीं हू। मैं यह तुम्हें साबित कर दूंगी। तुम मुझे प्यार करते रहोगे।

---

## ६

बुदापेस्ट, ब्रासोव, बुकारेस्ट, कांस्संजा आदि अनेक नगरों को पार कर हमारी गाड़ी कुस्तुनतुनिया पहुँची। तोभी यह यात्रा हमें बहुत ही छोटी प्रतीत हुई। वहां हमलोग पेरा-पेलेस होटल में ठहरे। हमलोग इस बातसे दुखी थे कि हमलोगों के वियोग की घड़ी शीघ्र ही आनेवाली है और मुझे उस परी से विदा

लेनी होगी जिसने मेरी इस यात्रा को इतना मधुर बना दिया था।

तीन दिन तक हमलोग कुस्तुन्तूनिया का रस लेते रहे। हमलोग दिन-रात घूमते रहते, नये नये स्थानों को देखते और गुलाब के फूलों की महँक का आनन्द लेते। हमलोग इतने मस्त तथा आनन्द विभोर थे कि हमलोगों का यह स्मरण ही नहीं रहा कि समय तेजीसे भागता चला जा रहा है।

चौथे दिन मेरी नींद टूटी और मैं स्टीमर की फिराक में दौड़ धूप करने लगा। तुर्की स्टीमर कम्पनी के अब्दुल अजीज जहाज में मुझे जगह मिल रही थी। लेकिन वह जहाज प्रायः दो सप्ताह में पहुँचती थी। क्लारा मेरे साथ ही थी। उसने कहाः—

"जहाज पर जगह दिलाने में शायद मैं तुम्हारी मदद कर सकूं। मिस्र के एक व्यापारी से मेरा परिचय है जो सालमें दो बार वर्लिन व्यापार के लिये आया करता है। मुझ पर कृपा करने में उसे प्रसन्नता होगी। उसका दफ्तर वोईबोड़ा स्ट्रीट में है।

हमलोग मि० वेन साइमन के यहां पहुँचे। वे मेवा तथा अनेक तरह के अन्य सामग्रियों के व्यापारी थे। उन्होंने काफी से हमलोगों का स्वागत किया और फेत्रस शिपिंग कम्पनी के संचालक के नाम एक खत दिया। उन्होंने कहा कि इस जहाज से आप जल्द पहुँच जायंगे। मैंने उन्हें अनेक धन्यबाद दिये।

मुझे दूसरे दिन प्रस्थान करना था। वियोग की यह रात कितनी मनहूस थी इसका अन्दाज नहीं किया जा सकता। उस रात हमलोगों ने बिस्तर से पीठ नहीं सटाई। रात कब आई और कब बीत गई, इसका हमलोग अनुमान भी नहीं कर सके। प्रभात की प्रथम किरण के फूटते ही मैं अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और क्लारा से कहाः—"नव बज रहे हैं। हमलोगों को जल्द तैयार हो जाना चाहिये।

वह मुझ से लिपट गई और मेरी गर्दन में दोनों हाथ डालकर बड़ी आजिजी से बोली:—

"अभी बहुत समय है। इसके लिये जल्दी क्या है?"

घंटा भर और बीता। लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ कि पलभर भी नहीं हुआ है। अब समय नहीं रह गया था। मैं उठ खड़ा हुआ। क्लारा ने दैन्यता के साथ अपने दोनों हाथ मेरी ओर फैला दिये और गिड़गिड़ा कर बोली:—नहीं, नहीं, तुम्हें जाना नहीं होगा। मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है। मेरी बात सुनो।

मैंने समझा कि प्रेमाधिक्य के कारण वह विह्वल हो रही है। मैं उसके पास चला गया। उसकी जबान कांप रही थी। उसने कहना शुरू किया:—

"प्रियतम! सारी बातें कहे बिना मैं तुमसे विदा नहीं हो सकती। मैंने तुम्हारे साथ घोर अन्याय किया है। मैं तुम्हारे साथ गुप्तचर के रूप में यहां तक आई। इसके लिये मैं तुमसे क्षमा चाहती हूं। मैं घृणा के योग्य हूं तो भी तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि मुझसे घृणा नहीं करना क्योंकि मैंने अपराध कबूल कर लिया है।

मैंने सब कुछ समझ लिया। इसके लिये मुझे उस पर गुस्सा नहीं आया। मैंने उसे फिर अपने बाहुपाश में कस लिया और नर्मी से पूछा:—"क्या सोवियत रूस ने तुम्हें तैनात कर रखा है?"

उसने अपना सिर झुका लिया।

मैंने कहा:—"क्लारा! मुझे तुम पर लेशमात्र भी क्रोध या क्षोभ नहीं है। कमसे कम इसी बहाने तुमसे मेरा मिलन तो हुआ और इतनी कठिन यात्रा ऐसे आराम से कट गई।

मेरी इन बातों से वह और भी अधीर हो उठी। मेरी छाती पर अपना सिर रख कर वह बिलख बिलख कर रोने लगी। इसके बाद सारी बातें उसने यों कहीः—

"जिरार्ड! मैं विपन्न हूँ! लेकिन इसके लिये मैं जिम्मेदार नहीं हूं। यह सच है कि मैं लेफ्टनेएट होकनर की विधवा पत्नी हूं। यह भी सच है कि वे लड़ाई में १६१५ में मारे गये। उस समय से मैं उसी अल्प पेंसन तथा अल्प आदमनी पर रहती आयी हूं! लेकिन मार्क का मूल्य घट जाने पर मेरी हालत दयनीय हो गई। अपनी जिन्दगी इमानदारी से बिताने के लिये मुझे कोई न कोई काम ढूढ़ना अनिवार्य था। अवसर और मेरी जान पहचान के कारण मुझे सोवियत के खुफिया विभाग में काम मिल गया। उन्हें एक ऐसे महिला की जरूरत थी जो देखने में सुन्दर हो, चुस्त और चालाक हो। उसके जिम्मे गुप्त खबरें लाने और पहुँचाने का काम सौंपना था। मुझे वह काम मिल गया। आरंभ में उन लोगों ने मुझे छोटा मोटा काम दिया जिसे मैंने आसानी से पूरा कर दिया। उनलोगों को मेरे काम से पूरा सन्तोष हुआ और मेरी तरक्की कर दी। जेनेवा कान्फ्रेंस में बोलशेविकों के प्रतिनिधिमण्डल के साथ मुझे सरकारी तौर पर भेजा गया! वहाँ मुझे अपने काम में बहुत सफलता मिली। मेरे काम से मेरे अफसरों को बहुत ज्यादा संतोष हुआ। पिछली बार लन्दन में अंग्रेज-सोवियत कान्फ्रेंस में बहुत बड़ी जिम्मेदारी का काम मुझ पर सौंपा गया था। मुझे हजारों मजदूर नेताओं के बीच काम करना पड़ा था। जर्मन महिला के रूप में अपना परिचय देकर मैं डेली हेराल्ड के संपादक तथा फेबियन सोसायटी के प्रतिनिध से बातचीत की। सिनफिनरों के नेताओंने मुझसे दिल खोलकर बातें की। ग्रागमार्टन स्ट्रीट के एक एकान्त मकान में सोवियत गुप्तचर विभाग का दफ्तर था जहां समाचार गढ़े जाते थे। हर दूसरे दिन वहाँ जाकर मैं रिपोर्ट दे आती थी। वहाँ का काम पूरा कर मैं वर्लिन वापस चली आई। कई दिन की बात है कि मुझे एक रूसी महिला

का बुलावा आया। वर्लिन स्थित किसी सोवियत अफसर के साथ वह काम करती है। उसने मुझे अकेले में बुला भेजा।"

"मैडम मौराविफ ने नं ४४ बेली अलायन्स प्लाज में तुम्हें बुलाया था ?"

क्लारा ने चकित होकर मेरी ओर देखा और पूछाः—

"तुम उसे जानते हो ?"

मैंने असली बात उसपर प्रगट नहीं की। कहाः—

"मैंने उसका नाम सुना है। तुम अपनी बात कहो।"

"उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं एक फ्रांसोसी पुरुष का पीछा कर सकती हूं जो वर्लिन से निकोलाई जा रहा है।"

उसकी बातों ने मुझे चिन्ता में डाल दिया। मैंने उसे बाधा देते हुए पूछाः—

"मेरी निकोलाई की यात्रा के बारे में उसने तुमसे किस दिन कहा ?"

"मुझे याद करने दो। हमलोग मंगल की सुबह वर्लिन से रवाना हुए। उससे पहले दिन तीसरे पहर की बात है।

"शाम के वक्त ?"

"कोई छह बजे शाम को।"

मुझे याद आया कि उसी दिन तीन बजे मैडम मौराविफ से मेरी भेंट हुई थी। उसने कैसे जान लिया कि दूसरे दिन सबेरे ही इस आशय का तार आवेगा और लेडी डायना मुझे ही भेजेंगी ? अनेक तरह के विचार मेरे मन में उठने लगे। इन में से एक ही विचार पर दिल जमता था। निश्चय ही मि॰ ब्लैकेट ने जो तार लेडी डायना के पास भेजा था उसका पता मैडम मौराविफ के गुप्तचरों को मिल गया था और उसके भेजे जाने से पहले ही उन्हें उसका संवाद भेज दिया गया था। इस तरह लेडी डायना के पास सूचना पहुंचने से पहले ही मैडम मौराविफ को उस तार के मजमून की बात मालूम हो गई थी। इसके बाद तो उनको यह

अनुमान कर लेना कठिन नहीं था कि तार पाकर लेडी डायना संभवतः मुझे ही इस काम के लिये रवाना करेंगी।

इतना समझ लेने के बाद मैंने क्लारा से अन्य सभी बातें जान लेना चाहा। उसने कहाः—"मैंने उस रूसी महिला से कहा कि मैं उसका पीछा करने के लिये तैयार हूं। आप आवश्यक हिदायत दें। उसने मुझे आपका चित्र दिखलाया। यह चित्र अमेरिका के किसी अखबार से काट कर निकाला गया था। उसके नीचे छपा था: 'प्रिंस मेलिमन जिनकी शादी अभी हाल में श्रीमती ग्रीसेल्डा रानी से हुई है।" इस तरह से मुझे तुम्हारे बारे में सारी बातें मालूम हो गई थीं जिनका तुम कयास भी नहीं कर सकते थे। इसके बाद उसने कहा कि तुम इस चेहरे को अपने दिमाग में बैठा लो और जब यह बर्लिन से रवाना हो तब तुम इसका पीछा करो। उसने मुझसे यह भी कहा कि तुम्हारा काम उसे वहां फँसाना होगा। तुम्हें उसके कागजपत्रों को पढ़ कर मुझे उनकी सूचना देनी होगी, यदि उनमें कोई महत्वपूर्ण बात प्रतीत हो। वह जिन लोगों से मिले उनकी सूचना मुझे देना। तुम्हारे लिये यह काम कठिन नहीं होगा क्योंकि तुम्हारा रूप आकर्षक है और ये फ्रांसीसी सुन्दर औरतों को देखते ही पागल हो जाते हैं और मेढ़कों की तरह उनके इर्दगिर्द फुदकने लगते हैं। यदि वह आसानी से कब्जे में नहीं आसके तो उसके साथ कुस्तुन्तूनिया तक चली जाना और वहां पहुंच कर जिस किसी उपाय से हो सके उससे जान पहचान करना। संप्रति कुस्तुन्तूनिया और बाड़न के बीच जहाज का आना जाना अनिश्चित है। इस काम में तुम उसकी सहायता करना और फेवस कम्पनी के जहाज में उसे जगह दिला देना ताकि वह कुस्तन्तूनिया से जल्द प्रस्थान कर जाय। जब वह जहाज पर चढ़ जाय तब तुम मुझे सांकेतिक शब्दों में मास्को तार भेजना। इसके बाद तुम्हारा काम समाप्त हो जायगा और तुम बर्लिन लौट आना। दूसरे दिन अनहाल्ड

रेलवे स्टेशन पर मैंने तुम्हें आसानी से पहचान लिया और तुम्हारे सामने वाली जगह प्राप्त करने की कोशिश की। मुझे सफलता भी मिल गई। इसके बाद की सारी बातें तो तुम्हें मालूम ही हैं कि किस तरह तुमने बातचीत शुरू की और तुम जितना अधिक मेरे तरफ बढ़ते गये उसका मैंने सहर्ष स्वागत किया। मैं इसके लिये लाचार थी। लेकिन इन सब बातों के पीछे एक और शक्ति काम कर रही थी। मैं क्षण क्षण तुम्हारी ओर आकृष्ट होती जा रही थी। तुम्हारा व्यवहार, तुम्हारी सौजन्यता मुझे तुम्हारी ओर खींच रही थी और मैं इस तरह तुम पर मुग्ध हो गई कि मैं अपने असली काम को भूल गई और जासूस न रह कर तुम्हारी शुभचिन्तक साथी बन गई।"

"और इसके बाद ?"

"एक दिन तुम्हारी गैरहाजिरी में तुम्हारे कागजपत्रों की मैंने जांच की। यह सब करना मेरा कर्तव्य था क्योंकि इसी काम के लिये मैं भेजी गई थी। इसके लिये तुम मुझे दोष नहीं दे सकते। यदि मुझे रूस के मतलब लायक भी कोई समाचार तुम्हारे कागजों में मिला होता तोभी मैं धोखा नहीं देती। तुम्हारे साथ विश्वासघात नहीं करती। इसका सबूत यह है कि मैंने अभी तक तीन रिपोर्ट भेजे हैं। उन्हें देखकर तुम कह सकते हो कि उनमें कोई ऐसी बात नहीं है जो तुम्हें संकट में डाल सके या तुम्हारा भेद प्रगट कर सके।

"यदि तुम मेरा विश्वास कर सकती हो तो मैं तुम्हें कह दूँ कि तुम्हारी इन हरकतों से मुझे लेशमात्र भी खेद नहीं है और तुम्हारी स्पष्टवादिता ने मुझे और भी अधिक प्रभावित किया है।"

इसके बाद वह बहुत गंभीर हो गई। उसने मेरा दोनों हाथ अपने हाथ में ले लिये और कहा:—

"मैं नहीं जानती कि जार्जिया तुम किस उद्देश्य से जा रहे हो। लेकिन यदि

मेरी सलाह मानो तो मैं यही कहूँगी कि वहाँ की यात्रा स्थगित कर दो।"

मैंने अपनी गर्दन हिलाते हुए कहाः—

"यात्रा स्थगित कर दूं ? क्या तुम्हें इस बात की आशंका है कि मैं तेल के किसी कुएं में गिर जाऊंगा। मुझे तुम्हारी बात पर हंसी आती है।"

"नहीं, नहीं! लेकिन न जानें क्यों मुझे ऐसा लगता है कि तुमने गलत कदम उठाया है। इसमें तुम्हारा कल्याण नहीं है।

"किस आधार पर तुम यह कहती हो। क्या मैडम मौराविफ ने तुमसे ऐसी कोई बात कही है, जिससे तुम्हें इस तरह की आशंका हो रही है।"

"नहीं! उन्होंने मुझसे कुछ स्पष्ट नहीं कहा है। लेकिन मैं उसके बारे में बहुत कुछ जानती हूं। उसने तुम्हारे बारे में जिस घृणाके साथ कहा था उससे मुझे भय लगता है कि यह यात्रा तुम्हारे लिये कल्याणकर नहा होगी।"

"उसने कहा क्या था ?"

"उसने कहा था कि प्रिंस सेलिमन मेरा दुश्मन है और युद्ध के समय शत्रुओं की गतिविधि का पूरा पता मिलते रहना चाहिए।' यह कहते समय उसके चेहरे पर तो भाव विराजमान था उसे यादकर मैं तुमसे फिर आग्रह करूगी कि यह यात्रा तुम स्थगित कर दो।"

मैं चारपाई पर बैठ गया। क्लारा की बातों ने मुझे चिन्तित कर दिया। इतना तो स्पष्ट था कि इस सारी योजना के पीछे जो नाटक चल रहा था उससे वह सर्वथा अनभिज्ञ थी। जहाँ तक मेरा संबंध था मुझे दो ही हल सूझ पड़े। या तो मैं इस महिला की चेतावनी की बिलकुल परवा न करूं या लेडी डायना को तार भेज दूँ कि मैंने निश्चय कर लिया कि काकेशस की यात्रा मैं नहीं करना चाहता। लेकिन मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह दूसरा मार्ग मेरी प्रतिष्ठा और मर्यादा के विरुद्ध होगा। लेडी डायना के सामने मैं यह बात स्वीकार करने के

लिये तैयार नहीं था कि मैडम मौराविफ की धमकियों से मैं डर गया और मैंने उन्हें अपना दुश्मन बनाना उचित नहीं समझा। इसलिये मैं यह काम छोड़कर लन्दन लौट जाना चाहता हूं। जो काम मैंने हाथ में लिया था उससे विमुख हो जाना मेरे आत्म-सम्मान के विरुद्ध प्रतीत हुआ। मेरी आत्मा इसे स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं थी। मैंने उससे कहाः—

"क्लारा! तुम्हारे आग्रह से मैं अभिभूत हूं। इससे मेरे प्रति तुम्हारा अनुराग और सदाशयता प्रगट होती है। इसके लिये मैं तुम्हारा अतिशय कृतज्ञ हूं। लेकिन मौराविफ डायन तो है नहीं कि मुझे चबा जायगी। उसकी आंखों में तुमने जो तनाव देखा था उससे डरकर यात्रा स्थगित कर देना मेरे लिये सर्वथा अनुपयुक्त होगा। मेरा पासपोर्ट एकदम सही है। मास्को के दफ्तर की मुहर भी उसपर है। मैं एक मित्र से मिलने जा रहा हूं। इसमें किसी को क्या आपत्ति हो सकती है?"

"पासपोर्ट! उसका भी कोई मूल्य है। जब इच्छा हो तब उसे कागज का रद्दी टुकड़ा घोषित किया जा सकता है। जार्जिया के विद्रोह के बाद से वहां बराबर घेरा डाला जा रहा है और तुम्हारा भाग्य वहां के वोलशेविक एजेण्टों के निर्णय पर निर्भर है।"

"तुम्हारा कहना सच हो सकता है तोभी मैं वहां के लिये प्रस्थान कर रहा हूं। मेन्शेविकों की अपेक्षा तो किसी भी परदेशी को कम ही खतरा है। समय हो गया है। अब हमलोगों को रवाना हो जाना चाहिये। तुरन्त तैयार हो जावो।"

पौने बारह बजे हमलोग घाट पर पहुंचे। डिगोल्फा पानी में खड़ा था। राल्सराय के मोकाबले बेबी आस्टिन को जिस तरह मोटर ही कहते हैं उसी तरह डिगोल्फा को भी जहाज कहा जा सकता था। क्लारा मेरे साथ डेक पर आई। जहाज की अन्तिम सीटी के तीन मिनट पहले उसने फिर मुझसे कहाः—

"तुम मेरे साथ यहीं रह जावो। मैं मास्को तार भेज देती हूं कि तुम रवाना हो गये।"

"नहीं, नहीं! तुमने मेरा बहुत उपकार किया है। मैं तुम्हारी खुशी की सदा कामना करता हूं। कौन कह सकता है कि हमलोग फिर नहीं मिलेंगे। पेरिस या लन्दन में हमलोगों की भेंट हो सकती है।"

अन्तिम सीटी हो गयी। क्लारा को मुझसे अलग होना पड़ा। जहाज चल पड़ा। क्लारा घाट पर खड़ी तबतक अपनी रूमाल हिलाती रही जब तक मैं उसकी आंखों से ओझल नहीं हो गया।

जहाज में अकेला बैठा मैं इस कोमल कमनीय जासूस के बारे में सोच रहा था कि एक मोटा आदमी मेरे पास आकर खड़ा हो गया। सहानुभूतिभरे शब्दों में उसने कहा:—

"किसी के लिये भी अपनी पत्नी से अलग होना कठिन काम हो जाता है, भाई।"

मैंने उत्तर में केवल अपनी गर्दन हिला दी।

इस जहाज के कप्तान के दाहिने हाथ में स्वस्तिक का चिह्न गोदा हुआ था। मेरी समझ में नहीं आया कि इस कट्टर ईसाई ने अपने हाथ में हिन्दू चिह्न क्यों गोदवा रखा है। मैं इस विरोधी आचरण के बारे में उससे पूछने का साहस नहीं कर सका क्योंकि इस माल ढोने के जहाज पर जब कभी उसके मालिक लोग यात्रियों को स्थान दे देते थे तो इससे उसे कुढ़न हो जाती थी। यह बात मुझसे उसी मोटे आदमी ने कही थी जो मेरे साथ सहानुभूति दिखलाने आया था। वह जाति का तुर्क था। उसने कहा:—

"मलाहों और खलासियों को छोड़कर और किसी को जहाज पर ले जाना उसे खलता है क्योंकि यात्रियों के कारण उसे मनमाना शराब पीने का अवसर

नहीं मिलता। उसे सदा इस बात का भय बना रहता है कि कहीं कोई यात्री मि० अग्रेजनियाडेस से शिकायत न कर दे।"

"मेरा यह सहयात्री पूर्वी देशों की सारी विचित्रताओं से परिचित था। उदाहरण के लिये मैंने दो जहाजियों को सामान वाले कैबिन के सामने खड़ा देखकर कहा:—"ये दोनो सज्जन फरार हत्यारे के समान प्रतीत होते हैं।"

उत्तर में उसने कहा:—"इनसे डरने का कोई कारण नहीं है। ये लोग हत्यारे तो नहीं हैं लेकिन चोर जरूर हैं।"

यह बहुत महत्त्वपूर्ण अन्तर था। मैंने उसकी जानकारी की तारीफ की और उससे पूछा:-"आपको काला समुद्र की यात्रा अनेकों बार करनी पड़ी है?"

"जी हाँ, इस जहाज पर तथा अन्य जहाजों पर भी, मुझे अकसर ट्रेबिजोण्डे जाना पड़ता है। वहा मेरा कारोबार है।"

वे दोनों जहाजी हमलोगों के पास से गुजरे और कुछ अस्पष्ट शब्द कहते गये। किसी चलचित्र का संचालक उन्हें अपनी सेवा में बिना एतराज के रख सकता था और बिना मेकअप के उनका उपयोग समुद्री डकैती के दृश्य में कर सकता था। वे मुझे इतने रोचक प्रतीत हुए कि उनके बारे में और बातचीत के प्रलोभन को मैं रोक नहीं सका।

मैंने पूछा:—"क्या इन सबों ने कभी आपको जहाज से पानी में फेंक देने की कोशिश नहीं की?"

"ऐसा क्यों करेंगे? आपके विचार भी उन्हीं पश्चिमी यात्रियों के समान हैं जो जासूसी उपन्यास पढ़ा करते हैं। काला सागर जेनेवा की झील के समान शान्त है। मैंने जब कभी इस ओर होकर यात्रा की है मुझे कभी भी अप्रिय या कटु अनुभव नहीं हुआ है। आज तक केवल दो बार मेरे सामानों की चोरी हुई है पर सौभाग्यवश रकम गहरी नहीं थी। पिछली बार मोगला

के जहाजियों ने हमलोगों को चन्द घंटों के लिये केबिन में बन्द कर दिया था और चोरी के अपने माल के बांट बखरा में लगे रहे। इसी तरह की छोटी मोटी घटनायें कभी-कभी हो जाती हैं अन्यथा यात्रा सदा निरापद रहती है।"

मेरा जहाज धीरे-धीरे पानी को चीरता आगे बढ रहा था। मैं जहाज के अन्य यात्रियो का परिचय पाने की कोशिश करने लगा। दाहिनी तरफ एक अरमेनियन था जो विना कालर का हरे रंग का कोट पहने हुए था। वह अपने ट्रंक का सारा सामान अपने बिस्तर पर फैलाये हुए था जिनमें नकली मोतियाँ तथा इसी तरह के अन्य सामान थे। वह उन्हें छांट-छांट कर एक तरफ रखता जाता था। मेरे मोटे साथी ने वतलाया कि सरकासिया की औरतें फ्रांस की विलासिता की ओर बड़ी आकर्षित रहती हैं और वह रोजगारी इन सब चीजों को ले जाकर उनके हाथ यह कह कर बेचता है कि वह उन्हें खास पेरिस की एक मशहूर दूकान से खरीद कर ले आता है। इस तरह वह उनसे काफी नफा कमाता है। बायी ओर के केबिन में एक नकाबपोश औरत ने दखल जमाया था।

पहला भोजन एक बजे के करीब एक गन्दे कमरे में खाना पड़ा। उस कोठरी की दीवारों की सुन्दरता बढाने की दृष्टि से उसकी दीवालों पर सिगरेट के विज्ञापन चमकाये हुए थे। जहाज का कप्तान हमलोगों के साथ भोजन करने नहीं आया। उसके सहकारीने ही हमलोगों का साथ देकर हमलोगों को गौरवान्वित किया। वह मसोढ़न का रहनेवाला था। उसके चेहरे पर चेचक के दाग थे और उसकी मूछें कड़ी कड़ी थीं। वह अंग्रेजी मजे में बोल लेता था। मेरा मोटा साथी हर वक्त अपने रोजगार की ही बातें मुझसे करता रहता था। बुर्केवाली महिला ने अपने केबिन में ही भोजन किया था। जब हमलोग काफी पी रहे थे उस वक्त अरमेनियावाला वह सौदागर मुझे एकान्त में ले गया और एक घड़ा दिखा कर मुझसे विनती करने लगा कि मैं उसे खरीद

लूं। घड़ी बढ़िया थी और अनेक तरह की निर्देशक सूइयां उसमें लगी थीं। मैंने उससे पूछा कि क्या यह चोरी का माल है। उसने बड़ी सफाई से कहा:—

"मैंने उसे चुराया नहीं है, बल्कि मेरे एक पुराने कोट के बदले में मुझे यह मिली।"

"मैंने तुम्हारा मतलब नहीं समझा।"

"एक सार्वजनिक स्नानागार में मैं स्नान करने गया। नहाकर निकला तो दूसरे का कपड़ा उठा लिया।

"तुमने उसे वापस करने की फिकर नहीं की?"

"क्या आप मजाक कर रहे हैं? वह तो डाकू था जो जानबूझ कर मेरा कोट लेकर भाग गया था।"

दिन बड़ा था। तीसरे पहर एक साधारण घटना हो गई जिसने उदासी और मनहूसियत को कम कर दिया। जहाज का एक खलासी केबिन के दरवाजे पर सो रहा था। कप्तान ने उसे ठोकर मार दी। इससे इतने जोरों का झगड़ा उठ खड़ा हुआ कि इंजिन की गड़गड़ाहट छिप गई। हमारा साथी मोटे तुर्की को उस झगड़े में कोई दिलचस्पी नहीं थी। झगड़े के गाली गलौज को समझाते हुए उसने मुझसे कहा:—

"खलासी इसलिये बिगड़ा हुआ है कि कप्तान ने उसे सूअर का बच्चा कहा है।"

मैं अनुमान ही कर रहा था कि यह झगड़ा नाटक का रूप धारण करेगा कि मैंने कप्तान को कमरे में से पिस्तौल लेकर निकालते देखा। झगड़ा संगीन होता जा रहा था।

"जी नहीं, पिस्तौल में गोलियां नहीं हैं। कप्तान सिर्फ उसे धमकाना चाहता है। खलासी कहता है कि आप अपनी गाली वापस लीजिये।"

शाम तक हमलोग सिनाय पहुंच गये। यह साधारण बन्दरगाह है जो काले सागर में घुसा हुआ है। इसके चारों ओर पेड़ों के जंगल हैं। दूसरे दिन दो बजे हमलोग ट्रेविजाएडे बन्दरगाह पर पहुंच गये। इस बन्दरगाह पर तीन चार युद्ध पोत, दर्जनो यात्री जहाज और कतिपय नावे थीं।

इस बन्दरगाह के प्राकृतिक दृश्यों में मुझे कोई आकर्षण न होता यदि मैंने सुदूर पर समुद्र के वक्षस्थल पर तैरते एक अतिशय रमणीय और आकर्षक यात्री जहाज को न देख पाता। उसकी सुन्दरता अत्यन्त आकर्षक थी। मेरा जहाज शाम को खुलनेवाला था इसलिये मुझे घूमने के लिये काफी समय मिल गया।

मैं अपने तुर्की साथी के साथ किनारे पर पहुँचा और उसे छोड़कर नावों की तरफ गया। मैंने देखा था कि उस जहाज की किश्ती पानी में उतारी गई थी और एक सफेद रंग का जहाजी उसे किनारे की तरफ ला रहा था। किश्ती पर दो व्यक्ति बैठे थे। नीले रंग का कपड़ा पहने एक जहाजी प्रतीत होता था और सादे लिवास में एक महिला थी। इन लोगों की पूरी जानकारी प्राप्त करने के इरादे से मैं उनकी ओर ही बढ़ा।

नीली पोशाक वाले सज्जन ने जहाजी को हुक्म दिया। वह किनारे पर कूद पड़ा और उस महिला की तरफ अपना हाथ बढ़ा दिया। इसी वक्त हवा का झोंका आया और नीली पोशाक वाले का टोप उड़कर मेरी तरफ आ गया। मैंने उसे पकड़ लिया। लन्दन के रहनेवालों का आना जाना यहा बहुत होता था। इसलिये मेरी पोशाक से भी उसने मुझे लन्दन निवासी ही समझा और अंग्रेजी में बातचीत का सिलसिला शुरू किया।

उसने कहाः—हवा का वेग बहुत तीखा है?

"क्या किनारे पर आते समय समुद्र में आपको इसका अनुभव नहीं हुआ था।"

"दो महीने से हमलोग नार्दन स्टार पर समुद्र में ही हैं। इससे हमलोगों को इसका कोई अनुभव नहीं हो सका।"

"आपका जहाज तो बहुत ही सुन्दर है।"

"जी, यह मेरा नहीं है। हम पति-पत्नी मेहमान हैं। क्या आप इस स्थान से परिचित हैं?"

"बहुत ज्यादा नहीं। लेकिन यदि मैं किसी तरह से आपकी मदद कर सकूँ तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। मैं शाम तक यहाँ हूँ।"

उस व्यक्ति के साथ की महिला किनारे पर के विविध दृश्यों का चित्र लेने में व्यस्त थी। इस सज्जन ने बिना किसी झिझक के अपना परिचय इस प्रकार दिया:—

"मेरा नाम डबल्यू० आर० मोगन है। क्या आपका परिचय मुझे प्राप्त हो सकता है?"

"मेरा नाम प्रिंस सेलिमन है।"

मेरा नाम सुनते ही पति-पत्नी को जितना विस्मय हुआ, उतना अधिक विस्मय शायद उन्हें तिब्बत के लामा से अचानक मिलने पर भी नहीं हुआ होता। उनके रुख से मुझे अत्यन्त विस्मय होना स्वाभाविक था क्योंकि इसके बाद श्रीमती मोगन ने बातचीत का सिलसिला जिस तरह से जारी किया वह घनिष्ठता पूर्ण था। उन्होंने पूछा:—ग्रिसेल्डा के पति प्रिंस सेलिमन आप ही हैं।"

"जी हां।"

मि० मोगन तो मारे खुशी के उछल पड़े। बोले:—"यह भी संयोग की बात है कि न्यूयार्क से पांच हजार मील की दूरी पर आप से भेंट हुई और वह भी कहां? काले सागर के इस गन्दे स्थान में।

इतना कह कर उन्होंने अपनी पत्नी को लक्ष्य कर कहा:—

"प्रिस सेलिमन का ट्रेविजोएडे में आगमन ! क्या यह असाधरण बात नहीं है। रूस ! यह तो पुआल के टाल में सूई पाने के समान है।"

मि० मोगन की बातो से मेरा साहस बढ़ा। मैंने व्यंग से कहा:—

"यहां मुझे पाकर आप लोगों को असाधरण प्रसन्नता हुई, इसको मुझे बेहद खुशी है। पर क्या मैं इसका कारण जान सकता हूं?"

"क्यों? हम दोनों प्राणी ग्रिसेल्डा के घनिष्ट मित्रों में हैं। न्यूयार्क में आपसे भेंट नहीं हो सकी थी क्योंकि एक तो आप अमेरिका में ज्यादा दिन तक रहे नहीं, दूसरे ग्रिसेल्डा के साथ आपका वियोग भी इतनी जल्द हो गया। लेकिन जिस भ्रम-पूर्ण घटना के कारण आप लोग एक दूसरे से अलग हुए उसका सबसे अधिक दुख हमलोगों को हुआ क्योंकि उस घटना में किसी तरह की सचाई नहीं थी।"

तब तो मुझे मान लेना चाहिए कि आपको सारा किस्सा मालूम है।"

"मैं तो यही समझती हूं। ग्रिसेल्डा की सौतेली बेटी के साथ पाम बीच में आपकी रोमाचक यात्रा का समाचार हम लोगों ने पत्रों में पढ़ा था। लेकिन उसमें हमलोगों ने कोई बुराई नहीं देखी। हमलोग तो ग्रिसेल्डा से बाराबर यही कहते आये हैं कि तुमने जो निर्णय किया है, वह गलत है।"

मुझे धीरे-धीरे याद आने लगा कि शादी के बाद जब हमलोग सोहाग रात मनाने निकले थे तो ग्रिसेल्डा ने मोगन नामक किसी वकील की चर्चा की थी। अपनी भूल स्वीकार करने के लिये मैंने कहा—

"अपनी कमजोर याददाश्त के लिये मैं आपसे क्षमा माँगता हूं। मेरे जीवन में इधर इतनी घटनायें हो गई हैं कि मेरी याददाश्त का खराब हो जाना स्वाभाविक है। मुझे याद आ रहा है कि आप न्यूयार्क में वकालत करते हैं और आपकी

पत्नी ग्रिसेल्डा के यहां अडिराएडक में ठहरी थीं जब ग्रिसेल्डा मि० टर्नर की पत्नी थी।

"बिलकुल ठीक ! आपको सारी बातें याद आ गईं।"

इतना कह कर उन्होंने मेरे कन्धों को थपथपाया और कस कर मुझसे हाथ मिलाया। लेकिन उनकी पत्नी किसी गहरी चिन्ता में डूबी हुई थीं। अचानक उन्होंने घनिष्ट मित्र की तरह मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा—

"प्रिंस मेरे साथ चलो।"

"कहां ?"

"हम लोगों के जहाज पर।"

मि० मोगन ने इस पर विस्मय प्रगट किया। लेकिन उनकी पत्नी ने उन्हें बोलने से मना कर दिया। उन्होंने कहा:—"विली ! यह भार मुझपर छोड़ो। मैं सब कुछ ठीक कर लूंगी। प्रिंस सेलिमन को नार्दन स्टार पर हमलोगों के साथ चाय पीनी होगी ?

इतना आग्रह-पूर्ण निमंत्रण मैं अस्वीकर नहीं कर सकता था। हम लोग नाव पर कूद पड़े और वह जहाज की ओर बढ़ा। लेकिन न जाने क्यो मेरी परीशानी बढ़ती जा रही थी और मैंने मोगन साहब की पत्नी को लक्ष्य कर कहा:—

"लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि आप लोग मुझे क्यों लिये जा रहे हैं। उस जहाज का मालिक कौन है ?"

"इसकी आप क्यों चिन्ता करते हैं। वे हमलोगों के दोस्त हैं। इसके अलावा क्या समुद्र की सौजन्यता का यह तकाजा नहीं है कि ध्वस्त जहाज के यात्री को उबार लिया जाय।"

श्रीमती मोगन की बातें ऐसी रसभरी थीं कि मेरा मन मुग्ध हो गया। मैं

मन ही मन उनकी प्रशंसा करने लगा। हमलोग नजदीक पहुंच रहे थे। जहाज का रंगरूप मुझे बहुत पसन्द आया। जहाज पर मि० मोगन हमें लिये सीधे चाय के टेबुल पर पहुंच गये। चाय की तैयारी वहां पहले से ही थी। उनकी पत्नी यह कह सरक गईं कि मैं आपका परिचय जहाज के मालिक से अभी कराये देती हूं।"

मि० मोगन ने मुझे आराम कुर्सी पर बैठा दिया। जिस जहाज पर मैंने यात्रा की थी उसकी गन्दगी की तुलना में मैं स्वर्ग में पहुंच गया था। यहां बैठते ही पुरानी स्मृतियाँ एक एक कर जागृत होने लगीं। मुझे वह दिन याद आगया जब अपना सर्वस्व खो कर, अपने को हर तरह से बर्बाद कर मैं पेरिस से सदा के लिये विदा ले रहा था। मैं किस तरह न्यूयार्क पहुंचा। ग्रिसेल्डा से मेरी किस तरह घनिष्टता बढ़ी; वियना में प्रिंस सेलिमन ने मुझे किस तरह गोद लिया, ग्रिसेल्डा की सौतैली बेटी एवलिन के साथ मूर्खताभरी हरकतें, पाम बीच का नाटक, ग्रिसेल्डा से मेरे अन्तिम शब्द, लन्दन में मेरा एकान्त जीवन, लेडी डायना से मेरा संपर्क, और संप्रति काकेशश के अज्ञात प्रदेश में मेरी यात्रा और अचानक इस जहाज पर आ जाना जिसके मालिक से अभी मिलने वाला हूँ।

इसी समय श्रीमती मोगन की आवाज मेरे कान में पड़ी। वे किसी से कह रही थीं:—

आवो भी तो। ट्रबिजाण्डे के बन्दरगाह पर हमलोगों को अचानक एक सुन्दर छोकरा मिल गया। वह इतना आकर्षक है कि तुम देखते ही उसे प्यार करने लगोगी।"

मैंने घूमकर देखा। देखते ही मैं उठ कर खड़ा हो गया। मेरा चेहरा पीला पड़ गया और मेरा दिल धड़कने लगा। ग्रिसेल्डा मेरे सामने खड़ी थी।

---

## १०

मुझ पर नजर पड़ते ही ग्रिसेल्डा भौंचक सी हो गई। लेकिन उसने तुरत अपने को सम्हाल लिया। मैं किसी अज्ञात कारण से अभिभूत हो गया। मैं उसकी नुकीली नाक, उसके होठ, गहरी नीली आँखें, तथा खुले बाजुओं को देखने लगा जिनका रंग मेडिटरेनियन के सूर्य की गरमी के कारण कुछ बदल गया था।

मि० मोगन और उनकी पत्नी चुपचाप वहां से खिसक गये थे। ग्रिसेल्डा मेरे पासवाली आराम कुर्सी पर बैठ गई और इस तरह मुझसे बातें करने लगी मानों मुझ में उसे किसी तरह की दिलचस्पी न हो। मुझे उसके प्रश्न बड़े ही असुविधाजनक प्रतीत हुए।

"आप यहां क्या कर रहे हैं। मैं तो समझती थी कि आप लन्दन में होंगे।"

न्यूयार्क छोड़ने के बाद मुझ पर क्या क्या बीती थी उसका संक्षेप में मैंने वर्णन कर दिया। वह चुपचाप मेरी बातें इस तरह सुनती रही मानों उन बातों से उसका कोई संबंध नहीं हो। अन्तमें उसने कहा:—

"दूसरे शब्दों में आप लेडी डायना के बहादुर दूत बन गये हैं।"

"मुझसे जो कुछ बन पड़ता है उनकी सेवा कर देता हूँ।"

"आपका कहना सही है। ऐसी सुन्दर रमणी को बदले में कुछ दिये बिना उनकी कृपा ग्रहण करना कमसे कम प्रिंस सेलिमन की मर्यादा और बड़प्पन के विरुद्ध होगा।"

"ग्रिसेल्डा! मेरे बारे में तुम्हें फिर धोखा हो रहा है। लेडी डायना विनहम न तो मेरी प्रेयसी हैं और न हो सकती हैं।"

मेरे इस कथन का ग्रिसेल्डा पर कोई अधिक प्रभाव नहीं पड़ा। उसने व्यंग

से केवल मुस्कुरा दिया और कहा:—"यह तो मैं मानती हूँ कि तुम विचित्र और आसाधारण व्यक्ति हो। आज तक मुझे तुम्हारे ऐसा आदमी नहीं मिला। यदि तुम बुरा न मानो तो मैं कह सकती हूं कि तुममें उत्तम गुणों और दुर्गुणों का विचित्र सामंजस्य है। दोपहर को खासा भले आदमी, रातको विदूषक दोनों अवस्थाओं में तुम्हार समता कोई नहीं कर सकता। यहाँ तक कि एक महिला के लिये आकाश और पाताल एक कर रहे हो जिससे तुम्हारा कोई संबंध नहीं है। तुम्हारे इस प्रयास की यथार्थता मेरी समझ में नहीं आती।"

"ग्रिसेल्डा! कभी-कभी आदमी को ऐसे काम करने पड़ जाते हैं जिन्हें तर्क की कसौटी पर कसना कठिन हो जाता है। लेकिन तुम्हें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि मेरे इस असाधारण आचरण की थोड़ी बहुत जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर भी है।"

"ऐसी बात है?"

"जरूर। तुमने मुझ पर बहुत अधिक जुल्म किया है। अमेरीका से दुख, दर्द और वेदना लेकर ही तो मैं चला था। क्या तुम्हें अपना व्यवहार याद नहीं है? अन्तिम पत्र को तुमने क्रूरता के साथ टुकड़े टुकड़े कर हवाके झोंके के हवाले कर दिया। मेरा वह प्रयास तुमने व्यर्थ कर दिया। मेरी आशाओं की तुमने हत्या कर डाली। क्या तुमने मुझे पंगु नहीं बना दिया? क्या मैं मुर्दा हो कर वहाँ से अलग नहीं हुआ? क्या तुमने क्षण भरके लिये भी सोचा था कि तुम्हारे व्यवहार से मुझ पर क्या बीतेगी? यह तो संयोग की बात थी कि मैं लन्दन पहुंच गया। मुझे बेकारी खलने लगी। अपने को किसी काम में लगाये रखने के लिये मैंने इस महिला के यहाँ यह पद ग्रहण कर लिया। मैं जानता हूं कि तुम यह कह सकती हो कि मेरी मर्यादा के लिये इससे भी ऊँचा पद मिल सकते थे। मैं इसे मानता हूं। लेकिन इसके लिये तुम मेरे ऊपर इतनी

क्रूरता से प्रहार नहीं कर सकती। तुच्छ से तुच्छ आदमी भी किसी दिन बहुत बड़ा काम कर डालने की कामना हृदय में रखता है और इतिहास के पन्नों में अपना नाम अमर कर छोड़ जाता है। प्रकृति मे घुमन्तू ( भ्रमणशील ) विद्यार्थी के नाते मैंने ब्रिटेन के कुलीन वर्ग का सच्चा चित्र अपनी आंखो से देख लेना चाहा। मेरे लिये कोई दूसरा चारा नहीं रह गया था। मुझे चुपचाप उस दिन की प्रतीक्षा करनी थी जब तुम्हारा हृदय बदलेगा और हम तुम फिर एक होंगे। भगवान की प्रेरणा से आज मेरी कामना पूरी हो गई। तुम्हें मैं पहले से भी सुन्दर पा रहा हूं और यह बात निःसंकोच स्वीकार करता हूं कि तुम्हें देख कर घबरा सा गया हूं।"

इतना कहकर मैं चुप हो गया। मैंने उसकी ओर देखा। मेरी बातों का उस पर कोई असर नहीं पड़ा था। अन्त में मैंने धीमे स्वर में कहाः—

"आज से दो साल पहले की बात तुम्हें याद होगी जब तुम्हारे मकान की छत पर लताओं की झुरमुट के बीच मेरा तुम्हारा प्रथम मिलन हुआ था। जून महीने की रात थी। फूलों की सुगन्ध ने हमलोगों को किस तरह मस्त बना दिया था।"

इतना कहकर मैं उसके एक दम पास सरक गया। मैं उसके रुपलावण्य का पान करने लगा। अपनी कुर्सी पर ओठँग कर वह गहरी चिन्ता में लीन हो गई। उस वक्त उसका रूप देखने लायक था। सूर्य की प्रखर किरणें उसके सुनहले केश-समूह पर नाच रही थीं और उसके सौन्दर्य को द्विगुणित कर रही थीं। समुद्र की लहरों का हल्का धक्का आकर जहाज से टकराता था और चुपचाप लौट जाता था। नीचे खलासी अमेरीका की राग में कुछ गुनगुना रहा था। सुदूर पर क्रैन अपने राक्षसी मुंह में किसी विशालकाय वस्तु को दबाने की कोशिश कर रहा था।

अन्त में ग्रिसेल्डा ने कहाः—"जिरार्ड ! उन अतीत की बातों की चर्चा से कोई लाभ नहीं। मुझे अपने ही रास्ते पर चलने दो। संयोग की बात है कि

हमलोगों की मुलाकात हो गई। तुम यह स्पष्ट देख सकते हो कि मैंने तुमसे आंख बचाने की कोशिश नहीं की लेकिन वस्तुस्थिति को अत्यन्त कठिन और जटिल नहीं बनाओ। मैं रूथ से कह सकती थी कि मैं तुमसे नहीं मिलूंगी। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। क्योंकि यह मेरी बहुत बड़ी ज्यादती होती। मेरी आंखों में धूल झोंक कर मेरी सौतेली बेटी के साथ तुम जो कुछ करना चाहते थे उसके लिये मैं तुमसे अब रुष्ट नहीं हूं। समय गहरे से गहरे घाव को भी भर देता है और प्रेम के विफल प्रयास की दारुण वेदना को भी वह हर लेता है। तुम फिसल गये। इसका दोष मुझ पर है क्योंकि मैं तुम्हें सम्हाल नहीं सकी। मैं उन सब बातों को भूल जाती हूं। मैं यह भी कह सकती हूँ कि मैं तुम्हें अभी भी अपनी मैत्री के योग्य समझती हूँ। तुममें और जो भी अवगुण हो, तुम ईमानदार हो और अपनी भूलों के बावजूद भी तुम मनुष्यता की श्रेणी से नीचे नहीं गिर गये हो बल्कि तुमने अपने को मनुष्य बनाकर रखा है। इसके लिये मैं तुम्हारी प्रशंसा करती हूं। और तुम्हारा एक व्यवहार इतना सौजन्यतापूर्ण हुआ है कि उसका प्रभाव मेरे अन्तस्तल पर बहुत गहरा पड़ा है और तुम्हारे प्रति मेरी श्रद्धा बहुत अधिक बढ़ गई है।"

"वह क्या?"

"जब मेरे वकीलों ने तलाक की सलाह दी उस समय उन्होंने तुम्हारे सामने यह प्रस्ताव रखा कि तुम प्रचुर धन लेकर मुझे अपनी उपाधि का इस्तेमाल करने दो। लेकिन तुमने धन लेने की बात स्वीकार नहीं की। यह तुम्हारे महान व्यक्तित्व का परिचायक था।

"ग्रिसेल्डा! जो ताज मैंने प्रेम के वशीभूत होकर तुम्हें पहनाया था वह मैं तुम्हारे हाथ बेंच किस तरह सकता था।"

"इस तरह के अनेक लोग हैं जो यही करते हैं।

"लेकिन इस तरह के लोग तुम्हारी जेसी महिला के संसर्ग में आने के योग्य नहीं हैं।"

ग्रिसेल्डा की कठोर आकृति धीरे-धीरे नरम पड़ रही थी। मैंने देखा कि उसका व्यवहार उतना रूखा नहीं रह गया है जितना शुरू में था। मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और कहा:—

"प्रियतमे! मैं आज भी तुम्हें उसी तरह प्यार करता हूँ। मेरा हृदय उसी तरह तुम्हारा है। जो चीज तुमने यूरोप भेजा वह नादान बच्चा था। तुमने दोस्ती के लिये हाथ बढ़ाया है लेकिन मैं तो उससे अधिक चाहता हू। मैं अपनी उस ग्रिसेल्डा को वापस चाहता हूं जिसे एक दिन न्यूयार्क में अपने हृदय से लगाया था और जो मेरे वक्षस्थल पर उल्लास से खेल रही थी। आज भी मैं उसी ग्रिसेल्डा की खोज में हूँ और उसके बिना असहाय मारा मारा फिर रहा हूँ।"

लेकिन उसने केवल अपना सिर हिला दिया। उसने मेरा हाथ हटा दिया जो कुछ आगे बढ़ गया था और कहा:—

"जिरार्ड! मैत्री के अतिरिक्त और कुछ नहीं। बस केवल मात्र अच्छे दोस्त! जीवन की उन सुखद घड़ियों की याद दिलाकर मुझे लाचार न करो। फिर भी मैं अबला हूँ। जावो अपना काम पूरा करो। तुम्हारा वही कर्तव्य है और मुझे अपना काम पूरा करने दो। यह यात्रा मैंने भ्रमण और दान के लिये की है। मैं आरमेनियन अमेरिकन कमेटी का अध्यक्ष हूं। मैंने वादा किया है कि दान की रकम लेकर मैं स्वयं आऊंगी। मैं मोगन तथा अन्य दोस्तों को अपने साथ लेती आई। कुछ लोग कुस्तुन्तुनिया के उधर ही ठहर गये। मैं इस स्थान के आसपास तीन सप्ताह तक ठहरूंगी। इसके बाद मैं कोटे-डे-अज्योर जाऊंगी। इसके बाद का कार्यक्रम निश्चित नहीं है। मेरा अनुभव है कि तीन

मास से अधिक की बातें सोचना व्यर्थ होता है। अगर इससे ज्यादा दूर की बात सोची जाती है तो वह प्रायः पूरी नहीं होती।"

ग्रिसेल्डा उठकर खड़ी हो गई। हमलोगों की बातचीत समाप्त हो गई थी। इसी समय रूथ मोगन अपने केबिन से बाहर आ रही थीं। उसने उन्हें बुला लिया। चाय मंगाई और मुस्कुरा कर मुझसे कहाः—

"क्या यह सच बात है कि तुमने इतनी दूर की यात्रा उस छोटे जहाज पर की है।"

"इसमें झूठ की कौन बात है। वह माल ढोने का काम करता है—डिजोल्फा नाम है।

"ऐसे भद्द जहाज का नाम इतना सुन्दर क्यों रखा गया है।" श्रीमती मोगन ने कहा।

"बात यह है, श्रीमती मोगन, कि संप्रति काकेशश और माण्टे कार्लो के बीच कोई सैलानी जहाज नहीं चल रहा है।"

समय बीतने लगा। हमलोगों ने चाय पी। मि० मोगन वाल स्ट्रीट (अमेरिका के बैंक इसी सड़क पर स्थित हैं) की हाल की बदनामियों की चर्चा करने लगे। उनकी पत्नी ने दूसरा ही राग आलापना शुरू किया। मेरे वापस जाने का समय हो रहा था। नार्दन स्टार की नाव से मुझे अपने जहाज पर वापस आना था। निराशा के तूफान से खेलता मैंने पुनः एक बार ग्रिसेल्डा से क्षमा याचना की। उसने अपना हाथ बढ़ा दिया और कहाः—"बस दोस्त मात्र!"

मैं हिलाडुला नहीं। उसके हाथ उसी तरह मरी ओर फैले हुए थे। उसने कहा —

"जिरार्ड! क्या हमलोग दोस्त नहीं हो सकते?"

मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और उसे अपने होंठ की ओर बढ़ाया लेकिन उसने अपनी बाँह कड़ी कर ली और कहा—

"नहीं, नहीं, अब वह बात नहीं। जिरार्ड! भगवान तुम्हारी रक्षा करें। मेरी सद्भावना सदा तुम्हारे साथ रहेगी। तीन महीने के बाद यदि तुम्हें फुरसत मिले तो मेरी तलाश पेरिस या लन्दन में करना। उस समय तक मैं यह निर्णय कर लूंगी कि तलाक के लिये दरखाश्त दूं या साल भर इसी तरह चलने दूं।"

इस घटना के पन्द्रह मिनट बाद मैं अपने जहाज पर पहुंच गया। जो नाव मुझे पहुंचाने आई थी वह वापस चली गई। मैं गौर से देखता रहा। मेरा हृदय शून्य था! वेदना के बोझ से मेरा मस्तिष्क भारी हो रहा था।

मेरा जहाज समुद्र की छाती को चीरता आगे बढ़ा। रात हो गई थी। मैंने अपने शरीर को कम्बल से लपेट लिया और उदास मन तारों की ओर देखने लगा। लेकिन उसकी शीतला छाया भी मेरे संतप्त हृदय को कुछ शान्ति नहीं प्रदान कर सकी। मेरी आशायें जहां की तहां पड़ी रह गईं। उसके रथ के घोड़े श्रान्त होकर जहां के तहां खड़े रह गये। मैं वर्तमान नीरस जीवन से अलग होकर एक बार पुनः स्निग्ध और मधुर रस को पान करना चाहता था। लेकिन मैं तो अपने जहाज में कैद था और उससे आगे बढ़ने का रास्ता मेरे लिये बन्द था। जहाज अनवरत गति से आगे बढ़ता जा रहा था। दूसरे दिन शाम को यह जहाज वाटौम पहुंचनेवाला था। वहाँ पहुंच कर मेरी सारी भावुकता का अन्त हो जायगा। मैं रेल की पटरियों पर तेल भरे डब्बों की दौड़ की कल्पना में व्यस्त हो जाऊँगा और मेरे बगल में बैठे मि० एडविन ब्लैकेट नक्शा फैला कर और उनपर पेंसिल दौड़ा कर मुझे तेल के कुओं की बात समझाने में व्यस्त रहेंगे।

समय बीतने लगा। मेरा मन रह रह कर उस जहाज की ओर लौट आता था जो काले सागर के अन्तरिक्ष में आंखों से ओझल हो गया था।

मेरे पड़ोसी सो गये थे। सहकारी अफसर पुल पर खड़ा था। जहाज की हरी रोशनी में उसकी भद्दी सूरत कभी कभी मुझे दिखलाई दे जाती थी। अन्त में मैंने अपने मन को यह कह कर शान्त किया कि कल शाम के बाद मुझे इन सब बातों के सोचने लिये समय नहीं रह जायगा।

दूसरे दिन शाम को नक्षत्रों तथा रोशनी की सहायता से मैंने धुंधले बन्दरगाह को देखा जो धुआं से घिरा था। हमारे जहाज पर शोरगुल आरंभ हो गया था जैसा जहाज से उतरने के समय प्रायः हुआ करता है।

मैं किनारे पहुंचा। इतमीनान से मैं अपना पासपोर्ट हिला रहा था। दो व्यक्ति पासपोर्टों की जाँच कर रहे थे। वे कागजों की जांच करते थे और नाक सिकोड़ देते थे। उसके बाद मेरे सामानों की जांच हुई।

मुझे आश्चर्य हो रहा था कि मि० एडविन ब्लैंकेट मुझे लेने क्यो नहीं आये थे। रात मैंने एक मामूली होटल में बिताई। दूसरे दिन दोपहर की गाड़ी से मैं निकोलाई के लिये रवाना हो गया। करीब दो बजे वहां पहुंच गया।

मुझे पूरा विश्वास था कि स्टेशन के सामने वाले बोकजल होटल में मि० एडविन ब्लैंकेट मेरी प्रतिक्षा करते होगें। होटल के मालिक ने बड़े आदर के साथ मेरा स्वागत किया। उसे इस बात से विस्मय हो रहा था कि ऐसे उथल पुथल के समय कोई विदेशी यात्री ऐसे छोटे शहर में आने की बात भी सोचेगा। होटल के मालिक मि० जोलकिन—यही उसका नाम था:—जर्मनी भाषा मजे में बोल लेते थे। इससे मैं बहुत बड़ी परेशानी से बच गया मैंने उनसे कहा:—

"मि० एडविन ब्लैंकेट मेरी प्रतीक्षा में होगें। मेरे पहुँचने की सूचना उन्हें दे दीजिये।"

"आपने क्या नाम कहा ?"

"मि० एडविन ब्लैकेट ।"

वह मेरा मुंह देखने लगा। मैं चिन्ता में पड़ गया। मैंने उससे पूछाः—

"क्या इस नाम का कोई अंग्रेज इंजीनियर आपके होटल में नहीं ठहरा है ?"

"जी नहीं।"

"यह नाम भी आपने पहले कभी नहीं सुना था ?"

"जी नहीं।"

"इससे मैं झुंझला उठा। मैंने उसे घूर कर देखा और कहाः—

"आप अवश्य भूल रहे हैं। मुझे इसी पते से बर्लिन में उनका तार मिला था। मि० ब्लैकेट ने निकोलाई में इसी पते से वह तार भेजा था। तेलाव में तेल निकालने के लिये एक नई कम्पनी कायम हो रही है। उसी कम्पनी के वे सलाहकार इंजीनियर हैं। सप्ताह भर पहले वे यहाँ पहुँच गये थे। क्या वे यहाँ से तेलाव तो नहीं चले गये।"

"मैं इस संबंध में,कुछ नहीं कह सकता क्योंकि इस नाम का कोई आदमी यहाँ ठहरा नहीं।"

"मैंने देखा कि उसे झूठ बोलने का कोई कारण नहीं था। इससे मेरा आश्चर्य और भी बढ़ गया। तोभी मैंने कहाः—

"कई दिन पहले मैंने कुस्तुन्तुनिया से मि० ब्लैकेट के नाम एक तार भेजा था। वह तार तुम्हें मिला था ?"

"जी हाँ। उसे मैंने यह समझ कर रख लिया कि इस नाम का कोई यात्री आनेवाला होगा।

"तब वह तार कहाँ ?"

होटल के मालिक ने बड़ी सावधानी से अपने दफ्तर का दरवाजा चारों ओर से बंद कर लिया और बड़ी हिचक के साथ मेरे कान में उसने कहा—"मैंने कल ही उसे किसी को दे दिया है।"

"किस को ?"

"उसने अपना स्वर धीमा कर लिया और चिन्ताकुल होकर कहा:—

"एक खास पुलिस अफसर को।"

उसके इस उत्तर से मैं झुंझला उठा और बोला—-

"क्या ? यहाँ के पुलिसवालों को यह भी अधिकार है कि ब्रिटिश नागरिक के व्यक्तिगत पत्रों की भी खाज करें और उनकी जाँच कर।"

उसने गहरी सांस लेकर कहा:—

"जो कुछ चाहें वे कर सकते हैं। उन्हें सब अधिकार प्राप्त है। यहाँ की सारी परिस्थिति डाँवाडोल है। हमलोगों को उनकी हर तरह की माँग पूरी करनी पड़ती है, नहीं तो हमें सीधे दूसरी दुनिया की हवा खानी पड़ती है। यहाँ आकर फंस जाना आसान है लेकिन यहाँ से बचकर निकल जाना आसान नहीं है। क्या रातभर रहना चाहते हैं ? यदि आपके साथी तलाव में हैं तो वे निश्चय ही आपकी तलाश में यहाँ आवेंगे।"

मेरे लिये कोई दूसरा चारा नहीं था। उसी होटल के एक कमरे में मैंने दखल जमाया। लोहे की चारपाई और छींट का बिस्तर विशालकाय हाथ मुंह धोने का वर्तन वहां मुझे मिला। लेकिन इन बातोंकी ओर ध्यान देने का मुझे अवकाश नहीं था। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मि० ब्लैंकेट अभीतक यहां क्यों नहीं पहुंचे। यह ऐसी असाधारण बात थी जिसका कोई समाधान मेरे पास नहीं था। इससे मेरी आशंका बढ़ने लगी। मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि कहीं गोलमाल इस काममें आरंभ हो गया है। फिर मुझे अपने तार की याद आई। निकोलाई के पुलिस

का इस तरह उस पर दखल जमाना घोर अन्याय था। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यहां की पुलिस शिष्टाचार के स्तर से एक दम नीचे गिर गई है। घंटे भर तक मैं सिगरेट पीता और अपने सामानों को इधर उधर उलटता-पुलटता रहा। क्लारा की चेतावनी रह-रहकर मुझे याद आने लगी। क्या उसकी चेतावनी में सचमुच वास्तविकता थी? काकेशश इलाके के इस बन्दरगाह में मुझे हर तरह से विवश होकर सोवियत शासन के कड़े नियमों को मानने के लिये मजबूर होना पड़ा। तब मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरे पैरों तले की जमीन खिसक रही है और पता नहीं कि मैं किस खन्दक में जा गिरूंगा।

रात को बहुत देर के बाद मैं स्वस्थ हो सका। मैंने अपने मन को समझाया कि मेरी शंका निराधार है। कहीं कोई भूल हो गई है। मैंने निश्चय किया कि कल बाटोम वापस जाकर मैं वहाँ से तेलाव चला जाऊँगा। वहाँ तो कम्पनी के उस इंजीनियर से अवश्य ही भेंट हो जायगी?

रात को मैंने होटल में ही खाना खाया। सामनेवाले टेबुल पर दो कज़ाक अफसर काली पोशाक में, मौज से भोजन कर रहे थे और होटल की नौकरानी से भद्दा मजाक कर रहे थे। भोजन करने के बाद मैं टहलने निकल गया। रास्ते में मुझे अनेकों बोलशेविक पुलिसमैन इधर उधर चक्कर लगाते मिले जो मुझे सन्देह की दृष्टि से देखते थे। रात को नौ बजे मैं होटल में लौट आया। होटल का मालिक मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे एकान्त में ले जाकर उसने पूछा:—"क्या आपका कोई पीछा तो नहीं कर रहा था?"

"नहीं तो, क्यों?"

"मुझे आश्चर्य हो रहा है, और कुछ नहीं। मैं योंही मजाक कर रहा था।"

वह अपना रुपया पैसा सहेजकर अन्दर जाने लग गया था। मैंने उससे कहा:—

"आइये बैठिये, जल्दी क्या है! मैं देखता हूं कि यात्रियों को आप खतरे का

इशारा कर बहुत डराया करते हैं। शायद इसमें आपको बहुत मजा मिलता है।"

"जी यहाँ, किसी की जान सुरक्षित नहीं है। जार्जिया के पुराने निवासी सुरक्षित नहीं हैं। हमारे देश के निवासी बोलशेविकों के शासन के जुए के नीचे पिस रहे हैं। क्या आप जानते हैं कि यह सब मनमानी गिरफ्तारियां कौन कराता है और बिना मोकदमा चलाये सजायें कौन दिलाता है? कोविचिकली के समान डाकू जो टिफलिस का आसाधारण कमीशन है या डाचेट मिलीशिया का अध्यक्ष कटोराजे।"

"लेकिन मुझे किस बात का भय है। मैं विदेशी हूं और मास्को के हस्ताक्षर का विजा मेरे पास है।"

"जी हाँ, कुछ हद तक आप इन खतरों से सुरक्षित हैं।"

"जाने दो इन बातों को। स्वतन्त्र और आजाद जार्जिया के नाम पर दो घूंट पी लिया जाय।"

"धीरे से बोलिये। कहीं कोई आपकी बातें सुन नहीं ले।

रात दस बजे तक मैं उससे बातें करता रहा। इसके बाद वह चला गया और मैं चारपाई पर पड़ रहा। मुझे गहरी नींद आ गई।

रात को एक बजे बरामदे में कुछ लोगों के पैरों की आहट से मैं जाग पड़ा। मैं गौर से सुनने लगा। मेरे दरवाजे के बाहर कुछ लोग सायँ सायँ बातें कर रहे थे। छेद से रोशनी का प्रकाश भी भीतर आने लगा। इसके बाद किसी ने मेरा दरवाजा जोर से खटखटाया। मैंने आवाज दी:—

"कौन है?"

"मैं हूं।"

मैंने होटल के मालिक की आवाज पहचान ली। मैंने उठकर दरवाजा

खोल दिया। हाथ में रिवाल्वर लिये दो आदमी मेरे कमरे में घुस पड़े। दोनों पुलिस की पोशाक में थे और दोनों की वर्दी पर लाल तारा चमक रहा था। होटल का मालिक उनके पीछे था। उसके पहनावा से प्रगट होता था कि उसे जल्दी में कपड़ा पहनना पड़ा था।

मैंने व्यंग से पूछाः—ये दोनो महापुरुष मुझ से क्या चाहते हैं? क्या ये लोग मेरे सामानों की जांच करना चाहते हैं? अथवा ये लोग मेरा पासपोर्ट देखना चाहते हैं?"

होटल का मालिक परीशान और घबराया हुआ था। उसने केवल इतना ही कहाः—

"ये आपकी गिरफ्तारी का वारण्ट लेकर आये हैं।"

मैं इसका घोर विरोध करनेवाला था कि उनमें से एक आदमी रिवाल्वर ताने मेरी ओर बढ़ा। उसने मुझे एक कागज दिखलाया। अपने रिवाल्वर की नोक से मेरे नाक की ओर इशारा करते हुए उसने पूछाः—

"तुम्हारा हीं नाम प्रिंस सेलिमन है?"

"हाँ।"

"तब तुम्हें हम लोगों के साथ चलना होगा।"

उनका हुक्म मान लेने के सिवा मेरे पास कोई चारा नहीं था। मैंने जल्दी से अपना सूटकेश बन्द किया और होटल के मालिक से कहाः—

"इस ज्यादती का मतलब मेरी समझ में नहीं आया।"

उसने धीरे से कहाः—'टेका'।

"इससे अधिक कुछ कहने की जरूरत नहीं थी। मैं सब कुछ समझ गया। डर से मैं काँप उठा।"

———

# ११

बोकजल हैाटल के बरामदे में मैंने उन लोगों से पूछाः—"आपलोग जर्मन फ्रेंच या अंग्रेजी कौन भाषा समझ सकते हैं ?"

उन तीनों में जो नाटासा था उसने बड़े तपाक से यह बतलाया कि वह जर्मन भाषा समझ सकता है।

मैंने बड़ी नम्रता से कहा—तब मेरे दोस्त ! यह जानना चाहता हूँ कि इस वारण्ट का क्या मतलब है ?

मैंने उसे बढ़िया सिगरेट दिया। उसने चुपचाप उसे ले लिया। उसके दूसरे साथी ने मेरे सिगरेट केस की तरफ अपना हाथ बढ़ाया और ग्यारह सिगरेट जो उसमें थे—निकाल कर चुपचाप अपनी जेब में डाल लिया मानो उसकी दृष्टिमें यह कोई असाधारण बात नहीं थी। उसने कुछ कहने की भी आवश्यकता नहीं समझी। मैंने व्यंग से नाटे से कहा—"मैं देखता हूं कि आपके दोस्त बहुत गंभीर और संयमी हैं।

उसने लापरवाही से सिर हिलाकर कहाः—"इसी को तो साम्यवाद कहते हैं।"

"लेकिन मुझे ले कहाँ चल रहे हैं ?"

निकोलाई शहर के रक्षा-विभाग की कमेटी के पास।

'टेक्का' शब्द के स्मरणमात्र से कलेजा कांप उठता था। मैंने लड़खड़ाते स्वर में कहाः—"टेक्का के पास।"

"हाँ, वहीं और कहीं नहीं—"

"क्या मेरे ऊपर कोई अभियोग है ?"

"हां, यदि तुम उसे अभियोग के रूपमें ग्रहण करना पसन्द करो तो।"

"मेरे खिलाफ क्या सबूत उनलोगों के पास है।"

उसने मेरी ओर करुणाभरी दृष्टि डाली और व्यंगसे इस प्रकार उसने मुस्कुरा दिया मानों वह कह रहा हो: —"मूर्ख! क्या आज तक किसी को यह मालूम हो सका है कि टेका के पास किसके खिलाफ क्या सबूत है।"

लेकिन इतनी बातचीत भी उस लाल सैनिक को मेरी धृष्टता प्रतीत हुई। वह अधीर हो उठा। उसने मेरे सामान उठाकर फेंक दिया और मुझे ले चलने के लिये कहा। उसने अपने साथी से बड़ी रुखाई से कहा:—"हमलोगों को यहां से चल देना चाहिए।"

रात में ही हमलोग वहां से निकल पड़े। रास्ते में रोशनी का कहीं नाम-निशान नहीं था। दोनों सैनिकों के बीच में चुपचाप चला जा रहा था। मेरे मस्तिष्क में तरह तरह के विचार उठने लगे। कभी तो मुझे यह सोचकर इतमीनान हो जाता कि मेरा पासपोर्ट वगैरह सब दुरुस्त है पर कभी अज्ञात आशंका से मैं विचलित भी हो जाता। मेरे पासपोर्ट पर वरिचकिन का हस्ताक्षर था तथा मास्को के अफसरों का भी दस्तखत था। इससे मेरी वास्तविकता के बारे में किसी तरह की शंका की संभावना नहीं थी। मैंने सोचा कि कागज पत्र देखने से जब उन्हें इतमीनान हो जायगा तब घंटे दो घंटे में मुझे छोड़ देंगे। इससे भी मुझे लाभ ही होगा। जेल में राजनीतिक कैदियों के साथ दो-चार घंटा रहने का अनुभव हो जायगा।

हमलोग मुनिसिपल स्कूल-भवन में पहुंचे। लालटेन के खंभे के पास तीसरा लाल संतरी खड़ा था। उसने मेरी ओर उदासीन भाव से देखा। हम लोग अन्दर दाखिल हुए और एक भूरे रंग के दरवाजे के पास जा कर रुक गये।

हमारे साथ के दूसरे सैनिक ने कहा:—"हम लोग यहां आ गये? हमलोगों को नीचे जाना है क्योंकि काले-कोठरियां तो एक दम नीचे हैं।"

मैंने पूछाः—"क्या यहाँ कोई ऐसा अफसर नहीं है जो मेरी तुरत, जांच पड़ताल कर ले ?"

"नहीं कल दोपहर से पहले संभव नहीं है। तब हमलोग तुम्हारे सामान की तलाशी ले लें।"

इस आज्ञा में न जाने क्या आकर्षण था कि तीसरा संतरी भी पास आ पहुंचा। उसके पीछे पीछे दो और आये जिन्हें उसने उसी वक्त जगाया था। गीध की तरह पाँचों मेरे सामान पर टूट पड़े और उसे इस तरह बिथोरने और नोचने लगे जिस तरह गीध मुर्दे को नोचते और बिथोरते हों। उन्होंने मेरी जेबों की तलाशी ली। पूछाः—"क्या तुम्हारे पास रिवाल्वर वगैरह नहीं है ?"

"मेरे पास किसी तरह का कोई भी हथियार नहीं है।"

सबसे पहले मेरी पॉकेट बुक हड़पी। यह काम इतनी सफाई से किया गया कि मैं उनकी तारीफ किये बिना नहीं रह सकता। मेरे दूसरे साथी को मेरी छड़ी पसन्द आ गई। उसने बड़ी शिष्टता से कहाः—"जब तक तुम काल-कोठरी में हो तब तक तो तुम्हें चलने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। यदि तुम्हें छुटकारा मिल सका तो मैं तुम्हारी छड़ी वापस कर दूंगा। तब तक यह मेरे पास रहे। यह ठीक है न ?"

तीसरे ने मेरी रेशमी कमीज पर हाथ साफ किया। चौथे ने जूते पर कब्जा किया, पांचवें ने यूडी कोलोन का बोतल हथिया लिया। उसे मुझे दिखला कर उसने पूछाः—"क्या यह बोडका है ?"

"नहीं, वह शराब नहीं। इत्र है।"

"इससे उसे बड़ी निराशा हुई। उसने हजामत बनाने का मेरा सामान लेकर संतोष किया। मैं खिलाखिलाकर हंस पड़ा और अपने पहले साथी से कहाः—"कृपया मेरे मालिकों से पूछिये कि इतने उपहारों से उन लोगों को संतोष

हो गया या कुछ और चाहिए।" मेरी बात मान कर उसने उनलोगों से कुछ कहा जिसे सुन कर वे लोग चले गये। केवल पहले वाले ही दोनों सैनिक रह गये। एक ने मेरी नेकटाई का पिन भी निकाल लिया। उसकी अंगुलियां इतमीनान के साथ उसके रिवाल्वर पर नाच रही थीं। उससे मैं भली भांति समझ रहा था कि वह मुझे बतला रहा है कि किसी तरह का विरोध निरर्थक होगा। उसने दरवाजा खोल दिया और मुझे सीढ़ियां दिखला कर नीचे उतरने के लिये इशारा किया। मैंने कदम ज्योंही आगे बढ़ाया था कि सड़े पसीने की भी बदबू उधर से आई। कुछ और आगे बढ़ने पर किसी के खर्राटा लेने के शब्द मुझे सुनाई पड़े। मैंने देखा कि सील से भरे फर्श पर बैठा जेलर अपनी नाक बजा रहा था। उसकी बगल में उसका रिवाल्वर पड़ा था। मुझे देखकर गालियां बकता हुआ वह उठ खड़ा हुआ। मुझे काल-कोठरी के अन्दर ठेल दिया और उसके बाद मेरा खाली बिस्तर अन्दर अन्दर फेंक दिया। इसके बाद दरवाजा कस कर बन्द कर दिया गया। मुझे यहां तक पहुंचाने वालों के पैर की आवाज धीरे-धीरे गायब हो गई। किसी के खिलखिलाकर हंसने की आवाज से वह स्थान गूंज उठा। मेरा जेल-जीवन आरंभ हो गया था।

वहाँ के वातावरण से मेरा दम घुटने लगा। वहां की तीव्र बदबू से मेरी नाक फटने लगी। इसके मोकाबले में फ्रांस की काल-कोठरी की बदबू की तुलना की जाय तो वहां के गन्ध को अरब के इत्रकी तुलना दी जा सकती है। सड़े दूध में सड़ा पसीना, गन्दी दीवाल और सड़े भोजन की बदबू मिलकर मुझे बेचैन कर रहे थे। बरामदे में जो मिट्टी की डिबरी जल रही थी उससे रोशनी की झलकमात्र मिल जाती थी। लेकिन थोड़ी देर में ही मुझे उस अन्धकार का अभ्यास हो गया। मैंने उस तंग बिस्तर का कम्बल खींचा तो देखा कि उसपर एक आदमी पड़ा है। वह गहरी नींद में था। उसके शरीर पर केवलमात्र एक

कोट था। न पैर में जूते थे न दूसरा कोई सामान। मैंने उसे गौर से देखा। उसके चेहरे से विद्वत्ता टपक रही थी। देखने में वह सीधा और सज्जन प्रतीत होता था। उसके काले केश उसके चेहरे पर बिखरे हुए थे। कद का वह लंबा था। शरीर सुकोमल। कलाकार प्रतीत होता था। वह अचानक जाग पड़ा, कांपा, और सिकुड़कर बैठ गया। उसकी धंसी आँखें मुझे घूर रही थीं। मैंने उसे बतला दिया कि मैं रूसी भाषा नहीं बोल सकता। अन्त में उसने गहरी सांस ली और जर्मन भाषा में कहाः—

"मुझे क्षमा करना दोस्त! लेकिन तुमने तो मुझे डरा दिया था। एक बार जो इस काल कोठरी में आया उसे भय का भूत हर वक्त सताता रहता है। टेक्का के फांस में तुम भी आ गये। ईश्वर ही तुम्हारी रक्षा कर सकते हैं। तुम कौन हो? तुम कहाँ से आये हो?"

मेरी उपस्थिति से उसे कुछ सान्त्वना मिली हो या न मिली हो लेकिन उसकी उपस्थिति मेरे लिये बड़ी ही लाभप्रद थी। मैंने सोचा कि जो दो-चार दिन भी इस जेल में मुझे रहना पड़ेगा वह इसके कारण मजे में कट जायगा, उदासी नहीं आने पायेगी। मैंने अपना परिचय संक्षेप में दे दिया। उसके बाद मैंने उसके बारे में पूछा। उसने अपना नाम इवानोफ बतलाया। मास्को के किसी अराजकीय संस्था में वह संगीत का अध्यापक था। शिक्षित होना ही उसके लिये दुर्भाग्य की बात हो गई क्योंकि नये शासन के लिये उसकी कोई उपयोगिता नहीं थी। वह एक प्रकार से निरर्थक जीव था जो बुद्धि और पशु-बल के द्वन्द-युद्ध में बुरी तरह हार गया था। १९१८ में वोल्शेविकों के विरुद्ध जो क्रान्ति हुई थी उसका मोकाबला करने के लिये जो विशेष कमीशन नियुक्त किया गया था उसे इसपर सन्देह हो गया। प्रसिद्ध जज नाइण्डलिन ने केवल सन्देह पर उसे नं० १४ ग्राण्ड लौवियंका स्ट्रीट में भेज दिया था। इस जेल में

बड़े बड़े साहसियों का कलजा थर्रा उठता था। इस जेल में जो गया वह यही समझता था किसी अदालत में पेश किये बिना ही एक दिन उसे फांसी की सजा दे दी जायगी। आठ महीने की कठोर यातना के बाद वह रिहा कर दिया गया था। वह भागकर जार्जिया चला गया। वहाँ वह ६ साल तक किसी तरह अपनी जिन्दगी बिताता रहा। वह अपने जेल जीवन को भूल चला था कि जार्जिया में विद्रोह उठ खड़ा हुआ। वह पुनः गिरफ्तार कर लिया गया। तब से उसे न जाने कितने जेलों की हवा खानी पड़ी थी और न जाने क्या क्या मुसीबतें झेलनी पड़ी थीं। अन्त में वह निकोलाई की इस काल-कोठरी में बन्द कर दिया गया। इसके खिलाफ कोई सबूत नहीं था। उस पर अभियोग था कि वह विद्रोहियों के गुप्तचर का काम कर रहा था।

अन्त में उसने कहा:-"मेरे दोस्त! लोवियंका में मुझे जो कठोर यातना सहनी पड़ी थी उसी की पुनरावृत्ति यहाँ होने जा रही है। वहां भी मुझे आठ महीने तक इसी तरह एक तहखाने की काल-कोठरी में सड़ना पड़ा था। मेरे समान अन्य भी अभागे वही यातना भोग रहे थे। उनका एकमात्र अपराध यही था कि सोवियत शासन को स्वीकार करना उन्हें मंजूर नहीं था। उनका सर्वस्व अपहरण कर लिया गया था। वे हर तरह के अभावों के शिकार थे। उनपर तरह तरह के अत्याचार किये जा रहे थे। उनका चेहरा इतना भयावना हो गया था कि उन्हें देख कर डर लगता था। उसके ऊपर प्रतिदिन आनेवाली मृत्यु की विभीषिका ने उन्हें बुरी तरह पागल कर रखा था। दोस्त! ईश्वर तुम्हारी मदद करें कि तुम्हें यहाँ अनेक रातें जागकर न बितानी पड़ें। यहाँ की हालत नितान्त दयनीय है। यदि कभी धोखे से आँखें लग भी गईं तो तुम्हारे सिर पर कोई आ धमकेगा और तुम्हें ठोकर मार कर जगा देगा। यहाँ जो आता है उसकी हालत ठीक बलिदान के बकरे के समान रहती है। तुम्हारा दिल इस कदर बैठ

जायगा कि छुटकारे की सुखद कल्पना भी तुम नहीं कर सकोगे। रोशनी और प्रकाश की आकांक्षा और जीवन की लालसा इतनी प्रवल हो उठती है कि डर लगता है कि कहीं, हृदय की धुकधुकी नहीं बन्द हो जाय। हृदय इस तरह व्याकुल हो उठता है कि इस जीवन के अन्त होने की अभिलाषा प्रवल हो उठती है। लेकिन दूसरे ही क्षण दया की भीख आदमी माँगने लगता है। कभी भी जब यह दरवाजा खुलता है तब यही मालूम होता है कि यमराज के दूत मौतका परवाना लिये चले आ रहे हैं और जो सामने पड़ेगा उसीको उठाकर ले जायंगे।

इवानोफ की बातों से मेरे हृदय में ऐसा डर समा गया कि नींद मुझे छोड़कर न जाने कहाँ भाग गई। रातके तीन बज रहे थे। मेरे शरीर पर मेरा मोटा लबादा था। तोभी मैं सर्दी से थरथर कांप रहा था। मेरी हालत देखकर मेरे साथी ने कहा—"मैं देखता हूं कि रूसकी सर्दी के तुम अभ्यस्त नहीं हो। यहाँ मेरी बगल में लेट जावो। इससे हम दोनों को आराम मिलेगा।"

मैंने उसकी सलाह मान ली। मैं उसके उस गन्दे और बदबूदार कम्वल में घुस गया। बाधा न पहुँचाने के ख्याल से मैं चुप हो गया। वह बेचैनी से करवटें ले रहा था। निश्चय ही मेरे अचानक आजाने से वह उत्तेजित हो उठा था।

अन्तमें उसने दांतों को किटकिटा कर कहा—"तुम परदेशी हो। इसलिये यह आशा की जा सकती है कि तुम छुटकारा पा सकते हो। लेकिन मुझे तो कोई आशा नहीं है।"

कम्बल को अपनी ओर समेटते हुए उसने कहा—

"मेरी शादी पक्की हो चुकी थी। यदि मुझे गिरफ्तार न किया गया होता तो मेरी शादी, हो गई होती। आज चार महीने हो गये मुझे अन्ना फेडरोना का कोई समाचार नहीं मिला है। वह गरीब तो मुझे बराबर खत लिखती है लेकिन शैतान के ये पुतले उसके खत को दबा देते हैं।"

अचानक संगीत की अस्पष्ट ध्वनि मेरे कानों में पड़ी। मैं कान लगाकर संगीत को सुनने लगा। मैंने उससे पूछाः—"यह संगीत की आवाज कहाँ से आ रही है?"

"बोलगा के नाविकों का गाना है। इसे तो तुम्हें जानना चाहिए।"

"लेकिन गानेवाले कौन हैं?"

"बोल्शेविक संतरी। रातके सूनेपन में वे इसी तरह अपना दिल बहलाया करते हैं।"

यह गीत मैंने लन्दन में पहले भी सुना था लेकिन उस वातावरण और इस वातावरण में जो अन्तर था उसने संगीत के आनन्द को फीका बना दिया था। कहां उस समय की होटल में रंगरेलियाँ और मनोरंजन करनेवाली नर्तकियो का मधुर गान कहां जेल की सेल की रखवाली करनेवाले संतरियों का व्यंग पूर्ण संगीत।

संगीत की अन्तिम ध्वनि रात की निस्तब्धता में गायब हो गई। भयानक और मनहूस सन्नाटा पुनः एक बार प्रकृति में छा गया। मेरे साथी ने थकान की साँस ली। इसके बाद ही उसे किसी के पैरो की आहट लगी। वह उठकर बैठ गया। उसका चेहरा ख़ूंखार हो गया। मैंने पूछाः—"बात क्या है?"

उसने मुझे चुप रहने का इशारा किया और धीरे से बोला—

"ये लोग कहां जा रहे हैं?"

बरामदे में आकर पैरों की आहट रुक गई। तब उसी जेलर की आवाज सुनाई पड़ी। उसकी कुंजी ताले में कड़कड़ा उठी। दरवाजा कब्जे पर कड़क उठा।

इवानोफ बड़बड़ा उठाः—बगलवाले कमरे में।"

वह हड़बड़ा कर उठ खड़ा हुआ और दरवाजे के छेद में कान लगाकर सुनने

लगा। कोई बेदर्दी के साथ किसीसे कह रहा थाः—"तुम्हारे राह के कपड़े कहां है?"

रूस के जेलों का यही कायदा है। जिसे सूली पर चढ़ाने के लिये ले जाते हैं उससे यही बात पूछी जाती है।

एक भयानक चीख हमलोगों के कान में पड़ी।

मैं हटकर खड़ा हो गया। मैं पसीने से तर हो रहा था। मेरे रोंगटे खड़े हो गये थे। इवानोफ ने मेरी कलाई पकड़ ली। बगलवाले सेल में किसी के छटपटाने की आवाज सुनाई पड़ी। मैंने पूछाः—

"इस सेल में कितने आदमी होंगे?"

"कुल छ हैं। मालूम होता है कि वे लोग गोरिजकी को लिये जा रहे हैं। वही अभागा होगा।"

"उसका क्या अपराध था?"

"उसके ऊपर यह अभियोग लगाया गया था कि लाल सेना के सैनिकों की हत्या की नीयत से उसने बटौम के जलकल में जहर मिलाने का प्रयास किया था। कैसी मूर्खता है! यह स्कूल का शिक्षक है। बड़ी शान्त प्रकृति का है। कीड़े मकोड़े को भी यह क्षति नहीं पहुंचा सकता। सुनो……"

जेल के कर्मचारी अधीर हो रहे थे। उनका फौजी हुक्म हमलोग सुन सकते थे। उनके उत्तर में किसी की धीमी आवाज सुनाई पड़ी। वह आवाज निश्चय ही गोरिजकी की थी। उसके बाद छटपटाने की आवाज सुनाई पड़ी। फिर किसी के कराहने की दर्दभरी आवाज कानों में पड़ी। ऐसा प्रतीत हुआ कि वे लोग उस गरीब को घसीट कर लिये जा रहे थे।

"वे लोग उसे फाँसी के तख्ते पर लिये जा रहे हैं। वह विरोध कर रहा है। ठहरो। मैंने तुमसे क्या कहा है?"

उसी समय बाहर मोटर की घरघराहट सुनाई पड़ी।

"उसे लेकर के लोग कहां जा रहे हैं?"

"कहीं नहीं, यह उनकी चालमात्र है। रिवाल्वर की आवाज को दवाने के लिये वे मोटर को तेजी से दौड़ाते रहते हैं।"

हमारे सेल के दरवाजे में जो छोटा सा छेद था उसीमें कान लगाकर हम दोनो ने उस अभागे का मृत्यु-संदेश सुना। हमलोगों का दिल भाथी की तरह धड़क रहा था, दांत एक दूसरे पर बैठ गये थे। सिर चक्कर खा रहा था। मोटर उसी तरह पों पों कर रही थी। अचानक मेरे साथीने मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया। मोटर की घरघराहट में भी पिस्तौल की आवाज तीन बार सुनाई पड़ी।

इवानोफ ने कहा:—"यह काण्ड समाप्त हो गया।"

फिर कांपते हुए कहा:—"संभव है कल रात को मेरी बारी आवे।"

दस बजे दिन को जेलर एक बर्तन में दाल का पानी और दूसरे में काली काली रोटियां लेकर आया। मैंने इवानोफ से कहा कि इससे पूछो कि मेरा कब विचार किया जायगा। उसने बड़े ताने के साथ उत्तर दिया:—

"महाराज आराम करें। कोई जल्दी नहीं है।"

इतना कह कर उसने दरवाजा बन्द कर दिया और अपना रास्ता पकड़ा। दिन धीरे-धीरे ढलनें लगा। दिन बीता, रात आई। मेरी यह अचानक गिरफ्तारी मेरे धैर्य की बुरी तरह जांच करने लगी। मैं पींजड़े में बन्द शेर की तरह कोठरी में टहलने लगा। इवानोफ बिस्तर पर लेटा निरपेक्ष भाव से मुझे देख रहा था। उसने कहा:—

"शुरू में मेरी भी यही हालत थी। मैं भी अपनी लाचारी और बेकसी के कारण क्रोध से पागल हो उठा था। दरवाजे से नाक सटा कर मैं चिल्लाने लगा था। अन्त में शान्त हुआ। मैं एक दीवाल से दूसरी दीवाल पर फांदनें की

कोशिश करने लगा। अन्त में मेरी हालत बदल गई। दो तीन सप्ताह में तुम्हारी भी वही हालत हो जायगी।

"दो तीन सप्ताह! तुम मजाक कर रहे हो क्या?"

"नहीं दोस्त! मजाक क्या करूंगा। तुमको खुद इसका अनुभव हो जायगा। इस फर्श पर इस फटे कम्बल पर सोते सोते जो शून्यता आती है वही हमलोगों की मुक्ति का साधन है। यदि शेक्सपीयर को बोलशेविकों के व्यवहार का थोड़ा भी ज्ञान होता तो उसने अपने कलम की पूरी करामात दिखलाई होती।"

मेरी दूसरी रात बहुत बुरी तरह बीती। इवानोफ की बातें मेरे दिमाग में चक्कर काटती रहीं। मेरी लाचारी ने मुझे निराश कर दिया। सवेरे चार बजे हर तरह थक कर अपने साथी की बगल में लेट गया और गहरी नींद में सो गया।

मैं कितनी देर तक सोता रहा, इसका मुझे पता नहीं। अचानक मैंने देखा कि इवानोफ मेरा कन्धा पकड़ कर हिला रहा है। मैंने आंखें खोल दीं। इवानोफ अपनी जगह पर लेटा हुआ, उसी तरह कम्बल से मुंह तोपे धीरे से बोला:—

हिलोडुलो नहीं? सोने का बहाना कर पड़े रहो। छेद से कोई हमलोगों को देख रहा है।"

"क्या जेलर है?"

"मैं नहीं कह सकता। अपना सिर उठाये बिना देखने की कोशिश करो।"

धीरे-धीरे सावधानी के साथ मैंने अपना चेहरा दरवाजे की तरफ फेरा। लोहे के जंगले के बीचसे दो चमकीली आँखें हमलोगों की तरफ झांक रही थीं। मैंने धीरे से इवानोफ से पूछा:—

"क्या टेका का कोई आदमी है?"

पैरों की आवाज से हमलोगों ने समझा कि वह आदमी चला गया। इवानोफ ने कम्बल दूर फेंक दिया और उठ खड़ा हुआ। उसने कहाः—

"वह चला गया। अब हमलोग इतमीनान की सांस ले सकते हैं।"

"क्या तुम्हें मालूम हो सका कि वह कौन था।"

"नहीं, पर मैं इतना कह सकता हूं कि वह जेलर नहीं था क्योंकि उसकी भौंहें बड़ी घनी हैं।"

"तब कौन रहा होगा ?"

"क्या तुम इतना भी नहीं समझ सके कि वे किसी औरत की आँखें थीं।"

"औरत की आंखें ?"

"मैं तुम्हारी अपेक्षा देर तक उसे देखता रहा। मैं निश्चय रूप से कह सकता हूं कि वे औरत की आँखें थीं।"

"लेकिन इस स्थान तक कौन स्त्री पहुँच सकती है ?"

इवानोफ क्षणभर मौन रहा। तब अपना सिर हिलाकर बोलाः—

"मैं नहीं जानता। किसी लाल संतरी की प्रेयसी रही होगी। यहां सिनेमा का कोई साधन नहीं है। इसलिए वह अपनी प्रेयसी का इसी तरह मनोरंजन करता होगा।

---

## १२

तीन दिन और तीन रात तक घोर यातना में पड़े रहने के बाद टेका के अफसरों को मेरी ओर ध्यान देने की फुरसत मिली। जेलर ने मुझे सेल से बाहर किया और निकोलाई के मुनिसिपल स्कूल के ऊपरी मंजिल के एक कमरे में ले गया। वहीं काले टेबुल को घेर कर कमेटी के मेम्बर बैठे थे। मैं थकान से चूर

था। मेरा दिल बैठ गया था। अपने शरीर की गन्दगी से मैं और भी बेहाल था। चार दिन से मैंने दाढ़ी नहीं बनाई थी। उसमें खुजली होने लगी थी। मेरे कपड़े बुरी तरह गन्दे हो गये थे।

टेका के एक अफसर का नाम चर्पिस्की था। मुझे खुश करने के लिये वह सर्राटे से फ्राँसीसी भाषा बोलता था। वह मेरे पासपोर्ट को उछाल रहा था। अपने साथी के साथ हँसी मजाक कर लेने के बाद उसने ताना देते हुए मुझसे कहा:—

'प्रिंस सेलिमन ! मेरी बधाई स्वीकार करें। आपने हर तरह की सावधानी से काम लिया था। आपके कागजात सही और दुरूस्त हैं। कहीं भी कोई खामी नहीं है।

उसका तौर तरीका मुझे पसन्द नहीं आया। मैंने पूछा:—

"यदि आप यह सब समझते हैं तब मेरी इस नाजायज गिरफ्तारी का क्या कारण है ? क्या आप इसकी कफियत दे सकते हैं ? मैं कामरेड वरिचकिन का घनिष्ट मित्र हूं। मं उनसे अधिकार पत्र लेकर यहाँ आया था। उन्होंने मेरी रक्षा का पूरा भार अपने ऊपर लिया था। मैं आपको बतला देना चाहता हूँ कि यदि आप मुझे तुरत रिहा नहीं कर देते तो यह ममला उनतक पहुँचेगा और मास्को आपसे कैफियत तलब करेगा।"

इस टेका अफसर ने मेरी बात अपने साथियों को समझाई। तीनों खिल-खिलाकर हँस पड़े। उसके इस उपहास से मुझे गुस्सा आ गया। उन्होंने आपस में दो चार बातें कीं और उठकर चले गये। मैं वहाँ चर्पिस्की के साथ अकेला रह गया।

वह विशाल आराम कुर्सी पर बैठा था। शीशे की खिड़की के बाहर एक लाल सन्तरी पहरे पर खड़ा था। काले पट्ट के नीचे एक कोने में पुराना नक्शा

लटक रहा था। उसके नीचे दो खाली मशीन गनें, कई राइफलें और कुछ हथगोले पड़े थे। चर्पिस्की विस्मय के साथ मेरी ओर देख रहा था। वह आवश्यकता से अधिक लंबा था। उसकी उम्र तीस साल के लगभग थी। उसकी पोशाक चुस्त और दुरुस्त थी।

अपने उन दोनों साथियों की ओर एक निगाह डालकर उसने मुँह बनाकर कहाः—

"वे दोनों गदहे चले गये। अब हमलोग इतमीनान से बातें कर सकते हैं।"

मुझे धैर्य नहीं रह गया था। अधीर होकर मैंने कहाः—चार दिन से मैं अकारण यहां जेल में सड़ रहा हूं। यह गुस्ताखी असह्य है। मैं एक बार फिर आपसे कहता हूं कि आप मुझे अपने उस साथी के पास ले चलिये जो निकोलाई की पुलिस दस्ते का सबसे बड़ा अफसर है।"

उसने व्यंग से सिर झुकाकर कहाः—

"महाराज! मैं ही वह अफसर हूं।"

"तब यहां जज कौन है?"

"यह भार भी आपके इसी नाचीज के कन्धों पर है।"

मैंने अपने कन्धे को झकझोरते हुए कहाः—"मैंने आज अनोखा जज देखा जो अपने टेबुल पर गोलीभरा रिवाल्वर रख कर कैदियों से जिरह करता हो।"

"इसमें गोली नहीं भरी है। आप चाहें तो देख सकते हैं।"

"तब क्या पंखा झलने के लिये इसे आपने अपने पास रख लिया है।"

"क्रान्तिके विरोधियों के लिये यह धोखा ! कभी कभी कैदी, अधीर हो जाता है और मेरी असावधानी से लाभ उठाकर रिवाल्बर को उठा लेता है और मुझपर गोली चलाने का प्रयत्न करता है। इस निरीह शस्त्र को उसके हाथमें

देखखर मैं हँसता रहता हूं ! अपनी जेब से भरी पिस्तौल बाहर करता हूं और उस कैदी की खातिरदारी कर देता हूं। वह वहीं ढेर हो कर छटपटाने लगता है। आपने मेरा मतलब तो समझ लिया होगा। इस खेल में बड़ा मजा आता है। अभीतक जार्जिया के चार या पाँच पीरों की मैं इस तरह पूजा कर चुका हूं। इस संबंध में आपके क्या विचार हैं ?"

उसका इस तरह मेरे साथ हँसी मजाक करना मुझे पसन्द नहीं आया! थोड़ी देर तक मैं उसकी ओर देखता रहा। अन्त में मैंने कहाः—"क्या आप इस तरह धमका कर मुझ से झूठ बोलवाना चाहते हैं कि मैं मनगढन्त अपराधों की तालिका आपके सामने पेश करूं। इस धोखे में आप न रहें।"

"मुझे आपका अपराध मालूम है। कोई अंग्लो-अमेरीकन कम्पनी की तरफ से आप यहां आये हैं जो तेलाब की खान से तेल निकालना चाहती है।"

"आपका कहना ठीक है लेकिन इसके लिये मास्को से आज्ञा मिल चुकी है। और इन्हीं कारणों से मैं कहता हूं कि यदि आप मुझे फौरन रिहा नहीं कर देते तो मैं बर्लिन तार दूंगा और मैं—"

"आप इस तरह का कोई काम नहीं कर सकते क्योंकि आपके ऊपर कड़ा पहरा रखने का गुप्त आदेश है।"

"यह आदेश कहां से मिला है ?"

"मास्को से ?"

"यह असंभव बात है।"

उसने मेरी ओर एक तार बढा दिया।

"मैं रूसी भाषा नहीं पढ़ सकता।"

"तब मैं आपको इसका अनुवाद सुना देता हूं।"

—"निकोलाई के पुलिस अफसरको हिदायत दी जाती है कि प्रिंस सेलिमन

ज्योंही जार्जिया की भूमि में पैर रखें त्योंही उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाय। वे बटौम में उतरेंगे और निकोलाई के बोकजल होटल में ठहरेंगे। न० १७ के पहुंचने तक उन्हें पहरे में गुप्त रूपसे रखा जाय। नं० १७ कार्यकारिणी की पूरी हिदायत लेकर जायगा"—लियोनाफ।

इसके बाद उसने अन्य कागजों के साथ तार को रख दिया और मेरी ओर देख कर व्यंग के साथ कहाः—"अब आपकी समझ में सारी बातें आ गई होंगी ?"

"इससे तो विदित होता है कि जब तक नं० १७ यहाँ नहीं पहुँच जाता तब तक आप मुझे किसी के साथ पत्र व्यवहार नहीं करने देंगे।"

"जी हाँ, दूसरा कोई चारा नहीं है।"

"यह नं० १७ कौन है ?"

"यदि आप कुबेर की संपत्ति भी मेरे हवाले कर दें तो मैं आप की यह उत्सुकता मिटाने के लिये तैयार नहीं हूं।"

"क्या मास्को का कोई खास अफसर है। विशेष कमीशन का कोई सदस्य है ?"

"शायद।"

"संख्या से क्यों निर्देश किया गया है ?"

"उनलोगों की शिनाख्त का यही तरीका है। मैं आपको केवल इतना बतला सकता हूँ कि दो अंको का प्रयोग किसी ऊँचे पदाधिकारी के लिए ही किया जाता है।

"तब आप के सोवियत संघ में भी ओहदे के हिसाब से ऊंच और नीच का भेदभाव है। समानता के अधिकार की घोषणा करनेवालों की नीति में यह विरोधाभास क्यों ?"

इसके उत्तर में चर्पिस्की ने धीमी आवाज में कहाः—

"भेड़ों की देखभाल के लिये गरेड़िये की जरूरत है। जो कुछ भी हो

आप को तो गर्व का अनुभव करना चाहिए कि आपसे पूछताछ करने और आपके भाग्य का फैसला करने के लिये खास मास्को से लोग आ रहे हैं। हमलोगों की बातचीत अब समाप्त होती है, मेरे अनोखे यात्री! अब मैं आप को अपने सेल में वापस कर दूंगा। जब तक नं० १७ यहां नहीं पहुँच जाता तब तक आप को वहीं इतमीनान से रहना होगा।"

उसने घंटी बजाई। लाल संतरी को आदेश दिया। जब मैं बाहर जाने लगा तब उसने मुझे मित्र की तरह गौर से देखा। मैं फिर अपने उसी मनहूस सेल में लौट आया। मेरा अभागा साथी वहां नहीं था। अन्य कैदियों के साथ वह आँगन में स्वच्छ वायु का सेवन कर रहा था। उसकी क्षणिक अनुपस्थिति से लाभ उठा कर मैं कुछ गुप्त काम कर डालना चाहता था। मैंने अपन मौजे में एक एक सौ डालर के दस नोट छिपा रखे थे। लेकिन उसे अपने पास रहने देना मैं सुरक्षित नहीं समझता था। इसलिये उसे मोड़चोड़ कर मैंने दो खपरैलों के बीच में छिपा कर धूल से ढंक दिये। उस रकम को मैं सम्हाल कर रखना चहता था ताकि समय पर वह मेरे काम आवे।

इवानोफ वापस आया। उसकी निराशाभरी आकृति से मैं व्याकुल हो उठा। निर्जीव कुत्ते के समान वह बिस्तर पर धड़ाम से गिर पड़ा और कांपते स्वर में बोला:—

"मेरा अनुमान ठीक था। कल रात को उन सबों ने गोरिजकी को ही मार डाला।

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

"मैंने एक संतरी को उसका जूता पहने हुए देखा है। इसी तरह वे लोग हम सब को मार डालेंगे। आज तुमसे पूछताछ की गई है? कौन पूछ ताछ कर रहा था?

"चपिंस्की ?"

"चपिंस्की पूरा कमीना है, पर साथ ही कायर भी है। वह पुराना प्रतिक्रियावादी है। जब टेका ने उसे गिरफ्तार किया तो अपनी जान बचाने के लिए उसने अपने साथियों का नाम और पता बतला दिया और उनका भेद खोल दिया। वह उन लोगों में है जो अपनी जान बचाने के लिए अपने भाई की हत्या करने में भी नहीं हिचकेंगे। यह सब बातें मुझे अपने एक दोस्त से मालूम हुई जो १९२१ में गिरफ्तार किया गया था और भाग्य से जिन्दा बच गया। अन्य सत्तर अभागे कैदियों के साथ उसे एक नरक तुल्य सेल में बन्द कर दिया गया था। उस जेल का नाम बोलशेविकों ने "मृत्यु का मजार" रखा था। यह नाम क्यों पड़ा सो भी सुन लो। एक दिन उस जेल का अफसर हथियारबन्द सैनिकों की एक टोली लेकर वहां जा धमका। जेल का विशाल फाटक गड़गड़ाहट के साथ खुला। वह कैदियों के पास पहुंचा और पूछाः—

"तुम लोग कितने हो ?"

"सरसठ।"

"केवल सरसठ। लेकिन कब्र तो अस्सी के लिये तैयार है। इतना श्रम और समय व्यर्थ बर्बाद करना पड़ा। इसे व्यर्थ नहीं जाने देना होगा।"

वे गरीब कैदी भय से काँपते चुपचाप खड़े रहे। सैनिकों की उस टोलीका अफसर उन्हें गौर से देखता रहा। अन्त में उसने सैनिकों से कहाः—

"मुझे तेरह और कैदी खोज निकालना होगा। जबतक मैं वापस न आऊँ इनकी रखवारी करते रहना। मैं सेलों में खोज करने जा रहा हूँ। अस्सी की संख्या मुझे पूरी कर लेनी ही होगी।"

जेल का फाटक बन्द कर दिया गया। वे सरसठ अभागे कुछ देर तक प्रतीक्षा करते रहे। मौत के आतंक से उनकी बुरी हालत थी। अचानक उनमें से एक घुटनों

के बल बैठ गया और निराश होकर प्रार्थना करने लगा। ईश्वर का नाम लेकर वह धूल में लोटने लगा। इसके बाद वह पागलों की तरह हँसने लगा और अपने साथियो को बुरी तरह पीटने लगा। उसका दिमाग खराब हो गया था।

यह हालत घंटों कायम रही। कुछ लोगोंने आशा दिलाकर उसे शान्त करना चाहा। उनमें से कुछ का ख्याल था कि अफसर को तेरह व्यक्ति नहीं मिल सकेंगे, इससे संभव है कि उनका अन्त रुक जाय। दूसरे बिलख-बिलख कर रो रहे थे। उनकी यही हालत दो दिन और दो रात रही। इसके बाद मालूम हुआ कि तेरह का काम तो तमाम कर दिया गया है। यह बात किसी की समझ में नहीं आई। हरेक आदमी पागल हो रहा था। तीसरे दिन टेका के सैनिकों ने सेल पर पुनः हमला किया। उनके अफसर के हाथ में लालटेन और कागज था। उसके बायीं ओर लिखा था:—"गोली मार दिये जानेवालो के नाम।" जिन लोगों को गोली से उड़ाना था उनके नाम लाल स्याही से उसपर लिखे गये थे। ये लोग कौन थे? वह पागल कैदी टेका सैनिकों पर झपट पड़ा और वहीं गोली से उड़ा दिया गया। वह छटपटा रहा था। उसी हालत में उसे उठा कर आंगन में फेंक दिया गया। मृत्यु के आतंक को दूर रखने के प्रयास में एक कैदी गाने लगा।

इसपर अफसर ने कहा:—"गाना बन्द करो। किसी का मुँह खोलना भी मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

इसके बाद नाम पढ़ा जाने लगा।

जो चार मृत्यु से बच गये थे उनमें वह गानेवाला भी था। इस तरह अचानक अपने को बचते देखकर उसने अपने उन तीनों साथियों से पूछा:—"मेरा और तुम तीनों का क्या होगा? क्या हमलोगों को गोली से नहीं मारा जायगा?"

"हमलोगों को माफ कर दिया गया।"

इतना सुनने के साथ ही वह बेहोश होकर गिर पड़ा और मर गया। माफी की खुशी ने उसके प्राण ले लिये।

तीसरे पहर के बाद जेलर हमलोगों के लिये थोड़ा सड़ा खाना ले आया जिससे बदबू आ रही थी। इवानोफ को अपने पास बुला कर उसने रूसी भाषा में कुछ कहा। इवानोफ डर से कांपता अपनी जगह से उठा।

अपने इस साथी के कारण मेरी मुसीबतें कटती जा रही थीं। उसकी दशा देख कर मैं भयभीत हो उठा। मैंने उससे पूछा:—"क्या बात है ?"

"वे लोग मुझे दूसरे सेलमें ले जा रहे हैं। आज वे लोग तुम्हें अकेला रखना चाहते हैं।"

"मुझे अकेला ? क्यों ?"

इस प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर जेलर भी नहीं दे सकता था। उसने भोजन की ओर इशारा किया, अपना पेट व्यंग से सहलाया और इवानोफ को घसीट कर बाहर ले गया।

मैं अकेला रह गया। मुश्किल से समय कटने लगा। मैं जमीन पर लेट गया और कम्बल ओढ़कर यह सोचने लगा कि वे लोग मेरे साथी को यहां से क्यों हटा ले गये। आंखें बन्द कर मैं इसी समस्या पर विचार करता रहा। मुझे अपने जीवन की पुरानी बातें एक-एक कर याद आने लगीं। मैंने अनेक खतरों का सामना किया था। युद्ध के मैदान में अनेकों बार बन्दूक की गोली मेरी कनपटी को छूकर निकल गई थी।

लेकिन बोल्शेविकों के इस जेल में मैं जिस व्यथा और वेदना का अनुभव कर रहा था उसकी तुलना में वे सब कुछ नहीं थे। मेरा जीवन कच्चे धागे से लटक रहा था। वे मुझे रातको ही खत्म कर सकते थे या सबेरे रिहा कर सकते थे। दोनों बातें उनकी इच्छा पर निर्भर थीं। मेरे इस तरह अचानक

गायब हो जाने से राजनीतिक क्षेत्र में एक बार हलचल अवश्य मच जायगी। लेकिन मास्को के अधिकारी मेरे खिलाफ अभियोगों का पुलिन्दा गढ़ कर तैयार कर लेंगे! मेरा नाम षड्यंत्रकारियों में लिख लेंगे। मेरे देशवासी विरोध करेंगे सही लेकिन सोवियत सरकार से वे दुश्मनी मोल लेना नहीं चाहेंगे। इसलिये मामला आगे नहीं बढाया जायगा। मैंने लेटे लेटे उस बात की कल्पना कर डाली जो मेरे मरने के बाद होगी। लन्दन, पेरिस तथा न्यूयार्क के पत्रों में मेरे बारे में जो लेख प्रकाशित होंगे वे भी मेरी आँखों के सामने आकर खड़े हो गये और मै उन्हे मौन होकर पढ़ने लगा। लेडी डायना के उद्‌गार भी कानों में पड़ने लगे:—

"कैसा भला आदमी था वह। और मेरी प्यारी पत्नी ग्रिसेल्डा! शीघ्र ही विधवा हो जायगी। संप्रति तो वह बेचारी नार्दर्न स्टार पर एशिया माइनर में यात्रा करती होगी। मेरे मरने का समाचार सुन कर उसे विषाद अवश्य होगा, इस विचार के आते ही संतोष की हलकी रेखा मेरे चेहरे पर दौड़ गई। उस दिन जहाज पर उसने मुझे अपनाया नहीं, लेकिन मेरी हत्या का संवाद सुन कर वह रोये बिना नहीं रह सकती। इस बात का मुझे पक्का विश्वास था। न्यूयार्क में मेरी मृत्यु का संवाद पढ़ कर उसका हृदय विदीर्ण हो जायगा, इतना तो निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है; क्योंकि उसके दुश्मन भी यह बात स्वीकार करेंगे कि उसका हृदय विशाल है।

और भी अनेक पुरानी बातें न याद आने लगीं। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि स्मृति के कपाट एक एक कर खुल रहे हैं और जमाने से उनमें बन्द बातें प्रगट होती जा रही हैं।

मैंने अपनी आँखें बन्द कर लीं। मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था। मेरे सिर में चक्कर आ रहा था। मैं अपने कम्बल के नीचे मृतवत् पड़ा रहा। केवल

मेरी कल्पना न जाने कहाँ कहाँ की दौड़ लगाती रही। इसी समय मेरे सेल के पास किसी के पैरों की आहट मालूम हुई। मैं सजग हो गया। पहले की ही तरह अपनी जगह से हिला डुला नहीं लेकिन अपनी अर्ध-उन्मीलित आँखों से मैंने देखा कि वे ही दोनों आँखें छेद से मुझे घूर रही हैं।

वे आँखें देर तक मुझे देखती रहीं। इसके बाद वह दृश्य गायब हो गया। मैं मन ही मन बड़बड़ाने लगा कि इसने इस तरह झाँककर मेरी सुखद कल्पना में क्यों बाधा पहुंचायी कि अचानक दरवाजा खुला और जेलर ने कहा:—

"नम्बर सत्तरह।"

वह मेरे सेल की डेहरी पर रुक गया। मैं केहुनी के बल उठ कर गौर से देखा कि मैडम इरिना मौराविफ मेरे सामने खड़ी है। मैंने अपने मनमें कहा:—यही नम्बर सत्रह है।

———

## १३

मैडम मौराविफ को अपने सामने खड़ा देखकर मुझे लेशमात्र भी विस्मय नहीं हुआ; क्योंकि मुझे पहले से ही इस तरह की आशंका थी कि वह इस काम में हस्तक्षेप जरूर करेगी और बाधा डालने का यत्न करेगी। लेकिन मैंने अपने आपको इतना महत्वपूर्ण नहीं समझा था कि मेरे कारण वह निकोलाई तक आने का कष्ट उठावेगी।

अब तो वह जेल के लालटेन के क्षीण प्रकाश में मेरे सामने प्रत्यक्ष खड़ी थी। किसी तरह का विस्मय प्रगट किये बिना उसने गौर से मुझे देखा। उसके चेहरे या आकृति से उसके हृदय के भाव का थाह पता नहीं चलता था। सिर पर मलाहों की तरह उसने काला टोप पहन रखा था। अपने कोमल शरीर को

उसने चमड़े के तंग कोट से बाँध सा रखा था। कान या शरीर के अन्य किसी अंग में साधारण सा भी आभूषण नहीं था। इस सादगी के साथ वरिचकिन की प्रेयसी देवी का अवतार ही प्रतीत होती थी।

उसकी उपस्थिति ने मेरे लिये प्रेरक शक्ति का काम किया। शायद किसी उत्तेजक दवा की सूई का भी इतना गहरा असर नहीं हुआ होता। मैं उस पर यह प्रगट नहीं होने देना चाहता था कि इस गिरफ्तारी से मैं किसी भी तरह भयभीत हो गया हूं या मुझ में कातरता आ गई है। मैंने कम्बल फेंक दिया, झटके से उठकर खड़ा हो गया और अनोखे ढंग से उसे झुककर प्रणाम किया। मैंने कहाः—

"मैडम ! मुझे क्षमा करेंगी। यदि मुझे आपके आगमन की सूचना पहले से मिली होती तो आप मुझे इस असभ्य तरीके से पड़ा न पातीं। मैं आपके स्वागत के लिये तैयार रहता।"

इरिना ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। उसन हाथ के इशारे से जेलर को हटा दिया, दो कदम और निकट चली आई, दरवाजा बन्द कर लिया और कहाः—

"दोस्त ! आप चकमा देना खूब जानते हैं। मुझे आश्चर्य हो रहा है कि आप इस तरह की असीम यातना किस तरह बर्दाश्त कर रहे हैं। देखें कब तक आप बर्दाश्त कर सकते हैं इसे।"

उसकी आकृति और शब्दों ने मुझे कंपा दिया तोभी मैंने उसे छेड़ना ही उचित समझा। मैंने कहाः—

"तब आप ही वह महान् सत्रह नम्बर हैं। आपकी योग्यता और क्षमता की महिला के लिये क्या ही तुच्छ उपाधि यह है। मैंने तो समझा था कि नम्बर सत्रह कोई मूर्ख क्रान्तिकारी होगा जो स्वभाव से जल्लाद और निर्मम होगा। मैं कितना बड़ा भाग्यशाली हूं कि नम्बर सत्रह का प्रतिनिधित्व आपके समान

योग्य, शिक्षित और बुद्धिमती महिला करती हैं। मेरे लिये यह गौरव की बात है कि अपने अनुकूल मुझे प्रतिद्वन्दी मिला है। अपने वचन को निबाहना ही सच्ची बहादुरी है।"

"कहते चलो! तुम्हारी बातें मुझे रोचक प्रतीत होती हैं।"

"मुझे जो कुछ कहना था, कह चुका मैडम! अब मैं सुनने के लिये लालायित हूं।"

उसने अपने कन्धों को बड़े जोर से हिलाया और बेंच पर बैठ गई। मैं अपने बिस्तर पर ही एक किनारे बैठ गया। जब उसने अपना मुंह नहीं खोला तब मैंने ही कहा:—

"मेरे इस सादे निवास-स्थान में आपको बड़ा कष्ट हो रहा होगा। इसके लिये मैं क्षमा चाहता हूं।"

"सेलिमन! मजाक को बन्द करो। तुम्हारे चेहरे से साफ प्रगट होता है कि तुम आतंकित हो। तुम बहुत अच्छे खिलाड़ी हो। और तुम साधारण लोगो को मजे में बेवकूफ बना सकते हो। लेकिन मैं अच्छी तरह समझती हूँ कि तुम पत्ते की तरह काँप रहे हो। तुम उन लोगों में नहीं हो जो किसी उत्तम काम के लिये हंसते हंसते प्राण दे सकते हैं। और साथ ही तुम्हारा यह उद्देश्य भी कोई उत्तम नहीं है। महान् व्यक्ति तेल के चन्द कुंओं, एक पूंजीवादी कम्पनी अथवा एक बद्-दिमाग अंग्रेज महिला को खुश करने के लिये अपने प्राणों को कभी दाँव पर नहीं रखते।"

"मैडम! आप भारी भूल कर रही हैं। महान व्यक्ति साधारण व्यक्तियों के सामने उदाहरण रखने के लिये अपने प्राणों की बाजी लगा सकते हैं।"

"किस बात का उदाहरण?"

"त्याग का और साहस का।"

"तुमने असली फ्रांसीसी का रूप प्रगट किया है।"

मैडम मौराविफ ने अपने चमड़े के कोट का बटन खोल दिया और एक पैर पर दूसरे पैर को रखकर कहा:—

"यहाँ तक तो नोकझोंक की बातें होती रहीं। अब मैं मतलब की बात पर आती हूँ। मैं समझती हूँ कि इस अवधि में तुमने यह समझ लिया होगा कि तुम यहां तक किस तरह पहुंचाये गये।"

"इतना तो मैं समझ सका हूँ कि लेडी डायना के पास इंजीनियर का जो तार भेजा गया था वह जाली था।"

"पिछले सात वर्षों से रूस में इसी तरह का नाटक होता आ रहा है। किसी भी हालत में एडविन ब्लैकेट के दस्तखत से जा तार भेजा गया था उसने अपना काम पूरा किया। तुम आये। तुमने देखा और तुम जीत लिये गये।"

"यह आप किस तरह समझती हैं, कि मैं जीत लिया गया।"

इरिना ने मेरे प्रश्न को टाल दिया। उसने मुझे ऊपर से नीचे तक देखा और कहा:—

"यदि वे सुन्दर स्त्रियाँ जो हर तरह के बनावटी शृंगार से अपने को सजाती रहती हैं, तुम्हें इस हालत में देखें तो उन्हें कितना विषाद होगा। यद्यपि इस बढ़ी दाढ़ी तथा गन्दे पोशाक में तुम लेशमात्र भी आकर्षक नहीं प्रतीत हो रहे हो।"

वह खिलखिला कर हँस पड़ी और व्यंग से बोली:—

"होटलों में शानके साथ विचरनेवाला सुन्दरता की मूर्ति वह प्रिंस सेलिमन कहां है? तुम्हें इस तरह देखकर कहना पड़ता है कि जीवन उतार चढाव का नक्शा है। आज तुम यहाँ ज्वलामुखी के मुंह पर खड़े हो। यदि तुम्हारा यहाँ अन्त हो जाय तो विलासिता की प्रतिमा उन सुन्दरियों की चर्चा के विषय तुम बन जावोगे।"

इतना कह कर मेरे भोजन के बर्तनो को ठोकर मार उसने फिर कहाः—

"जो एक दिन होटलों में गुलछर्रे उड़ा रहा था वही आज जेल के इस टूटफूटे बर्तन में भोजन का आनन्द ले रहा है। प्रिंस ! क्षमा करना ! हमलोगों के पास जो कुछ है उसे हमें पूंजीपतियों को देना पड़ता है। इसलिये हमलोग कैदियों को उत्तम भोजन कहाँ से दें। अपना सामान उनके हाथ बेंचकर हम उनसे सोना पाते हैं। वे लोग हमलोगों के अंडे खाते हैं और उनके धनसे हमलोग उनके नाश का नक्शा तैयार करने में व्यस्त हैं।"

मैं बोल उठाः—

"क्या सचमुच आप मुझसे इतना नफरत करती हैं ?"

"तुम मेरी सुख और शान्ति छीनने के काम में सहायक बने हो। तुमने मेरे प्रेमी को मेरे हाथ से छीनकर उसे सौंप दिया है जिसे मैं हृदय से घृणा करती हूं। मुझ से कुछ छिपा नहीं है। मैं सब कुछ जानती हूँ ! लेडी डायना ने वरिचकिन को अपने वश में कर लिया है। वह तेलाव के तेल के लिये रिआयत चाहती थी। उसे प्राप्त करने के लिये उसने अपने को वरिचकिन के हवाले कर दिया है। इतना ही नहीं। मुझे पूरी तरह नीचा दिखाने के लिये उसने वरिचकिन के प्रस्ताव को स्वीकार ही नहीं किया बल्कि उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। मुझे सब कुछ मालूम है। एक महीने के भीतर उनकी शादी हो जायगी और वे पति-पत्नी बन जायंगे क्योंकि अभी तक मैं उस पट्टे को रद्द नहीं करवा सकी हूं। यदि राजनीतिक कारणों से मास्को के अधिकारियों ने मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं की तो मुझे अपने तरीके से काम करना होगा। तुम कितने बड़े बेवकूफ थे कि तुमने मेरी चेतावनी पर जरा भी ध्यान नहीं दिया। उस दुस्साहस के लिये तुम्हें पछताना पड़ेगा। तुम्हें पता लग जायगा कि मेरे प्रेम के रास्ते में खड़ा होने का क्या फल मिलता है।"

इतना कहकर वह दरवाजे की ओर बढ़ी। उसे क्षण भर रोकने के ख्याल से मैं भी उसके पीछे चला। लेकिन वह अचानक घूम पड़ी। उसकी पीठ दरवाजे की ओर थी और उसके दोनों हाथ उसकी कोट की जेब में। उसने डपटकर कहा:—

"आगे बढने का साहस मत करना। मैं तुम्हारी हत्या से अपना हाथ रंगना नहीं चाहती। साथ ही मैं यह भी नहीं चाहती कि इस नाटक का इतना जल्द अन्त हो जाय। इसका आनन्द तुम्हें और भी अधिक लूटने देना चाहती हूं।"

"क्या आप समझती हैं कि मैं औरतों के साथ इस तरह की ज्यादती कर सकता हूं, चाहे वह शत्रु ही क्यों न हो।"

"मैं तुम्हारा विश्वास नहीं करती।"

"जाने से पहले मैं दो-चार बातें आपसे पूछ लेना चाहता हूं। क्या मेरे भाग्य का फैसला सोलहो आना आपके हाथ में है?"

"जी हां।"

"आपका ही निर्णय अन्तिम होगा?"

"हां।"

"तब क्या आप कृपाकर इतना बतलाने का कष्ट करेंगी कि आप अपना फैसला कब सुनायेंगी?"

"यह मैं नहीं कह सकती। संभव है कि आज ही रात को। दो सप्ताह भी टल सकता है। मैंने इस छेद से तुम्हारा निरीक्षण किया है। इसमें मुझे आनन्द मिलता है और यह आनन्द मैं कुछ दिन और लेना चाहती हूं। मुझे तब तक पूरा संतोष नहीं होगा जब तक मैं तुम्हें थोड़ा और अधीर, चिन्तित, असंयत

तथा गन्दा नहीं देख लूंगी। गुलगुले और मखमली गद्दे पर आपको सुलाने का दिन मैं अपनी इच्छा के अनुसार निश्चित करूँगी।"

इतना कहकर वह चल पड़ी। वह दरवाजे से बाहर हो गई और दरवाजा फिर उसी तरह बन्द हो गया। फिर उसी शून्यता का राज्य छा गया। वही उदासी मेरे चारों ओर मडराने लगी।

मैडम मौराविफ के आगमन के बाद से मेरी जो हालत हुई उसकी कल्पना कर मैं आज भी कांप उठता हूं। मैं नहीं समझ सका कि मेरे भाग्य में क्या बदा है। अनिश्चितता के बोझ से मेरा हृदय दबता जा रहा था। मेरा कलेजा काँप उठा। मेरा जीवन एक महिला की मुट्ठी में था। और सब कुछ उसकी इच्छा पर निर्भर करता था। मैं उसके चंगुल में फँसा था। वह चाहे तो मुझे छोड़ सकती है या फांसी पर चढ़वा सकती है।

मैंने लाख कोशिश की कि मेरे दिमाग से ये परेशान करनेवाले विचार हट जायँ और अपने अतीत जीवन के कल्पना-जगत में मैं जिस तरह विचरण कर रहा था उसी तरह फिर विचरण करूं। लेकिन उसकी नीली आंखें रह रहकर मेरे सामने आ जाती थीं और मुझे बेचैन कर देती थीं। वह वहां से चली गई थी लेकिन वह समूचे वातावरण में इस तरह समा गई थी कि मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि वह वहाँ मौजूद है। उसी तरह मेरे सामने बेंच पर बैठी है और आँखें गुरेरकर मुझे देख रही है। मुझे आज भी याद है कि जाल में फँसे जानवर की तरह मैं अधीर होकर चिल्लाने और गुर्राने लगा था; मैं अपनी मुट्ठियां इस तरह बांधता था मानों मैं अपने ऊपर काबू करने का प्रयास कर रहा हूँ। मैं अपने नखों को अपनी हथेली में गड़ाने लगा था। मैंने अपने सिर को अपने बिस्तर में डाल लिया और बड़बड़ाने लगा। इरिना का भूत मेरे सिर से उतरा नहीं था।

समय बीतने लगा। रात प्रायः समाप्ति पर थी। मेरे सेल में प्रकाश का धुंधला प्रतिबिंब आने लगा। आंगन में किसी के भारी बूट की आवाज सुनाई पड़ी। एक दरवाजा खुला और बन्द हुआ। इवानेफ की अनुपस्थिति मुझे बुरी तरह खलने लगी। वह इस शोरगुल का असली कारण मुझे बड़ी आसानी से समझा सकता था।

इसके साथ ही बरामदे में किसी के पैरों की तेजी से चलने की धमक सुनाई पड़ी। किसी के जालिम हाथों ने कुंजी को घुमाया। मेरा जेलर एक नये संतरी के साथ आया। इस संतरी को मैंने पहले कभी नहीं देखा था। उसके हाथ में रिवाल्वर था। उसका टोप एक तरफ उसके कान तक चला गया था। उसने प्रवेश करते ही उसी मनहूस शब्द को दोहराया:—"तुम्हारा रास्ते का कपड़ा कहां है ?"

"तुम्हारा रास्ते का कपड़ा कहाँ है' इस वाक्य को उस चाण्डाल ने इस लापरवाही के साथ दोहराया मानों कोई कारपोरल अपने अधीन सैनिक को लड़ाई पर जाने के लिये सोते से जगा रहा हो। मुझे ऐसा गहरा धक्का लगा कि मैं काँप उठा। मैं किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो गया। मेरा मस्तिष्क निष्क्रिय सा हो गया। मैं नहीं सोच सका कि मैं क्या करूं। मेरे दिमाग में केवल एक ही बात आई कि मुझे इस महिला के सामने अपने में किसी तरह की कमजोरी नहीं प्रगट होने देना चाहिए।

मैं चुपचाप इस तरह उठ खड़ा हुआ मानों इसका मुझपर कोई असर नहीं पड़ा हो। मैं उस लाल संतरी के पीछे हो लिया। उसके रिवाल्वर का कुन्दा मेरे कन्धे को छू रहा था। सीढ़ियों पर चढ़कर हमलोग दालान में पहुँचे। यहां से नीले आकाश में चमकते हुए तारों का अतिशय सुहावना दृश्य दृष्टिगोचर हो रहा था। मैंने सरसरी तौर से एक नजर उस पर डाली। इसके बाद हमलोग

दूसरे मकान में नीचे उतरने लगे। नीचे फर्श पर पहुंचते ही मुझे तोप की गड़गड़ाहट सुनाई पड़ी। मैंने समझ लिया कि मेरा अन्त निकट है। दो तीन मिनट में इस दुनिया से कूंच कर जाऊंगा। मेरे मन में इस समय एक विचित्र विचार उठा—"मुझे भेड़ बकरी की तरह चुपचाप मर जाना चाहिए या मुझे इस लाल संतरी पर आक्रमण कर देना चाहिए और बहादुरों की तरह लड़कर प्राण गंवाना चाहिए।" इस समय एक विचित्र प्रतिक्रिया हुई। मानों वह लाल सैनिक मेरे मन की बात ताड़ गया। उसने रिवाल्वर का मुंह मेरी ओर फेर दिया और रूसी भाषा में उसने मुझे कस कर धमकाया। मेरा सारा मनसूबा गायब हो गया।

मैं एक तहखाने में पहुंचा जिसमें चूने की सफेदी विधिवत् की गई थी और बिजली की रोशनी से वह जगमगा रहा था। दाहिनी ओर बालू का एक ढेर था, दीवाल पर कुछ काले-काले दाग थे। फर्श पर भी इसी तरह के काले दाग थे। मानों किसी की चमकीली आंखों ने मुझ पर जादू कर कर दिया हो, मैं पत्थर की मूर्ति की तरह चुपचाप खड़ा रहा। उस सफेद दीवाल पर जो काले धब्बे थे उनपर से मैं अपनी आंखें नहीं हटा सका। इसी समय किसी महिला की आवाज ने मुझे चौंका दिया।

"कहो। प्रिंस महोदय! आप अपनी कब्र की सजावट के बारे में सोच रहे हैं क्या?"

मैं तेजी से घूम पड़ा। इरिना वहाँ खड़ी थी। लाल संतरी दरवाजा रोककर खड़ा हो गया। मेरा आत्माभिमान मेरा सहायक हुआ। मैंने मुस्कुराकर कहा:—

"किसी की लाश के अन्तिम संस्कार के लिये यह स्थान बुरा नहीं है यद्यपि इस काम के लिये मैंने इससे उत्तम स्थान देखे हैं।"

"तुम यह स्वीकार करोगे कि इस बार तुम्हारा दिल दहल उठा है।"

"हां, मुझे इस बात का भय अवश्य हो गया है कि आपकी इस सुन्दर पोशाक में धब्बा लग जायगा।"

इरिना ने मुझे बड़े गौर से देखा। उसकी आंखों में पहले की अपेक्षा कहीं अधिक विस्मय था। वह मेरे हृदय के अन्दर प्रवेश कर यह देखना चाहती थी कि मेरा यह बनावटी साहस मेरे हृदय की वास्तविक विभीषिका को कहां तक छिपाये हुए है। वह इस ताक में थी कि मेरे किस अंग में भय के लक्षण दीख पड़ते हैं। उसे देखने से ऐसा प्रतीत होता था कि मुझे आतंकित देखने के आनन्द उसके अंगों को पुलकित करने का प्रयास कर रहे हैं और इसी आशा से उसके अंग प्रत्यंग फड़क रहे हैं। वह मेरे एकदम निकट चली आई। मेरे एकदम पास आकर वह रुक गई। मुझमें और उसमें कई इंचों का ही फासला रह गया था। परिहास और व्यंग का वह मूतिमान स्वरूप बनी हुई थी। उसकी नीली आँखें मुझे घूर घूर कर निहार रही थां। मेरी आंखों में भय का आतंक निहार रही थी।

उसके दोनों हाथ पीछे की ओर मुड़ गये। उसकी सूखी हंसी उसकी होंठों पर दौड़ गई। उसने कहाः—

"भय के आतंक को छिपाने में तुम बड़े ही कुशल हो। लेकिन मैं प्रत्यक्ष देख रही हूं कि तुम्हारा दिल जोरों से धड़क रहा है। तोभी मृत्यु के सामने तुमने बहुत बड़े साहस का परिचय दिया है। टेक्का के जल्लाद शीघ्र ही यहां आयेंगे। उस काम में जो थोड़ी देर हो रही है उसके लिये क्षमा चाहती हूँ।"

"मुझे पैरों की ध्वनि सुनाई पड़ी। अपनी साहसिकता के बावजूद भी मेरी आंखें दरवाजे की ओर घूम गईं। एक आदमी सामने आया। उसके पीछे

दूसरा आदमी था। इसके बाद इरिना बोली। उसके मुंह से इस तरह शब्द निकले मानों यह कोई असाधारण बात नहीं थी:—

"इस खेल को आगे मैं बढ़ाना नहीं चाहती। आज तुम्हारे मरने का दिन नहीं है। मैं तुम्हें सिर्फ यह दिखलाना चाहती हूं कि क्रान्ति के दुश्मनों का अन्त हमलोग किस प्रकार करते हैं। आइये हम लोग इस बेंच पर बैठ जाय। इस संस्कार में देर नहीं लगेगी।"

मरनेवाला छोटे कद का रूसी था। उसके शरीर की बनावट भद्दी सी थी। उसकी आखें खूंखार थीं और उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी। उसका चेहरा विषाद से भरा था। वह चुपचाप जल्लादों के सामने आकर खड़ा हो गया। भाग्य ने उसे परीशान कर दिया था। उसमें किसी तरह की चेतना नहीं रह गई थी। वह चुपचाप अपनी कब्र की तरफ बढ़ रहा था। तब क्या उस समय तक उसका दिमाग दुरुस्त था?" क्या बाहरी दुनिया के अस्तित्व का उसे कोई ज्ञान नहीं था? अपने हृदय के भावों को बरबस रोककर मैं उसे देखता रहा। मृत्यु के आइने के सामने खड़ा करने के बाद इरिना अब मेरे सामने सबसे कुत्सित और भयानक दृश्य उपस्थित कर रही थी। मैं उन क्षणों को याद करता हूं तो आज भी कांप उठता हूं। मैं आज भी यह नहीं सोच पाता हू कि कौन सी शक्ति मुझे अपने वश में रखकर यह सब देखने दे रही थी।

अचानक मैं चौंक उठा। मेरे पास बैठी इरिना धीरे धीरे बोल रही थी। वह मुझे सारी क्रिया इस तरह समझा रही थी जिस तरह थेटर में बैठा कोई आदमी अपने बगलवाले को नाटक का कथानक समझा रहा हो।

'इसका नाम चोखोचेफ है। आज ही दिन को मास्को से उसे फांसी देने का हुक्म आया है। किसी समय यह सेना में सिपाही था।'

इस समय तक जल्लाद उसे सफेद दीवाल और बालू के ढेर के बीच में ले जा चुके थे। जल्लादों का मुखिया बाल्टिक नौ सेना का पुराना जहाजी था। उसने हुक्म दिया। मुलाजिम अपनी जगह से न हिला और न डुला। ऐसा प्रतीत हुआ कि अपनी वास्तविक स्थिति का ज्ञान उसे पहले पहल हुआ हो। उसने एक बार घूर कर हमलोगो की ओर देखा। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह व्यक्ति अपने जीवन की इस अन्तिम घड़ी में हमलोगो की उपस्थिति के लिये हमलोगों की भत्सर्ना कर रहा है।

जल्लाद की आज्ञा दूसरी बार गूंज उठी। इस बार भी वह आदमी अपनी जगह पर स्थिर खड़ा रहा। उसके मुंह से कुछ शब्द निकले जो हमलोगों को लक्ष्य कर कहे गये थे। उसके शब्द तीर की तरह मेरे हृदय मे चुभ गये। मुझे ऐसा लगा मानों मेरे मस्तिस्क को कोई आरा से चीर रहा हो। जल्लाद इरिना की तरफ घूम पड़ा और उससे कुछ कहा। मैं समझ तो नहीं सकता था लेकिन उनकी चेष्टाओं से ही मैं कनमना उठा। इस जघन्य व्यापार को देखने के लिये उसने मुझे क्यों घेर रखा था। इरिना ने मुझे समझाया:—

"वह अपने कपड़ों को उतरना नहीं चाहता है क्योंकि मैं यहाँ हूं। हमारे यहाँ का नियम है कि मरनेवाले के कपड़े उतार लिये जाते हैं और उसे नंगा ही मरना होता है। लेकिन यह स्त्रीके सामने नंगा नहीं होना चाहता। कैसी विचित्र बात है।"

इरिना उठकर खड़ी हो गई। उसने उस मरनेवाले के प्रति कुछ व्यंगभरी बातें कहीं। तब मैंने यह देखा कि उस बिचारे ने पालतू जानवर की भाँति अपने कपड़े उतार कर फेंक दिये और अपना मुंह दीवार की ओर फेर लिया। इरिना ने मेरी ओर इशारा किया।

"देखा मेरे शब्दों का प्रभाव! कोई भी यही सोचता कि उसकी हाल में

ही शादी हुई है।" इसके बाद उसने उसे डाँट कर कहा:—

"इधर घूमो!"

इरिना के शब्द जादू का काम कर रहे थे। वह चुपचाप घूम पड़ा। उसके शरीर पर एक धागा भी नहीं रह गया था। इरिना ने उसकी ओर आँख उठाकर देखा तक नहीं। उसने केवल जल्लादों को इशारा कर दिया। उसके इशारे से मैंने समझा कि वह कह रही है कि जल्द इसका काम तमाम करो। इसके बाद वह बैठ गई।

दो बार बन्दूक की आवाज हुई। चोखोचेफ की लोथ जमीन पर ढेर हो गई। जल्लाद ने उसकी लाश के चारों ओर बालू फैला दिया और उसके कपड़े बटोर लिये। इंजिन की गड़गड़ाहट बन्द हो गई। जो लाल संतरी मुझे यहाँ तक ले आया था वह हाजिर हो गया। इरिना ने मुझसे कहा:—

"अब हमलोग तुम्हें पुनः तुम्हारे सेल में वापस ले जा रहे हैं। इस समय तुमने जो कुछ देखा है वह तुम्हें गौर करने के लिये काफी खुराक देगा।"

इतना कहकर वह क्षण भर के लिये चुप हो गई। फिर बड़ी नर्मी से बोली:—

"समय से पहले मरना भी क्या ही अच्छा होता है।"

हमलोग बाहर चले गये। गार्ड ने मेरे पिंजड़े का दरवाजा खोला। इरिना ने उसे सीढ़ी पर रुके रहने के लिये कहा। उसने भीतर प्रवेश किया। उसने मेरे बिस्तर और कम्बल को छू कर कहा:—

"मैं तुम्हारे लिये बहन के समान हूँ। मैं तुम्हें अच्छी तरह सुला देने के लिये आई हूँ।"

इतना कह कर वह झुक गई और मेरा बिस्तर संवारने लगी। उसके खड़ी होते ही मैंने उसे अपनी बाहों में जकड़ लिया। मैं नहीं कह सकता कि

मुझे इस तरह की प्रेरणा अचानक कहाँ से मिली। मैंने उसे अपने कलेजे के पास खींच लिया और मुँह में मुँह सटाकर कहा:—

"इरिना! तुम शैतान की प्रतिमूर्ति हो। लेकिन इसके लिये मैं तुमसे घृणा नहीं करता। मैं तुम्हारे फौलादी हृदय और कठोरता की तारीफ करता हूँ। मुझे जाने दो। मैंने तुम्हारे साथ जो अन्याय किया है उसका प्रतिकार करूगा। तुम्हारी क्षति की पूर्ति करूँगा।"

मुझमें विवेक नहीं रह गया था। मैं एक टक उस सुन्दर चेहरे को देख रहा था जो कठोर से कठोरतम होता जा रहा था। वह चुप थी। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। मैंने अपने होठों को उसके होठों पर रख दिया। उसने किसी तरह का विरोध नहीं किया। हमलोग कुछ देर तक इसी अवस्था में खड़े रहे। अन्त. में उसने कस कर एक झटका दिया और मुझसे अलग हो गई। उसने मुझे बिस्तर पर ढकेल दिया, मेरे मुँह पर थूक दिया और दरवाजे की ओर भागी। उसने जाते-जाते कहा:—

"आह! तुमने समझा था कि मुझे इतनी आसानी से तुम प्राप्त कर लोगे। कायर कहीं का! मुझे अपनी क्षणिक दुर्बलता के लिये खेद है जिससे तुमने लाभ उठाया। मैं तुमसे स्पष्ट कह देना चाहती हूँ कि तुम अपना दांव हार चुके हो। तुम्हारे भाग्य का फैसला हो चुका है। तुमने अपनी इस हरकत से अपनी मृत्यु के परवाने पर अन्तिम मुहर लगा दी।

---

## १४

रात भर मैं बुरे-बुरे स्वप्न देखता रहा। सबेरे उठा तो सिर भारी था और हृदय में निराशा का घोर अन्धकार। शरीर ऐसा निःशक्त हो रहा था मानो वह निर्जीव हो। शरीर में स्फूर्ति लाने के लिये मैं अपनी दाढ़ी के रूखे बालों को

रगड़ने लगा। मैंने देखा कि मेरे दिल पर निराशा के वही काले बादल मंड़रा रहे हैं जो अन्य कैदियों के दिलों पर छाये हैं। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानों कोई बाज रह-रहकर मेरे गालों पर चोंच मारता है और मेरी कनपटी को नोचता है। मेरी छाती पर भारी बोझ पड़ा था जो मुझे साँस नहीं लेने देता था।

करीब दो बजे दिन को जेलर ने सेल का दरवाजा खोला। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब मैंने इवानोफ को सेल में प्रवेश करते देखा। उसकी आंखो में ऐसी चमक थी, खुशी और उत्साह से उसका चेहरा इस तरह चमक रहा था कि मैं उसे पहचान नहीं सका। उसके पैर बड़े उत्साह से आगे बढ़ रहे थे। वह झट मेरे पास आकर बोलाः

"जेल में यह मेरी आखिरी रात होगी। मास्को से हुक्मनामा आ गया है कि मुझे रिहा कर दिया जाय। ये लोग मुझे कल छोड़ देंगे।"

"ऐसी क्या बात हो गई?"

"मुझे क्या मालूम? जहाँ तक मैं समझता हूं कि इन लोगों को भी कुछ नहीं मालूम है। यह शुभ संवाद इसी वक्त चपिस्की ने मुझे सुनाया है। मालूम होता था कि यह संवाद उसे रुचिकर नहीं प्रतीत हुआ। उसने बड़ी मुश्किल से शब्द अपने मुँह से बाहर किये। मालूम होता था मानो मेरी रिहाई में उसकी पराजय है। कितना बड़ा जल्लाद है वह! यदि मुझे मौका मिलता तो मैं उसकी गर्दन मरोड़ देता।"

मैंने उसे बधाई दी। उसने क्षमाप्रार्थी के रूप में कहा:—"दोस्त! तुम्हारे सामने इस तरह की प्रसन्नता प्रगट करना शोभनीय नहीं है। मारे खुशी के मेरा दिल उछल रहा है और मैं अपने को किसी प्रकार भी रोक नहीं सकता। यदि तुम्हारी भी रिहाई मेरे साथ हो जाती तो मुझे कितनी ज्यादा खुशी होती!"

मैंने केवल ठंढी साँस ली। इवानोफ को मेरी स्थिति की वास्तविक जानकारी

नहीं थी। यदि उसे यह मालूम हो गया होता कि मैडम मौराविफ ने मेरे भाग्य का निर्णय कर दिया है और जल्द ही मुझे जल्लाद के हवाले किया जायगा तो निश्चय ही अपनी खुशी प्रगट करने के लिये वह शर्म से गड़ जाता।

उसने कहा:—"कल रात को इञ्जन की गड़गड़ाहट फिर सुनाई पड़ी थी। कल फिर किसी कैदी की इहलीला ममाप्त की गई थी।"

"हाँ, कल रात को चोखोचेफ की बारी थी।"

इवानोफ विस्मय से मेरा मुंह देखने लगा। पूछा:—

"तुम्हें कैसे मालूम?"

"मेरे सामने ही सब कुछ हुआ। मैं वहाँ मौजूद था।"

वह मेरे अति निकट चला आया और बोला:—

"तुम? वहां मौजूद थे?"

"हाँ, मैडम इरिना अलेक्जेण्ड्रोना मौराविफ ने मुझे खास तौर से बुला भेजा था।"

"मास्को की टेक्का नेत्री? क्या वह यहाँ है?"

"हां, वह मेरे ही लिये आई है। वह मुझे यह दिखलाना चाहती थी कि मेरा अन्त किस प्रकार होगा। वह बड़ा ही भावुक महिला है।"

"ओह! मेरे अभागे दोस्त!"

इवानोफ की सहानुभूति इतनी मार्मिक थी कि मैंने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये। उसकी हंसी गायब हो गई थी। मृत्यु के पंजे से यद्यपि उसका छुटकारा हो गया था तथापि वह मेरे लिये अत्यन्त चिन्तित हो गया। उसने धीमे शब्दों में मुझसे पूछताछ की। मैंने अपने बारे में उसे सारी बातें ब्योरे के साथ बतला दीं। मेरी बातें सुनकर उसने कहा:—

"मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ?"

"मेरे दुर्भाग्य को तुम मिटा नहीं सकते ?"

"शाम हो रही थी। मैं बिस्तर पर पड़ गया और हलकी झपकी ले ली? इवानोफ भी एक कोने में पड़ रहा। उसकी सारी खुशी न जाने कहाँ गायब हो गई थीं ? उसके मस्तिष्क में अनेक तरह के विचार उठते रहे। रात बारह बजे मैं चौंक कर उठ बैठा। मेरे अन्धकारपूर्ण मस्तिष्क में प्रकाश की एक क्षीण रेखा लगातार प्रगट होने लगी। मैंने धीरे से पुकारा:—इवानोफ !"

"क्या कहते हो ?"

"मेरी बात सुनो।"

वह उठ कर मेरे पास बैठ गया। मैंने उससे कहा:—

"मैंने एक हजार डालर छिपाकर रखा है।"

"हजार डालर !"

"हाँ, उस ओर कोने में दो खपरैल के नीचे मैंने उन्हें छिपा कर रख दिया है। क्या उनकी मदद से किसी को जीता नहीं जा सकता ?"

"इसका उत्तर हाँ और नहीं दोनो हो सकता है। यह जुए का खेल है।"

"मैं इन लाल संतरियों को मिलाना नहीं चाहता। मुझे एक दूसरी बात सूझी है। मेरी बातें गौर से सुनो और उन्हें याद कर लो। ट्राबेजोएडा के आस-पास नार्दन स्टार नामक एक छोटे जहाज पर मेरे कुछ दोस्त यात्रा कर रहे हैं। उसमें बेतार का तार है। मान लो कि तुम्हें जार्जिया से आगे बढ़ने का हुक्म मिल जाय तो क्या तुम अर्मेनिया के पास उसका पता लगाकर निकोलाई से नार्दन स्टार को संवाद भेज सकोगे ?"

"निकोलाई में सार्वजनिक बेतार का तार घर है या नहीं, यह मैं नहीं जानता। लेकिन जहाँ तक मुझे याद है, बन्दरगाह के फाटक पर बेतार के तार का एक यन्त्र है। यदि उसका चालक राजी हो गया तो मैं तुम्हारी

सहायता कर सकूँगा। सब कुछ उसी पर निर्भर करता है।"

"यदि तुम उसे हजार डालर का प्रलोभन दोगे तो वह निश्चय ही विदेशी जहाज के लिये संवाद भेजना स्वीकार कर लेगा। मेरा यह भी अनुमान है कि यदि चर्पिस्की को पचास हजार डालर दिया जाय तो वह मुझे भगा देने के लिये राजी हो जायगा। तुम्हारा क्या ख्याल है ? क्या तुम मेरे लिये इतनी झंझट और खतरा उठाने के लिये तैयार हो सकोगे ?"

इवानोफ क्षण भर मौन रहा। अन्त में बोला:—

"तुम्हारी सहायता करने के अपराध में यदि मुझे पुनः गिरफ्तार होना पड़े तो भी मैं इसके लिये तैयार हूँ। मैं केवल एक सहायता चाहता हूँ। मान लो कि मैं अपने प्रयास में सफल हुआ और तुम्हें इस जेल से बाहर निकालने में समर्थ हुआ तो तुम्हारे मित्र मुझे कुस्तुन्तुनिया पहुँचा देंगे।"

"मैं तुम्हें इसके लिये वचन देता हूँ।"

"जेल से बाहर होने के बाद मैं सबसे पहले यही काम करूँगा। मुझे क्या संवाद भेजना होगा ?"

"क्या तुम्हारे पास पेंसिल है ?"

"नहीं, लेकिन मेरी याददाश्त काफी अच्छी है। इसके अलावा कोई लिखित सबूत साथ न रखना ही अच्छा है।"

"ठीक कहते हो। तुम यह संवाद भेजना:—"पति की हालत अत्यन्त खराब है। जहाज लेकर शीघ्र निकोलाई पहुँचने का प्रयास करें।"

"संवाद किसके नाम से जायगा ?"

"किसी का नाम नहीं दिया जायगा क्योंकि संभव है कि कोई सोवियत स्टेशन भी यह संवाद ग्रहण कर सकता है।"

"क्या तुम्हीं बीमार पति हो ?"

"हाँ, मुझसे अधिक बीमार कौन हो सकता है ?"

"क्या जहाज का मालिक इस संकेत को समझ जायगा ?"

"उन्हें समझ जाना चाहिए। मेरी पत्नी का ही वह जहाज है और वे उस पर हैं।"

उस हालत में भी इवानोफ को मजाक सूझ गया। उसने कहा:—

"तुम इस तरह जेल में सड़ रहे हो और तुम्हारी पत्नी को सैर की सूझी है !"

मैंने उसे सारी स्थिति समझा दी। मेरी बातों में उसे बड़ा मजा आ रहा था। अन्त में उसने कहा:—

"हमलोगों को इस सबंध में ब्योरेवार बातें कर लेनी चाहिए। जेल से बाहर होते ही मैं बेतार के अड्डे पर जाऊंगा। मान लो कि तुम्हारा डालर काम कर गया और उसने सवाद भेजना स्वीकार कर लिया। यह भी मान लो कि श्रीमतीजी ने तुम्हारी पुकार सुन ली और वे तुम्हारी मदद के लिये निकोलाई दौड़ पड़ीं। उसके बाद मैं क्या करूँगा ?"

"ज्योंही जहाज किनारे पहुंचे, तुम सारी स्थिति लिखकर श्रीमती के पास भेज देना। उन्हें सलाह देना कि वे चपिस्की को जहाज पर निमंत्रित करें और उसके सामने यह प्रस्ताव रक्खें कि यदि वह मेरी रिहाई कर दे तो उसे पचास हजार डालर दिया जायगा। इसके बाद की बात हमलोग देख लेंगे। मैं तुमसे यह कहना व्यर्थ समझता हूं कि यदि तुम्हारी सहायता से मेरी मुक्ति हो गई तो तुम्हें सदा के लिये सोवियत के जुल्म से ही मुक्ति नहीं मिल जायगी बल्कि अमेरीका में मैं तुम्हारी संगीत-विद्या को चमका दूंगा।"

उसने कहा—"दोस्त ! तुम्हारी बातों से मेरे मुंह में पानी आ रहा है। लेकिन हम दोनों के दोनों अपने जीवन को खतरे में डाल रहे हैं।"

"यह तो ताश का खेल है। हारे तो गये। जीते तो रबर। लेकिन जीतने

पर जो पुरस्कार मिलनेवाला है उसका ख्याल कर यह खेल खेलने लायक है। तुम्हारा क्या ख्याल है? इस काम में मेरी सहायता कर तुम अपना और अपनी प्रेयसी, दोनों का भविष्य उज्ज्वल बना लोगे क्योंकि बाद को वह न्यूयार्क में तुम्हारे पास पहुँच जायगी। मैं उसकी सारी व्यवस्था कर लूंगा। देखो मित्र! इन साम्यवादियों की विचारधारा को तुम मुझसे ज्यादा समझते हो। क्या तुम समझते हो कि पचास हजार अमेरिकन डालर सामने देखकर चपिंस्की क्षण भर के लिये भी दृढ रह सकेगा? वह डगमगा नहीं जायगा?"

इवानोफ ने अपनी आँखें बन्द कर लीं। क्षणभर तक वह कुछ सोचता रहा। उसने मेरा दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिया और कहाः—

"मैं तुमसे पक्का वादा करता हूं। या तो हम दोनों रिहा होंगे या फिर यहीं मरेंगे। कहाँ हैं तुम्हारे डालर! मैं उन्हें छिपाकर बांध लूंगा और कल ही इनकी करामात देखूंगा।"

× × ×

सबेरे इवानोफ की रिहाई हो गई। उसके जाने के बाद मेरा समय मुश्किल से कटने लगा। एक-एक क्षण पहाड़-सा प्रतीत होता था। मेरी मानसिक स्थिति का अनुमान करना सहज नहीं है। मैं उसके प्रयत्नों की कल्पना करने लगा। मैंने देखा कि वह बेतार के तार के चालक के पास पहुँच गया है और जहाँ का समस्त वातावरण सन्देह से ओतप्रोत है और जहाँ लोग परछाईं से भी भय खाते हैं वहाँ वह बड़ी चतुराई से अपना काम निकालने के प्रयत्न में है।

उस दिन सुबह से शाम तक मेरे सेल में कोई नहीं आया। दोपहर को सदा की भाँति जेलर खाना देने आया था। मैं अधीर हो रहा था और रह-रहकर चौंक पड़ता था। मैं अपने सेल में टहलता रह गया। मेरे सामने रह-रह कर इवानोफ का चेहरा नाच उठता था। और किसी का ख्याल मुझे नहीं था। आशा और

निराशा के अगाध समुद्र में मैं गोते लगा रहा था। कभी मैं डूबता और कभी उतराता। इवानोफ के हवाले मैंने हजार डालर कर दिये थे। पर मुझे उसकी नेक-नियती का क्या पता था! अपनी जान को इस तरह खतरे में डालने की अपेक्षा वह उन रुपयों से अपना काम चलाने की बात क्यों नहीं सोचेगा? वह स्वतंत्र था। वह ऐसे देश में था जहाँ के लोग जिम्मेदारी और प्रतिष्ठा का कोई मूल्य नहीं समझते। तब वही क्यों प्रतिष्ठा की झूठी आंच में अपने को झोंकने का यत्न करेगा!

दिन बीता! रात आई। लालटेन की उसी टिमटिमाती लौ के दर्शन हुए। इस वक्त लेडी डायना की याद आ गई। इस समय वह क्या करती होगी? निश्चय ही वह वरिचकिन के साथ लन्दन में होगी। मेरा कोई समाचार न पाकर वे लोग चिन्तित और परीशान होंगे। वोकजल होटल के पते से उन्होंने मुझे तार भी दिया होगा जिसे टेक्का ने जप्त कर लिया होगा। तार का भी उत्तर न पाकर वे बहुत अधिक चिन्तित होंगे। मैंने कल्पना की कि वह रूपसी बकलें स्क्वायर के अपने महल में मेरे खत की प्रतीक्षा में होगी क्योंकि मेरी रिपोर्ट प्राप्त करने के बाद ही वह वरिचकिन को दिया हुआ अपना वचन पूरा करेगी। वरिचकिन अधीर होकर मेरी रिपोर्ट की प्रतीक्षा में होगा। लेडी डायना तरह-तरह की पोशाकों से अपने को सुसज्जित कर वरिचकिन पर अपना मोहनी जादू डालती होगी और गरीब वरिचकिन को तड़पाती होगी।

मुझे वरिचकिन की हालत पर दया आ गई। बोलशेविक होने पर भी वह उतना धूर्त नहीं प्रतीत हुआ, अन्यथा वह इस रमणी के जाल में कभी भी नहीं फस सकता था। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि लेडी डायना अपने वंश की मर्यादा पर लात मार कर कभी भी वरिचकिन से शादी कर सकेंगी।

XX XX XX

दूसरे दिन मुझे मैदान में एक घंटा टहलने की अनुमति दी गई। प्रातःकाल

की मधुर बयार ने मुझ में कुछ स्फूर्ति डाल दी। मैं नल पर नहा लेना चाहता था लेकिन लाल संतरी मुझे इतनी सुविधा देने के लिये तैयार नहीं था।

लाचार मैं मन मारे अपने सेल में लौट आया। सूर्य की रोशनी से मेरी आँखें इस तरह चौंधिया गई थीं कि सेल में सहसा मुझे कुछ सूझ नहीं पड़ा। क्षण भर बाद मैंने देखा कि इरिना वहाँ पहले से ही खड़ी है। उसने उसी तरह मेरा उपहास करते हुए नमस्ते किया।

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। अपने बिस्तर पर बैठ गया। उस समय मेरी हालत ऐसी नहीं थी कि मैं उसके साथ वाग्युद्ध में प्रवृत्त होता। इसलिये मैंने उसकी पूरी उपेक्षा की। वह चुपचाप क्षण भर मेरी ओर देखती रही। अन्त में बोलीः—

"प्रिंस सेलिमन! आपकी दाढ़ी तेजी से बढ़ रही है। चन्द दिनों में ही आप उस बोल्शेविक की तरह प्रतीत होने लगेंगे जो केवल किसी पूंजीपति की पत्नी के आनन्द के लिये ही अपनी दाढ़ी बनवाता है।"

मैंने झुँझलाकर कहाः—

"मेडम! उन बातों की चर्चा न कीजिये। यहाँ हम दोनों दो रास्ते पर हैं। कृपाकर अपने तीखे तीर उन कमजोर दिमागवालों और सोवियत संघवालों के लिये ही सुरक्षित रखिये जो बड़ी उत्सुकता से आपकी बातें सुनते हैं।"

इरिना ने मेरी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने अपना कहना जारी रखाः—

"लेकिन मैं पूछती हूं कि तुम्हारे समान प्रिंस सेलिमन और गोर्की द्वारा चित्रित किसी मसालची में क्या अन्तर है। केवल इतना ही तो कि तुम्हें अपनी दाढ़ी पर उस्तुरा फेरने और साबुन लगाने का रोज मौका मिलता है पर उसे नहीं। शरीर-शास्त्र के विद्वानों ने यह साबित कर दिया है कि निरक्षर भट्टाचार्य और बुद्धिमान दोनों के मस्तिष्क का वजन समान होता है। केवल अन्तर

होता है थायरायड ग्लैएड का। शायद! लेकिन उसका क्या प्रभाव पड़ता है इसे समझने में समय लगेगा। मैं तो केवल विज्ञान के अन्वेषकों और विज्ञान के विकास करनेवालों को ही विद्वान मानती हूं। बाकी सब लोग उन नक्षत्रों की तरह हैं जो सूर्य के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं। मेरी बात से नाराज न होना। मुझे तुम्हें कुढ़ाने में बड़ा मजा आता है। इसमें मुझे जो क्षणिक आनन्द मिलता है उसे इस तरह प्राप्त करने का अधिकार मुझे है। तुम्हारा धीरे-धीरे जो ह्रास हो रहा है उसे देखकर खुशी मनाने ही मैं यहाँ आती हूँ। यदि टंक्का दो सप्ताह तक तुम छोड़ दें और तुम्हारे जीवन का अन्त न करें तो तुम सचमुच देखने लायक हो जाओगे। तुम्हारे पैन्ट का रंग तो धूमिल हो ही चला है, उसकी कलप भी चली जायगी जो तुम अभिमानियों के गर्व की निशानी है। तुम्हारा मुड़ा-चुड़ा कोट, तुम्हारा मटमैला कालर, तुम्हारे गन्दे नख, तुम्हारे पिचके गाल, सब मिलकर तुम्हारी सुन्दरता को उतना ही बढ़ा देंगे जितना एक के अंक को शून्य बढ़ा देता है। मैं तुम्हारे उस चित्र की कल्पना कर आनन्द से पुलकित हो उठती हूं। समाज से निकाले हुए, जूंओं के शिकार, बदबू से भरे तुम अपने समाज के कितने सुन्दर उदाहरण होगे। तुम उस बुलबुले के समान होगे जो लोकतंत्र के उस धुएं पर उफनाता रहता है जिसे लोग राजतंत्र का सिरमौर कहते हैं। क्या तुम्हें कुछ नहीं कहना है?"

"नहीं, मैडम!"

"मेरे व्यंगबाणों का तुम पर अब कोई असर नहीं होता। यह अनोखा और विचित्र परिवर्तन है। मैं चाहे कितना प्रहार करूं, तुम हिलते-डोलते नहीं। मालूम होता है कि तुम श्रान्त होते जा रहे हो। क्या तुम्हारा दर्प चूर हो गया? क्या तुम्हारा मिथ्याभिमान इतना जल्द तहस-नहस हो गया?"

मेरा मौन मैडम मौराविफ को और अधिक उत्तेजित कर रहा था। उसने

अपने काले जूतों को जमीन पर जोर से पटक कर कहा:—

"प्रिंस ! मैं तुमसे उत्तर चाहती हूं।"

मैंने निरपेक्ष भाव से उसकी ओर देखकर कहा:—

"आपकी अतिशय कृपा होगी यदि आप मुझे अकेला छोड़ दें।"

हमलोगो ने चुपचाप एक दूसरे की ओर घूरकर देखा। वह जोर से हँसी। उसकी उस हँसी में क्रूरता भरी थी। उसने कहा:—

"वह दिन दूर नहीं है जब तुम भी मेरे सामने उसी तरह नंगे खड़े होगे जिस तरह चोखोचेफ खड़ा हुआ था। तुम मृत्यु का आलिंगन करने के लिये अपने कपड़े उतार दोगे। वह तुम्हारे लिये नया अनुभव होगा। उस दिन तुम्हें पेरिस का अपना वह कमरा याद आवेगा जब तुम अपनी काम-वासना को तृप्त करने के लिये नंगे हो जाते थे। लेकिन इस बार उसका अभिप्राय कुछ दूसरा होगा। न यहाँ फूलों के गुच्छे होंगे और न अंगूरी शराब।"

इरिना मेरे एक दम निकट चली आई। उसके चेहरे से घृणा के भाव टपक रहे थे। उसकी आँखों से क्रोध के अंगार बरस रहे थे! वह कहती गई:—

"तुम्हें याद होगा कि चोखोचेफ को मेरे सामने कपड़ा उतार कर नंगा होने में शर्म आ रही थी। लेकिन मैं तो तुम्हें पूरी तरह नंगा देखूंगी। तुम्हारे अन्त से पहले तुम्हें नीचा दिखाने की वह चरम सीमा होगी।

मैं दीवार के सहारे खड़ा हो गया और बोला:—

"तुम मुझसे इतना ज्यादा नफरत क्यों करती हो? इन सबका क्या कारण है?" मेरे प्रश्न से उसकी उत्तेजना और बढ़ गई। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। मैंने कहा:—

"मैं सचसच कहता हूं कि मैं तुम्हारी इस कठोर घृणा और क्रोध का कारण समझने में असमर्थ हूं। यदि मैं तुम्हारा प्रेमी होता और तुम्हें धोखा

दिये होता, ठगे होता, अपमानित किये होना, असभ्य व्यवहार किये होता तो तुम्हारा यह व्यवहार किसी प्रकार जायज माना जाता और तुम्हें मुझसे बदला लेना यथार्थ होता। लेकिन जब तुम्हें सारी बातें सही-सही मालूम हैं तब तुम्हें वरिचकिन पर क्रोध करना चाहिये, न कि मुझपर। उसने जो कुछ किया है उसका बदला तुम मुझसे लेना चाहती हो। क्या तुम्हारा यह व्यवहार न्याय की दृष्टि से अशोभन नहीं है?"

इरिना ने अपने दोनों कन्धों को चमका कर कहा:—

"न्याय! वह निरर्थक शब्द है। प्रलयकाल में जब तुम्हारे ईश्वर सारी पृथिवी को जलमग्न कर देते हैं और भले-बुरे सबको जलराशि की गोद में सुला देते हैं, उस समय क्या वे न्याय को ताख पर नहीं रख देते? कमजोरों को बलवानों से रक्षा पाने के लिये यह बहाना मात्र है। हम बोलशेविक लोग केवल शक्ति को मानते हैं। इसके सामने सब कुछ तुच्छ और हेय है।

"उस लौह पुरुष ने भी यही कहा था।"

"लेकिन उसके बाद! जिसकी लाठी उसकी भैंस! तुम लोगों ने राष्ट्र-संघ की स्थापना की। मास्को के लोग उसकी खिल्ली उड़ाते हैं। यह तो बूढ़ों का खिलवाड़ मात्र है। उनके ही जवान बच्चे उनकी कहाँ परवाह करते हैं। राष्ट्रसंघ! कैसी अनोखी सूझ है! संसार के कोने-कोने में घृणा फैल रही है! संसार की पीली जातियाँ हमलोगों से प्रेरणा पाकर अंगड़ाइयाँ ले रही हैं। निर्दयता के साथ कुचले जाने पर भी जर्मन लोग खड़ा होने का प्रयास कर रहे हैं। अंग्रेज लोग फ्रांसीसियों को इसलिये गले लगा रहे हैं कि मौका मिलते ही वे उनका गला घोंट देंगे। विश्व-शान्ति के सिद्धान्त पर तभी विचार किया जा सकता है जब संसार में सद्भावना, उदारता, सदाशयता, विवेक कायम हों, लोग घृणा, डाह और मत्सर का त्याग कर दें। इसके लिये तीन-

चार हजार वर्ष का समय चाहिए। लेकिन जब तक ऐसा युग नहीं आता तब तक तो प्रत्येक व्यक्ति को अपनी देखभाल करनी ही होगी, अपना घर सम्हालना ही होगा। यही कारण है कि आज तुम हमलोगों के कैदी हो। मै अकारण तुम्हारे पीछे नहीं पड़ी। एक सुन्दरी महिला का विदूषक बनकर तुमने मेरे प्रेमी को मुझ से अलग किया। मेरे हृदय को चूर-चूर कर डाला। ऐसी हालत में मेरे लिये दूसरा चारा ही क्या था। तुम मुझसे दूसरे बर्ताव की आशा नहीं कर सकते? इसके लिये तीन अपराधी हैं, लेडी डायना, वरिचकिन और तुम? मैं बारी-बारी से तीनों से अपना बदला चुकाऊंगी। संयोग की बात है कि सबसे पहले तुम ही मेरे जाल में फंस गये। इसलिये सबसे पहले मैं तुमसे निपटूंगी; तुमसे निपट लेने के बाद मैं लेडी डायना से अपना बदला लूंगी। और मेरा सबसे आखिरी शिकार वरिचकिन होगा। यदि तुम्हें इस बात से कुछ तसल्ली मिले तो मैं तुम्हें यह बतला देना चाहती हूं कि मेरा सारा ऋण तुम अकेले नहीं चुका सकते।"

"मै समझता हूँ कि तुम्हारे इस रोष का कारण वर्ग-द्वेष है और उसी से प्रेरित होकर तुम यह सब कुछ कर रही हो। प्रेम का तो तुमने आड़ मात्र लिया है।"

"इसमें दोनों बातों का सम्मिश्रण है। तुम्हें या लेडी डायना को मैं केवल इसलिये घृणा की दृष्टि से नहीं देखती कि तुमलोगों ने मेरे प्रेमी हृदय को कुचलने का प्रयत्न किया है। बल्कि इसलिये भी कि तुम लोग ऐसे वर्ग के हो जो घृणा का पात्र है।"

"लेकिन जिसे देखकर तुम्हें डाह होती है।"

"और क्योंकि समाज के तुम लोग असली जहरीले कीड़े हो। हमलोगों के तथा हमलोगों के आदर्श के बीच तुमलोग बहुत बड़े बाधक हो। साम्यवाद की

मशीन के तुम लोग वे टूटे दाँत हो जो उसे आगे बढ़ने में वाधा पहुँचाते हैं। जिन दिनों मैं साधारण जीवन यापन कर पेट्रोग्रेड में शिक्षा प्राप्त कर रही थी, लेडी डायना पानी की तरह रुपये बहा रही होगी।

"लेकिन इसके लिये तो तुम्हें उदास होने की आवश्यकता नहीं है। रूस के बाहर कम से कम जर्मनी में—तो तुमलोगों की शान-शौकत किसी अमीर से कम नहीं रहती।"

"इसका एकमात्र श्रेय क्रान्ति को है।"

"मैं भी तो यही कहने जा रहा था। तुमलोगों में से जिन्हें प्रधानता मिल गई है वे लोग तुम्हारे ही समाज के मजदूरवर्ग की औरतों की ईर्ष्या के कारण बन रही हैं। और, अपने इस आचरण से तुम लोग भविष्य के भेद-भाव का बीज बो रही हो। गाड़ी का जो चक्का नीचे था, वह ऊपर की तरफ जा रहा है लेकिन वही फिर नीचे आयेगा। जिस दिन तुमलोगों का यह चक्र पढ़े लिखों पर उसी तरह चलने लगेगा जिस तरह आज अनपढ़ों पर चल रहा है, उसी दिन तुम्हारे यहां संघर्ष शुरू हो जायगा। लेकिन मुझे इस बात से संतोष है कि क्रान्ति की तुम्हारी प्यास उसी प्रकार उग्र है। मेरी बातें उनमें लेशमात्र की भी कमी नहीं ला सकतीं। इसलिये मैं तब तक यहां अपना दिन काटता रहूँगा जबतक तुमलोग मेरे भाग्य का निर्णय न कर लो। उस दिन तुम्हें यह अधिकार प्राप्त होगा कि तुम मुझे नंगा करवा डालना और मेरे शरीर को जल्लादों के हाथ सौंप देना कि वे निर्मम होकर मेरी हत्या कर डालें।"

---

## १५

धीरे-धीरे दिन समाप्त हुआ। एक-एक पल पहाड़ की तरह प्रतीत होता था। उसी शाम को मेरा जेलर बदल दिया गया और उसकी जगह पर वही टेका आया जिसने मुझे वोकजल होटल में गिरफ्तार किया था। इस पर मुझे विस्मय तो हुआ पर इसका कारण मेरी समझ में नहीं आया। उसने मुझे कुछ बासी रोटियाँ दीं और कहा:—

"मेरा साथी कहीं भेज दिया गया है। इसलिये तुम्हें भोजन देने के लिये मुझे भेजा गया है।"

इसके बाद उसने मुझे तिरछी निगाहों से देखकर कहा:—

"उसे बहुत देर नहीं लगेगी। जल्द ही आ जायगा।"

"क्या आप भी चले जा रहे हैं?"

"नहीं, लेकिन तुम्हारी मुक्ति होने जा रही है। अगर मुक्ति न हुई तो शीघ्र ही मारे जावोगे। ऊपर तुम्हारे बारे में बातें हो रही थीं। मैंने सुन लिया है। मास्को से मैडम मौराविफ के नाम एक तार आया है। वे लोग वही तार पढ़ रहे थे। उन लोगों ने कहा:—"कल रात को।" इससे मैंने यह अन्दाज किया कि कल रात को तुम्हें कोई न कोई निश्चित खबर अवश्य दी जायगी। चाहे वह मृत्यु का संवाद हो या मुक्ति का; लेकिन मेरा अनुमान है कि वह मृत्यु का ही संवाद होगा।"

इसका परिणाम यह हुआ कि वह रात भी मेरी अनेक तरह के संकल्प-विकल्प में बीती। मैं इसी चिन्ता में था कि इवानोफ मेरे बारे में क्या कर रहा था। क्या नार्दन स्टार पर समाचार भेजने में वह सफल हो सका। रात भर की चिन्ता, परीशानी और जागरण से मैं नितान्त श्रान्त हो गया। भोर के वक्त मैं सो गया। सबेरा होते ही वे लोग टहलने के लिये मुझे जगाने आ गये।

दो संतरी थे। एक तो वही आगनवाला था लेकिन दूसरे को मैं नहीं पहचानता था। यह नया संतरी मुझे बराबर घूर घूर कर देखता था। उसका इस तरह घूरना मुझे बहुत बुरा लगता था। वह मुझे साथ लेकर आगे बढ़ा।

वह मुझे एक तरह के पेड़ों की झुरमुट में लगाया और सामने जो दरवाजा था उसे खोलने के लिये कहता गया। मैंने उसकी बात मान ली। दरवाजा खोलकर मैंने वहां जो कुछ देखा उसे देखकर अवाक् रह गया। मेरा दोस्त इवानोफ लकड़ी के कुन्दों के बीच छिपा बैठा था। मेरे मुंह से निकल पड़ा:—

"अरे तुम ! यहां किस तरह ?"

"हमलोगों को जल्द सब कुछ समाप्त कर लेना है। बस दस मिनट से ज्यादा देर तक हमलोग यहां नहीं रह सकते। पहली बात तो यह है कि जो टेका तुम पर पहरा देने के लिये तैनात है उसे मैंने खरीद लिया है।

"लेकिन मेरे संवाद का क्या हुआ ?"

"ठहरो, बतलाता हूं। मैं सिलसिले से सारी बातें कह जाता हूं। तुम्हें सब कुछ मालूम हो जायगा। यहां से छूटने के बाद मैं सीधे बन्दरगाह गया। मैं वहां मलाहों के साथ बैठ गया और उनसे घुलमिलकर मैं बातें करने लगा। मुझे मालूम हुआ कि रेडियो अड्डे का चालक पुराने शासन काल का कोई जहाजी अफसर है। वह बूढ़ा है इसलिये बोल्शेविकों ने उसे निरापद समझ कर रख लिया है। कोई उसे तंग नहीं करता। मैं उससे मिला। उसका नाम ग्रेगर लबनफ है। मैंने उसे शामको भोजन का निमंत्रण दिया। उसने मुझे अपने अतीत और वर्तमान जीवन का सारा वृत्तान्त कह सुनाया। धीरे-धीरे हमलोग आपस में घुलमिल गये। एक दूसरे की रामकहानी दिल खोल कर कही सुनी गई। वर्तमान शासन की दोनों ने निन्दा की। उसने मुझे अपना बेतार के तार का यंत्र दिखलाया। उसने कहा कि साधारण तौर से इधर से गुजरनेवाले

जहाजों को मैं केवल सरकारी संवाद दे सकता हूं और कोई समाचार देने की सख्त मनाही है मुझे। उसका विश्वास जीत लेने क बाद मैंने अपना उद्देश्य उसे समझाया। मैंने उसके सामने सारी बातें सच-सच कह दीं। उसे तुम्हारी हालत पर बड़ी करुणा आई। उसने कहा:—"मैं तुम से एक पैसा भी नहीं लूंगा, बल्कि मुझसे जो भी मदद हो सकेगी वह मैं करूँगा।"

"तब तो वह बहुत भला आदमी मालूम होता है।"

"रातको दस बजे वह अपने यंत्र के पास बैठा और नार्दर्न स्टार के यंत्र के चालक के साथ संपर्क स्थापित करने का यत्न करने लगा। उसे बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। अन्त में वह संपर्क स्थापित कर संवाद दे सका और उत्तर क लिये संकेत किया। उत्तर आने में देर नहीं लगी। सवा दस बजे नार्दर्न स्टार के वेतार के चालक ने निम्न लिखित संवाद भेजा:—

"संवाद मिला। कल ग्यारह बजे दिन तक निकोलाई के बन्दरगाह पर पहुंच जायंगे।"

और यही शुभ संवाद मैं तुम्हें देना चाहता था। आज सबेरे से ही मैं स्कूल की इमारत के पास चक्कर काट रहा था। यह सौ डालर की करामात है। लाल मन्तरी की जेब में स्थान पाने के बाद उसने यह संयोग उपस्थित कर दिया और मैं तुमसे मिल सका।"

इसी समय दरवाजे पर किसी ने जोरसे ठोकर मारी। रूसी भाषा में किसी के बोलने के शब्द भी मेरे कान में पड़े। उसका उत्तर इवानोफ ने दिया। उसके बाद उसने धीरे से मेरे कानमें कहा:—

"हमलोगों को शीघ्रता करनी चाहिए। संतरी को डर है कि कहीं हमलोगों की बातचीत कोई सुन नहीं ले। मैं बन्दरगाह वापस जा रहा हूँ। जहाज के मेरे दृष्टिपथ पर आते ही मैं किराये की नाव पर सवार होकर वहाँ चला

जाऊँगा। इसके बाद क्या होगा, वह ईश्वर की मर्जी पर है।"

"मित्र ! तुम से जो कुछ भी हो सके, करना ! मुझे मालूम हुआ है कि मैडम मौराविफ और चर्पिस्की आज रातमें ही मेरे भाग्य का फैसला करेंगे। मेरा दिन करीब है, बल्कि मैं चन्द घंटों का ही मेहमान हूँ।"

"जाकर चुपचाप टहलो। तुम्हारे लिये मैं असंभव को भी संभव कर डालने की चेष्टा करूँगा। साहस से काम लो। धैर्य मत खोवो मेरे दोस्त।"

उस दिन मुझे भोजन की ओर आँख उठाकर देखने की भी इच्छा नहीं हुई। मुझे बराबर यही डर बना रहता था कि इवानोफ नार्दर्न स्टार तक नहीं पहुँच सकेगा। इससे मेरी बुरी हालत थी। तीसरा पहर भी गुजर गया। शाम होते ही टेका संतरी ने लालटेन जला दी। वह अपने किसी साथी से बातें कर रहा था। मैंने उसे बातें करते सुना। वे बड़ा उत्तेजित हो कर बातें कर रहे थे। लेकिन मेरी समझ में कुछ नहीं आया। मैंने छेद में अपनी आँखें लगा दीं और उनको देखने लगा। वे हँस रहे थे। अचानक उन्होंने अपनी आवाज धीमी कर दीं। इसके बाद फिर जोरों से बातें करने लगे। फिर खिलखिला कर हंस पड़े। उनमें से एक ने मेरी ओर अंगुली से इशारा किया। वे दोनों मेरी तरफ बढ़े। मैं वहाँ से सरक कर अपने बिस्तर पर लेट गया। मेरा हृदय धड़कने लगा। मैंने समझ लिया कि अभी दरवाजा खुलेगा और मेरे भाग्य का फैसला मुझे सुना दिय जायगा। वे दोनों डेहरी पर आकर रुक गये।

मेरे जेलर का साथी मेरी ओर बार बार देखता रहा। बातचीत का सिलसिला फिर जारी हो गया। पहले से अधिक जोश के साथ बातें हो रही थीं और हंसी का वेग भी पहले की अपेक्षा तेज होता जा रहा था। अपनी वेदना को छिपाते हुए मैंने पूछा:—

"कोई संवाद नहीं है भाई ?"

मेरे जेलर ने अपने साथी से कुछ बातचीत की। इसके बाद बोला:—

"जहां इस समय तुम हो, वहां तुम्हें सारी स्थिति बतलाने में कोई हर्ज नहीं है। आज रात को तुम्हारा अन्त हो जायगा। इसलिये तुम्हें अधिक यातना नहीं सहनी पड़ेगी। लेकिन तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि तुम्हें लेकर मौराविफ और चपिंस्की में घनघोर विवाद उठ खड़ा हुआ है।"

"मुझे लेकर?"

"हां, इसीलिये तो मेरा साथी तुम्हें अच्छी तरह देख लेना चाहता था। मास्को ने तार द्वारा सूचित किया है कि टस्का के स्थानीय अधिकारी ही तुम्हारे भाग्य का फैसला करें। मौराविफ चाहती है कि तुम्हारा अन्त शीघ्र कर दिया जाय। लेकिन इसके लिये चपिंस्की की अनुमति आवश्यक है। यहीं मामला जाकर अटक गया है? चपिंस्की राजी नहीं हो रहे हैं।"

इतना कह कर वह ठहाका मारकर हंसने लगा और अपने साथी के कन्धे पर जोर से हाथ पटका। इसके बाद उसने कहा:—

"चपिंस्की उस हुक्मनामे पर हस्ताक्षर करने के लिये तैयार है लेकिन वह चाहता है कि उसके बदले मौराविफ अपना सब कुछ उसके चरणों पर निछावर कर दें। लेकिन मौराविफ को यह स्वीकार नहीं है। चपिस्की का आबनूस सा चेहरा किसी की महिला को पसन्द नहीं हो सकता।

इतना कहकर वह पुनः एक बार ठहाका मार कर हंस पड़ा।

"इसके बाद क्या हुआ?"

"दोनों में घोर वादविवाद छिड़ गया। मौराविफ असाधारण महिला है। उसे ईश्वर की भी परवा नहीं, फिर वह आदमी की क्या परवा करती है। उसने अपने बेंत से चपिंस्की के सिर पर प्रहार कर दिया। इसका परिणाम

यह हुआ कि चपिंस्की ने तुम्हारी मौत के हुक्मनामे पर हस्ताक्षर करने से साफ इनकार कर दिया और दफ्तर छोड़ कर चला गया।"

"इसका परिणाम क्या होगा?"

"जहाँ तक तुम्हारा संबंध है इस घटना ने किसी तरह का हेरफेर नहीं होने वाला है। मौराविफ बड़े मजे म उसकी उपेक्षा कर सकती है। इसलिये तुम्हारे बचने के लिये कोई आशा नहा है। यदि मास्को चपिंस्की का साथ दे तो वह मौराविफ को केवल चिढ़ाने और नीचा दिखाने के लिये तुम्हें छोड़ सकता है। इससे तुम समझ सकते हो कि घटना-चक्र का रुख किस तरफ है। मैंने तुम्हें ये सब बातें इसलिये बतला दी कि तुम बड़े भले आदमी प्रतीत होते हो। यदि रात को दस बजे हमलोग तुम्हें लेने आवें तो तुम्हें विस्मय नहीं होना चाहिए। संभावना इसी बात की है।"

इतनी सूचना देने के बाद उसने इतमीनान के साथ फर्शपर पत्त से थूका और दरवाजे पर हाथ रखता हुआ कहाः—

"इतना तो तुम समझ ही सकते हो कि यह घटना बड़ी मजेदार है। चपिंस्की साधारण व्यक्ति नहीं है तोभी न जाने क्यों तुम्हारे लिये वह बहुत अधिक परीशान हो रहा है।"

इतना कहकर उन्होंने दरवाजा बन्द कर दिया और कहकहा लगाते हुए चले गये।

मेरी जिन्दगी के पाँच घण्टे और बचे थे क्योंकि इनके कहने के अनुसार रात बारह बजे के लगभग जल्लाद मुझे लेने के लिये आ सकते थे। मुझे जीवन की कोई भी आशा नहीं रह गई थी। इवानोफ के लिये यह संभव नहीं था कि इतने कम समय में ग्रिसेल्डा के पास मेरा सामाचार पहुँचा सकेगा और वह मुझे बचाने की सारी व्यवस्था कर सकेगी।

मुझे जीवन से एक तरह से निराशा हो गई। मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि मुझे किसी ने क्लोरोफार्म सुंघा दिया है और मैं निर्जीवसा हो गया हूँ। अपने बिस्तर पर मुर्दा के समान पड़ा हुआ मैं अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से इधर उधर दौड़ने दिया।

क्या मृत्यु सचमुच इतनी भयानक चीज है कि केवल दार्शनिकों और वेदान्तियों को छोड़ कर कोई दूसरा निरपेक्ष भाव से उसका आलिंगन नहीं कर सकता? क्या मनुष्य का सारा जीवन रेल के विश्राम-गृह के समान नहीं है जहाँ लोग गाड़ी की प्रतीक्षा में बैठे रहते हैं और गाड़ी निर्दिष्ट समय पर आकर उन्हें वहाँ से उड़ा ले जाती है? क्या हमलोगों को प्रत्येक दिन यह नहीं सोचना चाहिए कि आनेवाले दिन हमारा टिकट कट सकता है और हमें स्वर्ग या नर्क में पहुँचाया जा सकता है। लेकिन लोग इस बात को सदा भूले रहते हैं क्योंकि हमलोगों का अन्त अनिश्चित है। हमलोग यह नहीं जानते कि वह कब आवेगा। हमलोगों के मस्तिष्क की बनावट विचित्र है। इससे जब इस शरीर के अन्त का समय आता है तो हमलोग इसे चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं। लेकिन यदि यही बात लोगों को पहले से मालूम हो जाय तो हमलोग भय से व्याकुल हो जायं।

XX XX XX

मैं हड़बड़ा कर उठ पड़ा। कोई मेरे कमरे में घुस आया था और मेरा कन्धा पकड़कर मुझे झकझोर रहा था। मैं इतनी गाढ़ी नींद में सो रहा था कि मुझे आँखें खोलने और आगन्तुक को पहचानने में काफी समय लगा। आगन्तुक चर्पिस्की था।

यदि मेरी आँखों पर बर्फ का पानी भी छिड़का गया होता तो मैं इतना जल्दी सजग नहीं हो गया होता। मैं भौंचकसा उसकी ओर देखने लगा। उसने धीरेसे कहाः-

"प्रिंस, केवल दस मिनट हमलोगों के पास है। इतने समय में हमलोगों का

निकोलाई छोड़ देना होगा। पन्द्रह मिनट में हमलोगों ने नार्दर्न,स्टार पर सवार हो जाना होगा और पैंतीस मिनट में हमलोगों को रूसी जल-सीमा से बाहर हो जाना होगा अर्थात् कुल एक घंटे में हमलोगों को बोल्शेविकों के पंजे से बाहर हो जाना है यदि हमलोग जिन्दा रहना चाहते हैं।"

उसके शब्दों को सुनकर मैं किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो गया। मैं न डिला न डुला। उसने मेरा हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचा:—

"क्या बात है। तुम उठते क्यों नहीं। यदि तुम क्षण भर का भी विलम्ब करोगे तो तुम्हें गोली मार दी जायगी और मेरा पचास हजार डालर मारा जायगा।

"चपिंस्की! क्या तुम सच कह रहे हो? क्या सचमुच तुम मुझे—"

"उसने मुझे बोलने का अवसर नहीं दिया, बल्कि मुझे विस्तर से जबर्दस्ती घसीट कर बाहर की ओर खींच ले चला। उसने कहा:—

"यदि तुम्हें सन्देह है तो मैं यह सबूत पेश कर देना चाहता हूं।"

इतना कहकर उसने अपनी जेब से नोटों का बण्डल निकाल कर मुझे दिखाया।"

इस आकस्मिक भाग्य के परिवर्तन से मेरे शरीर में बिजली के समान स्फूर्ति पैदा हो गई। मैं उठ खड़ा हुआ और बोला:—

"मुझे बचा कर ले चलो। तुम्हारी रकम निश्चित है।"

उसने सावधानी से दरवाजा खोला और कहा:—"तेज कदम।"

उसने मुझे आगे किया और मेरे पीछे रिवाल्वर तानकर खुद चला। उसका रिवाल्वर मेरी गर्दन से सटा था। धीरे-धीरे वह मुझे रास्ता भी बतलाता जाता था कि मुझे किधर जाना है! सीढ़ी के ऊपरवाला लाल संतरी उठ कर खड़ा हो गया और मुझे चुपचाप जाने दिया। चपिंस्की ने रूसी भाषा में उससे कुछ कहा। हमलोग जेल का मैदान पार कर गये।

चर्पिस्की ने धीरे से कहाः—इस तरफ से।"

हमलोग सकड़ पर आ गये थे। उसने अपनी चाल तेज की और कहाः—

"जितना तेज चल सको उतनी तेजी से आगे बढ़ो! जब तक हमलोग जहाज पर नहीं पहुंच जाते तब तक हम लोग निरापद नहीं हैं।"

इतने दिनों तक मुझे जिस यंत्रणा में रहना पड़ा था और जो निकृष्ट भोजन मुझे मिला था, उससे मैं इतना कमजोर हो गया था कि मेरे शरीर में इतनी ताकत नहीं रह गई थी कि मैं निकोलाई के ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर दौड़ सकता। तोभी इस अप्रत्याशित छुटकारे ने मेरे अंग प्रत्यग में थोड़ी स्फूर्ति प्रदान कर दी थी। इसलिये मैं पूरा जोर लगा कर चर्पिस्की के पीछे पीछे चला जा रहा था। अन्त में हमलोग बन्दरगाह पर पहुंच ही गये। किनारा साफ था। कहीं किसी जहाज का नामोनिशान नहीं था। बन्दरगाह में माल ढोनेवाले दो तीन जहाज लंगर डालकर पड़े थे। बहुत दूर पर समुद्र में नार्दर्न स्टार की रोशनी दिखाई दे रही थी। इससे मुझे इतना इतमीनान तो हो गया। कि यह धोखामात्र नहीं है।

हमलोग सीढ़ी उतर कर जेटी पर पहुंचे। अचानक छाया से बाहर निकल कर एक मूर्ति हमलोगों के सामने आकर खड़ी हो गई।

मैंने पूछाः—"वह कौन है?"

चर्पिस्की—"इवानोफ।"

वह पास आ गया। मैंने अपने पुराने साथी और उद्धारक को पहचाना। मुझे देखते ही यह मुझ से चिपक गया। आज भी मैं उसे भूल नहीं सका हूं और कृतज्ञता के साथ उसका स्मरण करता हूं।

लेकिन चर्पिस्की इतना अधीर और उतावला हो रहा था कि उसे यह सब शिष्टाचार और प्रदर्शन अच्छा नहीं लगा। उसने पूछाः—"नाव कहां है?"

"व्यवस्था के अनुसार तो उसे दस बजे ही यहाँ पहुँच जाना चाहिये था।" इवानोफ ने कहा।

चर्पिन्स्की ने अपनी घड़ी की ओर देख कर कहा:—"तुम दस बजे की बात कह रहे हो। यहाँ दस बजकर दस मिनट हो गये।"

"मैं कुछ नहीं कह सकता।"

चर्पिन्स्की का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। उसने बारी बारी से इवानोफ और मेरी ओर देखकर कहा:—"मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि मुझे फंसाने के लिये तुमलोगों ने यह षड्यन्त्र रच रखा है।"

इवानोफ ने उसे शान्त करते हुए कहा:—"क्या मूर्खता की बातें कर रहे हो, दोस्त! इस तरह की बातें तो पागल ही कर सकता है। क्या केवल तुम्हारी ही जान खतरे में है? हमलोगों की नहीं। क्या हमलोग भी अपने बचाव के लिये चिन्तित नहीं हैं? क्या केवल तुम्हें फंसाने के लिये उन्होंने यह सब रुपया तुम्हें दिया? इतनी बड़ी रकम प्रिंस को बचाने के लिये ही तो दी गई? तुम्हारे मन में षड्यंत्र और विश्वासघात की बात कैसे पैदा हुई?"

चर्पिन्स्की ने तुरत माफी मांगी और कहा:—

"तुम्हारा कहना सही है। लेकिन तुम जानते ही हो कि यहाँ दीवाल को भी लोग सन्देह की दृष्टि से देखते हैं।"

इसके बाद वह मेरी ओर फिरा और बोला:—

"आप मुझे क्षमा करेंगे। यदि टेक्का के साथ आपको चार दिन भी रहने का अवसर मिल जाय तो आपको मेरे कथन की सत्यता का प्रमाण मिल जायगा। खैर, इन बातों को इस समय जाने दीजिये। हमलोगों का समय कीमती है। हमलोग यहाँ निरापद हैं और कुछ देर प्रतीक्षा कर सकते हैं।"

हमलोग समुद्र की तरंगों को देख रहे थे। काला सागर का पानी शान्त था। किनारे की तरफ कोई भी नाव आती दिखाई नहीं दे रही थी।

"संभव है उनकी नाव यहाँ पहुंचकर कहीं खड़ी हो।"

इवानोफ ने गर्दन हिलाकर कहा:—"मैं शामसे ही प्रतीक्षा कर रहा हूँ। कोई भी नाव किनारे नहीं आई है। हमलोगों को अब क्या करना चाहिए।"

चपिंस्की—"किनारे पर जो नावें खड़ी हैं, उन्हीं में से किसी को किराये पर लेकर हमलोग क्यों न नार्दर्न स्टार पर चलें। हमलोग जितना ही देर करेंगे, खतरा उतना ही ज्यादा बढ़ता जायगा।"

मैं—"चपिंस्की का कहना ठीक है। हमलोगो को शीघ्रता करनी चाहिए। यदि दो डांड़ों पर नाव चलेगी तो यमलोग बीस मिनट में नार्दर्न स्टार पर पहुँच जायगे।"

इवानोफ भी राजी हो गया। हमलोग किनारे की तरफ दौड़ पड़े। अचानक चपिंस्की की निगाह जहाज की तरफ गई। उसने कहा:—"नार्दर्न स्टार जहाज तो हिलडोल रहा है।

जहाज की चिमनी से धुआँ निकलने लगा था। यह देखकर हम तीनों निराशा के काले बादल से घिर गये।

इवानोफ—"इसका मतलब मेरी समझ में नहीं आया?"

"इसका मतलब तो साफ है कि नार्दर्न स्टार यहाँ से कहीं अन्यत्र जा रहा है।

मैंने दोनों का हाथ कसकर पकड़ लिया और कहा:—

"एक क्षण भी खोना खतरे से खाली नहीं है। हमलोगों को बेतार के तार के अड्डे पर तुरत पहुँचना चाहिए और नार्दर्न स्टार से संपर्क स्थापित करना चाहिए। जरूर कोई असाधारण बात हो गई है जिसका हमलोगों को पता नहीं है। हमलोग किसी भयानक नासमझी के शिकार हो रहे हैं।"

चपिंस्की ने मेरी बात का समर्थन करते हुए कहा:—"हमलोगों को वहीं चलना चाहिए।"

हमलोग बेतार के तार के अड्डे की तरफ दौड़ पड़े। हमलोगों की निगाह जहाज पर ही थी जो वहाँ से चलने की तैयारी कर रहा था।

इवानोफ मेरे पीछे हाँफता चला आ रहा था। मैंने उससे कहा:—"यदि हमलोग जहाज तक नहीं पहुँच सके तो हमलोगों का अन्त निश्चित है।"

उसने हाँफते हुए कहा:—"ईश्वर ही हमलोगो की रक्षा कर सकते हैं।"

हमलोग अड्डे पर पहुंच गये। कमरे के भीतर से रोशनी का मन्द प्रकाश आ रहा था जिससे हमलोगों ने समझा कि चालक अभी तक अड्डे पर ही है।

इवानोफ लपक कर दरवाजे पर पहुंच गया। हमलोग दबे पाव उसके पीछे चले। यहा पहुँचकर हमलोगो के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। कमरे के भीतर चालक के सामने मैडम मौराविफ खड़ी थीं। वह चुपचाप उनका मुंह देख रहा था और वे उसे कुछ हिदायत देने जा रही था। हमलोग सारी परिस्थिति को समझ गये। हमलोग जाल मे फंस गये थे। लेकिन चपिस्की ने अपने को तुरत सम्हाला और कहा:—

"हमलोगो का सर्वनाश हो गया। यदि हमलोग बचना चाहते हैं तो हमलोगों को असाधारण साहस से काम लेना होगा।"

इतना कहकर उसने दरवाजे पर धक्का दिया। दरवाजा खुल गया। हम लोग अन्दर चले गये। मैडन मौराविफ हमलोगो की तरफ घूमी। चपिंस्की बिजली की तरह उसपर टूट पड़ा और कड़ककर बोला:—"इसे रस्से से कस कर बाँध दो और इसके मुंह में कपड़ा ठूंस दो।"

हमलोग तुरत यह काम संपन्न करने में लग गये। मैंने मैडम मौराविफ

को उनके ही टेका की कैद में पाया। मुझे देखकर उन्हें अपार विस्मय हुआ। क्रोध से उबलते हुए उन्होंने कहा:—

"एक औरत पर तीन तीन पुरुष! ऐसी कायरता! शर्म नहीं आती तुमलोगों को।"

मैंने कहा:—"तुमने इमानदारी का उदाहरण कब संसार के सामने रखा। इस गुण से तुमलोगों का क्या संबंध?"

उसने चीखने और चिल्लाने का यत्न किया लेकिन नाविक ने उसका मुंह अपने हाथ से बन्द कर दिया और कहा:

"रानी! शोरगुल की जरूरत नहीं है। हमलोग जरा जल्दी में हैं ..... इवानोफ! इसके हाथ पैर कस कर किसी रस्से से बाँध दो। तब तक मैं इसके जहरीले मुंह में कपड़ा ठूंसने का उपाय करता हूं।...हाँ ठीक तो है...लेकिन एक गाँठ और दे दो......मैं अपनी महिला कामरेडों का एतबार नहीं करता......हाँ, अब दुरुस्त हो गया...प्रिंस! चलो हम तुम इसे उठाकर चालक के कमरे में डाल दें। जरा सावधानी से उठाना...इस तरफ। सुन्दर स्त्रियों के साथ उदारता से पेश आना ही पड़ता है चाहे वे मुंह पर थूकती हो क्यों न हो?

हमलोगों ने उठाकर मैडम मौराविफ को चालक के बिस्तर पर डाल दिया और दरवाजा सावधानी से बन्द कर दिया। इसके बाद हमलोग चालक के पास चले आये। चालक बड़ा घबराया हुआ था और इवानोफ उसे सारी बातें समझा रहा था।

इवानोफ ने हमलोगों का एक दूसरे से परिचय कराया। मैंने उससे पूछा:— "दोस्त! ईश्वर के नाम पर सच सच बतला दो कि मैडम मौराविफ यहाँ क्यों आई थी?"

"अब तो मेरा भाग्य आप लोगों के भाग्य के साथ ही बंध गया है। इसलिये मैं सारी बातें आप लोगों से कह दूंगा। या तो हम सबके सब यहीं मारे जायंगे या सब के सब इस गौरव नरक से उद्धार पा जायंगे।"

वह बातें करता जा रहा था और नार्दर्न स्टार के चालक से संपर्क स्थापित करने के लिये बेतार के तार का यंत्र भी घुमाता जा रहा था। उसने कहा:—

"आज रात को करीब दस बजे मैं सोने की तैयारी कर रहा था कि एक महिला मेरे केबिन में आई। उसका अधिकारपूर्ण रोब और उसके बातचीत के ढंग ने मुझे भयभीत कर दिया। उसने अपना नाम बतलाया तब तो मैं आपके दोस्त और इवानोफ के लिये चिन्तित और व्याकुल हो उठा। मेरा भय निराधार नहीं था क्योंकि मैडम इरिना मौरानिफ ने बिना किसी भूमिका के कहा:—

"मुझे मालूम हो गया है कि तुमने निकोलाई बन्दरगाह पर लंगर डाले हुए उस विदेशी जहाज के पास सवाद भेजा है। मुझे यह भी मालूम हो गया है कि वह जहाज प्रिंस सेलिमन की पत्नीका है। वह एक राजनीतिक कैदी की पत्नी है जिस कैदी के लिये मृत्यु की आज्ञा मास्को ने जारी की है। इसलिये मैं चाहती हूँ कि निम्न लिखित संवाद फौरन उस जहाज पर भेज दो।"

मैंने विरोध किया तब उसने कहा:—

"टका का हुक्म है। यदि तुम इसके अनुसार काम नहीं करते तो मैं अभी तुम्हें गिरफ्तार करा दूंगी।"

"मेरे लिये कोई दूसरा चारा नहीं रह गया था। मुझे उसका हुक्म मानना ही पड़ा। उसने मुझे निम्न लिखित पंक्तियां पढ़कर सुना दीं जो उसने कागज के एक टुकड़े पर लिख रखा था......प्रिंस सेमिलन! कृपया उन्हे पढ़िये।"

मैं झुक गया और संवाद को जोर से पढ़ने लगा। उसमें लिखा था:—

"प्रिंसेज सेलिमन ! आपके पति को निर्विघ्न बटौमके बन्दरगाह पर कल दोपहर तक वापस पहुँचा दिया जायगा। आप बिना विलंब वहां वापस जायं—"

—इवानोफ।

इवानोफ यह संवाद सुनकर दंग रह गया। उसके मुंह से निकल पड़ा:—

"तब उसे मालूम हो गया है कि मैं इस षड्यंत्र में शामिल हूं ?"

चपिंस्की ने बाधा देते हुए कहा:—"वह सब कुछ जानती है। लेकिन इस व्यर्थ की बातचीत में हमलोगों को समय नहीं खोना चाहिए। लवनफ ! क्या तुम उस जहाज से संपर्क स्थापित कर सके ?"

"अभी नहीं। अभी उधर से कोई उत्तर नहीं मिल रहा है ?"

लवनफ संपर्क स्थापित करने में व्यस्त था। इवानोफ ने कहा:—"मैं उसकी चाल समझ गया। वह एक ही पत्थर से दो चिड़ियों का शिकार करना चाहती थी। वह चाहती थी कि जहाज निकोलाई से दूर चला जाय ताकि हमलोगों के बचाव का कोई साधन नहीं रह जाय और साथ ही बटौम बन्दरगाह पर स्थित टारपेडो नावों द्वारा नार्दर्न स्टार को भी घेर लेने के फेर में वह थी।

एक हाथ से अपना यंत्र चलाते हुए लवनफ ने कहा:—

"तुम्हारा अनुमान एकदम सही है। जिस समय तुमलोग यहां धंस पड़े उस समय वह मुझे आज्ञा दे रही थी कि काले समुद्र में स्थित सोवियत टारपेडो बोट नं० ५ के अफसर से मैं संपर्क स्थापित करूं। सावधान ! नार्दर्न स्टार से उत्तर मिल रहा है।"

हम तीनों व्यक्ति लवनफ को घेर कर खड़े हो गये जो ग्राहक यंत्र को ठीक कर रहा था। उसके बाद उसने क्षेपक यंत्र से कुछ संवाद भेजा······हमलोगों ने आंखों के इशारे से उससे जिज्ञासा की। उसने चुप रहने का संकेत किया।

इसके बाद उसने कागज के एक टुकड़े पर नादर्न स्टार के चालक का उत्तर ज्यों का त्यों लिख लिया। संवाद अंग्रेजी में यों था:—

"हमलोग तुरत मोटर बोट रवाना कर रहे हैं।"

न तो चर्पिस्की और न इवानोफ ही अंग्रेजी समझ सकते थे। उन्होंने मेरी ओर उत्सुकता से देखा। मैंने उन्हें समझा दिया।

मेरे दोनों साथी प्रसन्नता से उछल पड़े। तब तक लबनफ उठकर खड़ा हो गया। उसने बड़ी नम्रता से मुझ से कहा:—"क्या मैं यह आशा करूं कि आप मुझे भी अपने साथ लेते चलेंगे? प्रिंसेज से मेरा परिचय नहीं है। इसलिये जहाज पर मेरी उपस्थिति उन्हें अनुचित तो नहीं प्रतीत होगी?"

मैंने उसका दोनों हाथ अपने हाथ में ले लिया और कहा:—

"दोस्त! तुमने मेरे प्राण बचाये हैं। मेरी पत्नी कृतज्ञतापूर्वक तुम्हे अपने साथ ले चलेंगी।"

वह मुझे अनेक धन्यवाद देने लगा। चर्पिस्की ने इवानोफ से कहा:—

"चलो हमलोग देख आयें कि मेरी रानी साहिबा लबनफ के बिस्तर पर आनन्द से सो रही हैं न? उनके बन्धन ढीले तो नहीं पड़ गये हैं? मुँह से कपड़ा तो नहीं हट गया है? इसी हालत में उसे कमसे कम ६-७ घंटे तक रहना होगा। यदि इससे पहले उसका छुटकारा हो गया तो हमलोगों के लिये बड़ी बुरी बात होगी।······और दोस्त लबनफ! मैं चाहता हू कि तुम अपने यन्त्र को इस तरह तोड़फोड़ दो ताकि जल्द उसकी मरम्मत नहीं हो सके और उसे काम में नहीं लाया जा सके।"

"तुम्हारा कहना ठीक है। मैडम मौराविक इतनी खतरनाक है कि उसके जिन्दा रहते जितनी भी सावधानी की जाय सब थोड़ी होगी।"

पांच मिनट बाद मैं अपने तीनों रूसी साथियों के साथ जेटी पर पहुंच गया।

जहाज की रोशनी साफ दिखलाई दे रही थी। आशा से हमलोगों का हृदय इतना प्रफुल्लित हो उठा मानों हमलोगों ने हमाम में स्नान किया हो। लवनफ समुद्र में रह चुका था। इसके कान पानी की हलचल समझने में पटु थे। इसलिये मोटर-बोट की चाल की सबसे पहले उसी को जानकारी हुई। उसने कहा:—

"मोटर बोट आ रहा है। उसमें रोशनी नहीं है। शायद सतर्कता के लिये ही ऐसा किया गया है। लेकिन गौर से देखने पर चन्द्रमा की रोशनी में पानी में बुलबुलों का उठना साफ झलकता है।"

शीघ्र ही मोटर बोट जेटी के पास पहुँच गया। उसपर दो आदमी थे। मैं सीढ़ी के पास खड़ा हो गया और कहा:—

"इवानोफ! पहले तुम सवार हो! उसके बाद मैंने लवनफ को चढ़ने के लिये कहा। लवनफ के चढ़ जाने पर चपिस्की को मैंने चढ़ाया। सबसे अन्त में मैं चढ़ा और कप्तान को अनेक धन्यवाद दिया। मैंने देखा कि दो भुजायें मुझे अपने में समेट लेने के लिये फैल गईं। साथ ही किसी की मधुर बोली मेरे कानों में पड़ी:—

"जिरार्ड।"

यह ग्रिसेल्डा थी। मैं उससे उसी तरह चिपक गया। मेरा हृदय आनन्द से उछल रहा था। मेरी आँखों से मोती के दाने बरस रहे थे। मैं ग्रिसेल्डा से उसी तरह चिपका रहा जिस तरह ध्वस्त जहाज का यात्री अपने रक्षक से उसी तरह चिपक जाता है जिसने उसे मौत के पंजे से बचाया हो। उसके होंठ मेरे होठों से आप ही आप सट गये। दस दिन से मैंने दाढ़ी नहीं बनाई थी। मेरी भद्दी सूरत और गन्दे कपड़ों की तरफ उसने देखा तक नहीं। उसने प्रगाढ़ प्रेम से मेरा आलिंगन किया। मुझे अपनी खोयी निधि पुनः मिल गई।

उसने मोटर बोट वापस ले चलने की आज्ञा दी। मेरे तीनों साथी मोटर बोट के अगले हिस्से में बैठे थे। किसी के मुंह से शब्द नहीं निकल रहे थे। मोटर बोट समुद्र के पानी को चीरता नार्दर्न स्टार की तरफ चला। मैंने कहा:—

"मित्रो! नार्दर्न स्टार पर पहुँचकर इतमीनान से मैं आपलोगों का परिचय कराऊँगा। वहाँ हमलोगों को पश्चिमी सभ्यता का पूरा दर्शन होगा!"

यात्रा लंबी नहीं थी। हमलोग शीघ्र जहाज पर पहुंच गये। श्रीमान और श्रीमती मोगन ने हमलोगों का धूमधाम से स्वागत किया। कप्तान ने मेरे साथियों को अलग अलग केबिन में स्थान दिया। उनकी रायसे जहाज सीधे कुस्तुन्तूनिया के लिये रवाना हो गया। जहाँ तक संभव था वे लोग जल्द से जल्द बोल्शेविक अधिकृत समुद्री सीमा से बाहर हो जाना चाहते थे ताकि सोवियत गश्ती जहाजों से मोकाबला नहीं करना पड़े।

ग्रिसेल्डा का स्नान-घर मेरे लिये स्वर्ग के समान प्रतीत हुआ। श्री मोगन का सेफटीरेजर लेकर मैं हजामत बनाने बैठ गया और ग्रिसेल्डा मेरे पास बैठकर वृत्तान्त सुनने लगी। उसने अन्त में कहा:—

"जिरार्ड! जीवन में ऐसी मानसिक वेदना का सामना मुझे कभी नहीं करना पड़ा था। पहला संवाद ही मेरी परीशानी का बहुत बड़ा कारण बन गया था। मुझे तो यही विश्वास हो गया कि तुम सचमुच निकोलाई में सख्त बीमार पड़ गये हो। काकेशस प्रदेश के उस गाँव में तुम एकाकी पड़े हो, तुम्हारी देखरेख करनेवाला कोई नहीं है। इस विचार ने मुझे अधीर बना दिया और मैं वहाँ पहुँचने के लिये व्यग्र हो उठी। दिन को ग्यारह बजे के लगभग हमलोग बन्दरगाह के पास पहुंच गये। मैंने श्री मोगन को नाव पर किनारे भेजा। वे उसी नाव पर एक गन्दे रूसी को लेकर लौटे जो मुझ से मिलना चाहता था। मेरी चिन्ता और परीशानी का अनुमान तुम सहज में

कर सकते हो। उस आदमी का रूप तथा पहनावा भागे हुए कैदी के समान था। उसने तुम्हारे बारे में जो कुछ कहा उसे सुनकर मेरा होश उड़ गया। मैंने देखा कि तुम कैद में हो, किसी रूसी क्रान्तिकारी के बदले की आग का शिकार हो रहे हो और उसी रात को तुम्हें गोली मार दी जायगी। मैं तो यह सुनकर करीब करीब बेहोश हो गई। लेकिन तुम तो जानते ही हो कि खतरा का मोकाबला मैं बड़े साहस से करती हूं। इवानोफ का विवरण इतना स्पष्ट था कि कुछ पूछने की जरूरत नहीं थी। मैंने उसे तुम्हारा ईमानदार दोस्त समझा और उसकी सलाह पर पूरा भरोसा किया। उससे मुझे यह भी विदित हुआ कि तुम्हारे बचाव का एकमात्र रास्ता चपिंस्की के ईमान को पचास हजार डालर देकर खरीद लेना है। मैंने उससे कहा कि तुम्हारी रक्षा के लिये मैं उसका दस गुना दे सकती हूं। वह वापस चला गया और उसी दिन शामको करीब ६ बजे वापस आया। चपिंस्की भी उसके साथ था। चपिंस्की को बाहर बैठा कर वह मेरे सलून में आया और सारी स्थिति मुझे दो मिनट में समझा दी। उसने कहा:—

"मेरी कोशिश कामयाब हो गई। मैंने उससे कह दिया है कि यदि तुम प्रिंसको सही सलामत इस जहाज पर पहुँचा दो तो तुम्हें पचास हजार डालर इनाम मिलेगा। वह आपका सौदा एक शर्त पर मंजूर करने के लिये तैयार है कि आप उसे किसी विदेशी शहर में सुरक्षित पहुंचा दें।

"मैंने यह शर्त स्वीकार कर ली।"

उसने पूछा:—रुपये कहाँ हैं?

मैंने कहा:—"रुपये तो मौजूद हैं, लेकिन मुझे एक बात की चिंता है। यदि उसे रुपये दे दिये जायं और वह उन्हें लेकर चम्पत हो जाय तो हम लोग क्या करेंगे?"

'इस पर इवानोफ ने कहा:—"इसका सहज उपाय है। सारे नोट को दो टुकड़ों में काट दिया जाय। आधा उसे दे दिया जाय और आधा आप अपने पास रख लें। जब वह प्रिंस मेलिमन को सही सलामत आप तक पहुंचा दे तब आप दूसरा आधा हिस्सा उसे दें। इस तरह वह आपके कब्जे में रहेगा।"

"इवानोफ का विचार मुझे ठीक जंचा। वह चपिस्की को मेरे पास ले आया। हमलोगों का सौदा पट गया। मैंने उसे पचास हजार डालर का अद्धा दे दिया। वह वापस चला गया। मुझे पूरा विश्वास हो गया कि वह अपना वादा पूरा करेगा। लेकिन जब बज के करीब जब हम लोग मोटर बोट किनारे भेजने ही वाले थे कि बेतार के तार के चालक ने कहा कि निकोलाई से संवाद आ रहा है। मैं तो निर्जीव हो रही थी। मैं कप्तान के साथ यंत्र के कमरे में चली गई। उसने कहा कि इवानोफ ने खबर भेजी है कि हमलोगों को तुरत बटौम के लिये प्रस्थान कर देना चाहिए। कार्यक्रम में इस तरह के अचानक परिवर्तन से मैं व्याकुल हो उठी। जब तुम्हें निकोलाई में आसानी से जहाज पर लिया जा सकता था तब बटौम भेजने का क्या अभिप्राय हो सकता था? कप्तान ने कहा कि अवश्य दाल में कुछ काला है। श्रीमान और श्रीमती मोगन से कोई उत्तर देते नहीं बन पड़ा। मैं हत-बुद्धि हो रही थी। आधा घंटे तक हम लोग विचार विनिमय करते रहे। अन्त में मैंने कप्तान से कहा कि लंगर उठावो। मैंने कहा कि सम्भव है कि इस तरह बटौम भेजने में सोवियत सरकार का कोई खास उद्देश्य है। इस संवाद का अभिप्राय ठीक ठीक न समझ सकने के कारण यदि हम लोग समय पर वहाँ नहीं पहुंच सके तब तुम्हारी क्या हालत होगी। जहाज चल ही चुका था कि दूसरा संवाद मिला जो इस प्रकार था:—

"पहले संवाद को रद्द समझिये। कार्यक्रम बदल गया। फौरन आइये और रोगी को बन्दरगाह से ले जाइये। इवानोफ—"

"कप्तान ने जहाज रोक दिया और मोटर बोट लेकर किनारे के लिये चल पड़ा। उसके बाद जो कुछ हुआ, वह तुम जानते ही हो।"

मेरे पास तो कपड़े नहीं थे। मि० मोगन ने कपड़े मंगनी दिये और मैं उन्हें पहनने लगा। मैंने ग्रिसेल्डा को बतलाया कि किस तरह मैडम मौराविफ को इसका पता चल गया और किस तरह उसने ही पहला संवाद भिजवा कर हमलोगों को जाल में फंसाना चाहा था। मेरी बातें सुनकर ग्रिसेल्डा थरथर काँपने लगी। उसने देखा कि उस रूसी महिला की चपेट से मैं बाल बाल बच गया। वह तो मुझे जल्लाद के हवाले करने में प्रायः सफल ही हो चुकी थी।

इसके बाद हम लोग भोजन के कमरे में इकट्ठा हुए। मैंने अपने तीनों नये साथियों का परिचय कराया:—

"श्री इवनोफ संगीतज्ञ हैं। इनका अधिक समय रूसी जेल में बीता है। लबनफ रूसी सरकार के नौ-सेना विभाग के अध्यक्ष थे। सोवियत सरकार ने उन्हें अपदस्थ कर दिया और बेतार के तार के चालक का पद दिया। काम्रेड चर्पिस्की निकोलाई स्थित टेका के अध्यक्ष थे। कल तक वे साम्यवादी थे और इस समय पूंजीपति हैं।"

इतने समय के बाद पहले पहल चर्पिस्की के चेहरे पर मुस्कुराहट दीख पड़ी। इवानोफ ने बड़े अदब से प्रिंसेज को झुककर सलाम किया। लबनफ ने सैनिक रीति से सलाम किया। चर्पिस्की प्रिंसेज के पास जाकर खड़ा हो गया और आठरवीं शताब्दी के पादरी की तरह उनका हाथ झुक कर चूम लिया और बोला:—

"आज आपके सामने मैं अपना यह बाना उतार कर फेंकता हूँ। मैं कलसे अपने उसी रूपमें आ जाऊंगा जिस रूपमें मैं चार साल पहले था।"

इतनी स्पष्टवादिता के साथ अपने मत-परिवर्तन को किसी ने भी स्वीकार नहीं किया होता। हमलोग अपनी अपनी कुर्सी पर बैठने ही वाले थे कि

कप्तान ने आकर सूचना दी कि हमलोग सावियत की समुद्री सीमा को पार कर गये। इसके बाद वह उन तीनो रूसी अतिथियों को लक्ष्य कर बोला:—

"अब आपलोग अमेरीका के झंडेकी संरक्षकता में हैं। कोई रूसी जहाज अब आपको गिरफ्तार नहीं कर सकता।"

दो बजे रात तक भोजन चलता रहा। भोजन के कमरे से बाहर निकलने पर मैंने ग्रिसेल्डा से पूछा:—मेरे सोने के लिये कौन सा कमरा है ?"

उसने अपने सलून की ओर इशारा करते हुए मुस्कुराकर कहा:—"राजन्! निकोलाई के सेल में इतना दिन बिताने के बाद तुम इस दरबे में आराम से गुजर कर सकते हो।"

चारपाई पर पड़े-पड़े मैं कुछ सोच रहा था। मुझ से ग्रिसेल्डा ने पूछा:—"जिरार्ड! क्या सोच रहे हो।"

मैंने कहा:—"मैं पड़ा-पड़ा मेडम मौराविफ की बातें सोच रहा हूं। वह तो मुझे मौत के मुंह में ढकेलना चाहती थी लेकिन उसकी कृपा से मैं उन भुजाओं के बीच आ गिरा जो दुनिया में मुझे सबसे अधिक प्रिय थे।

---

## १६

नार्दर्न स्टार मोनार्का में लंगर डालकर खड़ा था। मेरे दोनो साथी उतर कर अपने-अपने निर्दिष्ट स्थान को चले गये थे। ग्रिसेल्डा के आग्रह से इवानोफ हमलोगों के साथ रह गया था। ग्रिसेल्डा ने कहा कि न्यूयार्क में इवानोफ के लिये वह संगीत भवन का आयोजन कर देगी। जहाज पर दिन रात पियानो बजाकर वह हमलोगों का मनोरंजन किया करता था।

मैं डेक पर अकेला बैठा था। रूथ मोगन के साथ ग्रिसेल्डा खरीद फरोख्त के लिये बाजार चली गई थी। मि० मोगन भी अपने केबिन में थे। मुझे अपने अतीत जीवन की बातें याद आ गईं। मृत्यु के मुख से वापस आ जाने के बाद जिन्दगी में जो मिठास आ जाती है उसका अनुमान वे ही कर सकते हैं जिन्हें इस तरह के संकट में पड़ना पड़ा हो। इसी समय खलासी ने एक तार लाकर मेरे हाथ पर रख दिया। तार लेडी डायना का था। मैंने कुस्तुन्तुनिया से ही उन्हें अपना समाचार भेज दिया था। तार में लिखा था:—

"तुम्हारी रोमांचक यात्रा का विवरण पढ़ कर अवाक् रह गई। सहसा विश्वास नहीं हो सकता था। वरिचकिन को भी अत्यधिक विस्मय हुआ। तुम्हारे बचाव पर हम दोनों तुम्हें हार्दिक बधाई देते हैं। यदि कोई अनिवार्य आकस्मिक घटना नहीं हो गई तो हम दोनों का विवाह ता०२६ जून को होगा। प्रिंसेज सेलिमन से मेरी ओर से आग्रह करो कि उस अवसर पर वे अवश्य उपस्थित हों। मैं तुमसे मिलने के लिये अधीर हो रही हूं। यदि संभव हो तो तार पकार ग्लेंसलाय, लाच लामण्ड में आकर मुझसे मिलो।" मैंने पुनः एक स्वप्न देखा है जिससे मैं अशान्त हो गई हूं"— डायना

मैं तार को मोड़कर जेबमें डालने ही जा रहा था कि मि० मोगन आ पहुंचे। उन्होंने मजाक किया:—

"क्या सुन्दरी इरिना ने कुशल समाचार भेजा है?"

"नहीं दोस्त! लेडी डायना का तार है। ता० २६ जून को अर्थात आज से ठीक दस दिन बाद वरिचकिन के साथ उनका विवाह होगा। उन्होंने मुझे और ग्रिसेल्डा को निमंत्रण भेजा है।"

"वह एक बोल्शेविक से विवाह करने जा रही हैं। क्या ही अनोखा विचार है।"

"यह उस रूपसी के अनुरूप ही है। इसके साथ ही एक बात तुम भूल जाते हो। रूस के इस वर्तमान सर्वहारा वर्ग को अगली पीढ़ी के ग्राण्ड ड्यूक से भी बढ़कर समझना चाहिये क्योंकि उसके प्रयास से तेलाव में जो रिआयत लेडी डायना को मिल गई है उससे वे दोनों मालामाल हो जायेंगे। इसी को कहते हैं विधि की विडम्बना ! यह मेरे सामने दूसरा उदाहरण है कि एक साम्यवादी मार्क्स के सिद्धान्तों की अवहेलना कर, एक पूंजीपति की सहायता के लिये अपने साथियों के साथ विश्वासघात करता है और अपनी भावी पत्नी के द्वारा रूसकी राष्ट्रीय संपत्ति में से कुछ हिस्सा खसोट लेता है। इसे मैं चालाकी की चरम सीमा कहता हूं। अपने लाल साथियों को प्रभावित कर वह पूंजीपति को पनपाता है और इस तरह अपना मतलब गांठता है।"

"लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि लेडी डायना के समान सुन्दरी महिला जो ब्रिटिश कुलीन समाज में अग्रणी समझी जाती है इस शादी के लिये—"

"लेकिन एक बात आप भूल जाते हैं कि उनकी आर्थिक स्थिति एकदम खराब हो गई है।"

"जो भी हो लेकिन न्यूयार्क में जिसकी इतनी ख्याति है, जो ब्रिटिश पूंजीवादी समाज का एक स्तंभ समझी जाती है, वह एक बोलशेविक के साथ शादी करने के लिये किस तरह राजी हो जाती है।"

"दोस्त ! तुम वर्तमान परिस्थिति पर गौर नहीं कर रहे हो। इस तरह लाख पाउण्ड की सालाना आमदनी का अचानक बन्दोबस्त हो जाना आसान बात नहीं है। इस युद्ध ने और टैक्स की नई नीति ने ब्रिटेन के कुलीन वर्ग का दिवाला पीट दिया है। लेडी डायना को काफी रुपयों बिना शान्ति नहीं मिल सकती। यदि वह अपने समाज के किसी अविवाहित युवक या विधुर से विवाह करना

चाहती तो उसे इतनी संपत्ति कहाँ से मिलती। इसलिये उसने निश्चय कर लिया था कि या तो वह किसी धनवान से ही विवाह करेगी या किसी धनी उद्योगपति से। अचानक उसे एक बोलशेविक, आधुनिक समाज का असली शत्रु, मिल जाता है। उसके उद्योग से उसका भाग्य पलट जाता है। इसलिये वह उसे ही पसन्द कर लेती है। तुम्हें मालूम ही है कि लेडी डायना की रुचि विचित्र है। असंभावित, नई और अनोखी बातों में उन्हें खास मजा आता है। इतने ऊंचे खानदान की महिला, जिसके पूर्व पुरुष किसी समय स्काटलैण्ड के राजा थे, एक साम्यवादी से विवाह कर उसे तेल कम्पनी का उपाध्यक्ष बनाती है। कोई उसका मोकाबला नहीं कर सकता। क्या इससे संसार के अखबारवालो को नया मसालो नहीं मिल जायगा और वे हफ्तों तक देश विदेश में ऊधम मचाते नहीं रहेंगे? तुम इस बात की कल्पना कर सकते हो कि अमेरिका के अखबारों के संवाददाता किस तरह की दौड़धूप मचाते रहेंगे। मैं तो अभी से देख रहा हूँ कि अखबारवाले कैसे कैसे शीर्षक देंगे।

"एक बोलशेविक का अचानक परिवर्तन।" लेडी डायना विनहम का एक बोलशेविक से विवाह"; "मास्को से पिकाडली"; कामदेव अपने बाणों को तेल में डुबाता है"; इसी तरह के सैकड़ो शीर्षक देखने को मिलेंगे।"

मि० मोगन आराम कुर्सी पर लेट गये और मुस्कुराकर बोलेः—

"तुम्हारा कहना ही सच है। इस अनोखे विवाह में उपस्थित रहने का तुम्हें मौका मिलेगा। ऐसा विवाह कम ही देखने में आता है।"

"लेकिन इस तरह के विवाह कम ही स्थायी होते हैं।"

हमलोग खिलखिलाकर हस रहे थे। लेकिन हमलोगों की हंसी में अचानक बाधा पड़ी। ग्रिसेल्डा और रूथ मोगन इसी समय बाजार से वापस आ गईं। उनके साथ सामानों का ढेर था।

मि० मोगन ने अपनी पत्नी से कहाः—"तुम्हारा शरीर इस तरह गमक रहा है मानों बाजार का सारा इत्र खरीदकर तुमने अपने शरीर पर उड़ेल लिया है। लोग कहते हैं कि अमेरीकावालो की सारी कमाई उनकी पत्नियाँ खर्च कर डालती हैं।"

मैंने डायना का तार ग्रिसेल्डा को दिखाया। उसे इस निमंत्रण से प्रसन्नता हुई। हमलोगों ने तै किया कि हफ्ते भर के भीतर ही हमलोग साउदम्पटम पहुँच जायगे।

हमलोग भोजन की तैयारी कर रहे थे कि खलासी ने दूसरा तार लाकर दिया। उसमें लिखा थाः—

"जिगार्ड ! मेरा नम्र निवेदन है कि तुम फौरन आकर मुझसे मिलो। वग्चिकिन लपता हो गये हैं। मैं निराश और परीशान हूँ"—डायना !

मेरे दोस्त और ग्रिसेल्डा इस तार को लेकर तरह तरह का अनुमान लगाने लगे। आलोचना प्रत्यालोचना होने लगी। जहाज सीरो की तरफ बढ रहा था।

ग्रिसेल्डा ने निर्विकार भाव से कहाः—"शादी से सप्ताह भर पूर्व जिस नायिका का भावी पति अचानक लापता हो जाता है, उसका दुर्भाग्य ही समझिये।"

रूथ मोगन ने मजाक कियाः—

"शायद वह इस गठबंधन से डर गया।"

इस पर मि० मोगन ने कहाः—

"मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि तेलका कुंआ सूखा निकला।"

मैंने कहाः—

"स्थिति अवश्य ही गंभीर और नाजुक है, नहीं तो लेडी डायना दूसरा

तार न भेजतीं। उसके बारे में और जो भी कहा जाय पर मैं इतना जोर देकर कह सकता हूँ कि वह कायर नहीं है।"

ग्रिसेल्डा ने रूथ मोगन का हाथ दबाकर हँसते हुए कहा:—

"जरा इनकी बातें सुनिये। मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि एक विधवा और अनाथ महिला का पक्ष वे इतने जोश खरोश के साथ लेंगे।"

मि० मोगन ने कहकहा लगाते हुए कहा:—

"लेकिन वह विधवा असाधारण सुन्दरी है और उसे अनाथ कहने के लिये तो वरिचकिन की मृत्यु की प्रतीक्षा करनी होगी।"

मैंने हताश हो कर कहा:—

"इस बात का इस तरह मजाक उड़ाना आपलोगों के लिये उचित नहीं है। उस महिला ने मुझ पर विश्वास किया और मेरी सहायता चाह रही है। मैं उसका पक्ष ले कर अपने कर्तव्य का पालन ही कर रहा हूं।"

ग्रिसेल्डा ने धीरे से मेरे गाल पर एक चपत जड़ दिया। बोली:—

"जिरार्ड! तुम्हें चिढ़ाने में हमलोगों को मजा आता है। तुम जानते हो कि मेरी सदा यही इच्छा रही है कि तुम मर्यादा और ईमानदारी के पथ से कभी भी विचलित न हो। तुम कल सबसे पहली गाड़ी से स्काटलैण्ड के लिये प्रस्थान कर सकते हो। हमलोग जहाज से ही इंगलैण्ड जायेंगे। लन्दन में मैं रिज होटल में ठहरूंगी। लेडी डायना की शादी से पहले तुम वहीं मुझसे मिलना। लेकिन वरिचकिन का पता लगाने में किसी तरह की ढिलाई न करना। उसका पता लगा कर ही आना।"

मैंने ग्रिसेल्डा की पीठ थपथपाते हुए कहा:—"मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है कि इस स्थितिको तुमने इतनी उदारता से सामझा है। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि यदि उसे मेरी आवश्यकता होगी तो मैं उसे निस्सहाय नहीं छोड़ूंगा।"

हमलोगों ने सीरो शहर में प्रवेश किया। एक रूसी गायक अपने दो साथियों के साथ सड़क पर मृत्यु का संगीत गा रहा था। मेरे मस्तिष्क में पुरानी स्मृतियाँ जागरित हो उठीं।

मेरा चेहरा उदास और गंभीर हो उठा। ग्रिसेल्डा ने इसे लक्ष्य किया। उसने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया और धीरे से कहा:—"जिराई! मैं तुम्हारे मनोभावों को समझती हूं। मैं तुम्हें उसी तरह प्यार करती हूं।"

मैंने उसकी ओर स्निग्ध दृष्टि से देखा और अपने को शान्त किया। मैंने अपने अल्प कालिक विद्रोह की गंभीरता का अनुभव किया। ये ही लोग विश्व के सुखी जीव हैं। वे लोग आपस में आनन्द मंगल मना रहे थे। सुख की प्राप्ति के लिये उन्होंने कोई प्रयास नहीं किया था तोभी वे सुखी थे। अथवा वे समझते थे कि वे सुखी हैं।

मैं भी मोगन के पास बैठ गया। मैं सुख दुःख के इस गंभीर प्रश्न पर उनका विचार जानना चाहता था। उन्होंने मेरे हृदय की बात मानों समझ ली। मेरी पीठ थपथपाते हुए उन्होंने कहा:—"आज तो तुमने जलपान कराने का वादा किया था। भूल गये क्या?"

हम लोग रात को बारह बजे जहाज पर वापस आये। मेरी आंखें झप रही थीं। उसी वक्त ग्रिसेल्डा कपड़े बदल कर आई और मेरे पास बैठ कर बोली:—

"मैं उस सुन्दरी महिला के पास तुम्हें अकेले जाने की इजाजत देकर शायद भूल कर रही हूं।"

इतना कहकर उसने मुस्कुराने का उपक्रम किया लेकिन मैं उसकी चिन्ता समझ गया। उसने मेरे सिर के बालों में अपनी कोमल अंगुलियों को नचाते हुए कहा:—

"तुम्हें उससे प्रेम था। यह बात सच है न?"

मैंने उसके इस अभियोग को साफ साफ अस्वीकार किया । इस पर उसने कहा:—

"जिरार्ड ! मुझसे सब कुछ सच सच कह दो । मैं तुम्हें कहीं भी जाने दूँगी क्योंकि मुझे पक्का विश्वास है कि मैंने तुम्हें पुनः प्राप्त कर लिया है। तुमने मेरे शरीर और आत्मा दोनो को पुनः जीत लिया है...लेकिन मैं केवल इतना जनना चाहती हू कि क्या तुम उसपर अनुरक्त हो?"

"यदि स्नेह और प्रेम में कोई अन्तर है तो मैं कह सकात हूं कि मुझे लेडी डायना से अपार स्नेह था पर लेशमात्र भी प्रेम नहा।"

"हमलोगों की इस दो साल की जुदाई में मैंने तुम्हारे बारे में अपने बारे में, इस जीवन के बारे में और जो तत्व दो प्राणियों को अलग कर देते हैं उनके बारे में गंभीरता पूर्वक विचार किया हैं। जिस समय मैंने तुम्हें पहले पहल पाम बीच में एर्लविन के साथ देखा था उस समय मेरे विचार जितने संकुचित थे उतने आज नहीं है। मैंने सोचा विचारा और अपनी संकीर्णता मैंने त्याग दी। मैं इस परिणाम पर पहुंची कि पुरुष अथवा स्त्री का उच्चे मार्ग से क्षण भर के लिये विचलित हो जाना वास्तविक प्रेम पर कोई असर नहीं डाल सकता। इसलिये तुम मेरा विश्वास करो। मैं तुम्हें हृदय से चाहती हूं। मुझे इसकी वास्तविक अनुभूति उस समय हुई जब मैंने तुम्हें खतरों से घिरा पाया। तुम इस बात को निःसंकोच कह सकते हो कि लेडी डायना तुम्हारे जीवन में चमकते बादल के समान थीं लेकिन वह बादल स्थायी नहीं था।"

"ग्रिसेल्डा ! तुम्हें भले ही असाधारण प्रतीत हो लेकिन मैं विश्वास पूर्वक कह सकता हूं कि मेरे और उनके बीच में कभी किसी भी तरह का प्रेम संबंध नहीं था। मैं केवल उनका सलाहकार मात्र था। जहाँ तक संभव था मैं उनकी सहायता

किया करता था लेकिन मेरी उनकी घनिष्टता कभी नहीं हुई। हमलोगों की मैत्री पूर्णरूप से सात्विक थी "

ग्रिसेल्डा को इतमीनान हो गया। मेरे बालों में अपनी अंगुलियाँ नचाते हुए उसने कहाः—

"तुम अच्छाई और बुराई के विचित्र सम्मिश्रण हो। तुम रोमांचक और बुद्धू दोनों हो। दो साल तक न्यूयार्क के लोग तुम्हारे बारे में तरह-तरह की बातें मुझ से कहते रहे। क्या तुम कयास कर सकते हो कि जिन लोगों ने तुम्हारी निन्दा करना चाहा उनसे मैंने क्या कहा था? उन लोगों ने मुझसे कहा था कि मैं तलाक दे दूं। वे समझते थे कि मेरे हृदय में तुम्हारे लिये कोई प्रेम नहीं रह गया है। मैंने उन लोगो से कहा थाः —"तुमलोग प्रिंस सेलिमन को नहीं समझ सकते। वह तुम्हें नर्क की सैर करा सकते हैं लेकिन तुम्हारे दामन में धब्बा तक नहीं लगने दे सकते। क्या मेरा कथन पूरी तरह सही नहीं है?"

"और ग्रिसेल्डा तुम? संसार में इतना मधुर कोई नहीं हो सकता।"

---

## १७

दो दिन बाद शाम के वक्त मैं लाच लोमण्ड के किनारे पहुंच गया। लेडी डायना की गाड़ी मुझे लेने के लिये टरवेट स्टेशन पर आई थी। मैंने ड्राइवर से पूछाः—

"क्या लेडी डायना का महल यहाँ से दूर है?"

" जी नहीं, झील के पूर्वी किनारे पर यहाँ से करीब डेढ़ मील है।"

क्षण भर बाद उसने बड़े गर्व से कहाः—हमलोग मैकफरलेंसके पड़ोसी हैं।"

मुझे मैकफेरलेंस तथा मैकग्रेगर्स के बीच के अनन्त कालीन संघर्ष की बात

याद हो आई। स्काटलैण्ड के इतिहास की यह अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना है। मैंने कहाः—

"मैकग्रेगर्स कहाँ है?"

"झील के दूसरी तरफ।"

"तब यही झील दोनों सरदारों के बीच खाई का काम करती थी?"

उसने बड़ी नम्रता से कहाः—

"जी हाँ,। इसपर किसी का अधिकार नहीं था।"

"तुम यहाँ के बारे में इतनी ज्यादा जानकारी रखते हो! तुम भी यहीं के निवासी होगे?"

"जी नहीं, मैं बेल्जियम का रहनेवाला हूं। लेकिन मेरी पत्नी यहीं की है। उसका जन्म मैकफरलेंस में हुआ था।"

लेडी डायना का महल ऊँचे पहाड़ पर बना था। चट्टानों को काटकर सड़क निकाली गई थी। टेढ़ीमेढ़ी सड़कों को पार कर मोटर मुझे लेकर दो चट्टानों के बीच की पतली सड़क पर जा रुकी। यहां से ऊपर चढ़ने के लिये सीढ़िया थीं। लेडी डायना ऊपर बरामदे में खड़ी थीं। मुझे देखते ही उन्होंने चिल्ला कर कहाः—

"जिरार्ड। तुम आ गये। मैं घंटों से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हू।"

मैं तेजी से सीढ़ियों को लांघता ऊपर चढ़ गया और कहाः—

"मुझे खेद है कि आपको इतनी देर तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। पर यह भाग्य की बात ही समझिये कि आपको अनन्त काल तक मेरी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी।"

"ओह! तुमने मेरे लिये अपने जीवन को खतरे में डाल दिया। क्या यह बात मैं कभी भी भूल सकती हू। तुम्हें फिर से देख कर मेरा हृदय पुलकित हो उठा है। मैं दो कारणों से खुश हूँ। पहला कारण तो यह है कि तुम उस भयानक

गाल से जिन्दा निकल आये और दूसरा कारण यह है कि मुझे तुम्हारी संप्रति नैतान्त आवश्यकता है। तुम्हें यहां पाकर मुझे कितना इतमीनान हुआ है।"

इतना कहकर उन्होंने गहरी सांस ली।

"लेकिन बात क्या है? आपके तार ने मुझे बुरी तरह चिन्तित कर दिया है।"

वह मुझे एक किनारे ले गईं। वहां हमलोगों की बात कोई भी नहीं सुन सकता था। सबसे पहले तो उन्होंने मुझसे काकेशस प्रदेश की रोमाञ्चक हालका विवरण सुना। इसके बाद उन्होंने कहा:—

"तुम्हारी मुसीबतों की चर्चा से मैं कुछ-कुछ अनुमान कर सकती हूं कि कहां क्या हो रहा है। तोभी मैं यहां की सारी घटना को सिलसिलेवार कह सुनाना चाहती हूं। बर्लिन से प्रस्थान कर मैं सीधे लन्दन पहुंची। हफ्ते भर में वरिचकिन भी आ गया। वह बहुत अधिक प्रसन्न था। पांच या छह जून तक जब तुम्हारा कोई संवाद नहीं मिला और निकोलाई को तार भेजते भेजते मैं थक गई तब मैं सर इग्नि मूर के पास गई। हमारी कम्पनी के अड्विजरी बोर्ड के वे ही उपाध्यक्ष होनेवाले थे। मैंने उनसे पूछा:—"आपने जिस इंजीनियर को तेलाव की भूमि के जांच के लिये भेजा था उसका कोई समाचार आपको मिला है?" उन्होंने कहा कि मि० एडविन ब्लैकेट की रिपोर्ट बहुत ही आशा जनक है। तेलाव के कारबार में बड़ी अच्छी संभावनायें हैं। कारपोरेशन की बाजाब्ता स्थापना भी शीघ्र हो जायगी। उनकी बातों से मुझे इतमीनान हो गया और वहीं ठहर कर मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करने लगी और निश्चय किया कि तुम्हारे वापस आनेपर मैं वरिचकिन का ऋण अदा कर दूंगी अर्थात् उससे विवाह कर लूंगी। जब मैं यहां आने लगी तब वरिचकिन ने भी मेरे साथ आने की इच्छा प्रगट की। इस अवसर पर मैंने उन्हें अकेले छोड़ देना उचित नहीं समझा।"

इतना कह कर वह मेरे और निकट चली आई और इतना धीरे से बोलीं मानों हमलोगों की बातें सुनने का कोई कोशिश कर रहा हो।

"आगे भी बात गौर से सुनो जिरार्ड ! आठ जून की बात है। बर्लिन से उनकी डाक आई। दोपहर के वक्त उन्होंने मुझ से पूछाः—"क्या प्रिंस सेलिमन का कोई पत्र तुम्हें मिला है ? मेरे उत्तर से वे बेचैन से हो उठे। जब मैंने उनसे पूछताछ की तो उन्होंने कहा कि मुझे आशंका है कि उनका पासपोर्ट उनकी पूरी तरह शायद रक्षा नहीं कर सका।" मेरे मन में तुरत एक विचार आया और मैं पूछ बैठीः—

"क्या मैडम मौराविफ बाधक होंगी ?"

"उन्होंने बात टाल दी लेकिन मुझे इतमीनान नहीं हुआ। क्षणभर धीर धरो। जरा मुझे सोच लेने दो···दूसरे दिन मुझे तुम्हारा लंबा खत मिला जो तुमने कुस्तुन्तूनिया से मेरे पास भेजा था। उससे मेरी चिन्ता दूर हो गई। मैंने उसे वरिचकिन को दिखाया। उसने उस खतको अनेक बार पढा और गहरी सांस लेकर कहाः—

"भाग्य की बात है कि प्रिंस उसके फौलादी पंजे से बचकर निकल आये।

"तीन दिन तक वरिचकिन मुझ से तुम्हारे पत्र के बारे में ही विचार विनिमय करते रह गये। उन्होंने मुझ से कहा कि प्रिंस के विरुद्ध शस्त्र उठा कर मैडम मौराविफ ने अपने को साफ प्रगट कर दिया है। हमलोगों से बदला लेनेकी उनकी भावना अब अपना काम चालू करेगी। उनकी बातों से मैं चिन्तित हो उठी। दूसरे दिन शाम को मैंने उनसे कहाः—

"मैं आपसे स्पष्ट उत्तर चाहती हूं। क्या आप अपनी प्रेयसी से डर गये हैं ?"

उन्होंने अपनी दाढ़ी सहलाते हुए कहाः—

"जहाँ तक मेरा संबंध है मैं उसकी लेशमात्र भी परवा नहीं करता। लेकिन तुम्हारे बारे में मैं अवश्य चिन्तित हूं। इरिना बदला लेने के लिये कटिबद्ध है। वह कुछ भी कर सकती है। उसके लिये कोई भी काम असम्भव नहीं है। मेरी तो राय होगी कि हमलोग यहाँ से हट कर ग्रेट ब्रिटेन से कहीं बाहर चलकर छिप जायँ। फ्रांस चले चलें। वहीं चुपचाप हमलोगों का विवाह हो जायगा। समय बीतने पर सब कुछ आपसे आप शान्त हो जायगा। जो खतरा मैं देख रहा हूं उसका शिकार तुम्हें नहीं होने देना चाहता।

उस तुच्छ रूसी डायन के डर से भाग जाने के विचार से मुझे क्रोध आ गया। तुम्हीं सोचो कि मैं मौराविफ के डर से भाग जाऊं। इस बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। और साथ ही तुर्रा यह कि मैं उस नाचीज और नगण्य बोल्शेविक से लुक छिपकर शादी करूँ। मैंने वरिचकिन से कहाः—

"आपकी इरिना मौराविफ उन अभागे प्रतिक्रियावादियों को फांसी पर लटका सकती है या रिहा कर सकती है जो दुर्भाग्यवश टेका के चंगुल में फंस जाते हैं लेकिन मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं कि ब्रिटिश भूमि पर विनहम वंश के एक तिनके को छूने में भी उसे दो बार सोच लेना पड़ेगा। हमारे देश में उससे कम अपराध पर लोगों को फांसी पर चढ़ा दिया जाता है। जोश में आकर जो लोग इस तरह का अपराध कर डालते हैं उन पर भी हमारे देश के जुरी दया नहीं दिखलाते। उनका व्यवहार फ्रांस के जूरियों की तरह नहीं होता जो अपराधियों को छुटकारा देकर रिवाल्वर और छुरे के प्रयोग को उत्साहित करते हैं। मैं यहीं ग्लेंसलाय में रहूंगी। यहीं ता० २६ जून को हमलोगों का विवाह संपन्न होगा क्योंकि उस दिन तक प्रिंस सेलिमन यहां पहुंच जायँगे

और गवाह का काम संपन्न करेंगे। उस महिला को रक्तपात में यदि मजा आता है तो आने दीजिये। मुझे उसकी रत्ती भर भी परवा नहीं है।"

"मेरे उस उद्गार के बाद वरिचकिन ने अपनी प्रेयसी की पुनः कोई चर्चा मुझसे नहीं की। ऐसा प्रतीत होने लगा कि वह उसका अस्तित्व तक भूल गये और सुखद भविष्य की बातें करने लगे। परसों की बात है। मैं नव बजे सो कर उठी। मैंने जुलियट को उनके पास यह कहने के लिये भेजना चाहा कि दोपहर के भोजन से पहले हम लोग झील की तरफ टहलने जायंगे। जुलियट भौंचक सा मेरा मुंह देखने लगी। उसने कहा:—

"क्या आपको मालूम नहीं कि मि० वरिचकिन चले गये?"

"क्या? वे पार्क में चले भी गये हैं?"

"जी, पार्क में नहीं। उन्हें आठ बजे एक तार मिला। वे फौरन ग्लासगो के लिये रवाना हो गये क्योंकि पहली गाड़ी से वे लन्दन पहुँचना चाहते थे।"

"मैं इस संवाद से इस तरह घबरा गयी कि मेरी समझ में नहीं आया कि मैं क्या करूँ। जुलियट कमरे से चली गई। वह पांच मिनट बाद वापस आई। मेरे खानसामा एडवर्ड ने उसे एक पत्र दिया था जो मेरे लिये था। पत्र वरिचकिन का था। उसने जल्दी में पेंसिल से लिखा था कि मुझे लन्दन जाना आवश्यक और अनिवार्य है। चिन्ता की कोई बात नहीं है। लन्दन से मैं तार द्वारा सूचना दूंगा और अड़तालीस घंटे के भीतर वापस आजाऊंगा। इसके अनुसार उसे कल ही लन्दन से वापस आजाना चाहिए था। वह वापस तो नहीं ही आया। यहाँ से जाने के बाद उसका कोई समाचार भी मुझे नहीं मिला। समझ में नहीं आता कि क्या दुर्घटना हुई है। तुम क्या समझते हो?

उसके इस तरह गायब हो जाने से मैं क्या निष्कर्ष निकाल सकता था। इतना तो मेरी समझ में आ गया कि रंगत अच्छी नहीं है लेकिन वह बात

कहकर मैं लेडी डायना की चिन्ता नहीं बढ़ाना चाहता था। मैंने कहाः—

"रूसी प्रेमी बड़े उदार होते हैं। संभव है वह विवाह के योग्य आपके लिये उपहार वगैरह खरीदने में व्यस्त हों।"

शामका वक्त हो चला था। रात्रिकी धूमिल छाया ने आसपास अपना आसन जमा लिया था। हवामें तीखापन आने लगा था। लेडी डायना ने मेरा हाथ पकड़ लिया और स्नेहभरे शब्दों में कहाः—

"जिराडे ! तुम इतनी लम्बी यात्रा में आ रहे हो। तुम्हें अवश्य भूख लग गई होगी। चलो, हमलोग भोजन करें।"

लेडी डायना कपड़ा बदलने चली गईं। वापस आईं तो उनका शुभ्र परिधान देखकर सहसा मेरे मुंह से निकल पड़ाः—"झीलकी रानी।"

वे मुस्कुरा पड़ीं। जो चिन्ता उनकी जान मारे डाल रही थी उसे उन्होंने बरबस अपने दिलके अन्दर छिपा लिया था। वे उसे प्रगट नहीं होने देती थीं। उन्होंने कहाः—

"भोजन-गृह में सर वाल्टर के हाथ की लिखावट के कारण यह तुलना तुमने कर डाली है क्या ? तुम्हें तो कहना चाहिए था कि……"

"सो क्यों ; सब कुछ भला ही होगा। आपका भाग्य पुनः एक बार चमक उठेगा। वरिचकिन लन्दन से आपके अनुरूप हीरे की अंगूठी लेकर आयेंगे जो आपके दाहिने हाथ की अंगुली की शोभा बढ़ावेगी। आपके हाथ में नये साथीका हाथ आवेगा। क्या आप विवाह के आनन्द की कल्पना नहीं करतीं ?"

"जिराडे ! सुभीते के लिये जो विवाह किया जाता है उसमें आनन्द का उद्रेक कहाँ संभव है ?"

"लेकिन वर्लिन में तो आपने मुझसे कहा था कि इस रूसी ने आपके हृदय में गुदगुदी पैदा कर दी है।"

"लेकिन वह विश्वास अब वैसा दृढ़ नहीं रहा। उस वक्त वह नया था। वह मुझे आनन्द प्रदान करता था। मैं उसके साथ खेल रही थी। इसके साथ ही जब कोई आदमी पतनोन्मुख होता है तब वह झूठा वादा कर देता है। उसे पूरा करने की बात इतनी दूर रहती है कि क्षितिज के पास भी उसकी झलक नहीं दीख पड़ती। लेकिन एक दिन ऐसा आता है जब कर्ज को चुकाना होता है। उस समय उतना उत्साह नहीं रह जाता और फिर उसे उस पुल की गहराई नापनी पड़ती है जिसे पार करना है। वरिचकिन मेरे लिये धनके रूपमें है। यह एक निर्विवाद सत्य है। लेकिन वैवाहिक जीवन में मेरे हृदय में उसके लिये कोई उत्साह नहीं है। मैं उदासीन वृत्ति से ही उसका स्वागत करूंगी। विश्व के इसिहास में इस तरह की एक और घटना अंकित हो जायगी, एक और अभागी महिला का नाम उन पत्रों में लिखा जायगा।"

"क्या यह असमानता आपको खल रही है?"

"नहीं। मैं यहाँ के अनेक पूंजीपतियों से उसे अच्छा समझती हूँ।"

"तब क्या आपको वरिचकिन से घृणा है?"

"नहीं!"

"तब?"

"मुझे इस बात का परिताप है कि मैं जीवन में पहली बार अपने को बेंच रही हूं। वरिचकिन को मैं निमंत्रण देकर बुलाती, उसका हर तरह से आदर सत्कार करती तो उससे मुझे वास्तविक प्रसन्नता होती। लेकिन उसे सदा के लिये अपना बना लेना, एक दूसरी बात है। तुमने दोनों अवस्थाओं के भेद-भाव को भलीभाँति समझ लिया होगा।"

"आपका कहना ठीक है।"

"तुम से तो कुछ छिपा नहीं है। मेरे अनेक प्रेमी हैं। लेकिन आजतक

मैंने अपने प्यार की कीमत कभी किसी से नहीं मांगी। यही कारण है कि मेरे दिल को इस बात की गहरी चोट लगी है कि ता० २६ जून को मैं ग्लेंसलाय महल की लेडी विल्फ्रिड ग्रेस क्रिस्टाबेल डायना विनहम अपने वंश के अभिमान का त्याग करने जा रही हूँ, अपने वंश की परम्परा को सदा के लिये छोड़ने जा रही हू और अपनी ओर से बिना कुछ दिये ही एक पुरुष से कुछ लेने जा रही हू। तुम जानते हो कि मेरा खानदान साधारण खानदान नहीं है। मेरे खानदान की ही एक वीर रमणी ने डनवर कौंसिल की दीवालों के पीछे अंग्रेजी सेना को पन्द्रह दिन तक रोक कर रखा था।"

मैं ध्यान से उनकी बातें सुनता रहा और मन ही मन उनकी प्रशंसा करता रहा। बड़प्पन के उनके दावे से मुझे लेशमात्र भी विस्मय नहीं हुआ। मुझे लेडी डायना के इस होनेवाले विवाह से खेद अवश्य था क्योंकि वरिचकिन साधारण स्थिति का आदमी था, केवल भाग्य से उसके हाथ में इतना बड़ा अधिकार आ गया था कि वह लेडी डायना को इतनी बड़ी संपत्ति का स्वामी बना रहा था। कहाँ यह कोमल कोमलांगी सुकुमारी जो महलों में पली है कहाँ वह जंगली जिसके वंश का कोई ठिकाना नहीं। मैंने कहा:—

"तब आप हमेशा देती ही आई हैं।"

उन्होंने बड़ी गंभीरता से उत्तर दिया:—

"हमेशा······इस वक्त तक। मुझे उन रमणियों से सदा चिढ़ थी जो अपने प्रेमियो की जेब काटने की धुन में सदा लगी रहती थीं। नारी समाज के लिये यह कितनी लज्जा और हीनता की बात है कि वह पैसे के लिये अपनी इज्जत को बेंच दे, किसी पुरुष के गले में बाहें डालकर उसका आलिंगन करे, चाहे वह पुरुष कितना बड़ा आदमी क्यों न हो। तुम मेरे प्रेमियों से पूछ सकते हो। मैंने आज तक कभी किसी से एक तुच्छ उपहार भी नहीं लिया है। यदि किसी ने कभी

फूलों का गुच्छा या कीमती हार मेरे पास भेजा भी तो मैंने उसी वक्त उसे लौटा दिया और लिख दिया कि इन उपहारों की जरूरत यहाँ नहीं है। मैंने सदा उन से अपने को ऊंचा रखा, उनपर सदा अपना एहसान जनाती रही। मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि मुझे इसके विपरीत आचरण करना पड़ेगा। और अब मुझे उन्हीं रमणियों की श्रेणी में खड़ा होना होगा। मुझे ऐसे व्यक्ति की पत्नी बनना पड़ेगा जिसने अप्रत्यक्षरूप से मेरे लिये प्रचुर संपत्ति संग्रहीत कर दी है—जिस संपत्ति के बिना मेरा जीवित रहना कठिन था। इससे दयनीय दशा मेरे और उसके लिये दूसरी क्या हो सकती है।"

लेडी डायना ने गहरी सांस ली। उन्होंने मेरा हाथ कस कर दबाया। अन्त में उन्होंने कहा:—

"जिरार्ड! यदि किसी हालत में मेरी आशा फलवती नहीं हुई, यदि तेलाव के तेल की खानें मृग-मरीचिका साबित हुईं, ऐसी हालत में मैं आत्म-हत्या कर डालना अधिक उपयुक्त समझूँगी लेकिन मैं उन औरतों की श्रेणी में खड़ा होना नहीं पसन्द करूंगी जिन्हें मैं सफेद गुलाम की संज्ञा देती आई हूं। न तो यह मेरा मिथ्या अभिमान है और न बनावटी बात है। मैं किसी उद्योगपति से विवाह नहीं करना चाहती जो मुझे अपना गुलाम समझे। जिरार्ड! तुम्हें मेरा वह स्वप्न याद होगा। उस दिन प्रोफेसर ट्रारिज उसका आशय मुझे नहीं समझा सके लेकिन आज मैं उसका आशय तुम्हें समझा देती हूं। सपने में मैंने जो लाल मुल्क देखा था वह यही वरिचकिन है जो रूस के बोलशेविकों की लाल पोशाक में है। उसी स्वप्न के अनुसार सारी घटनायें चल रही हैं। यदि वरिचकिन मुझे संपन्न बना सका तो मैं उसकी हो जाऊँगी, यदि मेरा सर्वनाश हो गया तो आत्म-हत्या के सिवा मेरे लिये कोई दूसरा चारा नहीं है।"

इतना कह कर लेडी डायना चुप हो गईं। अचानक बादलों की गड़गड़ाहट

से समूचा पहाड़ी प्रदेश गूंज उठा। मैंने उठ कर खिड़की से बाहर झांका। हवा के तेज झोंके से झील के शान्त जल में लहरें उठने लगी थीं और पेड़ों की पत्तियां पागलों की तरह झूम रही थी। पश्चिम-दक्खिन की ओर काली घटायें उठकर चन्द्रमा को छिपा लेने के प्रयास में थीं।

मैंने कहाः—"भयानक तूफान उठ रहा है।" शाम की शान्ति ज्यादा समय तक टिकनेवाली नहीं थी। हवा में विचित्र भारीपन था।

"क्या समय होगा?"

"ग्यारह बज रहा है।"

"मेरे कक्ष की तरफ चलो। यह पुस्तकालय आज नितान्त भयानक प्रतीत हो रहा है। सुनहली जिल्दों वाली ये पुस्तकें मुझे सोने के पींजड़े में लपेटे हुई सी प्रतीत होती हैं।"

वह कांप उठीं। मुझसे जहांतक हो सका उन्हें शान्त करने का यत्न करता रहा।

मैंने कहाः—"इस वक्त आप चंचल और उत्तेजित हैं। शायद आनेवाले तूफान की आशंका से। वारिचांकिन की अनिश्चितता भी कारण हो सकती है। लेकिन आपको शान्त रहना चाहिए। आपकी आर्थिक हालत शीघ्र सुधर जायगी और अन्य बातों का कोई महत्त्व नहीं है।"

हमलोग ऊपर चढ़ गये। लेडी डायना ने खिड़की खोलते हुए कहाः—यहाँ तो दम घुट रहा है।"

क्षण भर के बाद गहरी साँस लेकर उन्होंने कहाः—

"जिरार्ड! यदि यहीं मुझपर बिजली गिर पड़ती तो कैसा अच्छा होता।"

मैं उनके पास चला गया। बोलाः—

"इन फजूल की बातों में क्या धरा है। इस तरह की बातों से हमलोग अपना जीवन विषाक्त बना देते हैं। भाग्य में जो कुछ बदा होगा, वह अनिवार्य है।

हमलोग खिड़की से बाहर झाँक रहे थे। यह खिड़की झील के सामने खुलती थी। तूफान के कारण चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी। चन्द्रमा की धुंधली छाया रह रहकर झील के पानी पर नाच उठती थी। वेन लोमएड उसी तरह अपना सिर उठाये खड़ा था मानों तूफान का उपहास कर रहा हो, लेकिन बाग के पेड़ों की डालियाँ सिर झुकाये इस तरह खड़ी थीं मानों मेघ के सुखद जल की प्रतीक्षा कर रही हों।

अचानक लेडी डायना मेरी ओर झुक गईं। आकाश में बिजली सहसा चमक कर गायब हो गई। मैंने धीरे से कहाः—

"यदि विचार कर देखा जाय तो हमलोगों का अस्तित्व ही क्या है? कुछ नहीं। लेडी डायना, आपकी आकांक्षायें औचित्य की सीमा का उलंघन कर जाती हैं। अतुल संपत्ति और अधिकार की जो प्यास आपको है उसे दबाना चाहिए।"

लेकिन उनका ध्यान मेरी बातों की ओर नहीं था। वह मुझे खींचकर अपने कमरे में ले गईं और अपना होंठ मेरे होंठो पर रख दिया। उन्होंने मुझे अपने बाहुपाश में जकड़ लिया। उन्होंने कहाः—

"जिरार्ड! हफ्ते भर में मैं उसकी पत्नी हो जाऊंगी। क्रूर भाग्य से आज मैं बदला लेना चाहती हूँ। कमसे कम एक रात के लिए हमें अपने सभी इरादों, सभी व्यवधानों को भूल जाना चाहिए। वह दिन दूर नहीं है जब विधि के विधान की चक्की में मैं बुरी तरह पीस दी जाऊंगी। हमें उसकी अवज्ञा करने का अधिकार है। मैं तुम्हें प्यार करती हूँ क्योंकि न तो तुमने कभी मुझे प्यार की दृष्टि से देखा और न कभी कोई इच्छा प्रगट की। तुम्हारा व्यवहार मेरे साथ अलौकिक रहा है। मेरे सुख के लिए तुमने अपने प्राणों तक को खतरे में डाला। तुम मेरी बराबरी कर सकते हो। मैं तुम्हारी कृतज्ञता के भार से दबी हूँ। आज

मैं आत्म-समर्पण कर देती हूं और मेरा विश्वास मानो। शायद जीवन में इतनी खुशी मुझे कभी भी नहीं हुई होगी।"

उनकी आँखें प्रसन्नता से चमक रही थीं। वे दो कदम पीछे हट गईं। वे कांप रही थीं। वे मेरी तरफ इस तरह देख रही थीं मानों शैतान उनके ऊपर सवार हो गया हो। बिजली कड़क उठती थी। हवा का झोंका तीव्र से तीव्रतर होता जा रहा था। कमरे में इस तरह उथल पुथल मची थी मानो वहाँ किसी दैत्य का अधिकार हो गया हो। अचानक साहस ने उनका साथ छोड़ दिया। उन्होंने दोनों हाथों से अपनी आँखें मूंद लीं।

इसी समय किसी ने दरवाजे पर जोर का धक्का दिया। हमलोग चौंक उठे। दूसरे ही क्षण जुलियट के शब्द हमलोगों को सुनाई पड़े। वह कह रही थी:—

"आपका फोन है।"

लेडी डायना अभी तक प्रकृतस्थ नहीं हो सकी थीं। उन्होने चौंककर कहा:—

"इतनी रात को कौन मुझे फोन पर बुला रहा है?"

"लन्दन से फोन है। आवश्यक कहता है।"

लेडी डायना ने अपने को सम्हाला और कमरे से बाहर हो गईं। मैं वहाँ अकेला रह गया। बूंदाबूंदी होने लग गई थी। हवा गिर गई थी। चन्द्रमा को बादलों ने ढंक लिया था। बाहर घुप अंधेरा था। ऐसा प्रतीत होता था कि प्रकृति के सुरम्य चित्र पर किसी दैत्य ने गाढ़ी रोशनाई पोत दी हो। मैं इन्तजार करने लगा। पांच मिनट बीते। दस मिनट बीते। अन्त में अधीर होकर मैं नीचे जाने के लिये उद्यत हुआ। उसी समय किसी के दौड़ते हुए आने की पगध्वनि मुझे सुनाई पड़ी। जुलियट घबराई मेरे पास आकर बोली:—

"आप जल्द चलिये।"

मैं उसके पीछे दौड़ पड़ा। वह टेलीफोन के कमरे में ले गई। वहाँ का

दृश्य देखकर मैं अवाक् रह गया। टेलीफोन का चोंगा जमीन में गिरा पड़ा था और उसकी बगल में फर्श पर लेडी डायना लुढ़की मृतवत् पड़ी थीं।

बाहर मूसलधार पानी बरस रहा था।

---

१८

मैंने झुक कर उनकी नब्ज पर हाथ रखा। नाड़ी धीरे धीरे चल रही थी। इससे मुझे ढाढ़स हुआ। मैंने जुलियट से कहाः—

"वे बेहोश हो गई हैं। कोई चिन्ता की बात नहीं है। थोड़ी शराब ले आ।"

मैं उन्हें होश में लाने का यत्न करने लगा। धीरे धीरे उन्होंने आंखें खोलीं और भय से त्रस्त बच्चे की तरह मेरी गर्दन में दोनों बाहें डाल दीं। वे रो रही थीं। जुलियट उसी समय ब्राण्डी लेकर आई। शराब ने अपना असर किया। लेडी डायना उठकर बैठ गईं और बोलीं :—

"जिरार्ड! मुझे सहारा देकर मेरे कमरे में ले चलो।"

मैंने उन्हें गोद में उठा लिया और लाकर उनके बिस्तर पर लेटा दिया। नौकरानी के चले जाने पर मैंने लेडी डायना से पूछा। वे तकिया के सहारे उठंग गईं और पूर्ण धीरता के साथ बोलीं: —

"जिरार्ड! मेरा सर्वनाश हो गया।"

"बात क्या है?"

"अभी लन्दन से इरिक ब्लस मूर का फोन आया था। जो कुछ उन्होंने कहा है उसे ज्यों का त्यों तुम्हें सुना देती हूं:—

"क्या लेडी डायना फोन पर हैं? नमस्कार दोस्त! मैं सर इरिक ब्लश मूर हूं। मुझे खेद है कि इतनी रात गये मुझे तुम्हें तंग करना पड़ा। पर मेरी लाचारी है। वैदेशिक विभाग के रूसी दफ्तर के डायरेक्टर ने अभी संवाद

भेजा है जो बड़ा ही दुखद है। उसने सरकारी तौर पर सूचना दी है कि सोवियत रूस की आर्थिक संसद ने तेलाव की भूमिका पट्टा रद्द कर दिया है। सचमुच वे बोलशेविक बड़े ही खतरनाक और असंभव हैं। मेरे दोस्त ने वादा किया है कि वे इसका विरोध रूस की प्रजातंत्र सरकार के पास करेंगे। यह तो अन्तर्राष्ट्रीय नियम की सरासर अवज्ञा है। लेकिन साथ ही उन्होंने स्पष्ट शब्दों में मुझ से यह भी कहा है कि सोवियत सरकार हमलोगों के इन विरोधों पर कान तक नहीं देगी। वह इस तरह के पत्रों को रद्दी का कागज समझती है। मैंने सर इरिक से पूछा…'क्या आप इस अचानक उलट फेर का कोई कारण जानते हैं? उसके उत्तर में उन्होंने कहा कि मुझे केवल इतना ही मालूम है कि हमलोगों के खिलाफ कोई बहुत बड़ी शक्ति काम कर रही है। इसका दूसरा भी कारण हो सकता है। सम्भव है सोवियत सरकार की आर्थिक और राजनीतिक अध्यक्ष के पद पर कोई दूसरा व्यक्ति आ गया हो।' यही उनकी बातचीत का मर्म है जिसे सुनकर मुझे गश आ गया था। मुझे खेद है कि मुझसे ऐसा आचरण बन पड़ा जो मेरे व्यवहार के सर्वथा अयोग्य था लेकिन साथ ही मैं यह भी निःसंकोच कह सकता हूं कि फोन पर सर इरिक ने जो संवाद मुझे दिया वह मेरे लिये मृत्यु-दण्ड के समान था।"

मैंने उन्हें समझना चाहा। लेकिन इसका उनपर कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने अपना सिर तकिये की झालर में गाड़ लिया और कहा:—

"जिराडं! इस तरह की तसल्लियों को मैं मूर्खता समझती हूं। मेरी बर्बादी पर इस तरह सान्त्वना देने से कोई लाभ नहीं। मैंने तुमसे पहले ही कह दिया था कि यदि यह सौदा असफल रहा तो मेरा अन्त समझना और मैं उस कथन की पुष्टि करती हूँ। मै अपने हथियार को फेंक कर युद्ध से विरत होती हूं। मेरी इस विपत्ति में मुझे अकेली छोड़ दो। तुमने भाई की तरह मेरी जो

सहायता की है, उसके लिये मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूं।"

मेरी विचित्र हालत थी। लेडी डायना ने मुस्कुरा कर कहा:—

"डरने की कोई बात नहीं है। कल सबेरे ही मेरा अन्त नहीं हो जायगा। चौबीस घंटे तक मैं विचार करती रहूंगी कि किस तरह की मृत्यु मेरे अनुरूप होगी। आज रात को मैं पिस्तौल, रिवाल्वर, तेज तलवार, कटार और जहर का स्वप्न देखती रहूंगी। झील में डूबकर अथवा पहाड़ से कूद कर मरने में कौन श्रेयस्कर होगा, इसकी मानसिक तुलना करूंगी। मैं तुमसे पक्का वादा करती हूं कि कल रात बारह बजे तक मैं कुछ नहीं करूंगी। उस वक्त तक मैं अपना अन्तिम निश्चय कर लूंगी।"

उनकी बातों से मुझे वास्तविक चिन्ता हो गई। उन्होंने कहा:—

"इतना तो तुम समझ ही गये होंगे कि मैं पागल नहीं हूं। मैं होश हवाश में सारी बातें कह रही हूँ और मेरे कथन में वास्तविकता तथा सचाई है। मैं ज्ञान-शून्य नहीं हूँ। रात अधिक हो गई है। जाकर सो रहो। तुम्हारे उपकारों को मैं कभी नहीं भूलूंगी। तुम पूजाके योग्य हो।"

मैं थकान से चूर था। बिस्तर पर पड़ते ही मुझे नींद आ गई। मेरी नींद तब टूटी जब जुलियट मेरा नाश्ता लेकर आई। मैंने उससे लेडी डायना के बारे में पूछा। उसने कहा:—

"वे रातभर न जाने क्या लिखती रहीं। उन्होंने उसे लिफाफे में बन्द कर उसपर अभी मुहर लगाई है। उनके कमरे से अभी भी चपड़े की महँक आ रही है। मैं पन्द्रह मिनट पहले वहाँ गई थी। उन्हें गहरी नींद में मैंने पाया। नींद खुलने पर वे खुद घंटी बजाकर मुझे बुलावेंगी।"

मैंने यंत्रवत् जलपान किया। मेरी खिड़कियाँ खुली थीं। प्रातःकालीन सूर्य की

र्मी पाकर छज्जा पर के फूल की कलियाँ खिल रही थीं। झील का निर्मल ाल शान्त था और इस तरह चमक रहा था मानों हीरे की चट्टान हो। ाग में माली पौधों की डालों पर अपनी कैंची स्थिर गति से चला रहा था। प्राकाश निर्मल और स्वच्छ था। रातके झंझावात के बाद प्रकृति अपनी ोमलता बिखेर रही थी।

पर इस महल में रहने का आनन्द मुझे भी कलंक सा प्रतीत होने लगा। जसकी गोद में एक भव्य महिला सो रही थी जो शीघ्र ही अकाल मृत्यु की गोद में जानेवाली थी। मेरी इच्छा हुई कि मैं बाहर भाग जाऊँ और मैदान में अनवरत गति से भूंकते उन दोनों आयरिश कुत्तो के साथ क्रीड़ा करूं अथवा नाव में चढ कर इस झील के किनारों का पता लगाऊं। मैं जीना चाहता था, जब कि मेरे बगलवाले कमरे में ही पड़ी एक महिला मरने के लिये उद्यत थी। मैं अपने फेफड़ो में ताजी हवा भरना चाहता था जब कि लेडी डायना लाह की गन्दी हवा अपने फेफड़ों मे भर रही थीं जिस चपड़े से उन्होंने उस भयानक लिफाफे पर मुहर लगाई थी।

ग्यारह बजते बजते मैं कपड़ा पहन कर तैयार हो गया था। उसी समय जूलियट ने खबर दी कि लेडी डायना अभी सो रही हैं। मै नीचे उतर गया। मै बाग से बाहर निकल कर एकान्त में चला गया और लेडी डायाना से बहाना बनाने का उपाय सोचने लगा। तीसरे पहर तक मुझे पूरी स्वतन्त्रता थी। इतने समय में वे स्वस्थ हो जायंगी और निराशा का काला बादल बहुत कुछ उन पर से हट जायगा। तब शायद उनकी समझ में यह बात आ जाय कि धैर्य और सहिष्णुता से वे अपनी विपत्तियों पर विजय प्राप्त कर सकेंगी।

दो बजे दिन को हमलोग साथ ही भोजन करने बैठे। मैने उन्हें कुछ स्वस्थ देखा। इसलिये मैंने रात की घटना की चर्चा करना उचित नहीं समझा।

हमलोग भोजन समाप्त ही कर रहे थे कि वे अचानक बोल उठीं:—

"वरिचकिन के अचानक चले जाने का कारण अब सहज में समझ में आ गया। क्यों? उसे यह सब बात मालूम हो गई थी। इसलिए वह दौड़ा लन्दन गया कि शायद वह संकट को रोक सके।"

"मालूम तो ऐसा ही होता है।"

"उसे सफलता नहीं मिली। इसलिये उसे तार देने का साहस नहीं हुआ।" मैं आशावादी होने की कोशिश में था। इससे मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने फिर कहा:—

"शल्य चिकित्सा के लिये क्लोरोफार्म की जरूरत नहीं है। मुझे दवा देकर शून्य करने की आवश्यकता नहीं है। मैं रातभर अपने ही बारे में सोचती विचारती रही। अपने अतीत जीवन और भविष्य के जीवन की तुलना करती रही। मैंने अपना अन्तिम फैसला कर लिया है।"

"डायना! तुम पागल हो गई हो। आमदनी घटकर पचीस हजार डालर सालाना हो जाने के कारण कोई आत्महत्या नहीं कर डालता। कभी कभी लोग प्रेम के लिये प्राण दे देते हैं। लेकिन वह प्रश्न भी यहाँ नहीं है।"

"जिरार्ड! तुम गलती पर हो। एक धनी आदमी प्रेम के लिये प्राण दे सकता है। लेकिन एक गरीब महिला तो इसीलिये प्राण देना चाहती है कि उसके पास जीवन निर्वाह का साधन नहीं है। वर्तमान अवस्था में जिन्दा रहने में मुझे क्या रस रह गया है। अपनी प्राचीन विभूति का उपहास कराने के लिये? नहीं यह नहीं हो सकता। मैंने शान की जिन्दगी बिताई है और मेरी मृत्यु भी उसी प्रकार शानदार होगी। मैं तो एक तरह से मर ही चुकी हूं। केवल तुम्हारे स्नेह की वरद छाया ही संप्रति मेरा संबल है। यदि सहानुभूति के सहारे मैं जीवित रह सकती तो वह प्रचुर मात्रा में मुझे तुम से प्राप्त हो सकती है।

क्योंकि मेरे साथ किसी तरह का लगाव न होने पर भी तुमने अन्त तक मेरा साथ सच्चे मित्र की तरह दिया।

XX XX XX XX

तीसरा पहर बीत चला। ज्यों-ज्यों समय बीतने लगा त्यों-त्यों मेरी चिन्ता बढ़ने लगी। जून महीने का वह प्राकृतिक सौन्दर्य मुझे बुरी तरह खलने लगा क्योंकि महल के इर्दगिर्द मृत्यु की काली छाया मंडरा रही थी। मैं बरामदे में टहलने लगा। हर क्षण यही आशंका बनी रहती थी कि कोई दुखद संवाद लेकर कोई नौकर दौड़ता मेरे पास आयेगा।

पाँच बजे हमलोगों ने साथ ही चाय पी। लेडी डायना ने अपने शरीर के सारे आभूषण उतार कर रख दिये थे और साधारण लिबास में थीं। इस अभिनय पर मैं उन्हें कुछ कह नहीं सकता था।

मैंने समझाना बुझाना छोड़ दिया था। वह पूर्णरूप से शान्त थीं। देखने से यह नहीं प्रगट होता था कि कोई घातक विचार उनके मन में है। इस समय मैंने उन्हें वैसा ही प्रसन्न पाया जैसा मैंने उन्हें लन्दन में देखा था।

लेकिन मेरी बुरी हालत थी। इससे दयनीय दशा केवल निकोलाई की काल कोठरी में मेरी थी। मैंने देखा कि मृत्यु के प्रश्न का प्रसंग छेड़ना उचित नहीं होगा। मैं मन ही मन प्रार्थना करने लगा कि रात होते होते उनके विचार बदल जायं। इस तरह के अनेक दृष्टान्त मेरे सामने थे। कितनी ही स्त्रियों ने आत्म-हत्या का संकल्प किया था लेकिन अन्तिम घड़ी आने पर वे पीछे हट गईं। लेडी डायना भी तो महिला ही थीं।

कभी-कभी कुछ काल के लिये मेरी चिन्ता दूर हो जाती थी। लेकिन दोबारा उसका आक्रमण दूने वेग से होता था। मैं जानता था कि इनवरनेस के डयूक की पुत्री लेडी डायना को ईश्वर ने वह हृदय नहीं दिया था जो साधारण

मानवों में पाया जाता है। तोभी मैंने उसे विरत करने के लिये अन्तिम प्रयास करना चाहा। यह अवसर मोटर की आवाज से उपस्थित हो गया।

लेडी डायना ने कहा:—"कोई मुलाकाती आ रहा है! लेकिन इस समय तो मैं किसी की आशा नहीं करती थी।

"शायद आपका ड्राइवर हो।"

"नहीं, मेरी मोटर तो गराज में ही है।"

"तब तक सूदूर पर मुझे किसी की सूरत दिखाई पड़ी। लेडी डायना की दृष्टि उतनी तेज नहीं थी। उन्होंने पूछा:—कौन है?"

"वरिचकिन।"

मैंने वरिचकिन को पहचान लिया था। वह तेजी से हमलोगों की तरफ आ रहा था। डायना का चेहरा किंचित पीला पड़ गया। मैंने उनके भाव को समझ लिया। क्या वरिचकिन कोई शुभ संवाद लेकर आ रहा है? क्या अपने प्रयास में वह सफल हो गया और पट्टा रद्द नहीं होने दिया? क्या आशा की शुभ्र किरणों का पुनः दर्शन होगा? क्या मेहों के बरस चुकने के बाद पुनः सूर्य का उदय होगा?

मैंने लपककर वरिचकिन से पूछा:—"दोस्त! क्या समाचार है?"

वरिचकिन ने उदास भाव से कहा:—"सर इरिक का टेलीफोन तो मिला ही होगा। उन्होंने सारी बातें कही होंगी। मैंने जीजान से कोशिश की कि वे जानवर अपना मत बदल दें। लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। मैं समझता हूँ कि इसके बाद तुम यही कहोगे कि तब तुम्हारे यहाँ आने की क्या जरूरत थी। मेरा उत्तर यही होगा कि मैं उस महिला की रक्षा करने आया हूं जिसके जीवन को मैंने भयानक खतरे में डाल दिया है। ग्लासगो से मोटर पर इसलिये दौड़ा आया हूं कि जो विपत्ति इनपर आनेवाली है उससे इन्हें सचेत कर दूं।"

लेडी डायना ने अविचलित भाव से पूछाः—कैसा खतरा है ?"

"इरिना मौराविफ स्काटलैण्ड पहुंच गई हैं। मेरे एक दोस्त ने मुझे यह संवाद दिया है। उन्होंने उसे स्टाकहोम और उसके बाद क्रिस्टियन साउण्ड में देखा था। वहां से वह लेथ के लिये रवना हुई।"

मैंने अकचका कर पूछाः—एडिनवरा के बन्दरगाह लेथ के लिये ?"

"हाँ, वह एडिनवरा पहुंच गई है। वहां से उसने रूस के लन्दन-स्थित प्रतिनिधि से बातचीत की है। यहां उसका आने का एकमात्र उद्देश्य तुमसे कैफियत तलब करना हो सकता है। लेकिन मैं अच्छी तरह जानता हू कि इरिना मौराविफ क्या कैफियत लेना चाहती है। इसलिये मैं यहा आया हूँ। जब तक मैं जिन्दा हूं तब तक वह लेडी डायना का एक बाल भी बाका नहीं कर सकती। मैंने कोई भी कोशिश उठा नहीं रखी तोभी मैं तेलाब की रिआयत तुम्हे नहीं दिला सका। इसलिये हमलोगों के विवाह का प्रस्ताव भी टूट गया। उस बंधन से तुम मुक्त हो। लेकिन मेरे ही कारण तुम्हारे लिये एक दुश्मन तैयार हो गया है और वह तुम्हारे ऊपर आक्रमण करना चाहता है। इसलिये ऐसे समय मेरा तुम्हारे पास रहना आवश्यक है।"

"मैं आपको हृदय से धन्यवाद देती हूँ। आपके इस व्यवहार का मेरे हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इससे आपकी महानता प्रगट होती है। लेकिन आपको जिरार्ड से मेरे निर्णय के बारे में मालूम हो जायगा। उससे आपको विदित हो जायगा कि मौराविफ के इरादों से मुझे लेशमात्र भी चिन्ता या घबराहट नहीं है।"

लेडी डायना कुछ काल तक अकेली रहना चाहती थीं। इसलिये वरिचकिन को लेकर मैं झील की तरफ चला गया। लेडी डायना की दृष्टि से ओझल होते ही वरिचकिन ने मुझ से पूछाः—"लेडी डायना ने क्या इरादा कर लिया है ?"

मैंने उदासीनता से कहाः—"आत्म-हत्या"

वरिचकिन एक पेड़ की छाया के नीचे खड़ा हो गया। उसने हकलाते हुए कहाः—

"आत्म-हत्या ? क्या लेडी डायना सचमुच मरना चाहती हैं ?"

यहाँ मेरे पहुँचने के बाद से जो कुछ हुआ था वह सब मैं उसे सुना गया। उसने अधीर होकर कहाः—

"मेरे दोस्त ! यह सुनकर मुझे गहरा धक्का लगा है क्योंकि मैं लेडी डायना को प्यार करता हूं। मैं उनके भाग्य को पलटने में सफल नहीं हो सका इसलिये मुझे कोई हक नहीं है कि मैं उनसे अपने हृदय की कामना पूरी करने के लिये अनुरोध करूं। लेकिन मेरा प्रेम अक्षुण्ण है। इसलिये उनकी विपत्ति मेरी अपनी विपत्ति है।"

"दोस्त वरिचकिन ! मैं यह भलीभांति समझता हूँ। इसीलिये हमलोगों को उन्हें क्षणभर के लिये भी अकेली नहीं छोड़ना चाहिये, यदि यह संभव हो सके तो। इस दुर्घटना को रोकने के लिये हमलोगों को असंभव को भी संभव कर डालना चाहिए।"

"यदि मैं उन्हें उस भयानक संकल्प से विरत कर सका तो मुझे अत्यन्त खुशी होगी। लेकिन मुझे आशंका है।·········हमलोग उनके स्वभाव को जानते हैं कि वे अपने विचारों की कितनी हठी हैं।

वरिचकिन के हृदय में गहरी वेदना थी। उसने कहाः—

"दोस्त सेलिमन ! यदि उन्होंने आत्म-हत्या की तो यह पाप मेरे सिर पर होगा और आजीवन मुझे शान्ति नहीं मिलेगी।······ओह ! मैं अच्छी तरह समझता हूं कि तुम क्या सोच रहे हो। मैं यह स्वीकार करता हूं कि मैंने कितनी हत्यायें कराई हैं और मेरी अन्तरात्मा मर सी गई है······लेकिन वे राजनीतिक

हत्यायें थीं। किसी सुदूर उद्देश्य से प्रेरित होकर कोई हत्या कर सकता है और करा भी सकता है। लेकिन केवल रुपये के लिये किसी सुन्दरी महिला को मरने देना क्या उचित होगा? नहीं, कभी नहीं।"

बातचीत करते करते हमलोग झील के किनारे पहुंच गये थे। अस्त होते हुए सूर्य की रक्तिम किरणों की छाया झील के पानी पर तैर रही थी। आजतक झील के उस किनारे को इस तरह की गंभीर बातें सुनने का कभी अवसर नहीं मिला होगा। हमलोगों की बातचीत का सिलसिला ज्यों ज्यो बढ़ता गया त्यों त्यों वरिचकिन दार्शनिक होता गया। जीवन और मृत्यु के संबंध में ऐसी गंभीर बातों की आशा उन लोगों से नहीं की जाती जो किसी का अन्त कर देना महज खेल समझते हैं।

मैं अचानक एक चट्टान के पास रुक गया और पीछे मुड़कर ग्लेंसलाय महल की ओर देखा। मैंने कहा:—

"वरिचकिन! हमलोग दूर बढ़ते चले जा रहे हैं।"

हमलोग लौट पड़े।

उसने कहा:—"तुम्हारा कहना सही है। हमलोगों को उन्हें अकेले में इतनी देर तक नहीं छोड़ देना चाहिए था।"

हमलोग तेजी से चल पड़े और उस जगह पहुँच गये जहाँ शाम को मैंने लेडी डायना के साथ चाय पी थीं। उस समय वे वहाँ नहीं थीं।

वरिचकिन ने व्यग्र होकर मुझसे पूछा:—क्या लेडी डायना महल के अन्दर चली गईं?

"मैं तो यही समझता हूं।"

पुस्तकालय की खिड़की खुली थी। उससे बिजली का प्रकाश आ रहा था।

यह देखकर मेरी चिन्ता दूर हो गई। मैंने उस ओर इशारा करते हुए वरिचकिन से कहा:—

"वे वहाँ है।"

"हमलोगों को जल्द वहाँ पहुँच जाना चाहिए। उन्हें अकेली छोड़ देना उचित नहीं होगा। वे उद्विग्न हैं। उनकी मानसिक अवस्था ठीक नहीं है। उनकी सावधानी से देख-रेख करना चाहिए।"

वरिचकिन तेजी से आगे बढ़ा। हमलोग दो दो सीढ़ी एक साथ लांघने लगे। वरिचकिन ने पुस्तकालय का दरवाजा खोला। हमलोगों ने अन्दर प्रवेश किया। वहाँ का दृश्य देखकर हमलोग अवाक् रह गये।

लेडी डायना और इरिना मौराविफ आमने सामने खड़ी थीं।

---

## १६

वह दृश्य हमेशा के लिये मेरे मस्तिष्क पर अंकित हो गया है। वह मिटाये से भी नहीं मिट सकता। इरिना मौराविफ बीचवाली खिड़की के सामने खड़ी थी। उसके बदन पर सफरी पोशाक और सिर पर फेल्ट हैट थी। उसके दोनों हाथ उसके कोट की जेब में थे। लेडी डायना आतिशदान के सामने इस शान के साथ खड़ी थीं मानों आगन्तुक की उन्हें कोई परवा नहीं है। ऐसा प्रतीत होता था मानों दो शेरनी एक दूसरे का मोकाबला करने के लिये खड़ी हों।

हमलोगों को तो काठ मार गया। मैं और वरिचकिन हिलडोल नहीं सके। सबसे पहले लेडी डायना ने मुँह खोला:—

"वरिचकिन! तुम्हारी चेतावनी सच निकली। मैडम मौराविफ ने मुझसे

कैफियत तलब करने के लिये मेरे ही घर आने का साहस किया है। मेरे खानसामा ने चन्द मिनट पहले उनके आगमन की सूचना मुझे दी। मैंने उससे कह दिया था कि उन्हें यहाँ बैठा दो। वे मेरी प्रतीक्षा करें। मैं अभी आती हूं। उनके इस जोश खरोश का कारण पूछने ही जा रही थी कि तुम आ गये।"

मैं लेडी डायना के पास चला गया और वरिचकिन मौराविक की तरफ बढ़ा। लेकिन मैडम मौराविफ बिना मुंह खोले उस दरवाजे की ओर चली गईं जिससे हमलोगों ने अभी प्रवेश किया था। उन्होंने जानबूझकर दरवाजा बन्द कर लिया। उसमें ताला जड़ दिया और कुंजी अपनी जेब में रख ली। यह बात लेडी डायना के बर्दाश्त से बाहर थी। उन्होंने तेज होकर कहा:—

"मैडम! आपके व्यवहार से तो ऐसा प्रगट होता है कि आप इसे अपना विजित प्रदेश समझ रही हैं। मुझे लाचार होकर आपको बाहर कराना पड़ेगा। ग्रेट ब्रिटेन ने न तो अभी सोवियत शासन को और न सोवियत शासन प्रणाली के तरीके को ही अपनाया है और न मेरा यह किला राष्ट्र की संपत्ति घोषित कर दी गयी है।"

लेडी डायना घंटी बजाने के लिये हाथ बढ़ाना ही चाहती थीं कि मैडम मौराविफ ने अपनी जेब से रिवाल्वर बाहर किया और कहा:—

"घंटी की तरफ हाथ बढ़ाया कि मैं गोली दाग दूंगी।"

मैं और वरिचकिन बीच में पड़ना चाहते थे। लेकिन इरिना मौराविफ ने अपना रिवाल्वर दिखाते हुए कहा:—

"वही बात आपलोगों के लिये भी लागू होती है। यहाँ हमलोग बिना किसी गवाह के बातचीत करना चाहते हैं क्योंकि लेडी विनहम और मेरे बीच में जो बातचीत होगी उसका संबंध किसी अन्य से नहीं है। जैसा आपने अभी कहा है। लेडी विनहम! मैं समुद्र लांघकर यहाँ केवल आपके आचरण के लिये आपसे

कैफियत तलब करने आई हूँ। यह मेरे अधिकार की सीमा के भीतर है। मैं समझती हूँ कि आप इस बात से इन्कार नहीं कर सकतीं कि आपने मेरे प्रेमी को मुझसे छीन लिया, आपने उसे फुसलाकर उसकी ईमानदारी खरीद ली अर्थात् आपके फेर में पड़कर उसने अपने रूसी साथियों के साथ विश्वासघात किया और आपने उसे वचन दिया कि यदि वह अपने अध्यवसाय में सफल हो गया तो आप उससे शादी कर लेंगी। लेकिन आपका दुर्भाग्य कि वह उस कार्यक्रम को पूरा नहीं कर सका। यदि मैंने हस्तक्षेप नहीं किया होता तो जार्जिया के किसानों का रक्त चूसकर आप लाखोंलाख कमातीं और रूस के तेल की बदौलत आप वह विषैला विलासिता का जीवन बितातीं जो विश्व की विपन्नता का आज दिन मुख्य कारण बना हुआ है...... मैं आपको यह बतला देना चाहती हूं कि आपसे बदला लेने के लिये मैंने पट्टे के काम को आगे बढने दिया ताकि आपके हृदय में आशा के अंकुर उदित हो जायं। तब मैंने रूस के अधिकारियों को समझाया कि आपको पट्टा देकर वे भारी भूल कर रहे हैं। मुझे प्रसन्नता है कि मेरी बात उनकी समझ में आ गई और इस काम में मुझे सफलता मिली। यदि किसी भी प्रकार तुम्हें वह संपत्ति मिल गई होती जिसकी तुम्हें अपने विलासमय जीवन के लिये आवश्यकता थी तो मुझे सब से अधिक संताप हुआ होता। यह काम संपन्न करने के बाद मैं तुमसे मिलने केवल इसलिये आई कि मैं तुमसे यह कह देना चाहती थी कि लियोनिड लाडिमिरोविच वरिचकिन को मुझसे छीन कर तुमने केवल मेरा दिल ही नहीं तोड़ दिया बल्कि मेरे जीवन को नीरस और निकम्मा बना दिया।"

लेडी डायना ने अपने दोनों कन्धों को हिलाते हुए कहाः—

"यदि इस जीवन में आपको कोई रस नहीं रह गया है तो इसे कायम रखने के लिये कोई आप पर जोर नहीं डाल रहा है।"

इरिना एक कदम आगे बढ गई। बोली:—

"लेडी विनहम ! हम दो महिलायें एक ही पुरुष के लिये लड़ रही हैं। क्या यह साधारण बात है ?"

"मैं आपसे सर्वथा सहमत हूं।"

मैडम मौराविफ अपने प्रतिद्वन्दी के और पास चली गईं। वह कलह धीरे धीरे भयानक होता जा रहा था। लेडी डायना को अपने प्रतिद्वन्दी की कोई भी परवा नहीं थी। वे हर तरह से निर्भीक थीं लेकिन वे अपनी बातों से उसकी उत्तेजना को बढाती जा रही थीं। मैडम मौराविफ अपने हाथ में रिवाल्वर लिये रह रह कर कभी मुझे और कभी वरिचकिन को इस तरह देख लेती थीं जैसे कोई चीता अपने शिकार की टोह में कोई परछाई देख कर चौकन्ना हो जाता है। हैट के नीचे उसकी आंखें उसी तरह चमक रही थीं।

मैंने बातचीत में बाधा देते हुए कहा:—

"मैडम मौराविफ ! यह तो निर्विवाद है कि यदि दोनों व्यक्ति एक ही पुरुष के प्रेम में हिस्सा बंटाना चाहेंगी तो एक को निराश होना ही पड़ेगा। यदि मेरी बातों पर आपको विश्वास हो तो मैं जोर देकर यह कह सकता हूँ कि आप लेडी विनहम पर इस तरह अभियोग लगाकर भूल कर रही हैं। मि० वरिचकिन कभी भी लेडी डायना के प्रेमी नहीं थे। इस बात की सचाई की जांच आप स्वयं भी वरिचकिन से पूछकर कर सकती हैं।

वरिचकिन ने अपने दोनों हाथों को फैलाते हुए कहा: —

"इरिना ! मैं शपथ-पूर्वक तुम से कहता हूं कि मुझ में और लेडी डायना में......"

लेकिन लेडी डायना ने वरिचकिन को बीचमें ही रोक दिया। कहा:—

"दोस्त ! मैडम मौराविफ का मुंह बन्द करने के लिये झूठी शपथ लेने से

क्या लाभ ? क्या आप समझते हैं कि इनके क्रोध को शान्त करने के लिये मैं झूठ का आश्रय लूंगी ”

मैं लेडी डायना की तरफ घूम गया था। उनके चेहरे पर नजर पड़ते ही मैं समझ गया कि उनका मस्तिष्क किस दिशा में काम कर रहा है। अपने दुश्मन को और अधिक उत्तेजित करने के लिये वे अपने सिर इलजाम ले रही थीं ताकि वह क्रोधान्ध होकर उनपर गोली चला दे और इस तरह मृत्यु का उनका इरादा पूरा हो जाय। मैं कुछ कहना ही चाहता था कि लेडी डायना ने इस तरह घूर कर मेरी ओर देखा कि मेरा मुंह नहीं खुल सका। उन्होंने मौराविफ से कहा:—

“मैडम। में आपको सच्ची बातें बताती हूं। में बरिचकिन की प्रेयसी रह चुकी हूं। मेरी समझ में नहीं आता कि ये लोग आप को धोखा देना क्यों चाहते हैं। मरा यह नियम है कि में अपनी हरकतों, अपने विचारों और अपनी प्रेम कथा को छिपा कर नहीं रखना चाहती। जिस दिन मेरी इनकी चार आखें हुईं उसी दिन से मैं इन्हें अपनाने के फेर में पड़ गई। इन्हें भी मुझसे प्रेम था।······हमलोग बर्लिन, लन्दन और इस किले में भी साथ रह चुके हैं। मेरा अनुमान है कि जो घड़ियाँ उनकी मेरे साथ बीतीं उन घड़ियों में जो सुख उन्हें मुझ से मिला वह सुख आप के सहवास में उन्हें नहीं नसीब हुआ होगा। जब आप स्कूल में पढ़ती थीं और कुलीन वर्ग की महिलाओं को देख कर डाह से मर जाती थीं उस समय भी आपने इन्हें जो प्यार दिया था वह उस प्यार की समता नहीं कर सकता जो उन्हें मुझसे प्राप्त हुआ है। राजाओं की वंशज मैं लेडी डायना विनहम ने आलिगंन का जो सुख इन्हें दिया है उसका आपके समान तुच्छ महिला वासना के उद्वेग में भी स्वप्न नहीं देख सकती। आप इतनी दूर केवल कैफियत लेने आई हैं। लेकिन आपने यह नहीं सोचा कि आपकी हस्ती क्या है। मिल गई न आपको कैफियत।”

इरिना उत्तेजित शेरनी की तरह लेडी डायना पर झपटना चाहती थी। क्रोध से उसकी आंखों से चिनगारियाँ बरस रही थीं। उसने चिल्ला कर कहा:—

"बस! तुम्हें यही कहना था?"

"क्या इतने से तुम्हें इतना जानकर भी संतोष नहीं हुआ कि प्रेम में उन्मत्त हमलोगों ने एक दूसरे को भुजाओं में कस लिया था।"

"और कुछ।"

"हम लोग आपस में इस तरह घुल मिल गये थे कि उन्हें तुम्हारी याद भी नहीं रही और वे तुम्हारे साम्यवाद की इस ढोंग की हँसी उड़ाते रहते थे।"

इसके बाद ही असली नाटक आरंभ हुआ। उसका अक्षर अक्षर मुझे आज तक याद है। मैडम मोराविफ लेडी डायना से छह फुट के फासले पर थीं। वरिचकिन दाहिनी तरफ था और मैं बायीं तरफ। हम लोग इस प्रतीक्षा में थे कि इस दुखान्त नाटक की पूर्णाहुति किस प्रकार होती है।

लेडी डायना के अन्तिम शब्दों ने उस रूसी रमणी को इतना ज्यादा उत्तेजित कर दिया था कि वह आपे से बाहर हो गई थी। उसने अपना दाहिना हाथ ऊपर उठाया जिसमें रिवाल्वर पकड़ कर वह खड़ी थी। इसी समय वरिचकिन ने टेबुल पर से पेपर वेट उठाकर इरिना की कलाई पर मारा। निशाना ठीक बैठा। गोली छूट गई और लेडी डायना तथा मेरे बीच से होकर निकल गई।

मैडम मौराविफ की कलाई में ऐसी भयंकर पीड़ा उठी की रिवाल्वर उनके हाथ से छूट कर फर्श पर जा गिरी। वरिचकिन ने लपक कर उसे उठा लिया और इरिना को लक्ष्य कर उसने गोली चला दी।

इरिना अलेक्जेण्ड्रोना मौराविफ जमीन पर लुढ़क गईं। उनके प्राण पखेरू उड़ गये।

लेडी डायना की बुरी हालत थी। उनका चेहरा पीला पड़ गया। इससे उन्हें जो सदमा पहुँचा उससे वे लड़खड़ाकर गिरने लगीं। ऐसा प्रतीत हुआ कि वे बेहोश हो जायँगी। मैं सम्हालने के लिये लपका। उधर वरिचकिन बड़ी सावधानी के साथ उस मृत महिला के हाथ के पास रिवाल्वर रखने का उपक्रम करने लगा। उन्हें देखने से यही प्रतीत होता था कि जिस दुःखान्त नाटक का यहाँ अभी अभिनय हुआ है उसका उससे कोई संबंध नहीं था। वे तटस्थ दर्शक मात्र थे। बड़ी शान्ति के साथ उन्होंने कहाः—

"लेडी डायना! इस औरत ने आपके घर में आत्म-हत्या की है। आपकी हत्या करने के विफल प्रयास के बाद उसके लिये दूसरा चारा नहीं रह गया था। वह यही कर भी सकती थी। बहुत बारीकी से जाँच करनेवाला भी तस्वीर के पास दीवाल में गोली का वह छेद देखकर इस बात की सचाई को मान लेगा। हमलोगों से किसी तरह भी गफलत नहीं हो सकती। कोरोनर के आनेपर प्रिंस सेलिमन और मैं इस बात की गवाही दूंगा। हमलोगों का बयान होगा कि प्रेम में निराश होने के कारण मैडम मौगाविफ ने आपकी हत्या करनी चाही। इस प्रयास में असफल होने के कारण उन्होंने आत्म-हत्या कर ली। यह इतनी शीघ्रता से हो गया कि हमलोग उसे रोक नहीं सके। यह रिवाल्वर रूस की बनी हुई है और युद्ध से पहले की है। स्काटलैण्ड के जूरी को विश्वास दिलाने के लिये यह बहुत बड़ा सबूत है। इन वजनी सबूतों के सामने वे लोग निश्चय ही इसी तरह का फैसला देंगे कि क्षणिक आवेश में इसने आत्म-हत्या कर ली।"

जिस शान्ति के साथ वरिचकिन ने उपरोक्त बातें कहीं उसे देख सुन कर हमलोग दंग रह गये। लेडी डायना के स्वस्थ होने के बाद उन्होंने उनसे पूछाः—

"जो गोली आपके लिये थी उसके शिकार को बदल देने के कारण आप मुझ से नाराज तो नहीं हैं?"

लेडी डायना ने कहाः—

"वरिचकिन ! मैं तुम्हें अनेक धन्यवाद देती हूं। मैंने सोचा था कि आज इस शाम को मुझे वह अवसर मिल गया है कि बराबरी की शर्तों पर मैं इस जीवन का अन्त कर दूंगी। जिस समय उस रमणी ने मेरी ओर रिवाल्वर ताना, मृत्यु का साक्षात् चित्र मेरी आँखों के सामने नाच गया। मैंने उसका स्वरूप देख लिया है इसलिये अब मैं उसे स्वतः निमंत्रण देकर नहीं बुलाऊँगी जबतक कि वह खुद मुझे लेने नहीं आ जाय।"

लेडी डायना दरवाजे की तरफ बढ़ीं। देहरी पर जाकर वे घूम पड़ीं और मुझे लक्ष्य कर इस तरह कहा मानों वे नौकर को चाय का प्याला वगैरह हटाने के लिये कह रही होः—

"जिरार्ड ! कृपाकर कुंजी मुझे दे दो और इस महिला का शव हटा दो। तबतक वरिचकिन स्थानीय पुलिस को टेलीफोन से खबर दें दे।"

इतना कहकर वे बाहर चली गईं। वरिचकिन क्षण भर सोचता रहा। अन्त में उसने कहाः—

"देखिये। गोली मस्तिष्क में घुस गई है। जख्म से बहुत थोड़ा रक्त निकल सका है। पाउडर के निशान भी मौजूद ही हैं। सरकारी डाक्टरों को इससे बड़ी सहायता मिलती है। हमलोगों को अच्छी तरह देख लेना चाहिये कि सब कुछ ठीक है? शरीर उचित ढंगसे गिरा है। अब हमलोगों को सबसे पहले उस खानसामा से कह देना चाहिए कि यहाँ क्या हुआ है। इसके बाद उसे मोटर लेकर डाक्टर का बुलाने के लिये भेज देना चाहिए यद्यपि डाक्टर बुलाने से कोई लाभ नहीं होगा।"

वरिचकिन की यह दौड़ धूप मुझे अस्वाभाविक सी प्रतीत हुई। मैं चुपचाप उसके पीछे-पीछे चला। दरवाजा खोलने से पहले उसने मेरी ओर देखा।

उसकी आँखों में विस्मय का लेश भी नहीं रह गया था। उसकी बोली स्वाभाविक थी। तोभी उसकी आवाज से प्रगट हो जाता था कि वह कुछ उत्तेजित है। उसने कहा:—

"इस घटना के बाद भी लेडो डायना मुझसे विवाह करने के लिये तैयार हो सकती हैं?"

"मुझे बहुत सन्देह है।"

उसने गहरी सास ली। वह मुझसे पहले बाहर हुआ। मैं उस महिला की अन्तिम झलक लेने के लिये घूम पड़ा, जो फर्श पर चित्त पड़ी थी। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि कोई मनहूस छाया उसके इर्दगिर्द मँड़रा रही है। वह छाया निकोलाई के जल्लाद की थी। मानो वह दानव सिर झुकाये उसके सामने खड़ा था।

———

## २०

मैं ग्रिसेल्डा के साथ क्लिेन होटल में ठहरा था। चायके वक्त मैंने ग्रिसेल्डा से कह दिया था कि मुझे एक फर्ज और अदा करना है। ता० २६ जून को ग्लांसलाय किले के एक सूनसान कमरे में जा विवाह संपन्न होनेवाला था उनमें तो हमलोगों को शामिल नहीं होना पड़ा। लेकिन मैं लेडी डायना को अन्तिम विदाई देना चाहता हूं। वे दो बजे की ओरिएण्ट एक्सप्रेस से किसी अज्ञात स्थान के लिये प्रस्थान कर रही हैं।

प्लेटफार्म पर मैं उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। डेढ बज चुके थे। जो लोग स्टेशन पर पहले पहुंच चुके थे वे इधर उधर टहल रहे थे और देश विदेश

के दर्शनीय स्थानों के चित्रों को देख रहे थे जो स्टेशन की दीवारों पर बतौर विज्ञापन के टाँगे हुए थे। अचानक दो कुली रेलवे की ठेला गाड़ी पर सामान लादे आ पहुंचे। चमड़े के सूटकेसों को मैंने पहचाना। कुलियों के पीछे लेडी डायना आ रही थीं। वे कीमती आभूषणों मे सुसज्जित थीं। उनके जूते के पंजे के ऊपर हीरे का नग चमक रहा था।

लेडी डायना लंबी यात्रा के लिये घरसे निकली थीं। वे प्लेटफार्म पर धीरे धीरे चली आ रही थीं। उनके सुन्दर चेहरे पर हंसी की मन्द रेखा दौड़ रही थी। वहाँ विषाद की धुंधली छाया तक नहीं थी और न भविष्य की कोई चिन्ता ही उनमें प्रतीत होती थी। उस दिन उनकी जो हालत थी उससे आजकी उनकी हालत की किसी प्रकार भी तुलना नहीं की जा सकती थी। उस दिन के मोकाबले आज उनमें घोर परिवर्तन दीख पड़ता था। कहाँ उस दिन की वह मुर्दनी सूरत और कहाँ आज शुभ्र प्रभात की तरह खिलता चेहरा।

"वाह जिरार्ड! तुम इतना पहले पहुंच गये थे! तुम्हारी कितनी कृपा है। आदि से अन्ततक तुमने मेरे साथ जो कुछ किया उसका केवल स्वप्न देखा जा सकता है या प्राचीन युगके इतिहासों में पढ़ा जा सकता है। तुम मेरी स्टुअर्ट के बहादुरों की याद दिला देते हो। कुली! इन सामानों को नं० ४ के डब्बे में रख दो और यह लो अपनी मजदूरी!"

उसने मेरी बाँह पकड़ ली और मुझे खींचते हुए इंजन की तरफ ले गई। कहाः—"जिरार्ड! उस दिन मेरी कितनी प्रबल इच्छा थी कि मैडम मौराविफ अपनी मंशा पूरी करतीं और मेरा काम बन जाता। लेकिन वह नहीं हो सका। उसके बाद मैं बड़ी गहराई से कई दिनों तक सोचती रही। शायद तुम्हें विश्वास न हो, लेकिन ग्लांसलाय के उस दुःखान्त नाटक ने मुझे जिन्दा रहने की नई प्रेरणा दी और नई इच्छा पैदा कर दी। तुम तो यही कहोगे कि मेरे

विकृत मस्तिष्क का यह दूसरा खफ्त है। बात भी किसी हद तक सच है। जब कोई आदमी अपने से किसी बड़ी वस्तु की अवज्ञा कर चुकता है और जब वह उस बड़ी चीज से उत्पन्न स्थिति से लाभ उठाने में असफल होता है तब वह व्यक्ति अपने को स्वभावतः बड़ा समझने लगता है। जब मैं उस घटना पर विचार करती हूं तब मैं देखती हूं कि मैंने जानबूझ कर अपने को उस तुच्छ वोल्शेविक की प्रेयसी बतलाया ताकि वह अधीर महिला पूरी तरह से उत्तेजित हो जाय और इस तरह मेरी मृत्यु निश्चित हो जाय। वह मेरी मूर्खता थी! वास्तविकता यह है कि काकेशस की उस भूमि के बारे में मेरी सारी व्यवस्था के असफल हो जाने के कारण मेरा मस्तिष्क विकृत हो गया था।"

हमलोग इंजिन से आगे बढ़ गये थे। हमलोग लौट पड़े। मैंने कहा:—

"सारी बातों को देखते हुए इतना तो कहना ही पड़ेगा कि वरिचकिन ने आपके प्राण बचाये यद्यपि वह आपको संपन्न नहीं बना सका।"

"इस बात को कौन अस्वीकार कर सकता है। मेरे और मृत्यु के बीच में अन्तर ही क्या रह गया था। उसकी क्षण भर की उदासीनता से मेरा अन्त हो गया होता। जिरार्ड! क्या तुम अभी भी उस नाटक की कल्पना करते हो? मैं तो तीन रातों तक बराबर यही स्वप्न देखती रही थी कि इरिना पिस्तौल ताने मेरे सामने खड़ी है। उसके बाद मैंने देखा कि मौराविफ क्रुद्ध शेरनी की भाँति पछाड़ खाकर मेरे फर्श पर गिरती है और अनन्त निद्रा में सो जाती है। उसके बाद जूरियों का फैसला सुना जिन्होंने सारे सबूतों को देखकर यह फैसला दिया कि उस रूसी महिला ने आत्म-हत्या की है। वरिचकिन से शादी करना अस्वीकार करने का मुझे उतना सदमा नहीं है जितना सदमा मुझे उसकी अभागी प्रेयसी की मृत्यु का कारण बनने का है।

"वरिचकिन ने तुम्हारे निर्णय को किस रूप में ग्रहण किया?"

"दुख और निराशा के साथ।"

हम लोग दूसरी बार प्लेट फार्म के अन्त तक पहुंच चुके थे। हम लोग पुनः लौटे। लेडी डायना न कहाः—

"मैंने शान्ति से उससे बातें कीं। मैंने उससे कहाः—'मित्र! दुःखमय कठोर तथा जटिल वैवाहिक जीवन में पुनः लौटने से क्या फायदा है? राजनीतिक दृष्टि से भी तुम असफल रहे। अब तुम्हारी गणना प्रमुख साम्यवादियों में नहीं होगी। इसलिये तुम्हें भी आर्थिक कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। मैं भी ऊँचे समाज से वहिष्कृत हूं क्योंकि चन्द जवाहिरातों को छोड़ कर मेरे पास कुछ नहीं रह गया है। मैं नहीं चाहती कि अपना दरिद्र प्रेमी वनाकर तुम्हें और भी नीचे गिरा दूं। तुम्हारे प्रति मेरे हृदय में अगाध श्रद्धा है। इसलिये मैं तुम्हें बेवकूफ नहीं बनाना चाहती। मेरी सलाह मानो। हम लोग सच्चे मित्र की तरह एक दूसरे से अलग हो जायं। तुम वापस मास्को चले जावो। तुम्हारे टेका दोस्त तुम्हारी कोई न कोई व्यवस्था कर ही देंगे और मैं अपनी बची खुची पूंजी से अब देश विदेश की यात्रा करूंगी।"

"क्या यह सच है! आप कहां जा रही हैं?"

"टिकट तो मैंने कुस्तुन्तूनिया का लिया है लेकिन मैं वियना या डायेस्ट में रुक सकती हूँ। यह अवसर पर निर्भर करता है और डिब्बे के साथी की निगाहों पर भी। मैंने तीनों जगहों के होटलों में जगह सुरक्षित करा ली है। लेकिन मेरा भविष्य क्या होगा, मैं नहीं जानती। मैं किसी खंडहर में भी निवास कर सकती हूं और किसी महल में भी। लेकिन इस वक्त मैं दूसरों की सलाह मान सकती हूं। विगत छह महीनों से मेरा जीवन नीरस रहा है। इस बात को तो तुम स्वीकार करोगे। इसलिये मुझे किसी न किसी तरह के परिवर्तन की आवश्यकता है। मुझे मौसमी चिड़िया समझो। राजधानी और झीलों की

दुनियाँ से ऊब गई हूं। अब मैं अपनी इच्छा के अनुसार जहाँ तहाँ अपना घोंसला बनाऊंगी और चाँद के प्रकाश में मनोहर गीत गाऊंगी। अब मैं इस जीवन से दूर रहने की कोशिश करूंगी। इससे मन ऊब गया है। ग्लासलाय में निराशा के जो उद्‌गार मेरे मुंह से निकले थे, उन्हें मैंने वापस ले लिया। जिन्दगी सुन्दर जागीर है। मनुष्यों से सदा बेवकूफियाँ होती रहेंगी। मैं छह हफ्ता इसलिए देना चाहती हूं कि क्या कोई मूर्ख ऐसा मिल जाता है जो मेरी इच्छाओं की पूर्ति करने के लिये तैयार हो और सोने की ईंटों से मेरी तिजोरी भर देने के लिये तैयार हो।"

"आपकी इस आशावादिता से मैं अत्यन्त प्रभावित और प्रसन्न हूं। मुझे सदा यह विश्वास रहा है कि आपके समान रमणी कभी भी पराजय स्वीकार नहीं करेगी और निराशा के गह्वर में कभी भी नहीं डूब सकेगी। यह तो उन ओछी औरतों का काम है जो हल्के धक्के ही से काँप उठती हैं और डूबने लगती हैं।"

"जिरार्ड! मुझे एक ही व्यथा परीशान कर रही है। तुम्हारा साथ छूटना मेरे लिये कितना दुःखदायी है, इसको मैं शब्दों द्वारा नहीं व्यक्त कर सकती। विगत छह महीने से हमलोग एक ही तरह का जीवन बिताते आये हैं। यदि हमलोगों का विवाह संपन्न हो गया होता तो ऐसा मिलन शायद ही दूसरा होता। मस्तिष्क की एकता, आत्मा की एकता और विचारों की एकता सब कुछ हमलोगों में थी। तुम्हारा अपार स्नेह, तुम्हारी प्रगाढ़ मैत्री भूलने की चीज नहीं है।......मैं इसे सदा याद रखूंगी और मेरे जीवन की यह सबसे मूल्यवान संपत्ति होगी। तुम वीर साहसी हो। तुम्हारा चित्र सदा मेरे साथ रहेगा। जब कभी मैं उसे अपने सामने रखूंगी मैं उसी तरह बोल उठूंगी जिस तरह हेमलेट ने यारिक के बारे में कहा था:—"उसकी दूरदर्शिता और ईमानदारी अक्षुण्ण थी। मेरे जीवन के गहनतम रहस्यों को वह जानता था। उसने अपने जीवन

को इसलिये खतरे में डाल दिया कि मेरे सुखी जीवन को आँच न आने पावे।"
जिराई! तुम्हारे इस चित्र को देखकर मेरे हृदय से ये ही उद्गार निकलेंगे।"

लेडी डायना का हाथ मेरी बाँह पर था। उनकी बातों से मैं बहुत अधिक विचलित हो उठा। अपने असली भावको छिपाते हुए मैंने कहा:—

"डायना! तुम्हारी बातें मेरे हृदय के अन्तस्तल को छू लेती हैं। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि हमलोगों का पवित्र स्नेह संबंध मेरी पूजा की वस्तु होगी और मैं सदा तुम्हारे सुखद भविष्य के लिए प्रार्थना करता रहूँगा।"

"सुख की विचित्रता मैंने सुन रखी है। जो लोग उसके पीछे बुरी तरह पड़ जाते हैं वे या तो करोड़पति बन जाते हैं या फकीर! लेकिन मैं तो एक बार पुनः करोड़पति ही बनना चाहती हूँ। तुम्हारी जिन्दगी तो सदा हँसी-खुशी में ही बीतेगी। तुम्हारे पास दोनों हैं, धन और प्रेम······प्रिंसेज सेलिमन तुम्हारा राह देखती होंगी। उन्होंने तुम्हें पुनः प्राप्त किया है।"

"मैं अपनी बात नहीं सोच रहा हूं डायना! यह सही है कि ग्रिसेल्डा के साथ मैं हर तरह से सुखी और संतुष्ट हूं। मैं तो तुम्हारे बारे में सोच रहा हूँ······।"

गाड़ी के खुलने का समय हो रहा था। सीटियाँ बज रही थीं और खिड़की से बाहर बाहें निकल रही थीं। गाड़ी में सामान रखे जा रहे थे और यात्रियों के दोस्त मित्र बाहर निकल रहे थे।

डायना ने अपने दोनों कोमल भुजाओं को मेरे कन्धों पर रख दिया। उनकी आँखों से आंसू की बड़ी-बड़ी बूँदें झरने लगीं। उन्होंने कहा:—"जिराई! शायद यह हमलोगों की अन्तिम मुलाकात है।"

मैं इतना अधिक विचलित हो गया था कि मै अपनी जगह से हिलडोल नहीं सका। मैंने हकलाते हुए कहा:—

"डायना! भगवान तुम्हारी कामना पूरी करें······।

उमड़ते हुए आँसुओं के वेग को रोकने के लिये उसने आँखें बरबस बन्द कर लीं और कहा:—

"मेरे अनन्य दोस्त ! तुम्हें अनेक धन्यवाद !"

गार्ड ने लोगों को सवार हो जाने के लिये कहा। लेडी डायना धीरे से गाड़ी के भीतर हो गईं। गाड़ी की सीटी की कर्कश आवाज इसी वक्त सुन पड़ी। डायना खिड़की के पास आकर खड़ी हो गईं। उस वक्त की उनकी सूरत भुलाये नहीं भूलती। उनके अलौकिक चेहरे पर उदासी के काले बादल घिर आये थे और दोनों कपलों को आँसू के दाने भिगो रहे थे। उनकी आँखों में स्नेह और वेदना भरी थी। उनके मुंह से शब्द नहीं निकले। हाथ के इशारे से ही उन्होंने हमें विदा दी। वह सुख की खोज में घर से बाहर निकली थीं। न जाने उनके भाग्य में क्या बदा था। नियति न जाने कौन सा तानाबाना उनके लिये बुन रही थी। वह उन्हें सुख के ऊंचे शिखर पर प्रतिष्ठित करती है या उन्हें धूल में घसीटती है।

गाड़ी चल पड़ी। उनके हाथ उसी तरह हिलते रहे। मैं उत्तर में अपना टोप हिलाता रहा। मैं नंगे सिर देर तक प्लेटफार्म पर खड़ा रहा और अपने उस अनोखे दोस्त की ओर देखता रहा जो कभी वापस आनेवाला नहीं था। मैं हिल नहीं सका। मेरा हृदय विषाद से भरा था। गाड़ी आँखों से ओझल हो गई थी तोभी मेरी आँखें लोहे की पटरियों पर टिकी रहीं जिन पर से होकर गाड़ी उस रूपसी को लेकर किसी अज्ञात देश में चली जा रही थी !